प्रस्तावना।

सकल निकल परमात्मा। सुख अनुपम दातार।
करत वन्दना भावसे। भविजन भवदधितार॥

हमारे दिगम्बर जैन समाजके भ्रातृगणोंको तीर्थयात्रा करते हुए तीर्थोंकी और दर्शनीय धार्मिक थानोंकी ठीक २ खबर न मालूम होनेसे बहुधा बहुत भारी कष्ट उठाना पड़ता है। रास्तेकी यात्राएँ भी छूट जाया करती हैं। ठीक २ पता न मालूम होनेसे औरके और स्टेशनपर उतर ते हैं। क्षेत्रोंके प्रबन्धकर्ता कौन हैं व किस तरह सुभीतेसे यात्रा करना इस बातके न जान. से बहुत कष्ट और बहुत खर्च उठाना पडता है। यह बात ठीक ही है कि, जबतक अपने पहुँचनेके स्थानका ठीक २ ज्ञान न हो तबतक भटकना पड़ता ही है। यह कष्ट हमारे भाइयोंका सदाके लिये दूर होजावे ऐसा विचार कर स्वर्गवासी सेठ हीराचन्द गुमानजीके परोपकारी कुटुम्बियोंने अर्थात् स्वर्ग० सेठ पानाचन्द हीराचन्द, दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचन्द हीराचन्द, जे. पी., सेठ नवलचन्द हीराचन्द, स्वर्ग० सेठ प्रेमचन्द मोतीचंद आदिने दिगम्बर जैन डाइरेक्टरीका कार्य्य वि० सं० १९६६ से प्रारम्भ कराया, जिसका कि भार मुझ तुच्छबुद्धिके सुपुर्द किया गया। इस कार्य्यकी सफलताके लिये सर्व भारतवर्षके दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र, प्राचीनस्थान व दिगम्बर जैनियोंकी प्रति ग्रामवार संख्या व वहांकी स्थापित धार्मिक संस्थाएँ आदिका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये कई इन्स्पेक्टर वैतनिक नियत करके मदरासमे बंगाल तक कुल जगह भेजकर लिखित समाचार मालूम किये गए।

उन सर्व समाचारोंको एकत्र कर तथा अन्य पुस्तकों व समाचारपत्रोंसे मिलानकर उस डाइरेक्टरीका यह एक भाग इस प्रयोजनसे प्रकाशित किया जाता है कि इससे हमारे भाइयोंको सर्व तीर्थों, अतिशयक्षेत्रों व अन्य धार्मिक प्राचीन व अर्वाचीन स्थानोंका हाल सुगमतासे मालूम होजावे। भाइयोंको भले प्रकार ज्ञान होनेके लिये इसके साथ एक ऐसा नकशा भी बड़ी मिहनतसे तैयार कराकर दिया जाता है जिससे उन सर्व स्थानोंका पता और जानेका रास्ता भी मालूम होजावे। इस डाइरेक्टरीका दूसरा भाग जिससे प्रति ग्रामके दि० जैनियोंकी संख्या व वहांकी व्यवस्था विदित हो तयार होरहा है और थोड़े ही कालमें प्रकाशित हो जायगा। रिपोर्ट मंगानेका काम सर्व पूर्ण होगया है।

इस कार्य्यके करनेमें उदारचित्त सेठोंका बहुतसा द्रव्यव्यय हुआ है और मुझे भी यथाशक्ति बहुत चेष्टा करनी पड़ी है, इससे मैं आशा करता हूं कि हमारे भाई इस पुस्तकका भले प्रकार उपयोग करेंगे। यह पुस्तक हरएक मंदिरजीके भंडारमे तो रहना ही चाहिये तथा हरएक भाईको भी अपने उपयोगके लिये अपने पास रखना चाहिये।

जहांतक बना है योग्य कर्मचारियों द्वारा इस पुस्तकका ठीक संकलन कराया गया है तथापि यदि कहीं प्रमादसे व इन्स्पेक्टरोंके ठीक समाचार न लानेसे कोई त्रुटि रह गई हों तो सर्व पाठकगणोंसे निवेदन है कि उन त्रुटियोंकी सूचना हमको अति शीघ्र ही कर देवें। हम उनका बहुत उपकार मानेंगे। और दूसरी आवृत्तिमें उन त्रुटियोंको अवश्य ठीक कर देवेंगे। अन्तमें निवेदन है कि हमारे सर्वभाई इस पुस्तकका लाभ लेकर हमारे और उदारचित्त सेठोंके परिश्रमको सफल करें।

जौहरी बाजार
तारीख ३१ अगस्त
१९१३ ई०

जैन समाजका सेवक—
ठाकुरदास भगवानदास जौहरी
ऑनरेरी सेक्रेटरी दि० जैन डाइरेक्टरी—बम्बई.

॥ श्रीः ॥

अथ यात्रादर्पण विषयानु

विषयानुक्रमणिका।

राजपूताना मालवाप्रांत

विषयानुक्रमणिका ।

इति अनुक्रमणिका।



इति

अनुक्रमणिका

समाप्ता ।

श्रीअतिशयक्षेत्र अयोध्या।

फैजाबाद स्टेशनसे (O. R. Ry.) ४ मील तथा अभी खास स्टेशन अयोध्या और अयोध्याघाट (O. R. Ry.) और लकडमण्डी (Lakarmandi Ghat B. N. Ry.) है, दिगम्बर जैन मन्दिरजी पांच हैं १ धर्मशाला है। यह नगर जैनियोंका और जैनधर्मका मुख्य स्थान अत्यन्त प्राचीन कालसे रहता आया है। यहां तीर्थंकरोंके जन्मकल्याणकके स्थान और चिह्न बहुत प्राचीन कालके हैं, कालचक्रके प्रभावसे उन स्थानोंके प्राचीन मन्दिर ढह गये।

हालमें जो दिगम्बर जैनियोंके मंदिर मौजूद हैं उनमेंसे कोई भी प्राचीन कालका नहीं है, उनको सुजाउद्दौलाके वक्त केसरीसिंह नामक खजानचीने निर्माण किया। उन सबपर १७८१ सम्वत् खुदा है। शाहबुद्दीनके समयमें प्राचीन जैनमन्दिरोंको शहासुजात नामक एक मुसलमानने नष्ट कियाथा ऐसा सुन पड़ता है।

आदिनाथ महाराजका मन्दिर स्वर्गद्वारके नजदीक है व अजितनाथका इटावा तालावके पास है और अभिनन्दननाथजीका मन्दिर नबाबी सरायके स्थानमें। अनंतनाथजीका गोलाघाट नालाके किनारे, सुमतिनाथजीका मन्दिर रामकोटमें है। अन्तिममन्दिरका सम्बत् १९३६–१९४१ में बहुत नयी इमारतके साथ फिरसे जीर्णोद्धार कराया गया। मूर्तियां नये मकानमें विराजित हैं परन्तु चरण पुराने स्थानमें ही सुशोभित हैं।

चतुर्थ कालमें यहां राजा प्रजा दोनों जैनी थें और यहां सरयू नदी बहती है। श्री आदिनाथजी तथा श्री ऋषभनाथजी प्रथम तीर्थंकर, अजितनाथजी द्वितीय तीर्थंकर श्री अभिनन्दन नाथजी चौदहवें तीर्थंकर और श्रीसुमतिनाथजी पांचवें तीर्थंकर इन पांच महान् पदवीधारक पुरुषोंने जन्मधारण करके भव्य जीवोंको संसारसमुद्रसे पार किया परन्तु अभी इस हुंडाव सर्पिणी कालदोषसे इस नगरमें कोई जैनीका गृह नहीं है, परन्तु तीर्थक्षेत्र होनेसे दिगम्बर पंचायती मंदिर है, जो अयोध्याघाटसे ४ फर्लांगकी दूरी पर हनुमान गढीके निकट बना है जिसमें २ बेदी हैं। मन्दिरके सामने दिगम्बर जैनधर्मशाला है कि जिसमें ४०० मनुष्यके अनुमान ठहर सकते हैं। इसका जीर्णोद्धार बाबू देवीसहायजी रईस फिरोजपुर (छावनी) निवासीने कराया है. इस धर्मशालासे १ फर्लांगपर राघवघाटके सरजूनदीके तटपर

श्री अनन्तनाथस्वामीके चरण मन्दिरमें वेदीपर श्यामवर्ण पत्थरपर खुदे हैं। इस मन्दिरजीके भीतर अनुमान १०० मनुष्योंको बैठनेकी जगह है। इस मन्दिरसे १ मील दूरीपर सरगद्वारी मुहल्लामें आदिनाथ महाराजका मन्दिर है, जिसमें भी महाराजके सिर्फ चरण पत्थर पर खुदे हैं। इससे आधे फर्लांगकी दूरीपर श्री अजितनाथ स्वामीजीके चरण मंदिरजीमें हैं। इससे थोडी दूरपर श्रीअभिनन्दन महाराजके चरणोंका मन्दिर और इससे निकट ही सुसाटी मुहल्लामें फारविरस्कूलके निकट खेतमें श्री शीतलनाथ नामके एक मुनिराजके चरणोंका मन्दिर है। इनमेंसे ४ मन्दिरजीमें श्यामवर्ण पत्थरपर महाराजके चरण तथा प्रतिष्ठाका सम्बत् १७८१ वि० मिती मगशीर शुक्ल ९ बुधवार केसरीसिंह दिल्ली निवासी स्थापकका नाम खुदा है पश्चात् नवीन जीर्णोद्धार लखनऊके पञ्चोंने सम्वत् १९९६ विक्रममें कराया है।

पांचवां मन्दिर श्री सीतलनाथमुनिका है, उसमें जो पत्थर बेदीपर लगा है और उसमें जो अक्षर खुदे हैं वह बिलकुल बिगड गये हैं पढनेमें नहीं आते सिर्फ सं. १७०४ विक्रम स्थापक " भदारक दिल्ली निवासी " काष्टासंघ आम्नाय पढा जाता है। यह पांचों मन्दिरजीका तथा पंचायती बडे मन्दिरजीका जीर्णोद्धार सम्बत् १९६९ विक्रममें ला० देवीसहायजी रईस फिरोजपुर (छावनी) वालोंने कराया है। इसका प्रबंध लखनऊके पंच करते हैं। उन्हींकी ओरसे सूरजबली पांडे गौड ब्राह्मण पंचायती मन्दिरजीमें तथा जन्मस्थानके मन्दिरजीमें पूजन प्रक्षाल करते हैं। आमदनी खर्च तीर्थस्थानके कारण बराबर हो जाती है। खर्चकी कमी नहीं रहती है, पूजन प्रक्षालका प्रबंध अच्छा है।

श्रीअतिशयक्षेत्र अहिक्षतजी।

शहारनपुर और लखनऊके बीचमें रेलवे स्टेशन आंवला नामका है यहांसे अहिक्षतजी ६ मील हैं। गांवका नाम राजनगर है। इस क्षेत्रपर श्रीपार्श्वनाथ भगवानको तपके समय कमठके जीवने बहुत बड़ा उपसर्ग किया था और श्रीभगवानको केवल ज्ञान हुआ था। हरसाल चैत्रवदी ८ से १२ तक बड़ा मेला होता है यात्रियोंके ठहरनेको रामनगरसे बाहर एक बडी धर्मशाला है वहां एक मकानमें चर्ण पादुका हैं और यही स्थान अहिक्षतजी कहलाता है, गांवमें एक मालीके घरमें जिन प्रतिमा भी विराजमान है।

अलीगढ।



कलकत्तेसे अलीगढ़ ८२९ मील तथा दिल्लीसे ८४ मील (O. R. R. व E. I. R.) कमिश्नरी मेरटमें है। इसका दूसरा नाम कोयल भी है। कहते हैं कि, कोयल शहरको सूर्यवंशी खानदानके एक क्षत्रीने वसाया था। पुराने जमानेमें कोयल डोर राजपूत राजोंका गढ़ था। और इस समय जो अलीगढ़ है वहां उसकी विराद-रीके लोग रहतेथे। अब भी उस समयका किला मौजूद है। अलीगढ़में मोहमदन कॉलीज दूर दूर तक प्रसिद्ध है जिसको सर सय्यद अहमदने बनायाथा, इसकी पढ़ाई अच्छी होती है. दिगम्बर जैनी लोगोंके गृह २४७ तथा मन्दिर ५ हैं। खिरनीकी सराय तथा छिपैटी मुहल्लामें हैं खिरनीकी सराय मुहल्लेके जैनमन्दिर अच्छे स्वर्ण चित्रकारीके बने हैं। यहां पंडित प्यारेलालजी और श्रीलालजी जैन विद्वान् हैं।

आगरा।



यह वड़ा और खूबसूरत शहर जिसको अकबराबाद भी कहते हैं दरया यमुना नदीके दाहने किनारेपर वाके है। इसको हिंदुस्थानका तीसरा प्रसिद्ध मुगल बादशाह अकबरने १५६६ ई० में वसाया था। और सो वरषसे भी जियादा तक मुगल बादशाहोंकी राजधानी रहा।

यह शहर ताजमहलके सवव सारे हिंदुस्थानमें प्रसिद्ध है। इस इमारतको शाहजहानने जिसको इमारतोंका वढ़ा शौक था। और जिसका नाम इसी लिये आज तक प्रसिद्ध है सन् १६४८ ई० में अपनी प्यारी वीवी (स्त्री) अर्जमन्दवानो वेगमकी कवरपर वनायाथा। इसमलकाका नाम लोगोंमें मुमताजमहल महशूर है।

आगरेमें और भी देखने योग्य अकवरका वनाया हुआ लाल पत्थरका किल्ला है। इस किलेमें माछीका वावन शीसमहल, मोतीमशजिद, शहरके वाहर एतमाददौलाकी मकवरा और शीशमहल देखने योग्य हैं।

यहां संगतराशीका काम विशेष होता है, व्यापार नाना प्रकारका होता है। यहां जैनधर्मावलम्बियोंके ठहरनेका सुभीता मोतीकटराके धर्मशालामें विशेषकर है। यहां दिगम्बर जैन मन्दिरोंकी संख्या २८ तथा गृहसंख्या १२७५ और मनुष्य संख्या ४७६५ है जो १३ मुहल्लोंमें निवास करते हैं।

आजमगढ़।



यह शहर आजमगढ़ रेल्वे (बी. एन. डब्ल्यू.) स्टेशनसे ३ मीलके फ़ासलेपर है। स्टेशनके निकट दो धर्मशाला मुसाफिरोंके ठहरनेके लिये बनी हैं, जिसमें १ बहुत मजबूत, बीचमें कोठी और चारोंतर्फ कमरे व कोठरियां बनी हैं। और उसके निकट कचेहरियां व जेल और पोस्ट ऑफिस हैं। यहां देशी कपडा बुना जाता तथा व्यापार देशी कपडेका ही विशेषकर होता है। यहां दिगम्बर जैनी भाइयोंका १ गृह तथा १ चैत्यालय है।

इटावा।



यह ग्राम कमिश्नरी आगरामें (ई. आई. आर.) रेलवेके लाइनपर बसा है। १ जैन धर्मशाळा यहां कर्णपुरमें है जो रेलवे स्टेशनसे १॥ मील दूरीपर है। यहां ४ शिखरबन्द मन्दिर तथा ३ चैत्यालय हैं। जैनियोंकी गृहसंख्या १४८ है जिनमें मनुष्यसंख्या ७९४ तथा ७९ धर्मशास्त्र हैं। व्यापार यहां रुई, तेल, देशी कपडा आदिका होता है। यहां बाबू चंद्रसैन जैनवैद्य और पंडित पुत्तूलालजी जैन धर्मके ज्ञाता और परोपकारी हैं।

यमुना नदीके तटपर खटखटा फकीरका मठ बना है जिसकी यात्रा हिन्दूलोग करते हैं।

श्रीअतिशय क्षेत्र (इलाहाबाद) प्रयाग।



यह बड़ा सिविल और मिलिटरी शहर O. R.R., E. I. R. तथा G. I. P. रेलवे लाइनोंके जंक्शन में है और गंगा, यमुना और सरस्वतीके संगमपर बसा है। यहां एक अक्षयवट भी है जो इस समय किलेके अन्दर आया हुआ है और जमीनके नीचेसे बहुत दूर अन्धेरेमें होकर दर्शन होते हैं। कहते हैं कि श्रीआदिनाथ स्वामीने यहांही तप धारण किया था। किलेमें बहुत प्राचीन जैनमूर्त्ति भी हैं। यह शहर प्रयाग नामसे भी प्रसिद्ध है और युनाईटेड प्रोविंसेजकी राजधानी है, यहां हाईकोर्ट और इलाहाबाद युनिवर्सिटी (महाविद्यालय) प्रसिद्ध है।

दिगम्बर जैनी भाइयोंके यहां ८९ गृह हैं और बाबा शिवचरणलाल यहां प्रसिद्ध साहूकार है। यहां ४ शिखरबन्द मन्दिर तथा ५ चैत्यालय तथा १ धर्मशालाभी है।

ऐलफरेड पार्क जो सन् १८७० में डियूक आफ ऐडिनबरोके हिन्दुस्थान आनेकी यादगारीमें बनाई गई थी बहुत खूबसूरत है। मकफर्सनपार्क छावनीमें और रेलवे स्टेशनके पास खुशरोबाग जिसमें तीन मक़बरे हैं देखनेके लायक हैं।

इलाहाबादमें कई उम्दा होटल और सराय हैं स्टेशन पर भी आराम कमरे हैं सवारी हरवक्त मिलती है। स्टेशनके बाहर ही लाला बिहारीलाल कुंजलालकी धर्मशाला है जहां सब चीज मिल सकती है।

इस शहरकी सन् १८५७ ई० के गदरमें एक देसी पल्टन बिगड गई थी इसलिये इसके नामपर बगावतका बट्टा है।

एटा।



यह इसी नामके जिलेका मुख्य शहर B. B. & C. I. तथा R. K. R. लाइनके रेलवे स्टेशन कासगंजसे १४ कोस दूरी पर है, यहां ५७६ दिगम्बर जैनियोंकी बस्ती तथा १०० गृह हैं। यहां १ शिखरबन्द मन्दिर, १ चैत्यालय है, पूजन प्रक्षाल योग्यतासे होता है।

कन्नौज।



यह कसबा फरुखाबाद जिलेमें है। यहांकी बस्ती बहुत पुरानी है इसको सतयुगमें पडवार त्रेतामें कुशस्थली और द्वापरमें गाद्यपुरी और कलयुगमें कन्नौज नाम होनेका कारण यह है कि यहां अगले समय बड़े २ नामी राजा होगये। इस शहरका नाम एक राजाकी कन्या कुबजी होनेके कारण कोई उसके साथ विवाह नहीं करता था। लाचार होकर एक ब्राह्मणके साथ विवाह कर दिया गया; इसलिये उसकी यादगारीमें कान्यकुब्ज कहलाने लगा, अब बोलचालमें कन्नौज कहलाता है।

यहां दिगम्बर जैनियोंकी प्रायः २०० की बस्ती है, दो शिखरबन्द मन्दिर तथा ७० धर्मशास्त्र हैं यहांका किला राठौर राजाओंका काली नदीके किनारे डेरसा बड़ा है इसमें पहले तीस हजार तम्बोलियोंकी दूकानें थीं आबादीसे कुछ दूरपर दो मकान बारादरीके नामसे बने हैं जिनको लोग आल्हा ऊदलकी कचहरी बताते हैं। यहां गट्टे मिठाईके तथा इत्र देशी कागज़, और देशी छींटें अच्छी बनती हैं। इत्र और तेल यहांका प्रसिद्ध है।

श्री अतिशय क्षेत्र कम्पलानगरी।

यह तीर्थक्षेत्र जिला फरुक्खावाद कायमगंज (बी. बी. सी- आय.) रेलवेस्टेशनसे ८ मीलपर है। यहांसे श्रीविमलनाथजी तेरहवें तीर्थंकरने तप धारण करके केवल ज्ञानकी प्राप्ति की है और इसी नगरमें उनका गर्भ, जन्म, तप, यह कल्याणकजी हुए हैं। उस समयमें यहां राजा प्रजा सब जैनी थे परन्तु इस समय जैनी मात्रका यहां घर भी नहीं है। तीर्थस्थान होनेके कारण फरुक्खावाद, मैनपुरीके पंच मन्दिरजीका पूजन आदिका प्रबन्ध करते हैं उनकी तरफसे एक पुजारी पूजा करनेके लिये रहता है। धर्मशाला भी है। चैत्रमासमें प्रतिवर्ष यहां जैनरथोत्सव भी होता है।

कहाऊँगांव श्रीअतिशय क्षेत्र सेलामपुर।

मजोम्ली परगनेमें जिलेके मुख्य नगर गोरखपुरसे आग्नेय कोणकी तरफ ४६ मीलकी दूरीपर है। इस ग्राममें एक स्तंभ है जो उत्तरकी ओर है।

इसकी ऊंचाई २४ फुट है, यह बढ़िया लाल पत्थरका बना हुआ है। लेख जो इसपर खुदा हुआ है, उसके अक्षर साफ तथा गहरे हैं, नीचे उसकी नकल है। स्तम्भका आधार भूमिसे ४½ फुटकी उंचाई तक १, १० का वर्ग है, ९, ६ पर ६, ३ की उंचाई तक यह एक अष्टकोणके रूपमें है। इस शराकार भागके उत्तरीय तीन पहलुओं पर लख पाया जाता है। इसके ऊपर ५, १०½ खडी उंचाईका एक भाग १६ पहलूका है, फिर २,११ की उंचाई तक यह गोल है इसके ऊपर ९ मोटा तथा १८ लंबा चौडा एक वर्ग है, असल स्तम्भ इस वर्ग तक ढालू होता गया है।

४½ ऊंची मेखलापर और लाटोंमें उपर्युक्त पेरोपोलिटिन (Paropolitan Type) ढंग का एक शिखर २, १½ ऊंचा है, मुख्य २ अंश घंटेके आकारका तथा नडमय है।

इसके ऊपर एक वर्गखंड है जिसपर हर तरफ दिगम्बर तीर्थंकरोंकी खडी हुई मूर्त्तियोंवाले छोटे २ छः आले हैं। ऊंचे एक गोल खड्डेमें एक लोहेकी कील घुसेडी हुई है। इसपर शायद कोई जैनधर्मका चिह्न लगा हुआ हो।

इलुराके इन्द्रसभा जैन गुफा मन्दिरके चौकमें सुन्दर इकरंगा स्तम्भ, जिसको इसका प्रतिरूप मान सकते हैं उसपर एक चौमुख वा चार जिन मूर्ति थीं स्तम्भके पश्चिमीय भागमें एक धरणेन्द्र सहित पार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति है।

(नक़ल)

सिद्धम् ।

—⁂—

(१) यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरः पातवातावधूता (२) गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्व्वोत्तमर्द्धेः । (३) राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपतेः स्कंदगुप्तस्य शान्ते (४) वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरकशततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने (५) ख्यातेस्मिन् ग्रामरत्ने कुकुम इति जनैस्साधु संसर्गपूते (६) पुत्रो यस्सोमिलस्य प्रचुरगुणनिधे र्भट्टिसोमो महात्मा । (७) तत्सूनूरुद्र सोमः पृथुलमतियशा व्याघ्र इत्यन्यसंज्ञो (८) मद्रस्तस्यात्मजोऽभूद्द्विजगुरुयतिषु प्रायशः प्रीतिमान्यः (९) पुण्यस्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो (१०) श्रेयोर्थं भूतभूत्यै पथिनियमवतामर्हतामादिकर्तॄन् ॥ (११) पञ्चेन्द्रान्स्थापयित्वा धरणिधरमयान्सन्निखातस्ततोऽयम् (१२) शैलस्तम्भ सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमः कीर्तिकर्ता ॥

भावार्थ—जिनके दरबारका आंगन प्रणत सैकडों राजाओंके नतमस्तकोंसे वीजित होता है; प्रचारित कीर्ति, गुप्तवंशमें उत्पन्न, सबसे अधिक सम्पत्तिवाले: शक्रके समान, सैकडों राजाओंके स्वामी उन स्कन्दगुप्तके शान्तिमय राज्यमें १४१ सम्वत् ज्येष्ठ मासके आनेपर इस रत्नसदृश ग्राममें (जो कुकुमनामसे प्रसिद्ध है) और जो सज्जनोंके संगसे पवित्र है, इसमें महात्मा भट्टीसोम गुणनिधि सोमिलका पुत्र जिसका पुत्र रुद्रसोम व्याघ्रापरनामा विशालकीर्ति तथा विशाल बुद्धिवाला है; जिसका पुत्र मद्र विशेषतः ब्राह्मण, गुरु, यतियोंपर प्रीति तथा मान करनेवाला इस जगतको चंचल जानकर भीत होकर उसने अपने तथा सर्व जगतके कल्याणके लिये पुंण्यस्कंध बनाया, पत्थरके पांच इन्द्र अधिकारी (तीर्थंकर) यतियोंके मार्गमें बनाये और यश फैलानेवाला पत्थरका स्तंभ बनाया जो कीर्ति करनेवाला पर्वतोंके शिखरोंके सदृश सुंदर है। इति ।

लेखसे स्पष्ट मालूम होताहै कि यह स्तम्भ जैनियोंका है। यद्यपि वर्तमान कालमें कोई मन्दिर आसपास नहीं है तथापि स्तम्भसे २५ फुट उत्तरकी ओर प्राचीन ईंटोंकी नवि पाई जाती है, जिससे मालूम होताहै कि अवश्य प्राचीन कालमें मन्दिर होंगे। इस उपरान्त प्राचीन दो मन्दिरोंके अवशेष स्तंभके पूर्वकी तरफ़ २०० गजकी दूरीपर वर्तमान है। जो बूचननके कालमें थे। इनमें एकमें कायोत्सर्ग्ग-मुद्रायुक्त श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति अबतक विद्यमान है।

कानपूर ।



यह एक बहुत बडा व्यापारके लिये प्रसिद्ध नगर ई. आई. आर., जी. आई.पी., ओ.आर. आर. आदि रेलवे लैन पर है। सन् १८५७ में यहां बडा भयानक गदर हुवा इस वास्ते यह शहर और भी मशहूर है। शहरके अन्दर नहर पक्की वही है जिसके हाकिम आजकल भारतवर्षीय दिगम्मर महासभाके जनरल सेक्रेटरी मुन्शी चम्पतरायजी डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट हैं और गंगानदी भी यहां निकली है। दिगम्बर जैनधर्म्मावलम्बी पुरुष भी खास शहर जनरलगंजमें अधिक निवास करते हैं, यहां सब मिलकर दिगम्बर जैनियोंकी गृह संख्या २७८ तथा मनुष्य संख्या १२५६ है। पंचायती जैन मन्दिर भी जनरलगंज में अति सुंदर है जिसमें स्वर्णका काम सच्चाबना हुआ है, और ३ मन्दिरजी, १ चैत्यालय भी है। नई सडकके निकट १ दिगम्बर जैन धर्मशाला बहुत बडी है जिसमें यात्रियोंको बडा आराम मिलता है। धर्मशालाकी सफाई और बन्दोबस्तके लिये एक जमादार तथा १ खिदमदगार नौकर है, उसी धर्मशालामें जैनऔषधालय भी है। वैद्यराज पं० कन्हैयालालजी जैन बहुत लायक हैं। जनरलगंज मंदिरजीके पीछे एक दिगम्बरजैन पाठशाला है जिस में विद्यार्थी संस्कृत विद्याका अध्ययन करते हैं। यहां दो सभा भी हैं.। शास्त्रसभामें भी अधिक आनंदकी प्राप्ति होती है। पंडित दुर्गाप्रसादजी अच्छे वक्ता हैं। कानपुर अब व्यापारकी बडी भारी मण्डी है। बीसों कारखाने हैं जिनमें चमडेका सामान बनने तथा ऊनके कपडे आदि बननेका काम मुख्य है. तथा देशी शक्करके भी कारखाने हैं।

कालपी।



यह शहर जिला जालौनमें जमुना नदीके निकट (G I P. Ry.) स्टेशनके पास है. यहां कालपदेवने तपस्या की थी इससे इसका नाम कालपी पडा। यहांसे एक मीलकी दूरीपर यमुना और जोंधरके संगमपर व्यासजीका जन्म हुआ था इसीसे यह व्यासक्षेत्र कहलाता है। यह पुरानी बस्ती जमुनाके दाहिने किनारे पर है। अकबरके समय यहां शिक्का बनानेका कारखाना था। जैनी भाइयोंके सिर्फ ४ गृह तथा १ शिखरबन्द व १ बिना शिखर मन्दिर हैं।

श्री अतिशयक्षेत्र कुरगमा।

यह एक छोटासा ग्राम जिला झांसी खास जी. आई. पी. रेल्वे स्टेशनसे ९ मील पक्की सडक जो कानपूरसे झांसीको आई है वहां है। ग्रामके निकट लाला हरप्रसाद देवकीनंदनका एक बाग है, उस बागमें पक्का कूआं तथा १ तीन दरका पक्का बंगला और १ मकान उसी बंगलाके सामने है। मकानके दाहने हाथपर एक मठ है जिसमें मोहरेके भीतर सामने १ सिताम्बर प्रतिमाजी श्यामवर्ण श्रीमहावीर स्वामीकी ४ फुट ऊंची पद्मासनस्थ विराजमान है, उनके चरणोंके तले सम्वत् १८५१ माघ सुदि ९ खुदा है। दो प्रतिमा श्रीपारसनाथजीकी ४ फुट ऊंची सम्वत् १३४३ फालगुण वदि ९ की श्यामवर्ण पद्मासनस्थ विराजमान हैं। एक प्रतिमा श्री पारसनाथजीकी श्यामवर्ण२ फुट ऊंची पद्मासनस्थ विराजमान है। तीसरी प्रतिमा श्यामवर्ण महावीर स्वामीजीकी पद्मासनस्थ ३ फुट ऊंची विराजमान है इनके चरणके तले सम्वत् १३४४ फाल्गुन सुदि ११ खुदा है।

इस प्रकारसे १ लैनमें पांच प्रतिमाजी विराजमान हैं।

दूसरी लैनमें एक प्रतिमा श्रीमहावीरस्वामीजीकी पद्मासनस्थ ३ फुट ऊंची सम्वत् १३४३ (महीनेके अंक बिगडगये) खुदा है। दूसरी प्रतिमा श्रीपारसनाथजीकी श्यामवर्ण ३ फुट ऊंची अधिष्ठित है।

इस मोहरेमें दो प्रतिमा और खडगासनस्थ अगलबगल श्री पारसनाथजीकी ३ फुट ऊंची विराजमान हैं।

जिन २ प्रतिमाओंपर सम्वत् नहीं है उनको लोग झांसीके चतुर्थकालकी बतलाते हैं।

प्रतिमाजी सर्व अतिमनोज्ञ व दर्शन योग्य हैं, पूजन प्रक्षालका प्रबंध लाला हर-प्रसाद देवकीनन्दनजी झांसीवालोंका है।

कौसांबी।

फफोसाजीसे ४ मील वा इलाहाबादसे १६ कौस गडबाहा ग्राम है जिसको शास्त्रोंमें कोशाम्बी कहाहै रास्ता गाडीका है।

यहां श्रीपद्मप्रभ स्वामीके गर्भ और जन्मकल्याणक हुए हैं, यह एक पुण्यभूमि है कि, जहां भगवान्‌के चार कल्याणक हुए हैं, यहां मंदिरजी और प्रतिमाजी वहुत मनोज्ञ हैं।

फफोसा और कोशाम्बीके प्रबन्धकर्ता लाला गुलजारीमलजी इलाहाबादनिवासी हैं।

खुरजा।

जिला बुलंदशहरमें ई. आई. आर. रेलवेके खुरजा स्टेशनसे कसवा तीन ३ मील है। सडक पक्की है घोडागाडी, वैलगाडी आदि सवारी सुगमतासे मिलती हैं।

इस कसवेमें कपास, गुड, शक्करका विशेषकर व्यापार होता है। यहां रानीवाले रायबहादुर सेठ अमोलकचन्दजी रईसके वनवाये हुए लाखों रुपयेकी लागतके जैनमन्दिर हैं। मन्दिरमें सुवर्णके चित्राम अच्छे २ बने हैं। यहां दिगम्बर जैनमन्दिरजी तीन शिखरबन्द और १९० गृह हैं जिनमें ९३३ आदमी रहते हैं।

इस प्रान्तमें यहांसे बढ़कर जैनमन्दिर कहींके नहीं हैं तथा उक्त सेठजीकी ओरसे विद्यालय भी है। यहां रानीवाले पंडित मेवारामजी जैनधर्मके अच्छे ज्ञाता हैं।

श्रीवृत्तान्तक्षेत्र खूखंदोजी।

गोरखपुरसे वी. एन. डब्ल्यू लाइनमें नोनवार स्टेशनसे १॥ मील खूखन्दोजी नामक क्षेत्र है जिसका प्राचीन नाम कांकडीनगरी वा किष्किन्धापुर है। यहां पुष्पदन्त स्वामीका गर्भ जन्म कल्याणक हुआ है तथा उन्हींके नामका प्राचीन मन्दिर है, जिसमें एकही प्रतिमा पद्मासनस्थ विराजमान है। मन्दिरके पूजन प्रक्षालका प्रबन्ध वावू गुलावचन्दजी रईस छपरा (सारन) निवासीका है, आपकी तरफसे पूजनप्रक्षालके लिये पुजारी भी रक्खा है। प्रबन्ध योग्य है।

गोरखपुर।

वी. एन्. डब्ल्यू. रेलवेकी लाइनका स्टेशन और रेलवेका हेड क्वारटर (सदरमुकाम) तथा वर्कशॉप है। यहां हिन्दुओंके प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथजीका मन्दिर प्रसिद्ध है रावती नदीके किनारे पर वसा है।

गोरखपुर स्टेशनसे एक मीलके फासलेपर शहरके अलीनगर मुहल्लेमें जैनी भाइयोंके १४ घर अग्रवाल जैन हैं, सब खुशहाल जमींदार हैं। १ शिखरबन्द मन्दिर बहुत सुन्दर बना है जिसमें छह वेदियों पर छह प्रतिमायें विराजमान हैं। मन्दिरके मुताअल्लिक मिली हुई फुलवारी है, उसके बराबर धर्मशाला नीचेके खनमें और ऊपरके खनमें प्रतिमाएं हैं। पूजन प्रक्षाल बहुत अच्छी तरहसे भाई लोग करते हैं। रोजगार यहां हर प्रकारका होता है। यहां साबरकी तकिया और नमदा अच्छे बनते हैं। विशेषकर चमडा तमाखू वगैरहका व्यापार होता है। खूखंदोजीकी यात्राके लिये यहांसे यात्री लोग गमन करते हैं।

श्रीअतिशयक्षेत्र चंद्रपुरी।

वा

चन्द्रावती।

यह स्थान बनारससे १४ मील, सारनाथ रेलवे स्टेशनसे ९ मील गंगानदीके किनारेपर है। सारनाथपर सवारी नहीं है।

यह तीनसौ वर्ष पहिले रघुवंशी सरदार देवमन देवका स्थान था और उन्हींका बनाया हुआ किला गंगाके अभि किनारे है, यहां पांचही जैनी हैं इस ग्रामका नाम देवमनदेवकी स्त्री अथवा कन्याका–चन्द्रावती–रक्खा कहते हैं।

यहां श्रीचंद्रनाथ (चन्दाप्रभू) का जन्मकल्याणक मन्दिर है। मन्दिरके भीतर श्यामवर्ण पद्मासन २ फुटके अनुमान ऊंची प्रतिमा महाराज चंदाप्रभुजीकी विराजमान है, तथा स्फटिकवर्ण पाषाणकी ४ प्रतिबिम्ब और भी छोटी २ हैं। यह मन्दिर भी स्वर्गवासी बाबू देवकुमारजी रईस आराके पितामह बाबू प्रभूदयालजीका बनवाया है पूजन प्रक्षालका प्रबन्ध बाबू देवकुमारकी रियासतसे होता है। मन्दिरके निकट एक धर्मशाला भी बनी है।

चन्दौसी।



जिला मुरादाबाद अलीगढ़के बीचमें (O. R. Ry.) चन्दौसी स्टेशन है, स्टेशनसे शहर १ मीलकी दूरीपर है यहां नाज, गुड़, शक्करकी तिजारत होती है जैनी भाइयोंक यहां सिर्फ ५ गृह हैं।

श्री अतिशय क्षेत्र चांदपुर।

श्रीशान्ति महाराजजी।

यह अतिशयक्षेत्र झांसी जिलामें (G. I. P.) जाखलौनसे ९ मील शूमेके पहाडके नीचे तालावके किनारे २ दिगम्बर जैन मन्दिरजी शिखरबन्द हैं जिनमें एक मन्दिरजीमें एक प्रतिमा श्रीशान्तिनाथ स्वामीकी श्यामवर्ण खड्गासन प्रतिबिंब १० हाथ उंची सम्वत् १२०० की है और २० प्रतिबिम्ब छोटी छोटी पाषाणकी पद्मासन और विराजमान हैं।

दूसरे मन्दिरजीमें भी २० प्रतिमा छोटी छोटी विराजमान हैं। यह दोनों मन्दिरजी सम्वत् १२०० में बनाये गये थे जिनकी कारीगरी अभीतक देखने योग्य है।

श्रीक्षेत्र चौरासी।

यह क्षेत्र मथुरासे १ मील जमुनानहरके बम्बाके किनारेपर एक छोटासा ग्राम है और उसके पास एक मैदानमें एक आलीशान दिगम्बर जिनमंदिरजी और मन्दिरजीके चारों तरफ धर्मशाला यात्रियोंके लिये बनी हैं।

इस मन्दिरजीमें जम्बू स्वामीके चरण हैं, यहांसे श्रीस्वामी महाराज अंतम कवली निर्वाण पधारे हैं, उन केवली भगवानकी निर्वाण भूमिके कारण यह चौरासी तीर्थस्थान हैं। प्रति वर्ष कार्तिक कृष्ण द्वितीयासे कृष्ण ८ तक जैन रथोत्सवका मेला होता है. इस मेलेका प्रबंध मथुराके पंचायतसे होता है। यहांकी आब हवा अच्छी है।

झांसी।

जिला झांसी पश्चिमोत्तर प्रदेश आगल अवधमें है। शुरू अमलदारी गवर्नमेन्टमें यहांकी रानीने ७ दिन तक गवर्नमेन्टका मुकाबला कियाथा।

झांसी शहर ओरछा राजा-वीरसिंघ देवने जहांगीरके वख्त बसाया है। यहांकी रानीका किल्ला अबतक पत्थरका बना हुआ है, परन्तु गवर्नमेन्टकी तरफसे अन्दर

अधिकारमें है। अब वह साधु परलोकगमन कर गया है और उसकी स्त्री जीवित है। अपने स्वामीके तरहसे वह साधुनी स्त्री भी अपना अधिकार जमाये है यानी जो विदेशी यात्री उस प्रतिमाके दर्शन पूजन निमित्त जाते हैं उनसे वह ।) आना तथा ॥) आना तक चढ़ावा भेंटके तौरपर लेकर दर्शन तथा पूजन करने देती है। और प्रतिदिन इस ग्रामके निवासी जो जैनभाई पूजन करते हैं उनसे किसी प्रकारकी भेंट आदि नहीं लेती है। इस प्रतिमाजीको इस प्रान्तके लोग चतुर्थकालकी बतलाते हैं। सन् संवत् प्रतिमाजीपर कुछ ज्ञात नहीं होता है क्योंकि जिस कोठरीमें महाराज विराजमान हैं उसमें बहुत अंधेरा रहता है, दीपक आदिका प्रकाश वह ब्राह्मणी साधुनी करने नहीं देती। प्रतिमा बहुत मनोज्ञ है दर्शन करनेसे बडा आनंद प्राप्त होता है।

देवगढ़।

झांसी जिलामें जाखलोन नामक(G. I P. Ry.) स्टशनसे८ मील पहाड़ी जंगली रास्तेपर है। जाखलौनसे देवगढ़ ग्राम तक बराबर चारों तरफ ८ मील तक जंगल बहुत घना पडता है। खैर आदिके कांटेदार पेड रास्तेमें पडत हैं, कहीं २ पहाडी टीले ऊंचे नीचे भयावने तिर्यचोंके रहनेके स्थलमार्गमें दृष्टि आते हैं परन्तु नाहर चीता आदि भयावने तिर्यंच क्रूर जीव धर्मके प्रभावसे किसी यात्रीको पीडा नहीं पहुंचात।

देवगढ़ एक छोटासा पचास साठ घरका ग्राम है। इस ग्रामका मालिक आजकल गयाप्रसाद ब्राह्मण नम्बरदार हैं। इस ग्रामके पास थोडी दूर नीचे १ झील पहाड़ी टीलेके नीचे पडती है उस झीलके पाससे पहाड़पर जानेका सीधा रास्ता है, झीलसे १ फर्लांगकी चढाईके अनुमान मार्ग है, पहाड़ीके ऊपर बहुत वडा किलाका टूटा खंडहर इस समय मौजूद है। किलेका निशान फाटकसे ज्ञात होता है जो इस समय मौजूद है। फाटक लाल पत्थरका बहुत ऊंचा है और उसकी बनानेकी कारीगरी देखकर चकित होना पडता है उस फाटकके भीतरकी ओर चलकर चारों तरफ टूटेफूटे परकोटाके पत्थर पड़े हैं, और किलेके अन्दर बहुत घना विकट कांटेदार वृक्षोंका जंगल है, उस जंगलमें बहुत सम्भालकर चलने पर भी कपडे फट जाते हैं मार्ग नहीं है। उस किलेके जंगलमें असंख्यात जिन प्रतिमा खंडित पड़ी हुई हैं। इस समय९० जैनमन्दिर पत्थरके हैं। जिनमें कारीगरी देखने योग्य है। उन मन्दिरोंकी दिवारों पर चारों तरफ तथा भीतर हजारों प्रतिमाएं हैं। एक मन्दिरके मोहरेके भीतर ३० फुट ऊंची खड्गासनस्थ प्रतिमाजी हैं जिनपर संवत् आदि कुछ नही है, परन्तु जाखलौनके भाई शान्तिनाथ महाराजकी बताते हैं। पूछनेसे ज्ञात हुआ कि संवत् १२०० में यह मन्दिर वना था।

और तीसरा मठाधिपति महाराजका है। मठाधिपति तरुण पुरुष हैं; परन्तु बड़े चतुर और धनवान् हैं।

यहांसे करीब २ मीलपर 'विलुकम्' ग्राममें एक प्राचीन मन्दिर करीब एक हजार वर्षका प्राचीन है और ग्राममें एक तालावके पास श्री 'गुणसागर' महाराजके 'चरण चट्टानपर खुदे हैं। युगादीके (नयासालके शुरुके दिन) दिन बड़ा भारी उत्सव समारोहसे होता है जिसमें पूजाके अनन्तर दीन दुःखित और गरीब यात्रियोंको अन्नदान दिया जाता है।

त्रिचनापल्ली ।

मद्रास हातेमें कावेरी नदीसे एक मील, रेल्वेस्टेशनसे १॥ मील पूर्व जिलेका सदर स्थान त्रिचनापल्ली है। त्रिचनापल्ली जंकशनसे ३ मील उत्तर त्रिचनपल्ली फोर्टका स्टेशन है।

ई० सन् से अनुमान पांचसौ वर्ष पहिले यहां चोला चेरा और पांडववंशके राजा विद्यमान थे। इनका राज्य कई एक शकलमें सोलहवीं सदीतक विद्यमान रहा था। इनके राज्योंमें त्रिचनापल्ली चोल राज्यका एक भाग था; जिसकी राजधानी 'वोरैयर' नामक नगर था जो वर्तमानमें त्रिचनापल्ली की शहर तले है। यहां १७ वीं सदीमें अंग्रेज और [illegible]सियोंकी कई लडाइयां हुईं थीं।

देखने योग्य स्थान—किला १ मील लम्बा आधमील चौड़ा समकोण शकलका है; यह पहिले दीवार और खाई से घिरा हुआ था, किन्तु अब खाई भर दी है। किलेके भीतर ही चट्टान है, जिसपर शिव और गणेशका मन्दिर २४५ फुट ऊंचे टीलेपर है; चोटीपर से कावेरीनदी श्रीरंगमका उत्तम दृश्य दीख पड़ता है, चट्टानसे थोडी दूर दक्षिणकी ओर नब्बावका महल है, इसमें सर्कारी कचहरी और कई आफिस हैं, एक कालेज और जेल है।

मनुष्यसंख्या अनुमान ९१ हजार है, जैनी एक भी नही है त्रिचनापल्लीमें सोनेके सुन्दर गहने और चुरुट बहुत तैयार होते हैं। शहर व्यापारी है।

त्रिवेन्द्रम ।

मद्रास हातेके तिन्नेवेलीके रेल्वे स्टेशनसे साठ सत्तर मील, पश्चिमी घाटके समुद्रसे २ मील दूर त्रावनकोर नरेशकी राजधानी त्रिवेन्द्रम कस्वा है। त्रिवेन्द्रममें कई धर्मशाला हैं। भरतखंडके रजवाड़ोंमें यह राज्य बड़ौदाको छोड़ सबसे उन्नतिपर है। त्रावनकोरका राज्य रामराज्य कहलाता है। यहांके राजा बड़े धर्मात्मा और दानवीर हुये हैं। महाराज प्रतिवर्ष परमार्थ कामोंमें ८–१० लाख रुपया खर्च करते हैं। त्रावनकोरमें वर्षा बहुधा वर्षभर हुआ

करती है; इससे देश देखनेमें सुन्दर और रमणीय लगता है, चारों ओर सदा हरियालीकी शोभा रहती है। धानके खेत और नारियल तथा ताड़के सुन्दर जंगल हैं, समुद्रके पास चाह, काफी, धान, नारियल, ताड़, गोलमिर्च, अदरक, अंगूर, खजूर, बड़ीइलायची एरका फल और वेशकीमती लकड़ी वहुत पैदा होती है। लोहेकी कई खाने हैं, यहांके जंगलोंमें हाथी बहुत होते हैं। यहांकी उत्पन्न हुई चीजोंका अधिक व्यापार होता है।

यहांके रीति रिवाज दूसरे प्रान्तोंसे भिन्न व विचित्र ही प्रकारके हैं। बहिनके वंशवाले धन जायदादके मालिक होते हैं। राजाकी बहिन ही रानी कहलाती है और बहिनका पुत्र युवराज कहलाता है।

त्रिवेन्द्रममें एक डाक्टरीका स्कूल, लड़कियोंका स्कूल, हाईस्कूल, दवाखाना, बीमारखाना, बहुतेरे आफिस, अंग्रेज रेजीडेंटकी कोठी, महाराजा कालेज, २ जेलखाने, अजायबघर, नक्षत्रादि देखनेका उच्चगृह, फौजी छावनी, हथियार खाना, अस्पताल, पहाडीपरका सुन्दर राजमहल, ऊंची दीवारसे घिरा हुआ त्रिवन्द्रमका किला, किलेके भीतर राजकुमार और राजकुमारियोंके सुन्दर महल, टकसाल, आफिस और पद्मनाभका सुप्रसिद्ध मन्दिर है। पद्मनाभके भोगरागकी बड़ी तैयारी होती है, मन्दिरके खर्चके लिये ७५ हजार रुपयेकी आम्दनीकी भूमि है। इत्यादि कई स्थान देखने योग्य हैं।

त्रिवेन्द्रमकी मनुष्यसंख्या अनुमान २८ हजार है, जैनी एक भी नहीं है।



शिलालेख १ मन्दिरके पास लगा है वह पढ़ा नहीं जाता, अक्षर दूसरी भाषाके टे और घिस गये हैं।

इस किलेके जंगलमें मन्दिरके पास ही नाहरके रहनेका स्थल लोग बताते हैं तथा और भी क्रूर जीव रहते हैं परन्तु आजतक किसी यात्रीको बाधा नहीं हुई। यहां ऐसा बिकट जंगल है कि देखनेसे हृदय रोमांचित होजाता है, परन्तु जिनमन्दिरोंके पास ऐसा अतिशय है कि दर्शन करनेसे अपूर्व आनन्दकी प्राप्ति होती है। जाखलौनसे देवगढ़ तक यात्रियोंको चाहिये कि पानीका प्रबंध साथ रक्खें मार्गमें ५ मीलतक पानीका स्थान नहीं है।

देवबन्द।



जिला सहारनपुरमें नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर मुज़फ़्फ़रनगरसे १५॥ मील उत्तरकी तरफ रेलवे स्टेशन देवबन्द (N. W. R.) से ४ फर्लांगपर कसबा है। यहां पांडवोंने अपने वनवासमें निवास किया था ऐसा मालूम होता है। यहां एक प्राचीन देवीका मन्दिर है। यहां दिगम्बर जैनमंदिरजी ४ हैं तथा ८० अग्रवाल जैनियोंके गृह जिनमें ४०० मनुष्यसंख्या हैं। धर्मशास्त्र २०० के अनुमान हैं। ग्रामके बाहर देवीकुण्ड नामक एक तालाब है जो मंदिर, घाट और सातियोंकी छत्रीसे आच्छादित है।

यहां बाबू सूरजभान वकील और बाबू युगलकिशोर मुख्तार जैनधर्मके ज्ञाता परोपकारी हैं। यहां दिगम्बर जैन ग्रंथोंका कार्य्यालय भी है तथा जैनप्रचारक और नारीहितकारीके सम्पादक बाबू ज्योतीप्रसाद यहां रहते हैं। यहां ब्लैंकेट बहुत अच्छे बनते हैं।

श्रीक्षेत्र पवाजी।



झांसी जिलामें तालबेहट स्टेशन G. I. P. रेलवे लाइनसे ६ मील पर १ छोटासा पवा नामक ग्राम है उसमें २ घर गोलालारे जैनी भाइयोंके तथा एक चैत्यालय है। स्टेशन तालेबहटसे मार्ग पवा ग्राम तथा मन्दिरजी मोहरातक अच्छा है, बैलगाडी घोड़ा जासकते हैं। यहांसे १ मीलपर १ छोटासा पहाड़ है उसकी तलीके चिपटमें एक दीवार परकोटानुमा पत्थरकी एक मैदानको चारों तरफ घेरे हुए है. परकोटाका फाटक बांसके टट्टरका बना है। उसके सन्मुख पर्वतकी तलीसे जो परकोटाकी दीवार है उससे अनुमान

२० फुट अन्तरसे बराबर २ दो मठियां बनी हैं। इनमें एक मठिया खाली है और दूसरीके नीचे भोंहरा है। भोंहराके भीतर वेदी पत्थरकी है, उसमें छः प्रतिबिंब पद्मासनस्थ श्यामवर्ण पाषाण विराजमान हैं।

१ एक प्रतिमाजी ३ फुट ऊंची श्रीपारसनाथकी, २ री चार फुट ऊंची श्री ऋषभदेवकी ३ री २॥ फुट ऊंची श्रीशीतलनाथ महाराजकी चौथी २॥ फुट ऊंची श्रीसुमतनाथजीकी ५ वीं ३ फुट ऊंची श्री शंभवनाथजीकी व छठी २॥ फुट ऊंची श्रीशीतलनाथजीकी।

इस प्रकारसे छः तीर्थंकर देवोंकी प्रतिमाजी विराजमान हैं।

शीतलनाथ महाराजके स्थापनाकी मिती चरणके तले सम्वत् १२९९ वैशाख सुदि ११ रविवार खुदी है। शेष पांचों महाराजोंके स्थापनाकी मिती चरणके तले हरएक महाराजके सम्वत् १३४५ आषाढ सुदी २ बुधवार खुदी है।

इस स्थानपर पूजन प्रक्षालके लिये इस ग्रामके आसपासके जैनी भाइयोंकी ओरसे एक पुजारी बलदेव नामक नौकर है वह पूजन प्रक्षाल नित्यप्रति करता है।

अगहन वदि १ से ८ तक अष्ट दिवस पर्य्यंत प्रतिवर्ष आसपासके जैनी भाई एकत्र होकर जैन मेला करते हैं।

यह स्थान बहुत रमणीय है। प्रतिमाजी बहुत विशाल हैं। इस स्थानपर पहले जंगल था। अनुमान १५० वर्ष हुए होंगे तबसे यह भोंहरा प्रसिद्ध हुआ परन्तु इस बातका पता यहांके भाई नहीं जानते कि किस कारणसे इस भोंहराका पता लगा। ६० वर्ष हुए झांसी जिलामें मि० लेफ्टन साहब बहादुर कलेक्टर थे उन्होने इस जंगलमे देवस्थान देखकर यह जमीन जैनी भाइयोंको देदी और उन्ही साहब बहादुरकी आज्ञानुसार परकोटा बनाया गया।

श्री क्षेत्र फफौसा।



ई. आई. रेलवे लाइनमें भरवारी स्टेशनसे करीव २५ मीलकी फासलेपर एक गांव फफोसा है, जिसके करीवमें एक पहाड़ है जिसको प्रभाक्षेत्र कहते हैं जिसपर ११६ सीढियां चढनेसे एक प्राचीन मनोज्ञ जिन मन्दिर बहुत मजबूत दुरुस्त सफेदी किया हुआ बना है। उसमे दो वेदी हैं; जिनमें एक सम्वत् १८८१ की बनाई हुई है। प्रतिविम्ब ७ हैं। मूलनायक पद्मनाथस्वामीकी प्रतिमा चतुर्थकालकी है। २ प्रतिमा १४०८ की प्रभाचंद्र भट्टारक और १ प्रतिमा १८८१ की जगत्कीर्त्ति भट्टारक द्वारा

प्रतिष्ठित है। दो प्रतिमा पद्मप्रभकी और एक महाबीर स्वामीकी चतुर्थकालकी है। मन्दिरके आगे करीब १०० फुटकी उंचाईपर पर्वतके पाषाणमें उकेरी (खुदी) हुई ४ प्रतिमाएँ खड्गासनस्थ हैं। फिर इससे ऊपर एक प्रतिमा खड्गासन पाषाणमें उकेरी हुई है, जिसके पास एक गुफा है। उसका द्वार बन्द है। सुना है कि उसमें कोई शिलालेख है। पर्वतके मन्दिरके पास एक बडाभारी पाषाण है, जिसके पास एक दण्ड है, जिसमेंसे हमेशा बहुत गरम भाप निकला करती है। यहां कभी २ पर्वके दिनोंमें केशरकी वर्षा होती है। यहां पद्मनाथ स्वामीके तप और ज्ञान दो कल्याण हुए हैं। स्थान बडा रमणीय है।

श्री अतिशय क्षेत्र बनारस।



यह अतिशय क्षेत्र मुगलसराय स्टेशनके पास ओ. आर. आर. रेलमें बदलकर बनारस पहुंचते हैं। मुगलसरायसे बनारस ४ ही मील है। यहां हिन्दुओंके बहुत मन्दिर हैं, यहांपर श्री विश्वनाथ महादेवजीका मन्दिर मुख्य है। श्री गंगाजीके घाटोंमें मणिकर्णिका घाट विशेष मुख्य है। यहां एक अमृत नामका कुंड है, लोग कहते हैं कि इसमें स्नान करनेसे कोढ़ दूर होजाता है।

यह जैन लोगोंका भी बडा तीर्थस्थान है। इसी बनारस नगरमें प्रथम सुपारसनाथ सातवें तीर्थंकर तथा श्रीपारसनाथ तेईसमें तीर्थंकर इन दोनों महात्माओंकी जन्मभूमि है। इन दो तीर्थंकर देवोंने इस नगरमें चतुर्थ कालमें अवतार धारण किया है, जिनके जन्मकल्याणके मन्दिरजी मदैनी घाटपर जो दो मंन्दिर शिखरबन्द हैं उनमेंसे १ बाबू प्रभूदयालजी, पितामह बाबू देवकुमारजी रईस आराका बनवाया हुआ है। इस मन्दिरजीका कुछ प्रबन्ध बाबू देवकुमारजीकी रियासतसे होता है। दूसरे मन्दिरजी इसी मन्दिरजीके निकट बाबू छेदीलालजी रईस बनारस निवासीका है।

श्रीपारसनाथजीके जन्मकल्याणकका मन्दिर भेलूपुरामें है। एक मन्दिर खड्गसेन उदयराजजीकी सड़कपर है। दूसरा जिसमें तीन वेदी हैं। और इसीसे मिला श्वेताम्बर आम्नायका एक मन्दिरजी है। इस मन्दिरकी वेदीमें ९ प्रतिमाजी पद्मासनस्थ दिगम्बर आम्नायकी हैं। यह भी पारसनाथ स्वामीके जन्मस्थानक है। इसके अतिरिक्त १ पंचायती मन्दिर बुलानालापर एक मदागिनमें, तथा ३ चैत्यालय भी हैं। एक चैत्यालय भूतई इमलीपर, १ बूलानालापर बाबू छन्नूलाल जौहरीके, एक खड्गसेन उदयराजकी कोठीमें चौकमें है। बाबू छन्नूलालजी जौहरीके कोठेपर जो चैत्यालय है उसमें १ प्रतिमाजी ४ अंगुल प्रमाण स्फटिकमणिकी है।

वनारसमें इस प्रकारके ४ चार चैत्यालय तथा ६ छः मन्दिरजी दिगम्बर आम्नायके हैं, मदागिन मन्दिरके हातेमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये अच्छी धर्मशाला है। यहां दिगम्बर जैनियोंकी गृहसंख्या ५४ तथा मनुष्यसंख्या २२५ है।

यह स्थान संस्कृतविद्याका मुख्य स्थल है। दिगम्बर जैनियोंका स्याद्वाद महाविद्यालय भदैनी घाटके वडे मन्दिरजीमें हैं जहां न्याय व्याकरण और धर्मकी विद्या विदेशी विद्यार्थियोंको प्रदान की जाती है, जिसके मुख्य प्रवन्धकर्त्ता वावू छेदीलाल ठाकुरप्रसादजी रईस हैं।

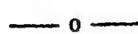
ऐसीही श्वेताम्बर जैनियोंकी एक संस्कृत पाठशाला यशोविजय पाठशालाके नामसे शहरमें प्रसिद्ध है। यहां देवनागरीके प्रचारके लिये नागरी प्रचारिणी सभा और उसका मकान दर्शनीय है। यहां हिन्दू सेन्ट्रल कॉलिजकी इमारत तथा गंगाके घाटकी अच्छी वनी हुई है, यहां कमख्वाव कलावतूनी काम वहुतही उमदा वनता है।

वरवासागर।



यह स्थान झांसी जिलामें (G. I. P.) माणकपुर झांसी लाइनपर स्टेशनसे १ मीलपर है। ग्रामके निकट १ छोटा पहाड़ है और उसके ऊपर महाराज टीकमगढ़का किला ह। यहां एक दिगम्बर जैनमन्दिरजी शिखरबन्द है। तथा १६ गृह और मनुष्यसंख्या ६९ और एक धर्मशाला भी है। पूजन प्रक्षालका प्रवंध अच्छा है। कोई प्रसिद्ध वात इस ग्राममें नहीं है।

वरेली।



रुहेलखण्ड प्रान्तमें वरेली सदर मुकाम है। यहां साहव कमिश्नरकी कचेहरी है। यहां लकड़ीका काम तथा कुरसियां अच्छी वनती हैं। यहां जैनीका १ एक गृह तथा ४ आदमी हैं।

वहरायच।



(B.N W) रेलवेपर यह प्रसिद्ध जिला है। रेलवे स्टेशनसे १॥ मीलकी दूरीपर इस शहरमें वह्मणीपुरा मुहल्ला है। रेलवेस्टेशनसे वह्मणीपुरा मुहल्लातक पुख्ता है।

सवारियां वहुत मिलती हैं। इसी मुहल्लेमें जैनमन्दिर तथा जैनी भाइयोंके गृह हैं। उनमें अग्रवालोंके २०, पल्लीवालका एक तथा पद्मावती पुरवारका एक गृह इसप्रकार २२ गृह हैं। जैन दिगम्बर आम्नाय २० पंथके है। पूजन प्रक्षाल नियत समयपर होता है।

यहांसे रियासत नैपालगंज जो कि नैपालवालोंका राज्य है १६ मील है।

बहरामघाट।



वारावंकी जंक्शन (B N. W.) रेल्वेसे उसकी २ लाईन की गई हैं। इस ग्रामका एक स्टेशन वहरामघाटके नामसे, दूसरा चौकाघाटके नामसे प्रसिद्ध है तथा दोनों स्टेशनोंमें २ मीलका अन्तर है। इसीको गणेशपुर भी कहते हैं। यहां गोरखालीके सांखूके लठ्ठे बहुत बिक्री होते हैं तथा बडे २ दूकानदार बहरामघाट रेलवे स्टेशन वड़ी लाईनके निकट आपने लठ्ठोंके कारखाने खोले हुए हैं। यह ग्राम घाघरानदीके किनारेपर बसा है। यहां जैन दिगम्बर अग्रवाल भाइयोंके ८ गृह, तथा एक शिखरबन्द मन्दिरजी है। पूजन प्रक्षाल योग्य रीतिपर होता है।

यहां मकई वहुत आती है और पैदा भी होती है। यहांके जैनी सभी कपडेकी दूकान करते हैं।

बांदा।



यह ग्राम जी. आई. पी. रेलवे लाइनपर इसी नामके स्टेशनसे आवादीके नजदीक है। यहां सराय पुख्ता वाजारमें और नजरवाग नवावसाहवके मकानात मैनसाहवकी सराय और केन नदीका पुल देखने योग्य है। यहां केन नदीके पास एक क़िला वहुत वड़ा है, जिसके अन्दर वहुतसे तहखाने और जमीनमें सुरंग है। यह क़िला अव गिरपडा है परन्तु भीतरकी इमारत अच्छी है। इसके अन्दर सुरंगोंका पता नहीं लगता है। वांदाके बीच शहरमें १ छोटासा पहाड़ है जिसको वम्वेश्वर कहते हैं।

यहां दिगम्बर जैनियोंकी गृहसंख्या २० तथा मनुष्यसंख्या ६८ है। एक शिखरवन्द जैनमन्दिरजी है जिसमें ११ धर्मशास्त्र हैं। यहां कुछ सवैया जैनी भी हैं जो शास्त्र पूजते हैं दिगम्बर आम्नायमेंसे हैं।

बाराबंकी ।



अवध प्रान्त लखनऊसे १९ मीलकी दूरीपर यह छोटासा शहर है। शहरके बाहर रेलवे स्टेशन (ओ. आर. आर.) के निकट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर और सबॉर्डिनेट जजकी कचेहरियां हैं। स्टेशनसे सीधा पक्का रास्ता बाजारको आया है। कपड़ेकी बाजारके मध्य एक घंटाघरका मकान है। उस बाजारमें विशेषकर जैनियोंकी दूकानें हैं उनका व्यापारसाधन विशेषकर बजाजी है। इस घंटाघरसे बायें हाथपर श्रावगी मुहल्लामें तीन जैनमन्दिरजी शिखरबन्द पास ही पास हैं उनमें एक बड़ा मन्दिरके नामसे प्रसिद्ध है। उनके सामने जैनधर्मशाला [illegible] के नामसे प्रसिद्ध है। और पीछे फुलवाडीमें १ छतरी [illegible] । इसमें दिल्लीके भट्टारक राजेंद्रकीर्त्तिके चरण बने हैं तथा श्री जिनेंद्र देवकी प्रतिमा भी विराजमान है। लाला लखपतिरायजीकी कोठीमें १ चैत्यालय है। और उससे थोडी ही दूरीपर एक छोटे मन्दिरजी हैं। इस प्रकारसे ३ श्रीदिगम्बर जैन मन्दिरजी हैं और इन्ही मन्दिरजीके आसपास जैनी भाइयोंके गृह २७ हैं जिनमें १५० मनुष्यसंख्या है, इस शहरसे २ मीलके फासले पर मजीठा नाम ग्राम है वहां १ प्राचीन मेला नागदेवताका वैष्णव सम्प्रदायका प्रतिवर्ष आषाढ शुक्ल १५ को होता है।

श्री अतिशय क्षेत्र बालाबेट ।



यह अतिशय क्षेत्र जिला झांसीसे रेलवे स्टेशन ललितपुरसे २४ मील है। मार्ग १४ मील तक अच्छा है, पश्चात् १० मील तक पाहाड़ी मार्ग विकट जंगल है। यद्यपि बैलगाडी, दिनमे पहुंचाती है। डाकखाना दुधईमें है।

बालाबेट एक छोटासा ग्राम है, वहां १ शिखरबंद मन्दिर है जिसमें तीन वेदी हैं. एक वेदीमें श्रीपार्श्वनाथ महाराजकी श्यामवर्ण २ फुट उंची पद्मासनस्थ मूर्ति १२०० की विराजमान है। कहते हैं-किसी समय इस प्रतिमाको चोर चुरा लेगये थे और जमीनमें गाड दियाथा, तब देव अतिशयसे यहांके जैनी भाइयोंको स्वप्न हुआ तब जैनी भाइयोंने लाकर यहां विराजमान किया। इस प्रतिमाके अतिरिक्त दोनों वेदियोंमें और भी धातु पाषाणकी प्रतिमा विराजमान हैं। मन्दिरमें धर्मशाला है। इस ग्रामके चारों तरफ पार्श्वनाथजी शामलियाकी दुहाई लगती है। निकटवर्ती ग्राममें अन्यमतीभी श्यामलिया पार्श्वनाथकी दुहाई देते हैं।

यहां फाल्गुन मासमें जैनरथोत्सव होता है परंतु मिती नियामित नहीं है। पूजन आदिका प्रबन्ध यहांके मन्दिरका बालाबेटसे ९ मील मालथौन ग्राम जिला सागरमें है वहांके पंचोंका है। उन्हीकी ओरसे १ पूजारी भी नौकर है।

यहां ४ गृह दिगम्बर जैनियोंके हैं जो की गरीब हैं।

वृन्दावन।



यह मथुरासे उत्तरकी और छ मीलपर है। इसमें एक बहुत प्राचीन मन्दिर गोविन्ददेवजीका है। इसको बादशाह औरंगजेबने तोडाथा। इसकी मरम्मत मि० ग्रोसने करादी है। पुरानी कारीगरी बहुत उत्तम नमूना देखनेके लायक है। नये मन्दिरोंमें रंगजीका मन्दिर लाला बाबूका मन्दिर तथा शाहजीका मंदिर बहुत उत्तम हैं।

यहां जैनियोंके ५ गृह, २१ मनुष्यसंख्या तथा १ श्री जिनमन्दिर भी हैं।

बिसवा।



जिला सीतापुरमें सिधौली (B. N. W.) स्टेशनसे १२ मील यह कसबा है। यहांका तंबाकू पीनेका अच्छा होता है। विशेषकर तम्बाकूका ही यहां व्यापार होता है। यहां १ चैत्यालय तथा १ जैनीका गृह है।

बुलंदशहर।



कमिश्नरी मेरठमें काली नदीके दाहिने हाथपर पश्चिम तरफ इसका नामका जिलेके मुख्य शहर है। (इसका बुलंद शहर नाम यों पड़ा कि राजा आदिबरनने पहिले इसको बसाया था इस लिये उसके नामसे यह बरन शहर कहलाया। पश्चात् जमीन ऊंची नीची होनेके कारण इसका नाम ऊंचा नगर पड़गया मुसलमानोंने इसका नाम बदल बुलंदशहर रक्खा फारसीमें ऊंचेको बुलंद बोलते हैं।

इस शहरमें सिर्फ १ जैनमन्दिर और एकही गृह जैनसम्प्रदायका है।

मथुरा।



सूबा आगरा और अवधमें यह मथुरा नगरी यमुनाजीके दाहिने किनारे पर बहुत पुराना शहर है। यह बी. बी. सी. आई. रेलवेका स्टेशन और हिन्दुओंका पवित्र तीर्थक्षेत्र

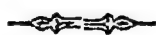
है। मथुराजीसे ६ मील नीचेकी ओर महावन नगर है जहां कृष्णजी (जैन मतके नवमे नारायण श्रीकृष्णजी) पलेथे जब वह बाल थे तो उनके मामा कंसने उनके मारनेका हुकम दिया पर उनकी टहलनी उनको महावनमें नंदकी स्त्री जसोदाकी कडकीसे बदल गई। मथुराजीसे २ मील चौरासी दिगम्बर जैनियोंका तीर्थस्थान है। और १ मील जैसंघपुर १ ग्राम है। वहां दिगम्बर जैनी नाममात्रका नहीं है परन्तु मन्दिरजी एक हैं जिनका पूजन प्रक्षालका प्रबंध मुन्शीमल चन्दजी रखते हैं। यहां मन्दिरमें ४ ग्रन्थ न्यायके हैं।

मथुरा शहरमें छह दिगम्बर जैन मन्दिरजी हैं जिनमें ४ शिखरबन्द तथा २ चैत्यालय हैं। यहां जैनियोंके पचास गृह तथा १५० लोगसंख्या है। मथुरामे अगणित धर्मशालायें हैं इनमेंसे ४ हारडिंग दरवाजेमें, एक भरतपुर दरवाजेमें ४ डिग दरवाजेमे हैं। दिगम्बर जैनियोंके वास्ते यहां धर्मशाला जो कि घीआमण्डीमें श्री मन्दिरजीके सामने है। यहांके पेड़े और मलाईकी खुरचन प्रसिद्ध है। स्टेशनपर और शहरमें एक्के और गाड़ियां सवारीके लिये मिलती हैं।

इस शहरपर महमूद गजनवीने ई० सन् १०१७ में चढ़ाई की और सिकन्दर लोदी दिल्लीके बादशाहने १५०० मे चढ़ाई की जिससे बहुत नुकसान हुआ।

अंगरेजी सम्वत् ४०० में मथुरामें बुद्ध लोग बहुत थे। उनके स्थानोंके निशान अब तक हैं। यहांकी प्रसिद्ध इमारतें यह हैं: जुम्मामसजिद, सतीका बुर्ज, विश्रामघाट, द्वारकाधीशका मन्दिर, हाईस्कूल तथा सेठ राजे लक्ष्मणदासकी हवेली।

मिरजापुर।



मिरजापुर इसी नामका जिलेका मुख्य शहर तथा ई. आई. रेलवेका स्टेशन है। यहां पेश्तर जैनियोंके बहुत घर थे तथा छः दिगम्बर मन्दिरजी थे और मिरजापुर तिजारतकी बहुत बड़ी मंडी थी परन्तु समयके हेरफेरसे अब न तो दिगम्बर जैनियोंके विशेष घर ही रहे न मंडी ही रही। अब सिर्फ ३८ घर दिगम्बर जैनियोंके रहगये हैं जिनमें मनुष्यसंख्या १५२ है और ३ मन्दिरजी शिखरबन्द हैं। इनमेंसे १ जैन मन्दिर फाकटरा मुहल्लामें है और जैनीभाई इसी मुहल्लामें निवास करते हैं।

यहांके गलीचे तथा पीतलके बरतन प्रसिद्ध हैं और विशेपकर बरतनोंका ही व्यापार होता है।

मुज़फ्फ़र नगर।



यह शहर सहारनपुरसे ४० मीलके फासलेपर बी. एन्. डब्ल्यु. रेलवे लाईनपर है। स्टेशनसे शहर १ मीलके फासले पर वांके है। जैन अग्रवालोंके यहां १०२ और पल्लीवालोंके ३ गृह हैं तथा मनुष्यसंख्या अनुक्रमसे ५१५ और ७ है, जिनमें एक बाबू शम्भूनाथ डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर हैं। शहर अच्छा है। जैनभाई खुशहाल और सज्जन हैं। यहां श्रीजैन-मन्दिरजी पंचायती १, दूसरा मन्दिरजी लाला जैपालमलजी रईसका और तीसरा लाला होश्यारसिंहजी रईसका हैं पूजन प्रक्षाल तीनों मन्दिरोंमें समयपर होता है।

यहांके कम्बल प्रसिद्ध हैं।

मुरादाबाद।



सूबा आगरा और अवधमें यह शहर रामगंगाके दाहिने किनारे पर रामपुर रियासतकी हद्दसे १० मीलके फासले पर ओ. आर. रेलवेके स्टेशन के पास है।

इसको रुस्तमखां कटूरके हाकिमने बसाया था और उसने शाहजहानके पुत्र मुरादके नामपर इसका नाम मुरादाबाद रक्खा। इस नगरके ११० मुहले हैं और कई अच्छे बजार हैं।

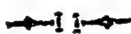
यहांके पारेकी कलई किये हुए बरतन प्रसिद्ध हैं। हजारों जीव इस कामके सबब पलते हैं।

यहां दिगम्बर जैनियोंकी गृहसंख्या ८१ है जिनमें खंडेलवाल ६८ और अग्रवालोंकी १२ है। यहां २ जैन मन्दिर तथा १ धर्मशाला और १०० धर्मशास्त्र हैं। यहां बाबूलालजी वकील हाईकोर्ट विद्वान और परोपकारी हैं।

रामगंगाके किनारे परका किला और जुम्मा मस्जिद जिनको रुस्तमखांने बनाया था प्रसिद्ध देखनेके योग्य है। नाजकी मन्डी भी यहां है।

शहरमें एक बड़ी और सुंदर सराये है और दूसरी स्टेशनके पास है, स्टेशनपर और शहरमें एक्के और गाड़ियां सवारीके लिये हरवक्त मिलती हैं।

मेरठ।



सूवा आगरा और अवधमें जिला और कमिश्नरी मेरठका सदर मुकाम है। जिलेका सबसे वड़ा नौचंदीका यहां मेला मार्चके आखीर या अप्रैलके शुरूमें होता है जो ८ दिन रहता है।

यहां जैनियोंकी गृहसंख्या १९० है जिसमें अग्रवाल १२०, लोहिया २९ और पद्मावती परवारके ९ गृह हैं तथा मनुष्यसंख्या ८२३ है। शिखरबंद चार जैनमन्दिर तथा १ धर्मशाला है। यही धर्मशाला गंगारामकी धर्मशाला कसरगंजमें और रौनक सराये कम्बोह दर्वाजेमें स्टेशनसे एक एक मीलके फासले पर हैं जिनके मैनेजर लाला लखपतिराय जैनी हैं उनके सुप्रबंधसे यात्रियोंको हर प्रकारका सुख प्राप्त होता है। सवारी हरवक्त मिलती है।

मेरठसे अच्छी पक्की सड़कें गाजीआबाद, दिल्ली, सहारनपुर, गढ़मुक्तेश्वर, बिजनौरको जाती हैं। श्रीहस्तिनापुर क्षेत्रमें यहींसे सवारी करके आना होता है। यहां बाबू सुलतानसिंह वकील परोपकारी हैं।

१ सूरजकुण्ड जो १७१४ में बना था इसको गंगाजीकी नहरके पानीसे भरते हैं इसके किनारोंपर छोटे छोटे मन्दिर धर्मशालायें और सतियोंकी छतरियां हैं।

महेश्वरका पुराना मन्दिर जिसकी बावत कहते हैं कि पाण्डवोंके सन्तानमेंसे किसीने बनवाया था।

छावनी शहरके उत्तरकी ओर है कहते हैं कि इसकी ठण्ढी सड़क हिन्दुस्तानदेशमें सब सड़कोंसे सुंदर है।

मेरठमें चने, चीनी और घी, जोटका बहुत व्यापार होता है।

मैनपुरी।

यह शहर जिला मैनपुरीका मुख्य राजधानी (S F.R.) लइनमें है। उत्तरमें कालीनदी इसकी आबादी १९०१ ई० में १८३१८० है। नदियां इसमें रिन्द, सेंगुर, ईशान ककनादिया और काली है, और तीन नहरोंकी शाखें कानपुर इटावा और मौगांव हैं।

यहां एक ऋषि थे उनका स्थान अबतक धारऊ गांवके पास नागरयामें जो मैनपुरीके पास है मौजूद है, उसके नामसे इस नगरका नाम मैनपुरी कहलाया। इस शहरमें बौद्ध धर्मकी टूटी फूटी इमारतोंके चिह्न जगहोंपर मौजूद हैं परन्तु शिलालेखादि नहीं हैं। शहरके अन्दर नाला है जिसके कारण शहरके दो हिस्से होगये हैं, उत्तरी हिस्सा मैनपुरी दक्षिणी मोहक्य गंज कहलाता है।

यहां दिगम्बर जैनियोंकी गृहसंख्या १२२ है जिसमें बुढले ८० पल्लीवाल २० और लोहिया २२ हैं और लोगसंख्या ४७९ है। यहां जैनमन्दिर मोहक्यगंजमें ४ शिखरबन्द तथा २ चैत्यालय हैं निकट धर्मशाला भी है।

यहां लोहेका काम बहुत बनता है।

श्री क्षेत्र रत्नपुरी।

यह स्थान जिला फैजाबादमें सोहावल स्टेशनसे १॥ कोस है। यहां एक श्वेताम्बर जैन मंदिरजी सन १८०० ई० सालका हैं जिसमें पार्श्वनाथ स्वामीकी कृष्णवर्ण मूर्ति है। मंदिरके दक्षिण बाजूके दिवालके मध्यभागमें ऋखभदेवजीकी मूर्ति सात मूर्तियोंके साथ है जो कलकत्ता और लखनौके दिगम्बर जैनियोंने स्थापित की है ऐसा सुना जाता है। दिगम्बर जैनियोंको मुख्य स्थान है। यहां श्रीधर्मनाथस्वामीके एक गर्भ कल्याणक और दूसरा जन्मकल्याणक, ऐसे २ कल्याणक हुए हैं इस कारण यात्री लोग तीर्थ करने आते हैं। २ मन्दिर बने हुए हैं जो कि जीर्ण हैं। जीर्णोद्धारकी आवश्यकता है। दिगम्बरी धर्मशाला नहीं है। श्वेताम्बरी धर्मशालामें उतरनेकी बडी तकलीफ होती है।

अयोध्यासे सोहावलतक =) रेल किराया लगता है. खाने पीने और पूजनका सामान सोहावलसे लेना पडता है।

रामपुर।

संस्थान रामपुर मुरादाबाद जिलेमें है। O. R. R. लाईनपर रामपुर स्टेटके नामसे स्टेशन है। स्टेशनसे २ मीलपर आबादी है। यहां मुसलमान नबाबकी अमलदारी है।

यहां जैनियोंका एक शिखरबंद मन्दिर है, गृहसंख्या ४३ तथा मनुष्यसंख्य १७९ हैं।

लखनौ।

यह शहर अवधका राजस्थान गोमतीके किनारे पर है। अब भी अंगरेजी गवर्नमेंटकी राजमें लखनौ-अवधका हाईकोर्ट है। मुसलमान बादशाहत यहां बहुत रही। उनके समयके बड़े २ सुंदर गृह अबतक नवाब अशफुद्दौला आदिके इमामवाड़ा आदि मौजूद हैं। यहांके अजायब घरमें देखने योग्य पदार्थ हैं। उक्त अजायब.घरमें सैकडों जिनप्रतिबिम्ब खण्डित बहुत ऊंची २ अब गहनाके उपस्थित हैं। उनके अतिरिक्त ३ बिम्ब ऐसी हैं कि जो बिलकुल खण्डित नहीं है। यह सब प्रतिबिम्ब कंकाली टीला, मथुरा और उन्नाव और अन्यान्य स्थानोंसे निकली हैं। बहुतसी सन् ईसवीके पहलेकी हैं। प्रतिबिम्बोंके अतिरिक्त बहुतसे जैनशास्त्र इस अजायब घरमें उपस्थित हैं अवध रुहेलखण्ड रेलवेका बड़ा दफ्तर भी यहां है।

बी. एन्. डब्ल्यू. रेलवे स्टेशनसे (जिसको सिटी कहते है) चौकवजार जहां जवाहरात, सोना चांदीकी दूकानें हैं। इसी चौकमें चूड़ीवाली गलीमें २ श्री जैनमन्दिरजी हैं तथा मन्दिरजीके निकट धर्मशाला है, उसके ऊपर 'ज्ञान प्रकाशिनी' जैन पाठशाला है। चौक चूड़ीवाली गलीमें हर अमावसी तथा पूरणमासीको सभा होती है। बाबू फत्तेहचंदजी सभापति और ला. दामोदरदासजी मंत्री है।

तृतीय मन्दिरजी मोहल्ला अहियागंज (जो चौकसे १ मील है) में है वहां १ जैन-धर्मशाला नवीन श्री मन्दिरजीके सामने लाला प्रभूदयालजीने वनवाया है। दूसरी धर्म-शाला श्री मन्दिरजीके पीछे है। दोनों धर्मशालाके मकानात रहने योग्य अच्छे वने हैं। इसी स्थानपर जैन औषधालय तथा खैरातखाना भी है।

चतुर्थ जैनमन्दिरजी मोहला सुहादतगंजमें है सुहादतगंज चौकवाजारसे २ मील है। ऐसे लखनौमें चार जैनमन्दिरजी ३ धर्मशाला १ जैन औषधालय १ जैन पाठशाला हैं।

जैन अग्रवाल भाइयोंके ८० घर, खंडेलवाल जैनके २० गृह १ गृह ओसवाल जैन दिगम्वर आम्नायका; इस प्रकारका कुल १०१ घर दिगम्वर जैनके हैं। धर्मकार्यमें रुचि सवको है। पूजन प्रक्षाल योग्य रीतिसे होती है। शास्त्र चौक तथा अहियागंजमें वंचते हैं। जैनी भाईयों चौक, अहियागंज, सहादतगंज, सदरवाजार, कैसरवाग छावनी आदिमें निवास करते हैं। और यहां वाबू अजितप्रसादजी वकील हाइकोर्ट विद्वान और परोपकारी हैं।

श्री अतिशय क्षेत्र शूमेका पर्वत।

यह अतिशय क्षेत्र श्री शांतिनाथ महाराजका जिला झांशी रेलवे स्टेशन जाखलौन जी. आइ. पी. से ५ मील १ छोटीसी पहाड़ीपर गुम्वुजदार शिखरवंद पत्थरका मन्दिर है, उसके भीतर श्रीशान्तिनाथजीके चरण वेदीमें १२०० के हैं। यहां मन्दिरजीमें प्रति-माजी नहीं हैं सिर्फ शान्तिनाथ महाराजके चरण हैं। मन्दिरजी जंगलमें है परन्तु अति सुहावना मालूम होता है। स्थान ध्यान करने योग्य है।

रास्ता जाखलौनसे पहाड़ी ऊंचानीचा जंगलमें होकर है।

संभल।

यह कसवा जिला मुरादावाद मुरादावाद (ओ. आर. आर. लाईन) स्टेशनसे ३० मील है। मुरादावादसे यहां तक पक्की सड़क है। मुरादावादसे रातके १०वजे घोड़ा-गाड़ी निकलकर यहां सबेरे पहुंचा देती है।

इसमें खंडेलवाल जैनी भाइयोंके २१ घर हैं, जनसंख्या ५० है तथा १ शिखरबंद मन्दिरजी है.

सरधना।



इसमें तहसीलदार रहते हैं। इस तहसीलमें १४ ग्रामोंमें जैन बस्ती है।

यह ग्राम जिला मेरठमें एन. डब्ल्यू. आर. लाइनके सरधना रोड स्टेशनसे ५ मील दूरीपर है। इस ग्राममें अग्रवाल जैनी भाइयोंके ३०० गृह हैं, जनसंख्या ११७५ है। ५ शिखरबंद मन्दिरजी हैं जिनमें १ पाठशाला और ५० शास्त्र हैं।

यहां शमरू बेगमका मकबिरा देखने योग्य है।

सलावा।



यह ग्राम जिला मेरठमें इ. आई. आर. लाईनके दादरी स्टेशनसे तीन मील सड़कपर है। यहां एक जैनमन्दिर है अग्रवाल जैनियोंके ८० गृह यहांपर हैं और १०५ मनुष्य संख्या है।

सलावाके आम तथा कम्बल प्रसिद्ध हैं।

सहारनपुर।



यह जिलेका बहुत बड़ा शहर है। यहां अवध रुहेलखंड तथा नार्थ वेस्टर्न रेलवेका जंकशन है। स्टेशनके निकट दो मित्र आश्रम मुसाफिरोंके टिकनेके लिये बने हैं जिनमें एक आना रोज मुसाफिरको किराया देना पडता है। कोठरियां टिकनेको बनी हैं। जैन धर्मशाला कोई नहीं है परन्तु एक जैनबाग है उसको गुलालवाडी भी कहते हैं, उसमें कुछ मकानात बने हुए हैं। उनहींमें यात्री ठहर जाया करते हैं।

रेलवे स्टेशनसे शहरकी आबादी २ फर्लांगके अनुमान है और १ मीलके फासलेपर मुहल्ला शोरामियान, यादगार, संघयान, चौधरयान ऐसे चार मुहल्ले हैं जिनमें जैनमन्दिरजी शिखरबंद १० तथा एक चैत्यालय है और इन मन्दिरोंमें २०० के अनुमान जैनशास्त्रजी हैं। इन चारों मुहल्लोंमें ४७९ घर अग्रवाल जैनी भाईयोंके हैं जिनमें मनुष्यसंख्या ३५०० है। इन साडेतीन हजार भाइयोंमेंसे बहुतसे धनाढ्य तथा विद्वान हैं। यहां लाला नेमिदास वकील और बाबू बनारसीदास वकील हाइकोर्ट परोपकारी हैं।

श्री अतिशय क्षेत्र सिंघपुरी।

जन्मस्थान श्रीश्रेयांसनाथजी।

वनारससे ६ मील दूरीपर सारनाथ (वी. एन्. डब्ल्यू. रेलवे लाइनमें) स्टेशनसे एक मीलपर सारनाथ नाम ग्राम है, इस ग्रामके निकट १ पुख्ता जैनधर्मशाला है जिसके भीतर ५०–६० मनुष्योंके ठहरनेकी जगह है। धर्मशालामें १ दुकान भी है जिसमें भोजन आदिकी सामग्री मिलती है। इस धर्मशालासे पीछे गवर्नमेंट अजायबघर बनरहा है। धर्मशालाके सदर दरवाजेके सामने सड़कके उसपार श्रीश्रेयांसनाथजी महाराज ग्यारहवें तीर्थंकरका मन्दिर जन्मकल्याणकके समयका है। मन्दिरजीमें पद्मासनस्थ १ प्रतिविम्व श्यामवर्ण श्रेयांशनाथ स्वामीके ३ फुटके अनुमान ऊंची विराजमान है और बेदीके निकट१ आरेमें पत्थरपर छोटी २ चौवीसों महाराजोंकी मूर्तियां खुदी हैं। प्रतिविंवपर सम्वत् स्थापनाका १९०० लिखा है शेष अक्षर पढ़नेमें नहीं आते। मन्दिरजीके पूजन प्रक्षालका प्रवंध पंचान वनारसके सिपुर्द है।

इस मन्दिरजीके सामने मैदानमें ७५ फुट ऊंचा १ स्तंभ वहुत बड़ा गच चूनाका खड़ा है इसको लोग अशोक राजा बौद्ध धर्मीके समयका वतलाते हैं। इस स्तंभके निकट मैदानमें एक पुरानी इमारत सरकार अंग्रेजने खुदवाई है उसमें वहुतसे घडे तथा पाषाणकी प्रतिमाएं बौद्ध धर्मकी पद्मासनस्थ और खड्गासनस्थ निकली हैं। वह सब इस समय उसी मैदानमें जमा हैं।

लोग कहते हैं कि ढाई हजार वर्ष हुए कि गोतमवुद्धने सबसे पहले अपने धर्मका प्रचार यहीं कियाथा। यहां पुराने शहरके निशान मिलते हैं। चीन जापानके बौद्ध यात्री यहां आते हैं।

यहां पत्थरपर बनाहुआ चौमुखा इस इमारतके पत्थरोंपर एक सिंह निकला है। और पाली भाषामें एक लेख भी लिखा है जो पढ़नेमें नही आता।

श्री अतिशय क्षेत्र सिरौनजी।

यह अतिशयक्षेत्र झांसी जिलामें रेल्वे स्टेशन जखौरा (जी. आइ. पी.) से १२ मील है। सिरौन ग्राममे १ जैनमन्दिरजी शिखरबंद है। ग्रामसे थोड़ी दूरपर एक खंडहरमें तीन मन्दिरजी हैं जिसमें १ वड़ा और २ छोटे हैं। वड़े मन्दिरकी वेदीमें तीन तीन श्यामवर्ण पाषाणकी २ फुट ऊंची शांतिनाथ महाराजकी प्रतिमाँए विराजमान हैं।

द्वितीय मन्दिरमें बेदीपर २ प्रतिमाजी श्यामवर्ण पाषाणकी विराजमान हैं जिनके आगे बेदीपर खड्गासनस्थ इन्द्र बने हैं ।

तीसरा छोटासा मन्दिर है, उसके भीतर १६ फुट ऊंची खड्गासनस्थ शान्तिनाथ महाराज दीवालसे चिपटे विराजमान हैं. यह मूर्ति अति विशाल है इस मूर्तिके दायें बायें तीन-तीन फुट ऊंची खड्गासन प्रतिमाजी विराजमान हैं इनके ऊपर दोनों तरफ दो दो फुट ऊंची दो प्रतिमाजी और हैं ।

चौथे मन्दिरजी बीच आंगनमें गुम्बजदार हैं जिनकी बेदीमें दो प्रतिमाजी पद्मासनस्थ ४ फुट ऊंची विराजमान हैं और दीवालोंपर चारों तरफ खुदी हैं ।

पांचवें मन्दिरजीमें एक पद्मासन मूर्ति २ फुट ऊंची, १ खड्गासन १½ फुट ऊंची अधिष्ठित हैं इनके अतिरिक्त आंगनमें बहुतसी प्रतिमाजी खंडित हैं जिनमें १०० मूर्तियां खड्गासनस्थ ६ फुट ऊंची पाषाणकी तथा चार-चार पांच-पांच फुट ऊंची बहुत प्रतिमायें हैं और आंगनमें चबूतरे पर प्राकृत भाषाका लेख खुदा है परन्तु अक्षर घिस गये हैं पढ़े नहीं जाते हैं, माघ सुदी ११ सम्वत् १००८ खुदा है । पूजन प्रतिदिन सिरौनके भाई करते हैं ।

इस मन्दिरके चारों तरफ खंडहरमें भी खण्डित प्रतिमाजी बहुतसी हैं । फाल्गुन मासमें प्रतिवर्ष जैनरथोत्सव यहां होता है परन्तु मिती नियत नहीं है ।

यहां पर परवार जैनियोंके तीन गृह हैं जिनमें ११ लोकसंख्या है ।

श्री अतिशयक्षेत्र हस्तनापुर ।



यह क्षेत्र युक्तप्रदेश जिला मेरठमें, मेरठसे २२ मील उत्तरकी ओर है, और खतौली रेलवे स्टेशनसे १८ मील है । मेरठ शहरसे मवानेतक अर्थात् १४ मीलतक पक्की कंकड़की सड़क है । मवानेतकके लिये इक्के और घोड़ा-गाड़ी मिलती हैं । किराया प्रायः ।–)। फी सवारी है । और मवानेसे हस्तनापुरजीतक बैलगाड़ियां और घोड़े सुभीतेसे मिलते हैं । मवानेसे हस्तनापुर केवल ८ ही मील है, और मेरठसे हस्तनापुरतक इक्के और बैलगाड़ियां सीधेही सुभीतेसे मिल जाते हैं ।

यह हस्तिनापुरजी अतिशय क्षेत्र जैनियोंका महा तीर्थक्षेत्र है जहां श्री शान्तिनाथजी, श्री कुंथनाथजी और श्री अरहनाथजी भगवानके गर्भ, जन्म, तप और केवल ज्ञान, चार–चार कल्याणक हुए हैं और श्रीमल्लिनाथ भगवानका समोसरण आया था।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंका वहुत वड़ा रमणीक मंदिर है जिसको लगभग दोसौ वर्ष हुए श्रीमान् धर्ममूर्ति जैनकुलभूषण लाला हरसुखरायजी दिल्लीवालोंने बनवाया था और इसी मन्दिर सम्वंधी वहुत वड़ी धर्मशाला है जिसमें लगभग दो हजार मनुष्य ठहर सक्ते हैं।

प्राचीन कालमें इसी नगरमें श्रीश्रेयांश राजा हुएथे जिन्होंने चतुर्थ कालमें श्रीऋषभदेव आदितीर्थंकरको सबसे प्रथम आहारदान की प्रवर्त इसी नगरसे चलाई।

चारों महाराजकी ४ निशियांजी मन्दिरजीसे लगभग १–१॥–३ कोसके फासले-पर उत्तरकी ओर प्राचीन कालसे नियत हैं यहांपर प्रतिवर्ष कार्तिकमासकी अष्टान्हिकाके पर्वमें मिती कार्तिक सुदी ८ से १५ तक दिगम्बर जैनियोंका वहुत वड़ा मेला होता है और मेलेके अन्तमें कार्तिक सुदी १५ को रथोत्सव भी होता है।

द्वितीय मेला मिती ज्येष्ठ कृष्ण १४ को होता है। इन अवसरोंपर दूर–दूरसे जैनीभाई आकर धर्मलाभ उठाते हैं।

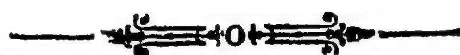
स्वेतांवराम्नायका भी एक मन्दिर यहां है और उनकी धर्मशाला भी प्रथक् है।

इस क्षेत्रका प्रबंध उत्तम है एक प्रवंधकारिणी कमेटीके आधीन है जिसके मंत्री वावू वद्रीदासजी वकील, विजनौर हैं। ऐसे पवित्र क्षेत्रपर आजकल कोई जैनी भाईका घर नहीं है परन्तु मन्दिर इसी जंगलमें वहुत वड़ा है जिसमें धर्मशालाभी वनी है।

इसही क्षेत्रके निकट दो कोसके अन्तरपर एक वसुम्भा ग्राम है इस ग्राममें एक प्राचीन मन्दिर जीर्णावस्थामें वनाहुआ है जिसमें चौथे कालकी अति मनोज्ञ प्रतिबिम्व खड्गासनस्थ विराजमान है। मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिये चंदा शुरू किया है।

——o<>o——

अजयगढ़में जैन मूर्तियां।



अजयगढ।

यह स्थान अजयगढ रियासतकी राजधानी है। इसके एक ओर अनुमान पौन मील ऊंचे पहाड़पर एक किला है। पहाडपर जातेही एक ओर दो जलकुण्ड बने हुए हैं जिन्हें लोग गंगा यमुना कहते हैं। यह कुंड ऊपरीय भागमें अवस्थित पहाड़की गुरुतर शिलाओंसे ढके हुये हैं. जिनके आधार और विशेषकर शोभावृद्धिके हेतु पाषाणके सुदृढ़ स्तम्भ लगाये गये हैं, जिससे यह छोटे छोटे कुण्ड सभामण्डप जैसी छटाको धारण करते हुये जलमण्डपकी योजना दिखारहे हैं। ऊपर एक शिलालेख है जिसमें इनके बननेका वर्णन और निर्माणसमय १२८४ विक्रमाब्द लिखा हुआ है।

थोड़ी दूर आगे किलेके दरवाजेमें प्रवेश करतेही दो भारी २ शिलाओंमें उकीरी हुई अनुमान ५० के श्रीदिगम्बर जैन मूर्तियां पद्मासन एक दिवालमें लगी हुई हैं, जिनमें शिलालेख आदि कुछभी नहीं है। क़िलेके भीतरीय दरवाज़ेमें प्रवेश करतेही एक शिलालेख है और उसके नीचे लक्ष्मी देवीकी मूर्ति, और ताले कुंजीका आकार बनाहुआ है। लोग कहते हैं कि, इसके नीचे बहुतसा धन भण्डार रक्खा है। उक्त रियासतके अधिकारी राजासाहबने इस लेखके पढ़ानेके लिये बहुत प्रयत्न किया परन्तु इसमें सफलता नहीं हुई लेखके अक्षर बहुत साफ है पर उसकी लिपी दूसरे लेखोंसे बिलकुल निराली है। किलेके भीतर प्रवेश करतेही एक कोठी है जहांपर विविध प्रकारकी रणसामग्री रक्खी है, आगे थोड़ी दूर जानेसे पहाड़की मध्यवर्ती तलहटीमें एक भौंहरा है, जिसके दरवाजेमें भूतेश्वर महादेव हैं। भूतेश्वरसे आध मीलके फासलेपर एक छोटासा तालाब है जो बहुत गहरा है। कहते हैं कि इसकी थाह नहीं मिलती है। इतने ऊंचे पहाड़पर पानीका ऐसा गहरा होना आश्चर्यकी बात है। इसके एक तटपर अजय नामक देवताका मन्दिर है। यहांके लोगोंमें इनकी मान्यताकी प्रधानता है। तालाबकी दूसरी ओर पासकी गिरी हुई चौकोर दीवारके भीतर श्रीशान्तिनाथतीर्थंकरकी खड्गासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मूलनायक प्रतिमाकी अवगाहना १९ फुट और शेषकी दश २

फुट हैं प्रतिमाओंका आसन तीन २ फुट नीचे दब जानेसे शिलालेख डूब गया है। परंतु यहां की अन्य खण्डित प्रतिमाओंके लेख पढ़नेसे इनका निर्माणसमय १२ वीं शताब्दी प्रतीत होता है। इसीके बगलमें एक पाषाणस्तंभ है जिसमें हजारों प्रतिमाएँ खुदी गई हैं। खुली जगह होनेके कारण इन पूज्य प्रतिमाओंपर वर्षाऋतुका पानी पड़ा करता है पूजन प्रक्षाल आदिका कोईभी प्रबन्ध नहीं है। इसके आगे कोई देढ़ मीलके फासलेपर एक दरवाजेके पास सैंकडों प्रतिमाएँ खण्डित अखण्डित पड़ी हुई हैं।

यद्यपि इस किलेमें कोई विशेष दर्शनीय पदार्थ नहीं हैं तो भी रंगमहल, मोतीमहल आदिमें पत्थरोंकी कारीगारी और बृहस्पति कुण्ड आदि वन्यस्थान देखने योग्य हैं। यह और कालिंजरके दोनों किले चंदेल राजाओंने अपनी वीरक्रीडा और गौरव स्थापनके लिये एकही समयमें बनवाये थे।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंके ७ गृह हैं जिनकी ३६ मनुष्यसंख्या है और १ शिखरबन्द मन्दिरजी है।

श्रीअतिशय क्षेत्र

अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ।

यह एक अतिशय क्षेत्र जिला अकोला स्टेशनसे (G. I. P Ry) १९ कोस शिरपुर ग्रामके नजदीक है रास्ता बैलगाड़ीका दो दिनका है। शिरपुर ग्राममें दिगम्बर जैनियोंके ४२ गृह तथा १८८ आदमी हैं। और दो दिगम्बर मन्दिरजी शिखरबन्द हैं। उसीमें एक पुराना मन्दिर है, जिसके भोहरेमें कुल २६ प्रतिमाएँ हैं और ऊपरके मन्दिरमें भी जो ५१ मूर्तियांमौजूद हैं वे सब दिगम्बरी हैं जिनका संवत आदि आगेके कोष्टकमें दिया हुआ है।

श्रीअतिशयक्षेत्र अंतरीक्ष पार्श्वनाथ संस्थान सिरपुर (अकोला) के मन्दिरोंकी

प्रतिमाओंका कोष्टक भोहरेकी मूर्तियोंका वृत्तांत ।

नम्बर	नाममूर्ति	पाषाणका रंग	धातु	चिह्न	सम्वत्	शक	सत्र	विशेष विवरण
१	अंतरीक्षपार्श्वनाथ	वालु	....	नाग	....	....	....	मूलनायकका संवत् नहीं.
२	पार्श्वनाथ	सफेद	....	नाग	२४	....	मूलसंघ	सिर्फ२४की संख्या दिखाई देती है ।
३	महावीर	सफेद	....	(सिंह)	१५४८	....	"	ये ३ प्रतिमा मूलनायककी बायें तरफ
४	शांतिनाथ	"	....	मृग	"	....	"	(की वेदीपर हैं)
५	आदिनाथ	"	....	नंदि	१५६१	....	"	
६	पार्श्वनाथ	"	....	नाग	१५४८	....	"	
७	"	"	....	"	"	....	"	
८	"	"	....	"	"	....	....	
९	आदिनाथ	काला	....	नंदि	१२४६	११८१	....	
१०	सुमतिनाथ	बदामी	....	कच्छ	१५४८	....	....	
११	पार्श्वनाथ	सफेद	....	नाग	१९५२	....	....	

नम्बर	नाममूर्ति	पाषाणका रंग	धातु	चिह्न	सम्वत्	शक	संघ	विशेष विवरण
१२	अरहनाथ	,,	...	मछली	१९४८	...	....	
१३	आदिनाथ	,,	....	बैल	,,	....	...	
१४	नेमिनाथ	,,	....	शंख	१९६४	....	...	
१५	पार्श्वनाथ	,,	....	नाग	१९३०	....	....	
१६	पार्श्वनाथ	....	पीतल	,,	....	१५८२	मूलसंघ	
१७	नंदीश्वर	....	पीतल	....	....	....	....	संवत् वगैरः दिखता नहीं ।
१८	पार्श्वनाथ	काला	....	नाग	....	....	....	संवत दिखता नहीं । यह मूर्ति हमेशा मूलनायकके साम्हने रहती है ।
१९	नदीश्वर	,,	....	...	...	....	...	संवत् दिखता नहीं ।
२०	अनंतनाथ	,,	....	व्याघ्र	....	...	....	यह मूर्ति अर्द्धपद्मासन है । संवत् द्राविड़ि भाषामें है ।
२१	भक्तामर यंत्र	...	तांबा	...	१९३६	...	....	
२२	सोलहकरण यंत्र	....	पीतल	....	....	१७२८	....	

नम्बर	नाम मूर्ति	पाषाणका रंग	धातु	चिन्ह	सम्वत्	शक	संघ	विशेष विवरण.
२३	यंत्र	...	तांबा	....	.. .	....	....	इसमें ऐसा लिखा है 'अंतरीक्ष पार्श्वनाथ चैत्यालय दीक्षाग्रहण प्रतिष्ठा सम्वत् १२२९ विवाह नाम संवत्सरे शुक्रवासरे प्रतिष्ठा सिरपुर' ।
२४	पद्मावती	सफेद	....	नाग	१९३०	१७९९	....	
२५	पादुका	,,	....	....	१९४३	....	मूलसंघी	नेमसागरस्वामी बलातकारगण अंतरीक्षस्वामी १९४६ गच्छ सरस्वती बलात्कार चंद्रनाथ व पार्श्वनाथ,
२६	पादुका	,,	....	....	....	....	....	

ईस प्रकार भोंहरे (तलघर) में प्रतिमाये हैं । मूलनायकके दाहिनीबाजू बेदीपर २१ प्रतिमायें व गुरुगादी है ।

मंदिरमेंकी (ऊपरकी) मूर्तियोंका वृत्तांत.

नम्बर	नाम मूर्ति	पाषाणका रंग	धातु	चिन्ह	सम्वत्	शक	संघ	विशेष विवरण.
२७	पार्श्वनाथ	सफेद	....	नाग	१९३८	....	मूलसंघी	ये दोनों प्रतिमाएं सहस्रफणी कहलाती हैं ।
२८	पार्श्वनाथ	,,	....	,,	,,	....	,,	
२९	अजितनाथ	,,	...	हाथी	१९३८	....	....	
३०	पार्श्वनाथ	,,	....	नाग	१९४८	....	....	
३१	चन्द्रनाथ	,,	....	चंद्र	१९३४	....	....	

नम्बर	नाम मूर्ति	पाषाणका रंग	धातु	चिन्ह	सम्वत्	शक	संघ	विशेष विवरण.
३२	पद्मप्रभु	,,	....	कमल	१९४८	....	....	
३३	अरहनाथ	,,	...	मीन	१९४८	....	....	
३४	चन्द्रनाथ	,,	....	चंद्र	....	...	....	
३५	पद्मप्रभु	,,	....	कमल	१९४८	....	....	
३६	आदिनाथ	,,	....	बैल	१९३८	....	....	
३७	पार्श्वनाथ	,,	..	नाग	१९४९	....	....	
३८	पार्श्वनाथ	काला	....	नाग	१९४८	.	....	
३९	पार्श्वनाथ	,,	...	,,	,,	..	...	
४०	पार्श्वनाथ	,,	....	,,	....	....	..	संवत् दिखता नहीं।
४१	पार्श्वनाथ	,,	....	,,	१९४३	...	....	
४२	पार्श्वनाथ	....	पीतल	....	....	....	....	सवत् दिखता नहीं।
४३	चौबीसी	...	पीतल	....	१९२८	...	...	
४४	यंत्र दश ला०	...	,,	....	....	१७२८	....	
४५	यंत्र सिद्धोका	...	,,	....	....	१६०७	....	
४६	यंत्र दर्शनाआष्ट	....	,,	....	....	,,	..	

नम्बर	नाम प्रतिमाजी	पाषाणका रंग	धातु	चिन्ह	सम्वत्	शक	सघ	विशेष विवरण ।
४७	यंत्र दशलाक्षणी	....	तांबा	....	१८९२	....	....	
४८	यंत्र दशलाक्षणी	....	,,	....	१८४९	....	....	
४९	पादुका	काला	....	....	....	....	....	शेणगणके गुरुकी गद्दी है तथा चौकके बाजूमे भट्टारक श्री विशालकीर्ति बलात्कारकी गद्दी है गांवके बाहर बगीचेमें दो मंदिर हैं ।
५०	पार्श्वनाथ	संफेद	....	नाग	१९४८	....	...	
५१	चन्द्रनाथ	....	....	चन्द्र	....	....	....	

इनके सिवाय ४ नाशियां है जो सब दिगम्बरी अम्नायकी हैं । इसप्रकार जो मूर्ति, पादुका, यंत्र, पद्मावती वगैरह हैं वे सब प्रकाशित किये हैं ।

इससे मालूम होता है कि यह क्षेत्र दिगम्बर जैनियोंका ही है। इन्होंमें मूलनायक प्रतिमा श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथजीकी चतुर्थ कालकी है । यह प्रतिमा अनुमान २॥ फीट ऊंची अधर जमीनसे एक अंगुल आकाशमें तिष्टे हैं। बोल कबूलवाले अनेक यात्री आते हैं शिरपुरवालोंके तरफसे इस क्षेत्रका प्रवन्ध शान्तिनाथ नेमाजी मुनीमके हाथमें है। इस प्रतिमाके न कडौरा (कर्धनी) है न पहले चक्षु चढ़ाये जाते थे। रुईके व्यापारके कारण जो श्वेताम्बरी उधर जातेथे वे भी दर्शन करने लगगये और अपना स्वत्व जमानेका प्रयत्न कर रहे इस कारण दोनोंमें झगड़ा चला। इसका फल यह हुआ कि दोनोंकी सलाहसे यह ठहरा कि इस प्रातिमाकी एक दिन प्रभातमें ३ घंटे पहिले दिगम्वरी फिर दूसरे दिन श्वेताम्बरी ३ घंटे पूजन करें। इस ठहरावके माफिक काम होता रहता है । धर्मशाला बहुत अच्छी वनीं हुई है।

आकोला।

यह शहर नदीके दाहिने किनारेपर वसा हुआ है। यहां शैतवाल लोगोंका चैत्यालयमें पूजन प्रक्षालनका कुछ इन्तज़ाम नहीं है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके कुल १५ गृह हैं जिसमें मनुष्य संख्या ८० है। उक्त लोगोंका १ नया चैत्यालय तथा नयी धर्मशाला वनीहुई है। यहां मन्दिरजीमें धर्मशास्त्र ४० हैं। उनमें प्राचीन ग्रंथ ५-६ हैं। लोग कहते हैं कि वे कानडी लिपिमें लिखे हैं।

अमरावती।

वरारमें जिला अमरावतीका हैडकुआटर (सदर मुकाम) है और जी. आय. पी. रेलवेपर व्यापारका वडा स्टेशन है । अमरावतीका प्राचीन नाम अम्वावती था ऐसा सुनते हैं क्योंकि यहांपर सवसे अनोखा देशीमकान भवानीका मन्दिर है जिसको अम्वा माईका मन्दिर भी कहते हैं। कहते हैं कि यह मन्दिर १००० वर्षका वना हुआ है । यहराज्य हैदरावादवाले नव्वाव निजाम साहवका था हैदरावादवाले नव्वावके मुख्त्यारका वनवाया हुआ इसी नगरको कोट घिरा हुये है। यहांपर जैनदिगम्बर आम्नायके गृह ११३ और मनुष्य संख्या ४२३ है। १४ शिखरवन्द मन्दिरजी और २१ चैत्यालय हैं जिनमें

जो एक बड़ा जैन मन्दिर है करीब ५०० बर्षका पुराना जाहिर होता है। जब यह अमरावती नगरी वसी थी उस समयका बना हुआ है और बड़े मन्दिरमें मूल-नायक श्रीआदिनाथ स्वामीकी प्रतिमा अति मनोग्य है उनके ऊपर जो सम्वत है वह ११४३ पढ़ा जाता है। यहांपर उक्त आम्नायकी दो धर्मशाळा भी हैं। सवाईशेठ मोतीलाल बाबूलालजी, सिंगई बंशीलाल पन्नालाल सेक्रेटरी जैन सभा यहांपर बड़े धर्मात्मा हैं।

अमरावती रुईके व्यापारके कारण बहुत मशहूर है और बरारमें बड़ा धनवान् नगर है। यहां कई रुईकी कलें हैं। १८०४ ई० में जनरल वेलस्ली साहब गाविलगढ़ जीतनेके बाद यहां आये थे।

अस्लाना।

यह बड़ा गांव सुनार नदीके दाहिने किनारेपर बसा है जो दमोहसे ११मील वायव्यकी ओर है। यहांपर नदीका दोह पड़गया है जो सदैव पानीसे भरा रहता है। यह गांव दिन प्रतिदिन उजाड होता जाता है। हाल यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान ११५० है जिसमें दिगम्बर आम्नायके जैनियोंकी संख्या ३१ है।

इस ग्रामके उत्तर और पूर्वकी ओरसे मराठी राज्यका सुंदर पत्थरोंका परकोटा है जिसमें उत्तम बुर्जें हैं। कहते हैं कि इसको नगजू तिवारी बल्दवानसिंहने अनुमान १२५ वर्ष पूर्व बनाया था अब गिरता जाता है।

यहांपर बस्तीके बाहर एक जैन मन्दिर शिखरबन्द और धर्मशाला खाली पड़े हुई है। इस स्थानसे कपास, अलसी आदि सबप्रकारका अनाज और देशी कपड़े अन्य स्थानोंको जाते हैं कुछ दिनोंसे देशी साड़ी, जोड़े, चौरखाने और धूपछाँह भी तैयार होने लगी है।

आकोट।

यह कसबा जिला आकोलेकी तहसीलका सदर मुकाम है। यहांपर दिगम्बर जैन आम्नायके गृह १८ हैं और मनुष्यसंख्या ७१ है और एक मन्दिरजी है जिसमें १५ धर्मशास्त्र हैं। उक्त मंदिरके नीचे एक भूगर्भ है। उसमें श्रीऋषभनाथ

स्वामी पहले तीर्थंकरकी अतिमनोग्य प्रतिमा चौथे कालकी है पर यहांके आस-पासके लोग और निकटवर्ती ग्रामवाले इसे माणिकनाथकी प्रतिमाजी कहते हैं पर आसनमें बैल (वृषभ) का चिह्न खुदाहुआ है और संवत् वगैरहका चिह्न देखनेमें नहीं आता परन्तु प्रतिमाजी चतुर्थ कालकी हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है। यहांपर दरीके फरश और दरी बहुत अच्छी बनती है।

आरंग।

कमिश्नरी छत्तीसगढ़ जिला रायपुरसे २२ मीलके फासलेपर यह कसबा दिन प्रतिदिन बढ़तीपर है। यहांकी मनुष्यसंख्या केवल ६५०० है जिसमें कई अग्र-वाल जैन बड़े २ साहूकार हैं। यहांपर बहुतही प्राचीन मन्दिर वा तालावोंके खंडहर पाये जाते हैं और दो चार वक्तपर कई आदमियोंको यहां मकान आदि बनानेके लिये नींव खोदते समय कई दिगम्बरी जैन प्रतिमाएँ भी मिली हैं इससे मालूम होता है कि यह कसबा प्राचीनकालमें एक बड़ा नगर होगा पर कालदोषसे इसकी ऐसी स्थिति हो गई है। हालमें यहांपर केवल एक जैन दिगम्बर आम्नायका मन्दिर बहुत सुंदर है जो मरम्मत न होनेसे गिरने लगा है पर सरकारनें उसके लोहेकी जंजीरसे खूब बंधवादिया है। इसको भांड-देवल भी कहते हैं और इसके चित्रोंकी कारीगरी अति मनोग्य देखने योग्य है। यहांसे आध मीलके फासलेपर बगेश्वर महादेवका मन्दिर है जिसके दर्शनके लिये यात्री जगन्नाथको जातेसमय यहांपर आते हैं। शहरके पश्चिम ओर तालावके किनारेपर महामायाका एक छोटा स मन्दिर है। यहांपर कारीगरीके नमूने अच्छे हैं और एक टूटाफुटा शिलालेख २४ लैनका रक्खा हुआ है।

परकोटाके बाहर तीन जैन दिगम्बर आम्नायकी प्रतिमायें हैं जिनमें एक श्रीअजितनाथ स्वामीकी हाथीके चिह्नकी दूसरी नेमिनाथ स्वामीकी शंखके चिह्नकी और तीसरी श्रेयांशनाथ स्वामीकी गेंडेके चिह्नकी दीवालमें स्थित हैं। करीब दश वर्ष हुए यहां एक स्फटिक शिलाकी प्रतिमा मिली थी जिसकी कीमत नीलाम होनेपर २-३ रुपया आई पर उसकी परीक्षा होनेपर उक्त प्रतिमाजीकी न्यौछावर ५०००) रुपया हो गई। इससे मालूम होता है कि यह शहर पहिले जैनियोंका बड़े महत्वका स्थान हो चुकाहै।

यहांपर अनाजकी बड़ी भारी मण्डी है और शनिवारके दिन यहांपर बड़ा साप्ताहिक बाजार होता है। यात्रियोंके लिये यहांपर एक धर्मशाला भी है।



आर्वी।

यह कसबा वर्धासे ३४ मील वायव्यकोनकी ओर तहसीलका सदर मुकाम है। इसका आर्वी नाम होनेका कारण यह है कि यहांपर पहले फूलमाली रहते थे और आडवीका व्यापार करते थे इस लिये आडवीका अपभ्रंश आर्वी हो गया।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंकी आबादी अनुमान ११६ है तथा गृह २७ और ६ मन्दिरजी हैं। मन्दिरजीमें अनुमान ६० धर्म शास्त्र हैं। कहते हैं कि इस कसबेको ३९० वर्ष हुए तेलंगरावबलीने बसाया था इसकी यात्राके लिये हरसाल हिन्दू और मुसलमान आकर इकट्ठा होते हैं। व्यापार हरप्रकारका होता है।

श्रीअतिशयक्षेत्र श्रीआहारजी।



यह स्थान ओरछा रियासतकी राजधानी टीकमगढ़से पूर्वकी ओर १९ मील ललितपुर स्टेशनसे आग्नेयकी ओर ४४ मील और मऊरानीपुरसे ४२मीलके फासलेपर है। अभीतक यह क्षेत्र एक प्रकारसे लोगोंके परिचयमें बहुत कम है।

अहार ग्राम एक तालाबके किनारे बसा हुआ है। इस ग्रामसे करीब ६ मीलके फासलेपर एक ऊजड़ स्थानमें तीन दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। ये तीनों मन्दिर क्रमसे बड़ामन्दिर, दहलान, और सभा ऐसे तीन नामसे प्रसिद्ध हैं।

१ बड़ामन्दिर—यह मन्दिर प्राचीन ढंगका मठके आकारका है। बाहरसे तो जमीनसे ऊंचा है, परन्तु भीतर गहरा है। इसमें कुल पांच प्रतिमायें हैं। जिनमेंसे मूलनायक श्रीशान्तिनाथ महाराजकी प्रतिमा खड्गासन और शेष चार जो बीचमें हैं, पल्यंकासन स्थित हैं। मुख्य प्रतिमाकी उंचाई २१ फुटसे कम नहीं है। वह बडी विशाल और मनोज्ञ प्रतिमा है। इनका पाषाण यद्यपि देशी है, तथापि बहुत चमकदार है। आसनके नीचे एक शिलालेख है जिसकी लेखनप्रणाली प्राचीन ढंगकी है. इसलिये पूरी २ नहीं पढ़ी जासकती है। सुनाहै कि, महाराजा ओरछाने इसके बांचनेका उद्योग किया था, परन्तु उसमें सफलता नहीं हुई।

यह प्रतिमा स०१२३७ की प्रतिष्ठा की हुई है । राजाका नाम देवपाळ रत्नपाल और निर्मापकका नाम भानुरूप है । श्रुतसागर, पद्मभास्कर, शुद्धकीर्ति आदि नाम विशेषोंका अभिप्राय पूरी तरहसे न पढ़े जानेके कारण ठीक२ समझमें नही आता है । इस प्रतिमाके हस्त, चरण और वेद आदि अवयव खण्डित हैं, जिन्हें किसी धर्मात्माने जुडवाकर ठीक करा दिये हैं। कहते हैं—बादशाह औरंगजेबकी कृपासे उक्त प्रतिमा खण्डित हुई थी ।

दूसरी दो प्रतिमायें भी उसी समयकी बनी हुई हैं। उनकी उंचाई ८ या ९ फुटके करीब है। शिलालेख कहीं कहीं फूटगया है । और जो शेष है, वह अस्पष्ट होनेसे पढ़ा नही जाता है । शेष दो प्रतिमाएँ संगमूसाकी श्यामवर्ण हैं। ये सम्वत् १२०३और १२१२की प्रतिष्ठित हैं । उंचाई ३॥फूट है। शिलालेखमें कुजित्रदेव, कमदेव और लखनदेवके नाम पढ़े जाते हैं ये प्रतिमाएँ भी नासिका अंगुष्टादि अवयवोंमें खण्डित हैं ।

२ दहलान—टीकमगढ़के एक धर्मात्माने इस मन्दिरकी मरम्मत कराके यहींकी प्रतिमाएँ पधरा दी हैं । प्रतिमाकी प्रतिष्ठाका सम्वत् १६७२ है ।

३ सभामन्दिर—यह मन्दिर खुला हुआ बैठकके आकारका है। थोडीसी खण्डित प्रतिमाएँ रखी हैं । और सब खाली है ।

इन मन्दिरोंके चारों ओर मैदानमें शतशः खण्डित प्रतिमाएँ पड़ी हुई हैं, जिन्हें देखकर हृदय विदीर्ण होता है ।

पूर्वकालमें यहांपर एक बडा भारी नगर था । शिलालेखोंसे उसका नाम मदनेश सागरपुर जान पड़ता है **पपौरा अतिशय क्षेत्र**के भौंहिरेमें जो संवत् १२०२ की प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ हैं, उनपर "मदनेशवर्मदेवराज्ये" ऐसा लेख लिखा हुआ है । इससे जान पड़ता है कि, आहार ग्रामके तालावका नाम उक्त राजाके नामसे **मदनेश सागर** पड़ाहोगा, और उसके किनारेके नगरका नाम मदनेश सागरपुर प्रसिद्ध हुआ होगा । इस नगरका विस्तार १६ मीलके करीब था । आहार,नारायणपुर सरकनपुर, सिमरी, लड़वाई आदि ग्राम उक्त नगरके ही टुकडे हैं ।

यहां एक किवदंती प्रसिद्ध है कि, सेठशिरोमणि नामके एक प्रसिद्ध व्यापारी इस नगरमें रहतेथे । एक वार उनका टांडा (बैलोंका झुंड) दक्षिणकी ओर रांगेको लेनेके लिये भेजा गया था । जिस समय यह टांड़ा रांगा लादकर वापिस आया, उस समय देखा गया, तो रांगेके स्थानमें चांदी भरीहुई थी । यह देख शेठजीने

अपने कर्मचारियोंको आज्ञा दी कि, हमने रांगेकी कीमत अदा की है, इस लिये हम इस चांदीको नहीं लेते। तुम लोग इसे वापिस करके रांगा ले आवो। आज्ञाकी पालना हुई। लदा हुआ टांड़ा फिर दक्षिणकी ओर भेजा गया। परंतु जब वह वहाँ पहुंचा और देखा गया। तो रांगा हो गया। लाचार फिर वापिसी हुई। परंतु शेठजीके यहां आनेपर रांगेने फिर चांदीका रूप धारण किया। यह देख शेठजीने प्रतिज्ञा की कि,यह कुल द्रव्य धर्मकार्यमें लगा दूंगा। और तदनुसार उन्होंने यहांका बड़ा मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई। गजरथ निकलवाया। ५२गज लंबी चौड़ी वेदी बनवाई,जिसके निशान अबतक मौजूद है। इस प्रतिष्ठामें लाखों जैनी एकत्र हुए थे।

इस मन्दिरके बननेके पश्चात् इसके आसपास लगभग पचास मन्दिर और भी अनेक धर्मात्माओंने बनवाये थे, पर बादशाही जमानेमें वे सब नष्ट कर दिये गये। उक्त मन्दिरोंकी खण्डित प्रतिमाएँ जहाँ तहाँ पड़ी हुई निर्दयी बादशाहोंके अत्याचारोंको पुकार२कर कह रही हैं। काल भी कैसा खिलाड़ी है। आज उन खंडन करनेवालोंका वैभव ही उसने सदाके लिये अपनी विस्मरणशीला गोदमें रख लिया है।

बड़े मन्दिरके पीछे सुनते हैं, एक भौंहिरा है, जिसमें अनेक प्रतिमाएँ सुरक्षित रक्खी हुई हैं। चंदेरीकी प्रसिद्ध चोवीसीका मन्दिर यहांके मन्दिरोंका आदर्श है।

यहांसे कुछ दूरीपर पहाड़ोंमें कुछ स्थान है, जिन्हें लोग चन्देल राजाओंका क्रीडास्थान बतलाते हैं। पूजन रोज होती है, परन्तु प्रक्षाल बिलकुल नहीं है। पूजनकी व्यवस्था नारायणपुर और आहारके जैनियोंके द्वारा होती है।



एलचपुर (बरार)

—∞:o:∞—

एलचपुर शहर बहुत प्राचीन जिला अमरावतीमें है। इसका ऐसा नाम यों पड़ा कि यहांपर राजा जैनी एल होगया और उसीने कहते हैं सन १०१८ में बसाया है। यहांपर ब्राह्मण राजा भी होगया था और उस राजाके समय यह बरारकी राजधानी था। यहांपर लोग कहते हैं कि पहले प्राचीन समयमें ४०००० चालीस हजार गृहसंख्या थी पर अब वर्तमानमें बहुत उजाड़ होजानेपर भी यहांकी मनुष्य संख्या अठाईस हजार है।

इस शहरमें ५२ पुरा थे और ५२ जिनमन्दिर थे उसवक्ततक राजा जैनी एलकरके प्रसिद्धरहा तत्पश्चात् मुसलमान लोगोंकी कार्रवाई जारी हुई, उसी समय जो जिनमंदिर थे उनको दवाकर मुसलमान लोगोंने मसजिद् बना लिये अब भी दिगम्बर जैनियोंके ८ आठ गृह जिसमें २६ आदमी हैं और ४ जिनमन्दिरजी तथा एक श्वेताम्बरी मंदिरभी है। सुलतान पुरामें शिखरबन्द मंदिरजी एक वा चैत्यालय वरू १० सरगसपुरमें १ चैत्यालय खास शहर एलिचपुरमें एक चैत्यालय है। सुलतानपुरामें लालासा मोतीसा धनाढ्य शेठ है और इस पुराका मंदिरजी २०० वर्षके करीबका बना है.वा शहर एलचपुरका चैत्यालय चारसो वर्षके अनुमानका बना कहतेहैं। सुलतानपुरामें जो मन्दिर शिखरबन्द है उसमें मूलनायक श्रीशांतिनाथ महाराजकी प्रतिमा है। कहते हैं कि एक समय आग लगी तो मनुष्योंनें चाह कि प्रतिमा उठा लेवें पर प्रतिमा पद्मासन अनुमान २ फुटकी है और ५–६ आदमीने उठाई पर नहीं उठ सकी और आग भी उसी समय बुझ गई स्थापनाका संवत वगैरह नहीं मालूम होता है। और एक नसियां श्रीभट्टारक रत्नकीर्तिजी कारंजा लाडवालोंकी सम्वत् १९५६ में बनीहुई वा प्रतिष्ठा कराई गई है। इन्होंके देवलोक होनेका संवत् १९४९ विक्रम है। शहर एलचपुरमें जो चैत्यालय है उसमें एक प्रतिमा वीरनाथस्वामीकी पद्मासन है और वीजक वगैरह घिस जानेसे नहीं मालूम होता है। मूलनायक प्रतिमा पार्श्वनाथ स्वामीकी है।

इस सुलतानपुरामें एक किला अभीतक मौजूद है। वह स्मायलखांके वक्तमें बना हुआ था और उसीने एलचपुरका कोट बनायाथा–

इस शहरसे जो पुरा लगते हैं वह कोटके बाहर हैं। और मील आध मील वा कोई दो मीलके फासलेपर हैं। कहते हैं कि उजाड हो जानेसे इतना फासला पड़गया है।

एलचपुरमें दरी, दुपट्टा, शूशी, साड़ी आदि प्रसिद्ध चीजें यहांपर बनती हैं और लकड़ीका बाजार बहुत भारी भरता है और यहां दुल्लारहिमानकी मस्जिद बहुत प्राचीन है। यहांसे श्री मुक्तागिरिजी जानेका मार्ग है।

ओंकारजी।

यह ग्राम जिला निमाड़ खंडवा तहशीलमें हिंदुओंकी बड़ी पवित्र जगह है और बी. बी. एंड सी. आई. के मोर्टक्का स्टेशनसे ७ मीलकी दूरीपर है। बैलगाड़ीका

पक्का रास्ता है और यहाँसे सिद्धवरकूटजी १॥ मील जगह है । यहांपर नर्मदा और कावेरीका संगम हुआ है बाद फिर अपनी २ शाखा फूटकर जुदी २ वहती गई हैं । यहाँ दरिया नर्मदाके किनारे पहाड़ीपर एक बहुत पुराना ओंकारजीका मंदिर है । जिलेका सबसे बड़ा मेला कार्तिक सुदी पौर्णमासीके दिन इस मन्दिरपर होता है ।

ओंकारजीमें एक धर्मशाला भी है । और जैन दिगम्बर आम्नायका गृह सिर्फ १ है ।

कटनी ।

यह नगर जिला जबलपुरमें बंगाल नागपुर, ईस्ट इन्डियन रेलवे और जी. आई. पी. रेलवे के संगमपर बसा हुआ है । यहांकी आबादी करीब १४००० है जिसमें जैन दिगम्बर आम्नायकी संख्या १७६ है । दिगम्बर आम्नायके यहांपर गृह ३८ तथा छह शिखरबन्द मन्दिरजी हैं उनमें अनुमान एकसौ १०० धर्मशास्त्र हैं और उक्त आम्नायकी एक धर्मशाला भी एक मंदिरके पास है । यहांपर जैन पाठशाला है जिसका कार्य्य अच्छा चलता है । पाठशाला और बोर्डिङ्गके लिये पंचोंने एक अच्छा मकान भी बना दिया है ।

कटनीमें गल्ले, अनाज, तेलके बीज, घीऊ, लाहा और चूनाका व्यापार बहुत अच्छा होता है विशेषकर यह नगर अनाजकी बड़ी मण्डी है । यहां एक रंग भी तयार होकर बाहर जाता है ।

स्टेशनपर पहले और दूसरे दर्जेके मुसाफिरोंके वास्ते एक छोटासा वेटिंगरूम है और शहरमें एक बड़ी सराय है ।

करेली ।

यह ग्राम जिला नरसिंहपुर (जबलपुर) में जी. आई. पी. रेलवेका खास स्टेशन है । स्टेशनपर पहले दूसरे दर्जेके मुसाफरोंके लिये वेटिंगरूम और स्टेशनके पास डाकबंगला और सराएं हैं । करेलीसे ९ मील सागरकी सड़कपर बीरमान गांवमें नवम्बर और दिशंबरमें या उन महीनोंमें कार्तिक सुदी पूर्णिमाके मौकेपर यात्री आते हैं । यह मेला १५ दिन रहता है और इसमें व्यापारभी बहुत होता है । यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह १२ हैं और मनुष्यसंख्या ८५ हैं और एक मन्दिरजी शिखरबन्द है जिसमें अनुमान १५ धर्मशास्त्र हैं ।

श्रीअतिशय क्षेत्र ।

कारंजाजी ।

यह कसबा प्रांत बरार जिला उमरावतीमें मूर्तिजापुर स्टेशन (G. I. P Railway)से करीब २१ मीलके फासलेपर बेवला नदीके किनारे बहुत प्राचीन अतिशय क्षेत्र है । स्टेशनपर हरवक्त सब प्रकारकी सवारियां मिलती हैं । यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह १२९ हैं जिनमें ६४८ मनुष्य संख्या है । यहांपर ३ शिखरबन्द बहुत बड़े जिनमंदिरजी हैं जिनमें दर्शन ७ जगह हैं । यहां एक मंदिरजीमें २१ प्रतिमा चांदीकी ४ स्वर्णकी १ हीरेकी १ मूंगेकी एक पन्नेकी ४ गरुडमणिकी और धातुपाषाणकी हजारों प्रतिमाएं हैं औ वे सब चौथे कालकी हैं । इनके इलावे तीन सहस्रकूट चैत्यालय तीन हाथ लंबे चौड़े पांच हाथ ऊंचे साचेमें ढालकर बना हुए हैं । इनमें एक हजार आठ मूर्तियां सांचोंमें साथही ढालकर बनाई गई हैं.

यहांपर इस कसबेके चारों ओर दीवार बनी हुई हैं । व्यापारकी मंडी बहुत बडी है । इस नगरमें और कई पुराने मन्दिरजी और लकडीके मकान अच्छे २ बने हुए हैं । किरज ऋषिके नामपर यह कारंजा बसाया गया है । हिंदूलोगभी इसको पवित्र स्थान मानते हैं और हरवर्ष अप्रैल महीनेमें मेला भरता है । यहां दो भट्टारकोंकी प्रसिद्ध गद्दियां हैं एक बलात्कारगण दूसरे सेनगण । सेणगण भट्टारक के मंदिरजीमें संस्कृत प्राकृतके प्राचीन ग्रन्थोंका बहुत बड़ा भंडार है जिसमें १६०० ग्रंथ और कुछ ग्रंथ ताड बृक्षके पत्तोंपर हैं भट्टारक जी विद्वान् और अध्यात्मके रसिक हैं। पं० जिनवरदासजी विद्वान् और धनाढ्य हैं । जैन पाठशाला है । बलात्कारगणके मंदिरजीमें भी शास्त्रभंडार है ।

कामठी ।

यह नगर नागपुरसे दश मीलके अंतरपर कहान नदीके किनारे (जी. आई. पी.) रेलवेका स्टेशन और सेनाका स्थान है । इस प्रदेशके बड़े नगरोंमें यह चौथा नगर है । यहांकी मनुष्यसंख्या करीब ३९००० है जिसमें दिगम्बरजैनी ८५ हैं ।

और जैन दिगम्बर आम्नायके गृह २४ तथा मन्दिरजी शिखरबन्द ७ हैं। मन्दिरोंमें दर्शन १० जगह हैं और धर्मशास्त्र करीब ६०–७० हैं। एक धर्मशाला भी प्रवासियोंके लिये बनी है। यहांपर अनाज आदिका बड़ा व्यापार होता है।

श्री अतिशयक्षेत्र कुंडलपुर।

मध्यप्रदेशके दमोह जिलेसे अनुमान २० मील इशानकी ओर श्रीकुंडलपुर अतिशय क्षेत्र है। वहांके पर्वतका आकार कुंडलरूप है और इसी कारण उस स्थानका नाम कुंडलपुर पड़ा होगा ऐसा प्रतीत होता है। यहां पर्वतपर तथा उसकी तलैटीमें सब मिलाकर ५९ मन्दिरजी हैं। मन्दिरोंकी प्रतिमाओंके पहचानका (जो मंदिरोंमें विराजमान हैं) नकशा भी इसके अन्तमें दिया है।

पर्वतपर महावीर स्वामीका मुख्य मन्दिरजी है जिसमें वीर भगवानकी एक विशाल, और प्राचीन प्रतिमा है, प्रतिमाकी उंचाई ४–४॥ गज और विस्तार ३ गजके होनेसे ऐसा प्रतीत होता है कि, प्रतिमा प्राचीन कालकी है और मन्दिरका निर्माण समय पीछेका सं० १९५७ का है। शिलालेख श्रीवीरभगवानके मुख्य मन्दिरके द्वारसे भीतरकी ओर चौखटकी बगलमें एक पत्थरपर खुदा हुवा जड़ा है जिससे विदित होता है कि इस स्थानका जीर्णोद्धार ब्रह्मचारी नेमिसागरजीके प्रयत्नसे जैनधर्मलीन महाराज छत्रसालके राज्यमें हुआ है।

शिलालेख।

ओंनमः सिद्धेभ्यः॥

संवत् १७५७ वर्षे माघ सुदि (१) १५ सोमवासरे॥
संवत्सरे पर्वतवान (ण) युक्ते (सप्त शते) चैव सहस्रमेके॥
श्रीमाघ मासे सित पूर्णिमायां श्री चंद्रवारेच मघा नक्षत्रे॥ १॥
याते यदा विक्रमराज्यकाले तदान्वये श्री जिनमन्दिरे वै॥
कृतं समाप्तं बहुपुण्यहेतुं, श्रीवर्द्धमानस्य जगद्गुरो हि॥ २॥

मूलसंघे बलात्कारे गणे गच्छे सरस्वत्याः (१)॥
यों बभूव मुनिर्धीमान् कुन्द कुन्द मुनीश्वरः ॥ ३ ॥

तस्यान्वये संजातो ज्ञानवान् गुणसागरः ॥
मनस्वी संघसंपूज्यो यस (शः) कीर्तिर्महामुनिः ॥ ४ ॥

पट्टे तदीये ललितादिकीर्तिः ध्यानी सुधी श्रीजिनतत्ववेदी ॥
संसारभीतो जिनमार्गदेसी (शी) सुराहि(धि)पै पूजित पादपद्मः ॥५॥

तत्पट्टधारी जिनधर्मनिष्ठः श्रीधर्मकीर्तिः सु (शु) भज्ञानमूर्तिः ॥
श्रीरामदेवस्य पुराणकर्ता ज्ञानी विवेकी च हितोपदेसी (शी) ॥ ६ ॥

तत्पट्टपंकेरुह भानुमूर्तिः पद्मालयः श्रीमुनिपद्मकीर्तिः ॥
दमी व्रती सत्वहितोपदेसी (शी) संसारवारां निर्वारसेतुः ॥ ७ ॥

तत्पट्ट भोक्ता गुणवान् सुधीसः (शः) श्रीशब्दशास्त्रार्णवपारप्राप्तः ॥
सुधी तपस्वी सुसु..(रेन्द्र)कीर्तिः दयाव गाहीच..(क्ष)मी मनस्वी ॥८॥

तच्छिष्य यातोसु (शु)चि ब्रह्म...रा दमी क्षमी.......गुरो यः ॥
श्री(१)सुरें..(द्र)कीर्तिः स्वगुरो(रू)प देशा दादाय भिक्षाटण द्रव्यभारं

कसु अनंतम् (१) जिनेश्वरस्य श्रीसन्मतेः मंगल कारणस्य ॥
जीर्णं समालोक्य महामनोज्ञं श्रीनूतनं (१)पुण्यविवर्धनीयम् ॥१०॥

धर्म सागरोयं.......(य) दा दीला (१) ग्रामें स्वायुत्तयं (१) कृत्वा किंचिदिकान्यूनं चैत्यालयं विहाय स्वमति तदात्वागत्य नेमिसागरेण ब्रह्मचारिणा विदुषा तस्य धर्मस्य गुरवे (१) धुना वेदिकादिक सर्वपूर्ण काराइत्वेदं संवत्सरं लिखित्वा स्थापितं ॥ श्रीमहाराजाधिराजः कासी (काशी) स्व (श्व) रगाहिरवारान्वये (य) स्य प्रचंडसा (शा) सकस्य अरिवगा (र्गा) ननी (नि) भृतस (श) तखंडकरणासतिद्वत्यमून दण्डमडितरय सकल प्रवलानीपन (१) समूहमस्तकालीमाला

चुंबितचरणारविंदस्य जिनधर्ममहिमायां रतिभूतचेतसः प्रबलतरकठोर-भुजदंडविशिष्ट-निजविग्रहस्यषटदर्शनविशिष्टाभ्यागतसंभाषणकरणप्रवीणस्य स्वधर्मरुपाषण (?) समर्थस्य दानिनः सूरवीरस्य देवगुरुशास्त्रपूजनतत्परस्य श्रीमहाराजाधिराज्ञः श्रीछत्रसालस्य महाराज्ये सकलसुंपत्स (संपत् ?) युक्तप्रज्ञानिवा....सेस्य चैत्यालयस्य निर्मापनं जातः ॥

(शुभं भवतु मंगलं भवतु)

वीर भगवान्की प्रतिमाके पास दो सुंदर प्रतिमा और भी खड्गासन विराजमान हैं ।

इस अतिशयक्षेत्रके विषयमें जो पुराना इतिहास सुननेमें आता है वह यह है:—बादशाह महमूद गजनवी प्रतिमा पूजाका पूर्ण विरोधी तथा भारतवासियोंके धर्मका कट्टर शत्रु इस क्षेत्रपर आकर मन्दिरों और प्रतिमाओंको तोडनेके लिये उद्युक्त हुवा उस समय अनेक प्रतिमाओंके दर्शनीय पावन शरीरपर उस अविचारी पापी बादशाहकी टांकी और हाथौड़ा चलना प्रारम्भ हो गया यह देख जैनी लोग त्राहि त्राहि करने लगे । वीरभगवान्की मूर्तिपर ज्योंही टांकी चलाई गई कि, उसमेंसे क्षर २ दूधकी धारा वहने लगी यह दृश्य देखकर बादशाहा स्तंभित हो गया ।

किसी समय श्रीमहेन्द्रकीर्तिजी भट्टारक हिंडोरिया नामक ग्राममें जो कि कुडलपुर अनुमान ११ मील है कारण विशेषसे आये और वैराटनगर जो-हिंडोरियाके समीप ऊजड होगया था देखनेको गये । कारणवशात् मार्ग भूल गये और पटेरा ग्राममें ज पहुँचे । भट्टारकजीको जिन विम्बदर्शनपूर्वक आहार लेनेकी प्रतिज्ञा थी और पटेरा ग्राममें जिनमन्दिर नहीं था । इस कारण भट्टारकजी दो अहोरात्रि निराहारा रहे । तीसरी रात्रिके उनको स्वप्न हुआ कि कुंडलगिरि पर्वत (जो कुंडलाकार होनेके कारण अपने नामको सार्थक करता है) की खोहमें विशाल जिनमन्दिर व जिनबिम्ब हैं । इस लिये दर्शन कर कृत्य कृत्य होओ । प्रातःकाल भट्टारकजी कुंडलपुर गये और जिनमन्दिरका हाल व पता तलाश किया तो ग्रामवासियोंमेंसे अधिकांश लोग कुछ भी हाल न बता सके । परंतु जंगलमें सदा भ्रमण करनेवाले एक वृद्ध भीलने भट्टारकजीको साथ ले जाकर मन्दिरका पवित्र स्थान बता दिया । उस समय भट्टारकजीको जो अपूर्व आनंद हुआ होगा, उसका वर्णन नहीं हो सकता । भट्टारकजीने वहांकी सब झाड़ पेडोंको

साफ कराया और मन्दिरमें जाकर श्रीमहावीर स्वामीकी बृहत्पद्मासन मूर्तिके दर्शन किये और अपना जन्म सफल माना। जिनमन्दिरका सर्व प्रकार उद्धार कर भीलको द्रव्यद्वारा संतोषित किया और आगामी कालको उसे इस मन्दिरका रक्षक नियत कर चले गये। उस समयसे इस क्षेत्रकी प्रसिद्धि सर्व साधारणमें हुई।

बुंदेलेर राजपूतोंमें प्रसिद्ध राजा क्षत्रसाल किसी समय दिल्लीके बादशाहके भयसे श्रीकुंडलपुरके निकटस्थ जंगलमें रहते थे। अकस्मात् किसी दिन वे भी इस मन्दिरमें आये और श्रीमहावीरकी मनोज्ञ प्रतिमा देखकर आश्चर्यान्वित हुए। ग्रामवासियोंसे समाचार पूंछे और समाचार जानकर राजा, भट्टारकजीके पास नगरमें आये और जैनधर्मका उपदेश सुनकर मुग्ध हुए तथा जैनधर्मानुयायी हुए। पश्चात् बादशाहके सेनापतिसे युद्ध करके जयमान होकर उन्होंने पन्नामें अपनी राजधानी स्थापित की और अपना मनोरथ धर्मप्रभावसे सफल जान कुंडलपुर आकर इस प्राचीनमन्दिरका जीर्णोद्धार कराया और नवीन कलशारोहण कर चमर छत्रादि उपकरण चढाये व पूजाविधान समारोहके साथ कराके अपनी राजधानीको गये। उनके चढाये चमरछत्रादि संवत् १९१४की गदरकी लूटमें चले गये। परंतु बरतन वगैरह अब भी मौजूद हैं, जिनपर राजा क्षत्रसालका नाम अंकित है। बडे मन्दिरजीके द्वारपर मरम्मत कराने व शिखर बनानेका संवत् भी अंकित है। इस तरह भट्टारक महेन्द्रकीर्ति और महाराज क्षत्रसालके कारण इस क्षेत्रकी प्रसिद्धि हुई और उन्हीं महाराजने वार्षिक मेला भी लगवाया व मेलेपर वे स्वयं आकर भी धर्मका लाभ उठाते रहे, जो संवत् १९२८तक जारी रहा। पश्चात् जलाशयोंमें पानीकी कमीके कारण सरकारकी आज्ञासे बन्द रहा। पुनः दमोहके भाइयोंकी कोशिससे, जिनमें सेठ वृन्द्रावनजी आदि मुख्य हैं, संवत् १९५८ से इस मेलेका आरंभ हो गया।

बादशाह औरंगजेबकी आज्ञासे जिस समय हिन्दू व जैनियोंकी मूर्ति और मन्दिर नाश किये जा रहे थे, उसकी सेना कुंडलपुरमें भी इसी अभिप्रायसे आई और बडे मन्दिरजीमें श्रीमहावीर स्वामीके पैरके अंगुष्टमें किसी अस्त्रका आघात किया, तो पैरके अंगुष्टसे अपरीमित पसेव व हाथके अंगुष्टसे दुग्धधारा बह निकली और असंख्यात मधुमक्खियां स्वयं प्रगट हुई जो सेनाको अपने तीक्ष्ण डंकोंद्वारा दुःख पहुंचाने लगीं, जिस कारण सेना ठहर न सकी और वह लाचार होकर प्रयाण कर गई। इस अतिशयसे प्रसिद्धता और भी अधिक हो गई और वार्षिक मेला बडे समारोहसे भरने लगा, व दूर

२ के यात्री जवाहिरातसे लेकर अल्पमूल्यके पदार्थतक बेचने लेनेको आने लगे जिससे यह धर्म-की मंडी बनगई वाणिज्य वर्तमान समयमें फूटीहुई प्रतिमाओंके अवलोकनसे हृदयमें बड़ा भारी आघात पहूंचता है।

कई एक सज्जनोंका कहना है कि, श्रीवर्धमान् भगवानका जन्मस्थान यही कुंडलपुर है और इसी कारण चैत्र वदी१३ भगवान्की जन्मतिथिको मेला भरता है परन्तु इस विषयका इतिहास प्रमाण न मिलनेसे विश्वास नहीं होता। वीर भगवान्का जन्मस्थान मगधदेशके राजगृही निकट कुंदनपुर प्रसिद्ध है। इस क्षेत्रमें एकबात विशेष देखनेमें यह आती है कि, बहु भाग प्राचीन वीरभगवान्की प्रतियाओंका ही है।

प्रथम यहांपर एक बड़ा भारी मेला चैत्र वदी १ से १५ तक रहताथा जिसमें ५०-६०हजार जनसंख्या जमा होती थी और व्यापारी पूर्ण लाभ उठाते थे परन्तु अब यहां विलायती मालके चमकने और रेलगाडीके चलनेसे व्यापारका एकदम न्हास होगया। सम्वत १९२८ में बीमारीके कारण मेला सरकारकी ओरसे बन्दकर दिया था जो कि० अनुमान२८सालतक बन्द रहा।

इस क्षेत्रके प्रवन्धकर्ता दमोहके शेठ वृंदावन नाथूरामजी हैं। आपके प्रयत्नसे सं०१९५७से मेला फिरसे जारी हुआ और जिसमें करीब ५०००से१०००० यात्री तक जमा होते हैं हर सालनियमानुसार चलाजाता है। यहांका प्रवन्ध अच्छा है।



श्रीमहावीर (वर्द्धमान) स्वामीके अतिशयक्षेत्र कुंडलपूरजीके दिगम्बर

नम्बर शुमार श्रीमंदिर.	नाम श्री मंदिरका जो बोलने हैं	नाम बनवाने वालेका और मुकाम	नम्बर शुमार (प्रतिमा)	नाम श्रीप्रतिमा	चिन्ह	सम्वत्	शक	आम्नाय
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	श्री वर्द्धमान स्वामी-का बड़ा मदिर	...	१	श्रीवर्द्धमान स्वामी शमोशरण सहित	सिंह	..	...	दिगंबर
२	मेरू	..	२	मेरू*	...	१८४२	...	,,
			३	प्रतिमा	...	...	..	,,
			४	सुमतिनाथ	चकवा	१५४८		,,
			५	प्रतिमा	...	...	...	,,
३	गुमटी १ ली	इन्द्रजीत प्यारेलाल	६	चन्द्रप्रभुस्वामी	चन्द्रमा	१८९४		,,
			७	नेमनाथ स्वामी	शंख	१८९४	...	,,
४	गुमटी २ री	जुडावन चौधरी	८	पार्श्वनाथ	(नाग)सर्प	१९१६	.	,,
५	गुमटी ३ री	धीरे पुजेरी कु	९	चन्द्रप्रभु स्वामी	चंद्रमा		.	,,
६	घाटपिपरिया वालोंकी	नंनेचौधरी, घाट पिपरिया	१०	अरहनाथजी	मीन	१८९७		,,
७	गुमटी	..	११	नेमनाथ स्वामी	शख	...	.	,,
८	गुमटी	..	१२	चौवोस तीर्थंकर स्वा.	सिंह	१५३२	...	,,
९	रेपुरावालोका मदिर		१३	पार्श्वनाथ स्वा०	सर्प	...	..	,,
			१४	अजितनाथजी	हस्ती	१५४८		,,
१०	प्राचीन है पुराना	...	१५	पार्श्वनाथजी	सर्प	..	.	,,
११	वमन पुरावालोंका	उमराव मोदी वमनपुरा	१६	चन्द्रप्रभु स्वामी	चन्द्रमा	१९४७	..	,,
	,,	...	१७	,,	,,	१८२६		,,
१२	गुमटी	...	१८	अजितनाथ	हस्ती	...	...	,,
१३	गुमटी	...	१९	प्रतिमा	..		...	,,
			२०	प्रतिमा	..	...	...	,,
			२१	प्रतिमा	..	...	.	,,
१४	गुमटी	...	२२	वर्द्धमान स्वामी	सिंह	...	..	,,
१५	डवुल्याकी गुमटी	डवुल्या वादकपुर	२३	शातिनाथजी	मृग	१५४८	.	,,
१६	वडकुरजी पटेरा	स्यामले रामलाल वडकुर, पटेरा	२४	आदिनाथ	वृषभ	१९४६	..	,,

मंदिरोंकी प्रतिमाओंके पहचानका (जो मंदीरोंमें विराजमान हैं) नकशा।

धातुकी	पाषाण	वर्तमान कालमें मदिरोंके वारिसोंके नाम		कैफियत.
		नाम	मुकाम	
१०	११	१२	१३	१४
...	देसीपाषाण	...	...	इसही मूलनायक प्रतिमाके द्वारपर एक लेख पाषाण पर खुदाहुआ संस्कृतमें मदिरके जीर्णोद्धर राजाक्षेत्र साल रि० पन्नाका सवत १७५७ कापडा हुआ है और प्रतिमाके आसनपर दोनोंतरफ सिहासनके पास कमलके चिन्ह हैं सवत कुछ नहीं.
...	देसी	...	...	
...	,,	...	...	* इस मेरुका नाम विजयमेरु है और १८ प्रतिमा हैं वा सुरेन्द्रकीर्ति वा महेन्द्र कीर्ति भट्टारकका नाम लिखा हैं.
...	सफेद	...	...	
...	देसी	...	..	
..	सफेद	...	...	ये तीन गुमटी भीतर है, जहां नंदलाल सिंगई नागपुरवालोंने फर्श सम्बत् १९६२ में जडवाया हैं.
...	सफेद	...	...	
	काला	...	..	
.	सफेद	धीरेपुजेरी	कुंडलपुर	
...	सफेद	कल्लू चौधरी	घाटपिपरिया	
...	देसी	...	...	प्राचीन खंडित है
...	देसी	...	...	,,
...	काला	...	...	,,
...	सफेद	...	...	
...	देसी	...	...	प्राचीन है
...	सफेद	कल्लूमोदी	बमनपुरा	
...	सफेद	...	...	
...	देसी	...	...	प्रतिमा देसी पाषाण प्राचीन और मुख-हस्तादिमे खंडित है
...	,,	...	...	
...	,,	...	...	
.	,,	...	.	
...	,,	...	. .	गुंमटीके वांईके दरवाजेपर सम्वत १५०१ पाषाणमें दिवालपर है
...	सफेद	मौजीलालडबुल्या	वांदकपुर	
पितल	...	बडकुर जानकी प्रसाद गोकलप्रसाद	पटेरा	

नंबर शुमार श्रीमंदिर	नाम श्री मदिरका जो वोलते हैं	नाम वनवाने वालेकाव मुकाम	नंबर शुमार (प्रतिमा)	नाम श्रीप्रतिमा	चिन्ह	सम्वत्	शक	आम्नाय
१	२	३	४	५	६	७	८	९
			२५	पार्श्वनाथजी	सर्प	...	...	दिगंवर
			२६	,,	,,			,,
			२७	पुष्पदंतजी	मत्स्य	१९४६	...	,,
			२८	पंचपरमेष्ठी	.	१९५८	..	,,
			२९	पद्मप्रभु	कमल	१८८९	.	,,
			३०	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१९३५	...	,,
			३१	,,	,,	१९५८	...	,,
१७	अजीत पुजेरी वाला	अजीत पुजेरी	३२	आदिनाथ	वृषभ	..	...	,,
१८	वेदकाकी गुमटी	हिरदे नगरवालोंका	३३	,,	,,	१५४८	...	,,
१९	चरण दिवालो	...	३४	पादुका (चरण)	.			,,
२०	छधरिया	हिरदे नगर वाले	३५	पादुका ,,	. .		...	,,
		,,	३६	,,			..	,,
		,,	३७	प्रतिमा				,,
		,,	३८	,,	. .		.	,,
		,,	३९	,,	...	...	...	,,
		,,	४०	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१५४८	. .	,,
		,,	४१	,,	,,	१फ४८	...	,,
		,,	४२	अजितनाथ	हस्ती	१५४८	...	,,
		,,	४३	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१५४८	...	,,
		,,	४४	,,	,,	१५४८	...	,,
		,,	४५	अरहनाथ	मीन	१५४८	...	,,
२१	सेवास वालोंका	प्रेमचद पीतांवर	४६	पार्श्वनाथ	सर्प	१९०२	...	,,
			४७	आदिनाथ	वृपभ	१९०२	. .	,
			४८	मुनिसुव्रत	कच्छ	१९०२	...	,,
२२	दमोहवालोंका	ासगई वल्दिदानव मोपाल	४९	सुपार्श्वनाथजी	सातिया	१८८८	...	,,
			५०	पार्श्वनाथजी	सर्प	१८८८	...	,,
			५१	आदिनाथ	वृषभ	१८८८	...	,,
२३	दमोहवालोंका	दलसींग परमानद (बांदकपुर)दमोह	५२	,,	,,	१८८९	...	,,
			५३	नेमिनाथ	शख	१८८९	. .	,,
			५४	वर्द्धमान	सिंह	१८८९	...	,,
२४	हिरदेनगरवालोंका	गधौहीरालाल	५५	पार्श्वनाथ	सर्प	१८९१	.	,,

धातुकी	पाषाण	वर्तमान कालके मंदिरोंके वारसोंके नाम		कैफियत
		नाम	मुकाम	
१०	११	१२	१३	१४
पीतल	...	वडकुर जानकी प्र-	पटेरा	
पीतल	...	साद गोकुल प्रसाद	,,	
...	सफेद	,,	,,	
पीतल	...	...	...	ये प्रतिमा सेठ वंशीधर विन्द्रावन नाथूराम डालचद हजारीलालजीके मंदिरकी यहा विराजमान है.
...	लाल मुगावली	...	...	
...	सफेद	...	...	
पीतल	...	...	...	
...	देसी	...	...	
...	सफेद	मनीराम छैघरिया	हिरदेनगर	
...	सफेद	...	...	
...	देसी	मनीराम छैगरिया	हिरदेनगर	प्रतिमा खंडित है.
..	,,	,,	,,	
...	,,	,,	,,	
...	,,	,,	,	
...	,,	,,	,,	
...	सफेद	,,	,,	
. .	मुगावली (लाल)	,,	,,	
...	,,	,,	,,	
...	सफेद	,,	,,	
...	,,	,,	,,	
...	,,	,,	,,	
...	काला	...	...	
...	काला	...	...	
...	सफेद	...	.	
...	सफेद	श्रीसेठ विद्रावन राजधर	दमोह	
...	काला	,,	,,	
...	मुंगावली	,,	,,	
...	सफेद	सिघई करंजु-	दमोह	इस मंदिरजीके वारिस वर्तमान समयमें श्री सिगाई करंजुलाल गोकुलचद वकाल दमोह है. आप इस मदिरकी मरम्मत करानेका नुविचार करते हैं और आशा है कि काम चदरोडसे शुरु होगा. धन्य है ऐसे धर्मात्मा भाईयोंको कि जिनका द्रव्य ऐसे इष्ट धर्ममें खरच होवेगा. इन्होंको सच्चे धर्मात्मा कहते हैं.
...	काला	लाल गोकुल	,,	
...	सफेद	चंद वकील (चांदकपुर)	,,	
...	काला	भोलानाथ बैसाखिया	हिरदेनगर	

नम्बर शुमार श्रीमंदिर	नाम श्री मंदिरका जो बोलते हैं	नाम बनवाने वालेकाव मुकाम.	नम्बर शुमार (प्रतिमा)	नाम श्रीप्रतिमा	चिन्ह	सम्वत्	शक	आम्नाय
१	२	३	४	५	६	७	८	९
२५	सागरवारी चौघर न० सागर	ठाकुरदास वैसाखिया हिरदेनगर	५६	अजितनाथ	हस्ती	१५४८	..	दिगम्बर
			५७	सभवनाथ	अश्व	१५४८	...	,,
२६	वेलनवारी गुमटी	...	५८	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	...	...	,,
२७	आभाने वालोंका	...	५९	आदिनाथ	वृपभ		.	
			६०	पार्श्वनाथ	सर्प	१५४५	..	,,
								,,
२८	झांसी वालोंका	गोडे मजू सिगई झासी	६१	पद्मावती		१५४८	..	,,
			६२	अरहनाथ	मीन	,,	...	,,
			६३	पद्मप्रभु	कमळ	,,	...	,,
			६४	आदिनाथ	वृपभ	,,	...	,,
२९	पिसनारीकी गुमटी	नायकन हारट	६५	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१९३५	...	,,
३०	चपोवाई सराफन	चपोवाई सराफन हिरदेनगर	६६	पार्श्वनाथ	सर्प	१८७९	...	,,
								,,
३१	महारानी मोदन सहजादपुरा	महारानी मोदन सहजादपुरा	६७	सुमतनाथ	चकवा	१७४७	..	
३२	पांडेका मदिर	पडित भागवल छतरपुर	६८	शान्तिनाथ	मृग		...	,,
			६९	पार्श्वनाथ	सर्प		...	,,
			७०	शान्तिनाथ	मृग		.	,,
			७१	शान्तिनाथ	मृग		..	,,
३३	पीपरवारी	...	७२	आदिनाथ	वृपभ	१५४८	...	,,
३४	मनसुखभाईजी रेपुरा-वालोंका	मनसुखभाईजी रैपुरा	७३	पार्श्वनाथ	सर्प	११८३	...	,,
			७४	आदिनाथ	वृपभ	१५४८	...	,,
			७५	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	..	...	,,
			७६	,,	,,	१८८९	...	,,
३५	भोपालवालोंका	नाथूराम सेठ	७७	चन्द्रप्रभु	,,	१९३५	...	,,
३६	नीमवारी गुमटी नि०	...	७८	चन्द्रप्रभु	,,	१९०१	...	,,
३७	गुमटी मनू पुजेरी	मनू पुजेरी	७९	अरहनाथजी	मछली	१५४८	..	,,
३८	मुना मोदन मोसीपुरा	मोसीपुराकी मुना मोदन	८०	सुपार्श्वनाथ	सातिया	१९३५	..	,,
			८१	नेमनाथजी	शंख	१९५२	.	,,
			८२	प्रतिमा	...	...	...	,,

धातुकी	पाषाण	वर्तमान कालमें मंदिरोंके वारसोंके नाम		कैफियत.
		नाम	मुकाम	
१०	११	१२	१३	१४
..	सफेद		..	
...	सफेद	.	.	
...	देशी	...	...	
...	काला	घपोले	अभाना	
...	काला	सिंगई	...	
...	सफेद	...	.	
...	,,	...		खंडीत हस्तपैरमें
...	,,	...	...	
	,,	...	.	
.	सफेद	...	...	
.	काला	..	..	
...	सफेद	...	...	
...	देसी	...	...	
..	,,	...	...	
...	,,	...	..	ये दोनों प्रतिमाखंडित हैं सो पिछवाडे विराजमानहैं.
.	,,	..	.	
.	,,	...	..	
...	सफेद	.	..	
...	सफेद	..	...	
..	सफेद	...	.	
...	काला	...	..	
...	काला	...	..	
	सफेद	...	...	
..	सफेद	...	...	
...	सफेद	लाडरी चौधरी	मोसीपुरा	
.	काला	,,	,,	
...	देशी	,,	,,	इन प्रतिमाओंमें शिरपर मुकुट गलेमें वा कर्णमें माला पहिने हुई हैं

नम्बर डुमार श्रीमंदिर	नाम श्री मंदिरका जो बोलते हैं	नाम बनवानेवालेका व मुकाम	नम्बर डुमार (प्रतिमा)	नाम श्रीप्रतिमा	चिन्ह	सम्वत्	शक	आम्नाय
१	२	३	४	५	६	७	८	९
३९	संकरसराफ	सकर सराफ	८३	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमां	१८६१	..	दिगम्बर
		इन्द्राना	८४	,,	,,	,,	...	,,
			८५	पार्श्वनाथ	सर्प	१८६१	...	,,
४०	डूमर वालोंका	ननाई प्यारेलाल	८६	,,	,,	१८९७	...	,,
		नाईक डुमर						
४१	बाजूरामोदीका	गजूरा मोदी कु-	८७	सुमतिनाथ	चकवा	१८८०	..	,,
		डलपुर	८८	आदिनाथ	वृषभ	१८८९	...	,,
			८९	मुनिसुव्रतनाथ	कछवा	१८६१	...	,,
			९०	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१५४८	...	,,
			९१	पद्मप्रभु	कमल	१८८९	...	,,
४२	हीरालाल मोदी	हीरालाल मोदी	९२	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१९५८	...	,,
	दमोह	दमोह	९३	अरहनाथ	मछली	१८६१	...	,,
४३	खुमानी परमसुख	खुमानी परमसुख	९४	नमनाथजी	शख	१९००	.	,,
	मोदी महेवा	मोदी महेवा						
४४	हटावालेंका	मानकलाल हटा	९५	पार्श्वनाथ	सर्प	१९०१	..	,,
			९६	पार्श्वनाथ	सर्प	१९०१	...	,,
			९७	पार्श्वनाथ	सर्प	...	...	,,
४५	डमलियावारोंका	..	९८	शातिनाथ	मृग	..	...	,,
४६	पटेरे वालोंका	गिरधारी मोदी	९९	अदिनाथ	वृषभ	१५४८	...	,,
		पटेरा	१००	प्रतिमा	.	...	...	,,
४७	दरवाजेकी गुमटी		१०१	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१८६४	...	,,
४८	हिरदेनगरवालोंकी	हिरदेनगरवालोंकी	१०२	पार्श्वनाथ	सर्प	.	...	
	गुमटी	मरमत भडारसे						
४९	मढ पुराना	...	१०३	चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	१९३५	..	,,
५०	पावापुरी	पडित भागवली	१०४	प्रतिमाचतुर मुखी	नेमनाथ		.	,,
		छतरपुर	१०५	...	पार्श्वनाथ	...	..	,,
					महावीर			
५१	छतरपुर वालोंका	,,	१०६	सुपार्श्वनाथ	सातिया	...	...	,,
५२	खिमलासे वालोंका	सिंगई खुशालचद	१०७	पार्श्वनाथ	सातिया	१९१७	...	,,
		नदलाल खिमलासा						
			१०८	पादुका	..	...	.	,,
५३	नेनधरा वालोंका	गुलाबचद रूपचद	१०९	नेमनाथ	शख	१९३७	...	,,
		नेनधरा						
५४	जुझार वालोंका	प्यारेलाल हजारी-	११०	नेमनाथ	,,	१९४८	...	,,
		लाल सिं० जु०	१११	आदिनाथ	वृषभ	१९४८	.	,,
			११२	मुनिसुव्रतनाथ	कछवा	१९४८	...	,,
			११३	सीतलनाथ	वृक्ष	१९४८	...	,,

धातुकी	पाषाण	वर्तमान कालमें मंदिरोंके वारिसोंके नाम		कैफियत.
		नाम	मुकाम	
१०	११	१२	१३	१४
...	देशी	...	...	
...	,,	.	...	
	,,	..		
..	काला	भाई वंशोरेलाल-त्यागी	डूमर	
			...	
..	सफेद	...	...	
.	सफेद	...	...	
..	सफेद	...	...	
...	सफेद	.	...	
...	मुंगावली लाल	हिरालाल मोदी	दमोह	
...	सफेद	...	...	
...	सफेद	...	..	
...	सफेद	...	...	
...	सफेद	...	...	
...	सफेद	..	...	
...	काला	...	..	
...	देशी	...	..	
...	,,	...	..	
...	,,	...	..	
...	देसी	.		
...	,,			
...	सफेद	...		इस मठकी मरमत व रंगत भंडारसे होकर प्रतिमा
...	देसी		...	विराजमान कराई गई. चतुर्थ प्रतिमा खंडित है.
...	,,	.	...	
...	,,	..	..	
...	सफेद	..	...	
	देसी	..		
...	काला	गुलाबचंद रूपचंद	नेनधरा	
...	,,	सिंगई	जुझार	
...	सफेद	रघुवरप्रसाद	...	
...	काला	जी जुझार	...	
...	काला	दमोह	...	

नंबर शुमार श्री मंदिर	नाम श्री मंदिरका जो बोलते हैं	नाम बनवाने-वालोंका व मुकाम	नंबर शुमार (प्रतिमा)	नाम श्री प्रतिमा	चिन्ह	सम्वत्	शक	आम्नाय
१	२	३	४	५	६	७	८	९
५५	सिलवानीवालोंको	कुवरमन लालचद सिलवानी	११४	महावीर (वर्द्ध०)	सिंह	१९३५	...	दिगम्बर
५६	दमोह वालोंका	सेठ काशीराम	११५	आदिनाथ	वृषभ	१९३५		,,
		नदराम दमोह	११६	शातिनाथ	मृग	१९२७	..	,,
			११७	महावीर (वर्द्ध०)	सिंह	१९५८	..	,,
५७	दमोह वालोंके	गिरधारीलाल	११८	महावीर (वर्द्ध०)	सिंह	१९३५		,,
		हजारीलालसेठ	११९	आदिनाथ	वृषभ	१९३५	...	,
		दमोह	१२०	पार्श्वनाथ	सर्प	१९३५		,,
५८	विजोरा वालोंको	करजूलाल मौजी	१२१	श्रेयाँसजी	गेंडा	१९४२	..	,,
		लाल विजौरा	१२२	वर्द्धमान	सिंह			,,
५९	ऊँचावालोंको	वारीकेरा सिंगई ऊचा	१२३	अजितनाथ	हस्ती	१९४२		,,

+ छोटी गुमटीतकभी मंदिरोंमें शुमार है और कुल मंदिर ५९ हैं मदिरोंकी मरम्मत होना मुख्य आवश्यकता है

धातुकी	पाषाण	वर्तमान कालके मंदिरोंके वारसोंके नाम		कैफियत.
		नाम	मुकाम	
१०	११	१२	१३	१४
...	सफेद	राजा बालाप्रसाद	सिलवानी	
.	सफेद	डालचंदसेठ	दमोह	
...	काला	..	...	
...	सफेद	..	..	
...	सफेद	छोटीवहू सिगैन	दमोह	
...	काला	...	...	
...	काला	..	...	
...	काला	लछमन सिगई	विजोरा	
	देसीपाषान	..		
..	सफेद	वसौरे दरवारीलाल चौधरी	ऊँचा रि० पन्ना	

श्रीक्षेत्र कुंडनपुर ।

जिला अमरावतीमें यह कुंडनपुर क्षेत्र वर्धा नदीके किनारे आर्वीसे ६ मील पश्चिमके तरफ और धामणगांव (G. I. P. Ry.) स्टेशनसे करीब बारह मील है । इस ग्रामका नाम पहले कौंडिण्यपुर था और विदर्भ (वऱ्हाड) देशका सुप्रसिद्ध राजा भीष्मकी राजधानी थी । यह वही भूमि है कि, जहांपर श्रीकृष्ण महाराज नवमें नारायणने अपनी भावि स्त्री रुक्मिणीको हरलियाथा । यहग्राम पूर्वकालमें बहुत बड़ा था ।

कालदोषसे अब यह ग्राम बहुतही छोटा है । यहांपर ३ मन्दिरजी हैं जिनमें दिगम्बर जैनियोंका मन्दिरजी मध्यभागमें है । उसके दक्षिण दिशामें वैष्णवोंका श्रीविठोबा रखुमाईका मन्दिर है जिसमें तीन भौंहरे हैं—एक भौंहरा मुक्तागिरीतक, दूसरा वर्धा नदीतक और तीसरा मंगरूलतक गया है । और उत्तरमें महादेवका मन्दिर हैं ।

यह दिगम्बर जैनियोंका मन्दिर बहुत प्राचीन मालूम पडता है उसके बनवानेवालोंका कुछ भी पता लगता नहीं है । मंदिरमें कुल मूर्तियां दश हैं, जिसमें एक प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी पीले पाषाणकी चतुर्थ या पंचमकालकी प्राचीन मालूम पडती है यह और दूसरी ३या४ प्रतिमाजी संवत १५४८ सालकी जीवराज पापडीवालोंके द्वारा प्रतिष्ठा की हुई हैं और शेष मूर्तियां ५० या ६० वर्ष पूर्वकीही है । जैनियोंका असल मन्दिर वही हैं, जहांपर हिंदुओंका विठोबा रुक्माबाईका मन्दिर है और वहां जो विठोबाकी मूर्ति बतलाई जातीहै वह खड्गासन नेमिनाथ स्वामीकी प्रतिमा है और रुक्माबाईकी प्रतिमा बतलाई जाती है वह श्रीराजुलजीकी मूर्ति है ।

कालदोषसे जैनियोंको अपना असली मन्दिरजी छोडकर उसके नजदीक दूसरा बनाना पडा । पर उक्त मन्दिरजी कब बन गया और किसीने बनाया यह मालूम नहीं होता । मन्दिर शिखरबन्द हैं । पूजन प्रक्षालका प्रबन्ध अच्छा है । मन्दिरके सामने एक बड़ा भारी दहलान है और उसकेही पास एक धर्मशाला भी नयी बनवाई है ।

कैमोरी ।

यह बड़ा ग्राम हिरान नदीके किनारेपर जबलपुरसे जो सड़क दमोहको जाती है उसपर बसा हुआ है । इसको सतरहवी सदीमें राव चूरामनने राजा नरिन्दशाहाके वक्खत बसाया था । इस ग्रामकी आबादी अनुमान १८५०की है । यहां दिगम्बर जैनियोंके गृह दोन

और दो मन्दिरजी हैं। यहांपर पहाड़के नजदीक नदीके निकट अचलेश्वर नामकी एक गुहा है जो कि कहते हैं करीब १००फीट लंबी है। यहां शुक्रवारको साप्ताहिक बाजार होता है जिसमें छींटकी बिक्री बड़ी भारी होती है। और छींटके लिये यह ग्राम प्रसिद्ध है। यहांके दिगम्बर जैन मन्दिरका जीर्णोद्धार फीरोजपुर छावनी निवासी लाला देवी सहायजीकी उदारता और तीर्थक्षेत्र कमेटीके प्रयत्नसे हुआ है।

श्रीअतिशयक्षेत्र कोनी (पाटन)



यह अतिशय क्षेत्र जिला जबलपुरमें स्टेशन (G. I. P. Ry.) जबलपुरसे२१मील और डाकखाना पाटनसे ३मील दूर है। यहांपर जैन दिगम्बर आम्नायके आबाद गृह८हैं जिनमें २ परवार, ५ गोलापूर्व और विनैक्याका घर हैं। मनुष्यसंख्या ४८ है। जिसमें १ उद्दैत वल्द राजाराम सिंगई २ मोहनलाल वल्द भवानीप्रसाद पटवारी ३ अमान वल्द मोहन पटवारी ४ सीताराम वल्द भीमसेन पटवारी ५ शेठ जवाहरलाल वल्द रेवारामशेठ ग्रामके मुखिया हैं। जैन मन्दिरजी ११ हैं जिनमें१० शिखरबन्द व १ चैत्यालय हैं। कुल मन्दिरजीमें आबाद ७ और बीरान ४ हैं। इनका जीर्णोद्धार तुरत न कराया जावेगा तो बहुतसे मन्दिरोंके गिरनेका अन्देसा है।

इस क्षेत्रपर १ पुजारी पूरे कामका जुम्मेदार है जो एक प्रकारसे अयोग्य है। प्रबन्ध यहांका पाटनके पंचोंके पास है सो बिलकुल ठीक नहीं है।

क्योलारी।



यह ग्राम मध्यप्रदेशका जिला सिवनीमें बंगाल-नागपुर रेलवे पर खास स्टेशन है। वैनगंगा और सॉगर ये दो नदियोंका यहां संगम हुआ है। यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान १३०० है जिसमें जैन दिगम्बर आम्नायकी ७७ है तथा गृह २० और ४ शिखरबन्द मन्रिदजी हैं जिसमें २ नए बने हैं। मन्दिरजीमें १५ धर्मशास्त्र हैं। यहांपर दिगम्बर जैनियोंमें सिंगई मिठनलाल परमानन्द अच्छे सज्जन पुरुष हैं।

यहांपर सप्ताहिक बाजार शुक्रवारके दिन लगता है जिसमें अनाज और कपाशीका विशेषकर क्रयविक्रय होता है। यहांसे हुग्लीतक नया रास्ता तय्यार हुआ है। यहांसे ६

मीलके फासलेपर घनसोर नामका एक ग्राम है जहां कई खण्डित अखण्डित प्रतिमाएँ पाई जाती हैं। अवतक उस ग्राममें एक जैन तीर्थंकरकी प्रतिमा अति मनोग्य है जिसको हिंदलोग नागा बावा कहकर पूजते हैं और वहांसे कुछ कलाकुसरीका पड़ा हुआ सामान शिवनीके दलसर तालाबपर लेकर रक्खा गया है और कई प्रतिमाजी वहोंके जैन मन्दिरोंमें विराजमान हैं।

श्रीअतिशय क्षेत्र

खजराहा।

बुन्देलखण्ड प्रान्तान्तर्गत जिला नयागांव तालुका राजनगर निकटवर्ति स्टेशन (E. I Ry) सतना, राज्य छत्रपुरमें खजराहा नामका एक छोटासा ग्राम है जिसकी आवादी इस समय अनुमान २०० घरकी और मनुष्य संख्या २००० है। यह प्राचीन कालमें जैनियोंकी राजधानीका नगर था पर कालदोषसे अब २ गृह परवारके मौजूद हैं जिनमें चार आदमी रहते हैं।

प्राचीन वृत्तान्त—

प्राचीन कालमें यह स्थान बहुत प्रसिद्ध रहा होगा। आबू रिहान इब्न भटूटा और हुएनसांगके ऐतिहासिक लेखोंसे मालुम होता है कि, बुंदेलखण्डका प्राचीन नाम जजोती, या झझोती या जझावती था। यह शब्द यजुर्होताका अपभ्रंश जान पडता है। यहॉ यजुर्होता, अर्थात् जजोतिया, लोग रहतेथे। जैसे कान्यकुब्ज देशके नामसे कान्य-कुब्ज, मिथिलाके नामसे मैथिल और द्राविड़के नामसे द्राविड़ लोगोंने प्रासिद्धि पाई वैसेही जजोति प्रान्तके रहनेवालोंने जजोतिया नाम पाया जिसकी राजधानी खजुराहा था। परन्तु जबसें बुंदेलोंका प्राधान्य इस प्रदेशमें हुआ तबसे उनके नामानुसार, इस प्रान्तका नाम बदलकर बुन्देलखण्ड हो गया।

इसका ठीक २ पता नहीं चलता कि, खजुराहामें चॅदेलोंके पहिले किस किस वंशके राजाओंने राज्य किया। परन्तु हुएनसॅगके लेखोंसे मालूम होता है कि, वहॉ ब्राह्मणोंका राज्य

था उसके अनन्तर गुप्तवंशीय राजाओंका हुआ और सबसे पीछे चँदेलोंका। ब्राह्मण राजाओंके समयके दो एक मठ बहुतही टूटी फूटी दशामें अबतक विद्यमान है। किसी २ मठके एक आध पत्थरमें बौद्ध धर्म्मका सूचक-"ये धर्म्महेतुप्रभवाः-वाक्य भी खुदा हुआ दिखलाई देता है। गुप्त वंशीय राजाओंके राजत्वका प्रमाण उनके सिक्के और शिलालेखोंसे मिलता है। परन्तु चन्देलोंकें राजत्वके निशान औरोंकी अपेक्षा बहुत हैं और बड़े बड़े हैं। ये निशान खजुराहोके विशाल मन्दिर हैं। चँदेलोंके कुछ समय पीछे जगवंती प्रान्तकी जिसको कि, अब बुन्देलखण्ड कहते हैं राजधानी बनगया था। ऊपर दर्शित शिवाय इसका खजराहा नाम होनेका कारण इसके एक दन्तकथा ऐसी प्रसिद्ध है कि, खजराहाके कोटके मुख्य द्वारपर खजूरके दो झाड़ होनेके कारण इसका खजराहा नाम पडा है। परन्तु वर्तमानमें इस ग्रामके आसपास न तो कोई कोट हैं, और न कहीं खजूरके वृक्ष दिखाई देते हैं। तो भी अनुमान होता है कि, प्राचीन कालमें यह नगर अवश्यही कोटबँधीमें होगा।

प्रसिद्ध २ मन्दिरोका वर्णन :-

खजराहामें भग्न अभग्न छोटे बड़े सब मिलाकर २९-३० मन्दिर हालमें मौजूद हैं। उसमेंसे मुख्य मुख्य मन्दिरोंके नाम ये हैं।

जैन सांप्रदायिक-पार्श्वनाथ, आदिनाथ, पार्श्वनाथ, जिननाथ सेतनाथ (शान्तिनाथ) आदिनाथ, ऊंचा टीला और घंटाई मन्दिर।

वैष्णव साम्प्रदायिक-देवी जगदम्बाका मन्दिर, रामचंद्र, बाहर, लक्ष्मण, हनुमान और ब्रह्माका मन्दिर।

शैव साम्प्रदायिक-चौसठ योगिनी का, गणेश, कर्णदर्य महादेव और मृतङ्ग महादेवका मन्दिर।

उपर्युक्त जैनसांप्रदायिक मन्दिरोंमेंसे जिननाथका मन्दिर चित्तको सविशेष आकर्षित करता है, उसके द्वारकी बाजूमें एक छोटासा लेख है जिसमें लिखा है कि राजा धंगके राज्यकालमें भव्य पाहिलने ९५४ इसवीमें, इस मन्दिरके लिये कई बाग संकल्प कर दिये। उसी लेखमें, इस मन्दिरका नाम जिननाथका मन्दिर लिखा है। इसमें तीन मण्डप है :- अर्द्धमण्डप, मंडप और महामण्डप। इसकी लंबाई ६० फीट और चौड़ाई ३० फीट हैं। तीनों मण्डपोंके जुदे २ गुम्बज हैं। महामण्डपमें वेदीकी नाई चारों ओर प्रदक्षिणा कर

नेके लिये खुला स्थान है । यह आकार अवचलगढ़के मन्दिरोंसे मिलता हुआ है । इन मण्डपोंकी छतोंपर निकालेहुए नकशीके कामको देखकर भारतवर्षकी भूत और वर्तमान स्थिति मिलान करनेवालोंका चित्त क्षणभरके लिये स्तब्ध होजाता है । रंचमात्र भी कहीं स्थान मिला है कि कारीगरोंने वहांपर अपना अपूर्व शिल्पचातुर्य दिखलाये विना नहीं छोड़ा है । मण्डपोंके खंभोंपर निकाले हुए सुंदर चित्र दर्शकोंको मुग्ध कर लेते हैं । एक धनी जैनने इस मन्दिरकी मरम्मत करा दी है । इससे यह अब विलकुल नया मालूम होता है । देखनेमें यह मन्दिर सुडौल, सुंदर और दर्शनीय है । यात्रियोंने इस मन्दिरपर लम्बे लम्बे लेख खोद डाले हैं । इन यात्रियोंमें दो एक राजपुत्र भी थे ।

उपर्युक्त तीनों सांप्रदायोंके मन्दिर इसके माफक ही हैं । परन्तु कहते हैं कि सबसे प्राचीन मन्दिर चौसठ योगिनियोंका है जो कि ईसाकी नवमी सदीके पूर्वमें वना था । इस मन्दिरके चारों ओर छोटी २ चौसठ मंडियां हैं । ये प्रत्येक मंडिया पृथक् २ मन्दिर है, ऐसा अनुमान होता है । जैनियोंके मन्दिरोंमें इसी प्रकारकी छोटी २ मंडियें वनाई गई हैं, जिन्हें वावन जंजाली मन्दिर कहते हैं । मन्दिरका प्रांगण १०२ फीट लम्बा और ६० फीट चौड़ा है । दिवारोंकी मोटाई ५॥ फीट है । प्रत्येक योगिनीकी कोठरी ३। फीट ऊँची है । कोठरियोंका दरवाजा बहुत छोटा है । सब कोठरियाँ मन्दिरके आकारकी हैं और उनपर कलश भी है पर मूर्तियाँ उनमें अव एक भी नहीं हैं ।

कण्डारिया महादेवका मन्दिर सबसे बड़ा है । वह १०९ फीट लम्बा, ६० फीट चौड़ा और ११५ फीट ऊँचा है । उसमें मन्दिरके सव लक्षण हैं । अर्धमण्डप, मण्डप, महामण्डप, अन्तराल और गर्भगृह ये सव उसमें है । परन्तु यह समझमें नहीं आता कि "**कण्डारिया**" का मतलव क्या है । इस मन्दिरमें वहुत मूर्तियां हैं और इनमेंसे अनेक मूर्तियां श्लीलताव्यञ्जक हैं । इस मन्दिरमें ४॥ फीट मोटा शिवलिंग है । इस मन्दिरके वनानेवाले कारीगरोंने 'कुटिल' अक्षरोंमें अपने नाम खोद दिये हैं । उनसे अनुमान होता है कि, यह मन्दिर दशवीं शताब्दीका है ।

प्राचीनतामें दूसरा नंवर घण्टाई मन्दिरका है । इस मन्दिरके खंभोंपर घंटेकी सकलोंका आकार उकीवरा गया है, इससे इसका नाम घंटाई पड़गया है । वर्तमानमें खम्भोंके शिवाय इस मन्दिरके अन्य सव भाग कालके प्रवाहमें पड़कर धाराशायी हो गये हैं और दिनपर दिन होतेही जाते हैं । इनके सिवाय संवत १९१५ विक्रमतक यहां

सिर्फ ३ मन्दिरजी झाड़ीमें थे १ एक श्रीशान्तिनाथस्वामीका दूसरा सहस्रकूट चैत्यालय तीसरा मूसरधारी । इन तीनों मन्दिरोंमें लाखों रुपयेकी लागतका कुराईका काम प्राचीन शिल्पविद्याकी महिमा प्रगटकर रही है । ये मन्दिर देखने और दर्शन करनेही योग्य हैं । पत्थरकी जुड़ाईके सिवाय चूनेका किसी जगह भी इस्तेमाल इन मन्दिरोंमें नहीं किया गया है । बाहरको तरफ पुतलियां और मूर्तियां पत्थरकी ऐसी कोरी हुई हैं कि मानो कारीगरोंने पत्थरको मोम बना दिया है । मढके माफिक नीचेसे सुरई बनाई गई है उसीमें गर्भालय है। बाकी २१ मन्दिर मामूली हैं। स्थान बड़ार-मलीक तीन तरफसे पहाड़; चारों तरफ तालाब, नदी, खेतों तथा बस्तीसे आबाद है। तथा छतरपुर महाराजका मुकरबा उसहीके पास उनका महल तथा पन्नावाले एजेन्ट साहबका बंगला है। यहांपर १९–२० मठ और मतंगेश्वर महादेवका मन्दिर है । जिसमें लिंगकी मुटाई अनुमान ४॥ फीट है । होलीके मेलेमें इकट्ठे होनेवाले इसी लिंगकी पूजा करते हैं। हरसाल दश पंदरह हजार आदमी इकट्ठे होते हैं और अच्छा वाणिज्य हो जाता है। विशेष तम्बाकू, हरदी, लालमिरचकी बडी बिक्री होती है।

इसही मौकेपर जैनी भी मेला करते हैं। जलयात्रा फागण सुदी १२ को हरसाल होती है, जहाँ मेला भरता है। उस गांवका नाम खंडला मुकरबा है जैन मन्दिरोंसे १ मीलपर है। जलयात्राके वास्ते विमान व श्रीजी वहीं जाया करते हैं।

यह शान्तिनाथ स्वामीकी प्रतिमा १२ फुट ऊंची खड्गासन चतुर्थकालकी है। सालसंवत कुछ नहीं है। यहां १ दो छोटी २ दिगम्बरी धर्मशाला भी बनी हुई हैं। जिसमें ५० पचास मनुष्य ठहर सकते है । प्रतिवर्ष एक हजार जैन यात्री आते हैं कभी मेलेके समय अधिक आते हैं। पुजारी नाथुराम परवार दर ३॥) माहवार पर मुकर्रर है। इन सम्पूर्ण मन्दिरोंके आसपास मैदानमें और बाहर कोटकी दीवालमें वहुतसी खण्डित प्रतिमाजी लगी हुई हैं। जिनकी संख्या अनुमान १००० के होगी । इन मूर्तियोंमें एक शान्तिनाथ स्वामीकी मूर्ति है, जिसकी उंचाई १४ फीट है। इस प्रतिमाके नीचे निम्न लिखित लेख है :–"संवत् १०८५ श्रीमन्त आचार्य....पुत्र श्री ठाकुर....श्री....देवधर्म...सुत श्री........सीवी....श्री चन्द्र देवह.......श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमा कारि ।

वहुतसी छोटी २ प्रतिमाजी साबुत भी हैं और शिलालेख जो मिले हैं उनकी नकल नीचे दी जाती है।

शिलालेख सहस्रकूट चैत्यालयपर बांई तरफ चौखटमें

(१) श्री काट पुत्र श्रीमाहुलः ॥

(२) आचार्य स्त्री देवचन्द्रा। स्त्रिरय कुमुदचंद्रः ॥

(३) काठ पुत्र श्री गोलल।

(४) ९ संवत् १३११ समये "निजकुल धवलोयं दिव्यमूर्तिः सुशील: शमदम-गुणयुक्तः सर्व सत्वानुकंपी" स्वजन जानिनतो पोद्यांग राजेनमान्यः प्रणमति जिन नाथोयं भथ पाहिलनामा ॥ १ ॥ पाहिल वाटिका लघुचंद्र वाटिका २ संकन वाटिका ४ पंचा, तलवाटिका ५ आम्रवाटिका ६ वगवाडी १ पाहिल वंसेतु हये क्षीणे डावनवंसोय: कोपिति प्रवितस्य दासस्य दासोयं ममदंतिस्तु पाल येतु ॥ माहाराज गुरु सीवासवचंद्र वैसाख सुदी ७ सोमदिने ॥

दाहिनी बाजू चौखटेमें शिलालेख व यंत्र

आठ पुत्र श्रीदेवशर्म्म हिवं-जयतुः ॥

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

देहलीपर लेख।

महाराज पुत्र ठरजय सिंघ रिरुत्तः ॥

इस मन्दिरमें प्रतिविंब १ श्री पार्श्वनाथजीकी सं. १९१७ नये पाषाणकी है।

नोट—ये सब लेख अंग्रेजोंने लिखलिये हैं और पोलिटिकल एजन्टकी तरफसे इस मंदिरकी नकसी साफ कराई गयी थी। उन लोगोंने खजराहोके मन्दिरोंको आर्ट सीनरी (Art Scenery) (कावीलदीद) में शामिल किया है तथा अन्य मन्दिरोंका भी जीर्णोद्धार एजेन्ट नयेगांवकी तरफसे हो रहा है।

एक दिगम्बर जैन मन्दिर जोकि इन मन्दिरोंसे पश्चिमतरफ करीब ५० कदमके फासलेपर पत्थरका बना हुआ है। उसमें एक प्रतिमा भंग हो गई है। इसका भी जीर्णोद्धार सरकारकी तरफसे कराया गया है।

हजारों शिल्पकार सरकार अंग्रेजकी तरफसें १) २) रोज तनखाह पाकर काम कर रहे हैं।

खाण्डवा।

यह नगर निमाड़ जिलेका सदर मुकाम और जी. आई. पी. रेलवेका जंकशन है। आर. एम. आर. रेलका भी यहांपर जंकशन है। स्टेशनपर वेटिंगरूम याने मुशाफिरखाने बने हुए हैं और पास एक सराय है जो स्टेशनसे दिखाई देती है। दूरके मुसाफिरोंके लिये आराम करनेके लिये यह बहुत अच्छी जगह है। यहांकी मनुष्यसंख्या १९००० है जिसमें जैन दिगम्बर आम्नायकी ३०३ है जिसमें बाबू माणिक्यचंद्र जैन बी. ए. बड़े विद्वान है; उक्त आम्नायके यहांपर गृह ५० और शिखरबन्द मन्दिरजी ३ है। जिनमें करीब धर्मशास्त्र ४० हैं।

खाण्डवा बड़े व्यापारकी जगह है। यहां कई रूई निकालने और दबानेके कारखाने हैं। स्टेशनसे ४ मील मोघट मुकामपर वाटर वर्क्स यानी पानीका कारखाना है जहांसे शहरमें पानी आता है।

खामगांव।

प्रान्त बेरार, जिला बुलडाणामें यह नगर तहसीलका सदर मुकाम बाघरा नदीके किनारे बहुत अच्छा आबाद है। यह पहिले छोटासा कसबा था पर ४० वर्षसे दिन प्रति आबाद होता जाता है जैन दिगम्बर आम्नायके यहांपर गृह ३५ हैं जिसमें मनुष्यसंख्या करीब १६० हैं। दिगम्बरियोंका शिखरबन्द मन्दिरजी एक है एक नया मंदिरजी और तय्यार हो रहा है।

यहांपर रुई और गल्लेका व्यापार भारी होता है।

गढ़ा।



इस ग्रामकी वस्ती वहुत प्राचीन जवलपुर शहरकी पश्चिम ४ मीलपर है। पहले यह ग्राम गढ़ा-मंडलाके गोंड राजाओंकी राजधानी था क्योंकि हाल जो मदन महलका क़िला गिरा हुआ मौजूद है। वह मदनसिंहने इ० स० ११०० में वनवाया था। महलके नजदीक नीचे गंगासागर नामका तालाव वहुत सुंदर है और उसके पास शारदा देवीका मन्दिरजी तथा देवलाल नामक तालाब है जिसकी यात्राके लिये कार्तिकमें अनुमान १२००० आदमी एकत्र होते हैं।

इस ग्रामके १ मुहल्लापुरवारमें १ पहाड़ीपर पिसनारीका वनवाया १ शिखरवन्द मन्दिर है जिसमें २ प्रतिमा श्री शान्तिनाथ स्वामीकी पद्मासन अनुमान १॥ फुटके हैं जिनकी आसनमें संवत् ८५ खाली पढ़ा जाता है। यह प्रतिमा ऊपर शिखरके दोनों बाजूपर खिड़कीमें विराजमान है, पूजन प्रक्षालका इन्तजाम जवलपुरके पंचोंकी तरफसे होता है। कहावत है कि यह मान्दिर १००० वर्षसे ऊंचेका है और एक मन्दिर अभी भैयालाल सिंघईकी तरफसे नया तैय्यार हो रहा है। वीजक शिलालेख कुछ नहीं पायाजाता है।

यहांपर ग्राममें दिगम्बर जैन मन्दिरजी तीन हैं तथा गृह ६ जिसमें २६ मनुष्य हैं।

गौरझामर।



यह वड़ा ग्राम जिला सागर तहसील रेहलीमें सागरसे करेलीको जो रास्ता गया है उसके वीचमें २८ मीलपर है, इसे देवरीके गोंड राजाने वसाया था। हालमें इसकी आवादी अनुमान २५०० हैं जिसमें दिगम्बर जैनियोंकी संख्या २४० हैं। यहांपर परवार जैनियोंके गृह ४५ है और एक शिखरवन्द मन्दिरजी तथा ३ चैत्यालय हैं जिनमें अनुमान ४२ धर्मशास्त्र हैं। यहां लोगोंमें दो तड़े हैं, परस्परके लड़ाई झगड़े सदा लगे रहते हैं. पंचायतीका जोर वहुत घट गया है। यहांपर प्रायमरी शिक्षण-शाला, पोस्ट ऑफीस वगैरेह हैं और रविवारके दिन वाजारभी भरता है।

चांवरी।



यह ग्राम जिला सिवनीमें सिवनीसे छह मीलके फासले पर परवार जैनियोंका था, यह बहुत पुराना नगर राजा वख्तबुलंदके राज्यके सूबेका सदर मुक़ाम था जब राजा वख्तबुलंदके एक भाईबन्द रामसिंगने यहांसे स० ११०३. ई० में छपारामें सदरमुक़मा लिया तब यहांके परवार जैनी भाई भी सिवनीमें रहने लगे। अब यहां दिगम्बर जैनियोंके गृह सिर्फ ४ हैं जिनमें १८ आदमी रहते हैं और ४ गृहमन्दिर भी हैं। यहांपर कई प्राचीन जैन मन्दिरोंका खण्डर हैं पर नहीं मालूम कि उसमें कुछ मूर्तियां हैं या नहीं। आबहवा यहांपर बहुत अच्छी है। ग्राम आम्रवृक्षोंकी छायासे बहुत सुशोभित है। ग्रामके निकट एक सुंदर तालाब जंगलमें है;

यहांपर नानाढंगकी बंगडियां अच्छी तय्यार होती हैं और गुरुवारको यहांपर साप्ताहिक बाजार भी होता है।

चोपरा।



यह ग्राम जिला दमोहसे आग्नेयको १७ मीलकी दूरीपर है। इसमें एक मेला माह कार्तिकमें चण्डी देवीका लगता हैं। दो मन्दिर दिगंबर जैनियोंके बहुत पुराने बनेहैं जिसमें एक दिगम्बर जैन मन्दिर १९ वीं शताब्दीका बना हुआ है, और इसमें श्रीशान्तिनाथस्वामीकी प्रतिमा १० फूट उंचाईकी खड्गासन विराजमान है। मन्दिर मजबूत है। इस मन्दिरमें तथा चारों ओर बहुतसी खण्डित प्रतिमाएँ हैं। मूलनायककी प्रतिमा भी खण्डित है। इन्हें जुलमी बादशाह। औरंगजेबने खण्डित करवाया था। मन्दिरसे मिला हुआ उमेदसिंह जमीदार जैनीका गृह है। ये हमेशा मन्दिरकी पूजा करते हैं। यहां जैनियोंके सिर्फ ४ गृह हैं जिसमें १० आदमी रहते हैं। यहां एक तालाब भी है जो चारों ओर वृक्षोंसे घिरा है तथा एक सुंदर और बड़ी दि० जैन पाठशाला है। सब जातिवाले इसमें बसते है और जल वायु उत्तम होनेके कारण मनुष्योंके स्वभाव बहुत उत्तम हैं। यहांपर चावलका व्यापार अधिक होता है।

छपारा।



जिला सिवनीमें यह बड़ा कसबा वैनगंगा और मोतिनाला ये दो नदियोंके संगममें सिवनीकी उत्तरकी ओर लखनादोनसे १७ मीलपर है। यहांपर मनुष्यसंख्या अनुमान

३४५० है जिसमें जैन दिगम्बर आम्नायकी मनुष्यसंख्या १५० है। जैन दिगम्बर आम्नायके गृह २८ तथा मन्दिर शिखरबन्द ४ हैं जिनमें अनुमान ३५ धर्मशास्त्र हैं। इस ग्रामके ६ मुहल्ले हैं जिनमें डोंगरिया, सनिचरी, दिलावरगंज और गोपालगंज प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि यह नगर देवगढ़के राजा बख्तबुलंदके एक सगे रामसिंगने बसाया था यहींपर अपने सूबेका सदरमुकाम रक्खा था। दिगम्बर जैनियोंके मन्दिरजी बहुत सुंदर और मनोज्ञ हैं। व्यापार यहांपर कपास और अनाजका बहुत होता है और शनिश्चरको बाजार भी लगता है। इस ग्राममें आम्रवृक्षोंके बगीचे बहुत सुंदर और रमणीय हैं।

छतरपुर।

यह सुंदर शहर नयागांवसे सतना जानेवाली सड़कपर छत्रपुर रियासतकी राजधानी है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके १२ मन्दिर तथा १८ चैत्यालय और ३५ गृह हैं जिनकी मनुष्यसंख्या १३० है। राजमहल और कई मन्दिरोंकी इमारतें अच्छी हैं। व्यापार यहांका साधारण है। यहांके महाराजा सा० जैनधर्मसे विशेष प्रीति रखते हैं।

छिंदवाड़ा।

यह नगर बी. एन्. रेलवेपर खास स्टेशन है, यहांपर इटारसीसे आनेवाली रेल जो नागपुरको जाती है उसमें दोनो लाईनका संगम होताहै। यहांकी मनुष्यसंख्या १०००० के करीब है और उसमें दिगम्बर जैनियोंकी मनुष्यसंख्या २०५ है। उक्त लोगोंके ६० गृह व ६ मन्दिरजी शिखरबन्द तथा २ चैत्यालय हैं जिसमें ३० धर्मशास्त्र हैं। यह नगर समुद्रकी सतहसे २२०० फीटकी उंचाईपर है इस कारण यहांकी आव हवा ठण्डी और स्वच्छ है।

छोटा छिंदवाड़ा।

यह कसबा जिला नरसिंहपुरमें ग्रेट इन्डियन पेनिनसुला रेलवेपर स्टेशन है और इसको गोटेगांव भी कहते हैं। जबसे यहां रेलवे स्टेशन हुई तबहीसे यह ग्राम बसा हुआ है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह ५५ हैं जिनकी मनुष्यसंख्या २८५ है। उक्त आम्नायके ५ शिखरबन्द मन्दिरजी तथा ४ चैत्यालय हैं जिनमें ५० धर्मशास्त्र हैं। यह ग्राम गल्लेकी उपजके लिये प्रसिद्ध है।

जबलपुर।

मध्यप्रदशमें यह नगर बड़े शहरोंमें दूसरा है। और यह कमिश्नरीका सदर मुक़ाम है, E. I. R., और G. I. P. रेलवेका जंक्शनका स्टेशन है । यहांसे एक छोटीसी रेलवे गोंदिया तक गई है।

इस शहरका नाम पहिले जबलगढ़ था पर सरकारी अमलदारी होनेपर इसका नाम जबलपुर रख्खा गया इसका नाम। जबलगढ़ रक्खे जानेका कारण यह है कि, यहांसे दक्षिण दिशामें एक मील दूरीपर पहाड़ीके ऊपर रानी दुर्गावतीके पिता आदिकोंका १७ वीं शताब्दीका बनवाया हुआ एक गढ़ (किला) है जो मदनमहल नामसे प्रसिद्ध है । उसमें यह दोहा लिखा है॥ दोहा ॥ मदन महलके बीचमें, नव डोंगोकी छाह जमा घरी नव लाखकी दो सोनेकी ईट। शिला-लेख दूसरी कोई भाषामें है। सरकार गवर्नमेंटको सड़क बनते हुए एक भंडारभी बहुत भारी मिला था। जिसमें चांदी सोनेके सिक्के बहुत भारी थे और लोगोंके कहने कहनेसे जाहिर हुआ कि, वे सिक्के जैनियोंके थे, उसकी पहिचानके कई जैन चिन्ह थे बल्के जैनी-लोंगोंको नोटीस भी दिये गये थे कि जिन जैनी भाइयोंको जो कुछ खरीदना हो खरीद लेवे। यहां व्हिक्टोरिया मेमोरियल टौन हॉल है जिसको राजा गोकुलदास और उनके पुत्र जविनदासने व्हिक्टोरिया महारानी साहिबाके स्मर्णार्थ बनवाया है। यहां देखनेके योग्य एक कस्तुरचंद हितकारिणी हायस्कूल जिसको जैनी परवार भोलानाथ सिंघईने बनवाया है और दूसरा अंजुमान इस्लामहॉयस्कूल तथा राजा सेठ गोकुलदासके महल, कंपनीबाग आदि देखनेके योग्य हैं।

यहां दिगम्बर जैनियोंके गृह २०१ हैं जिनकी मनुष्यसंख्या ९८९ है और ४६ शिखरबन्द मंदिरजी तथा ३ चैत्यालय जिसमें अनुमान ३०० धर्मशास्त्र हैं और एक धर्मशाला लॉर्डगंजमें सिंघई नारायणदासजीकी बनवाई हुई मन्दिरोंके पीछे है। और मंगली बज-रियाके पास नन्हे मन्दिरमें एक लायब्रेरी भी नयी खुली है। यहां एक दिगम्बर जैन बोर्डिङ्गहाउस हैं जिसमें जिलेके ग्रामोंके जैन विद्यार्थी आश्रय पाते हैं और स्कूल तथा कालेजोंमें पढ़ते हैं । यहां मिट्टीके नलका तथा शीशेका कारखाना कारीगरीका अच्छा नमूना है। यहांसे छः मील नर्मदा नदी बहती है वहां एक स्थानपर पहाडसे पानी बहुत वेगसे बहता है। पानी बहुत ऊंचे गिरनेके कारण धुआंसर दिखाई देता है। इस स्थानको धुआदार कहते हैं जिसको देखने अंग्रेज लोग भी जाते हैं तथा नौकापर बैठ

नदीके दोनों ओर ऊंचे २ संगममरके पहाड़ोंकी सैर करते हैं। इसस्थानपर एक दिगम्बर जैन मंदिर भी है। रोजगार सब किसमका होता है।

जामोद।

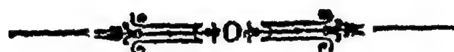
प्रान्त वरार जिला बुलड़ानामें यह पुराना ग्राम है। यहांपर दिगम्बर जैनीके ४ गृह हैं जिसमें मनुष्यसंख्या करीब १० है तथा १ शिखरबन्द चैत्यालय भी है। दो दिगम्बर जैन मन्दिरजी वस्तीके बाहर अति शोभायमान बने हुए हैं। जिसमें एक चैत्यालय ३०० वर्षका बना हुआ है। दूसरा शिखरबन्द मन्दिर करमचंद्र टुकड़ादास श्रावगीका बनाया हुआ है। जिसके ऊपर चार गुम्बज अति शोभायमान बने हुए हैं और उन गुम्बजोंमें चरण स्थित किये हुए हैं। जिस समय उक्त मन्दिर बनाथा उस समय ग्राममें बाईस हजार गृह संख्या थी पर कालवश नष्ट होकर अब १४०० गृहसंख्या रही है। यहांपर और भी कई प्राचीन इमारते देखने योग्य हैं। मन्दिरोंके पूजन प्रक्षालका कोई इन्तजाम नहीं है।

टीकमगढ़।

ओरछा स्टेटकी राजधानी ललितपुर (G I. P.) रेल्वे स्टेशनसे २७ मीलकी दूरीपर है। यहांपर एक किला, जुगल निवास बाग, महेंद्र निवास और जानकी निवास बाग देखने योग्य है। यहांसे "श्री अतिशयक्षेत्र पपोराजी" ३ मीलकी दूरीपर है। आनेजानेका मार्ग पक्का है। सवारी हरएक प्रकारकी मिलती है। यहां दिगम्बर जैनियोंके गृह १६७ जिसमें मनुष्यसंख्या ६८० है। तथा १९ शिखरबन्द मन्दिरजी और ३०० शास्त्र हैं। ठहरनेके लिये एक धर्मशाला और एक जैन पाठशाला भी है।

यहांके सेन्ट्रल जेलमें देशी सूतकी दरियां आगरा और अलीगढ़के मुकाबिले सादी और रंगीन दोनों प्रकारकी बनती हैं, चारखाने सूती ऊनी पलंगपोश, चदरें आदि अच्छी और मजबूत तयार होती है। टीकमगढ़में फ्लूट, हार्मोनियम अच्छे २ खास स्वदेशी तैयार होते हैं। कीमत ३ सप्तककी २० या २२ रुपया और ४-४॥ सप्तककी ३० रुपया के करीब है। ये बाजे सूरतमें तथा स्वरमें विदेशीसे कम नहीं होते हैं। फोटोग्राफी कॅमेरे और उसका सब प्रकारका सामान भी गोकलप्रसाद जैन अपने हाथसे तयार करते हैं। विदेशीसे किसी बातमें कम नहीं हैं।

तेवरी।



यह कसबा गढ़ाके पास जबलपुरसे ८ मीलपर संगमरमर पत्थरके लिये प्रसिद्ध है। यहांकी आबादी अनुमान १०० की है। यह ग्राम नागपुरका राजा भोसलाने एक ब्राह्मणको इनाममें दिया था और अंग्रेज सरकारनें ईस्वी सन् १८२३में उस ब्राह्मणकी राजभक्ति देखकर उसे कायम कर दिया। वर्त्तमानमें यहांके प्रबन्धकर्त्ता शंकरराव नागपुरवाले हैं। यहांपर प्राथमिक शाला, पोस्ट आफिस है और रविवारके दिन यहां साप्ताहिक बाजार भी होता है, और मार्बलकी सब प्रकारकी चीजें बहुत अच्छी बनती हैं। २००० वर्षके पहले यह ग्राम बड़ा शहर था और इसका नाम त्रिपुर था। ११वी सदीमें राजा कर्णदेवनें यहांपर मन्दिरजी और सुंदर इमारते बनाकर सुशोभित कर दिया था। यहांपर बालसागर नामका एक तालाब है जिसके मध्यभागमें एक दिगम्बर जैन मन्दिर अति मनोज्ञ है। उक्त मन्दिरमें बहुतसी मूर्तियां हैं जिनमें जिनदेवकी मूर्ति ऊपरकी तरफ एक स्त्रीकी मूर्ति उसके पुत्र सहित स्थापित है और श्री जिनदवेके चरणके तले " मानादित्यकी स्त्री रोज नमनकर रही है" ऐसा उस वक्तकी (१२वीं सदी) लिपिमें खुदा है। तेवरीमें और कई शिलालेख कलाचुरी राजाओंके मिले थे पर इस वक्त वहां मौजूद नहीं हैं।

तारादेही।



यह ग्राम दमोहसे दक्षिणमें ४२ मैल कुछ दूर बरमा नदीके दहिने किनारेपर है। पहिले यहांपर गोंड जातीके राजा निजामशाह, निरपतशाह, प्रेमशाह और सुमेरशाहने राज्य किया था इसके पश्चात अब सरकार अंग्रेजकी अमलदारी है। इसमें जैन दिगम्बर आम्नायके घर २३ और मनुष्यसंख्या १२२ है। यहांपर एक मन्दिर और दो चैत्यालय दिगम्बर जैनियोंके हैं जिनमें अनुमान १३ धर्मशास्त्र हैं। यहां एक महाजन सवाई सिंघई टेकचंद कीरतराम गांवके मालगुजार बड़े साहूकार और प्रसिद्ध हैं। एक सरकारी चौकी है। नागपुरवालोंकी अमलदारीके समय इस तप्पे तारादेहीके ऊपर राजा कुंवरसिंह खारी देवरीवालोंका अधिकार था फिर १८६१ई० में दुरगसिंह सिंघईने इसे पाया। उस समयसे बराबर सब बन्दोबस्त उसके नाम और उसके वारिसोंके नाम सरकारी प्रबन्धमें भी होता आया। जलवायु यहांका समशीतोष्ण है और सब प्रकारके अनाज पैदा होते हैं। चावल, कुदई, आदिका थोड़ासा व्यापार होता है।

दुर्ग ।

यह नगर बंगाल–नागपुर रेलवेपर है यहां एक पुराने किलेका निशान है । दिगम्बर जैनियोंके गृह १९ तथा मनुष्यसंख्या ६९ और एक चैत्यालय हैं। व्यापार रुई और गल्लेका होता है । मामूली छोटीसी वस्ती है ।

देवरी ।

यह नगर रहली तहसीलमें करेली (G. I. P. Ry.) स्टेशनसे ३६ मील दूरीपर और सागरसे ४० मील दूरीपर सुकचेन नदीके किनारेपर है । रास्ता पक्की सड़क है । यहांपर एक प्राचीन क़िला भी है जो चन्देल राजाने स० १७६७ ई०मे बनाया था । देवरीका प्राचीन नाम रामगढ़ वा उजड़गढ़ था । परन्तु जव यहां मन्दिर 'श्रीखंडेरावका' निर्माण हुआ ब्राह्मणोंने इसका नाम देवरी (The abode of God) रक्खा। १८वीं शताब्दीमें देवरी पंचमहाल प्रांतका सदर मुक़ाम था । यहांपर शुक्रवारको साप्ताहिक बाजार भी भरता है जिसमें प्रायः थोडा रोजगार सव प्रकारका होता है । यहां दिगम्बर जैनियोंके २ शिखरवन्द मन्दिर तथा ६ चैत्यालय है जिसमें ९० धर्मशास्त्र हैं । उनके गृह ४७ तथा मनुष्यसंख्या अनुमान २८० है ।

श्रीसिद्धक्षेत्र द्रोणागिरी ।

सेंदप्पा ।

ग्राम सेंदप्पा पर्वतका नाम द्रोणागिर सिद्धक्षेत्र जिला नयागांव छावनी, तहसील रियासत विजावर पोस्ट, गुलगंज (मलारा) निकटवर्त्ती स्टेशन सागर गणेशगंज और लिधौरा है । सागरसे जिला बान्दाको पब्लिक सर्वसाधारण रोड छतरपुरसे जाती है और उसही सागरके रास्तासे ६६ मीलतक सरकारी तथा उसके आगे रियासत पन्नाकी सीमाकी सड़क मिलती है। सो इस सड़कके ९ मीलपर सडवा गांवके वांई तरफ श्रीसेंदप्पाजीका रास्ता फूटता है । करीव ८ मील जंगली सड़क है ।

सेंदप्पा ग्राममें दिगम्बर जैनियोंका एक मन्दिर और द्रोणागिरपर २४ मन्दिर मूलनायक आदिनाथ स्वामी सम्वत् १९४९ के प्रतिष्ठित हैं कुलप्रतिमा ६० हैं । प्रतिष्ठा धोरासिंघई तिगोड़ा तहसील वन्डा, जिला सागरवालोंने कराई है ।

संदप्पामें ७ दिगम्बर जैनियोंके घर हैं, मुखिया दिवान छतरजीत सिंहजी हैं। मेला चैत्रसुदी ८ से १४ तक ७ दिन प्रतिवर्ष तीस वर्षसे भरता है। संदप्पामें दो धर्मशाला हैं जो कि सवाई सिंघई जवाहरलाल नगोद (सतना) की बनाई हुई है जिनमें मुशकिलसे ५० आदमी ठहर सकते हैं। मकान मामूली कच्चे हैं।

यहां श्रीगुरुदत्तादि मुनिवर मोक्ष पधारे हैं इस क्षेत्रके दोनों ओर दो नदियें-चंद्राक्षा और स्यामरी नामक बहती हैं।

पर्वतपर एक मन्दिरमें संगमर्मरका एक मेरु है उसको अन्यमती वेरढ़माता (भवानी) कहकर उसको सूत लपेटते हैं तथा शेंदूर, तेल हरदी चढाते हैं।

दश वर्ष पहले मेलेमें १००० तक यात्री आते थे परन्तु अब केवल ३०० आदमी, वे भी मुशकिलसे मेलेपर जुडते हैं।

ग्रंथ ६ हैं पुस्तक पूजन विधानसहित-पद्मपुराण, रत्नकरण्डश्रावकाचार, पुन्याश्रव, सुदृष्टि तरंगिणी, चरचासमाधान-हैं।

पर्वतकी पगथियें (सीढियां) बिलकुल टूट गई हैं। पर्वत करीब १००० फूट ऊंचा है।

फेहरिस्त मन्दिरजी नग २५ की

श्री द्रोणागिरपर जिन २ भाईओनें बनाये हैं।

नम्बर	नाम आसामी मंदिर बनाने वाला	गांवका काम	मन्दिरके मूलनायक	प्रतिमा
१	गोरे सिंघई	तिगोड़ (बन्डा)	आदिनाथ स्वामी	१
२	सुखलाल दरगुयां	वमनौरा (रि. बिजावर)	,,	१
३	जोरावल सिंघई	जमनुया (ललितपुर)	सुपार्श्वनाथ	१
४	सेठ विरजलाल	वमराना (ललितपुर)	पार्श्वनाथ	
५	पडहार भाइजी	हरचंद	,,	१
६	मन्दिर मेरुवाला	....	,,	१
७	सुमतिसागर त्यागी	....	अरहनाथ	१
८	भोवद सिंघई	छतरपुर	नेमिनाथ	१
९	मंदिर गुफाके ऊपर	....	आदिनाथ	१
१०	गोरे सिंघई	धुआरा (पन्ना)	शान्तिनाथ	१

नम्बर	नाम आसामी	गावका नाम	मन्दिरके मूलनायक	प्रतिमा
११	मंदिर कुंजका	....	आदिनाथ	१
१२	निदान सिंघई वरेठी	(विजावर)	नेमिनाथ	१
१३	मूलचन्दसेठ	वमराना (ललितपुर)	पार्श्वनाथ	१
१४	वकसी सिंघई	केसली टॅडा (सागर)	नेमिनाथ	१
१५	चौधरन	टीकमगढ़	पार्श्वनाथ	१
१६	डुमन सेठ	गौना (विजावर)	,,	१
१७	करंजू सिघई	महाराजगंज (पन्ना)	,,	१
१८	किशोर सिंघई	मलारा (पन्ना)	सुपार्श्वनाथ	१
१९	विहारी सिंघई	अंधरो (विजावर)	आदिनाथ	१
२०	झलकन सिंघई	,,	पार्श्वनाथ	१
२१	ललरे सवाई सिंघई	कारीटोरन (ललितपुर)	आदिनाथ	१
२२	वल्लु सिंवई	दलीपुर (विजावर)	अजितनाथ	१
२३	प्यारे सिंवई	,,	आदिनाथ	१
२४	सुखलाल सिंघई	दलीपुर	चन्द्रप्रभु	१
२५	जवाहरलाल सवाई सिंघई	नागोद	....	१

ग्रामके मंदिरमें प्रतिमा ३६ मूलनायक आदिनाथ है

नरसिंहपुर ।

यह नगर जिलेका सदर मुकाम है और ग्रेट इन्डियन पेनिन्शुला रेलवे पर व्यापारका मुख्य स्टेशन है । इस शहरके वीचमेंसे नदी निकली हुई है नदीके इस पार नरसिंहपुर है और दूसरीपार कचहरी वगैरह सव कंदेलीमें वनी हुई हैं ।

यहांकी मनुष्यसंख्या १०००० से कुछ ऊपर है जिसमें जैन दिगम्बर आम्नायके ८५ आदमी हैं: जो १८ गृहमें रहते हैं । उक्त आम्नायके ७ शिखरवंद मन्दिर हैं जिनमें करीव ५० धर्मशास्त्र हैं । एक धर्मशाला भी मन्दिरके नजदीक है ।

नागपुर।



यह पुराना नगर मध्य प्रदेशका मुख्य स्थान और (G. I. P. Ry.) लाईनपर बहुत बड़ा स्टेशन हैं। यहांकी मनुष्यसंख्या १२८००० अनुमान है जिसमें ५८३ आदमी जैन दिगम्बर अम्नायके हैं। यहांपर दिगम्बर मन्दिरोंकी संख्या १३ हैं जिसमें एक बडाभारी चैत्यालयभी है। मन्दिरमें २५६ धर्मशास्त्र हैं और उक्त आम्नायकी एक धर्मशाला भी है। इस नगरके पास बहुतसे बड़े २ तालाब और कई सुंदर बगीचें हैं। जिसमें तेलिखेरी नामका बंगीचा देखने योग्य है। ये बगीचें नारंगी और केलोंके लिये प्रसिद्ध हैं। यहां दो कॉलेज और कई स्कूल हैं, इनमें नार्मल स्कूल और एग्रीकलचरल स्कूल शामील हैं। यहांका व्यापार बहुत भारी है विशेषकर कपड़ेका बहुत क्रय विक्रय होता है। यहांपर अजायबघर, पुस्तकालय, महाराजबाग, तुलशीबाग, सोनागांओंमें पलदी करादी और बाहर तेलनकेरी ये इमारतें देखने लायक हैं पर यहांके अजायबघरमें बहुतसी खण्डित अखण्डित प्रतिमाएं हैं। यहांपर जो सिव्हिल स्टेशन है उसको सीताबर्डी कहते हैं और इसी नामका किला प्रसिद्ध है जहां कि अंग्रेजों और मरहठोंके बीच स० १८१७ ई० में लड़ाई हुई थी। सेनापति रघोजीराव भोसलेंका राजवाड़ा भी जो अभीतक मौजूद है देखने योग्य है।

श्रीसिद्धक्षेत्र नैनागिर।
वा
रिसंदेगीर।



यह सिद्धक्षेत्र बुन्देलखंडान्तर्गत पन्ना स्टेटमें सागर जिलेकी ईशान सीमापर सागर स्टेशन (G. I. P. Ry.) से ३० मीलपर है। सागरसे दलतपुरतक पक्का रास्ता २७ मील और ८ मील दलपतपुरतक कच्चा रास्ता है सवारी सब तरहकी मिलती है।

यह क्षेत्र नैनागिर बस्तीसे २ फर्लांगके फासलेपर है। यहांपर जैन दिगम्बरके २५ मन्दिर शिखरबन्द पर्वतके ऊपर और ६ मन्दिर नीचे हैं। घर ३ हैं जिनमें १४ मनुष्य रहते हैं। दो नये मन्दिर और भी बन रहे हैं। यात्रियोंके ठहरनेको एक धर्मशाला है। आनेवाले यात्रियोंको रसोईका सामान और पूजनकी सामग्री साथही लेना चाहिये क्योंकि यहांपर प्रायः ये चीजें नहीं मिलती हैं।

मन्दिरोंमें सबसे पुराना एक मन्दिर है जो १७ वीं शताब्दीका बना हुआ है। यह मन्दिर जैनी भाइयोंकी असावधानतासे जंगली पेड़ोंसे गिरकर कांटो और सघन झाड़ीमें छप गया था। पीछेसे बम्होरी (जो यहांसे ८ मील है) निवासी स्वर्गीय चौधरी शामलजीनें सं० १९२१ की सालमें जीर्णोद्धार किया और बहुतसा रुपया खर्चकर यात्रोत्सव कराया तबसे फिर यह क्षेत्र प्रसिद्ध हुआ और प्रतिवर्ष यहां-पर यात्राका उत्सव कार्तिक शुद्ध ११ से पूर्णमासीतक होता है। यहां धर्मात्मा भाइयोंने मन्दिरजी धर्मशाळा परकोटा आदिका जीर्णोद्धार कर यथार्थमें "रेसंदेगिर" नयनानन्द कर दिया है। मन्दिरजीका पूजन दर्शन करनेसे अनेक जन्मोंके पाप नष्ट होते हैं क्यों कि यहांपर श्रीवरदत्तादि ५ मुनि मोक्षको पधारे हैं और तेवीसवें तीर्थंकर श्रीमत्पार्श्वनाथजी महाराजका समोसरण भी आया था।

नैनागिरपर २५ मंदिर पहाड परकी फेहरिस्त.

१	आदिनाथ	१९४८	
२	सुमतिनाथ	१८४३	
३	श्रेयासनाथ	"	
४	चद्रप्रभु	१८४२	
५	श्रेयासनाथका बड़ा मंदिर प्राचीन सं० १७०८ का बना है मुख्य यही मंदिर था इसमें ६ प्रतिबिंब चतुर्थ कालके हैं और ७ नये हैं.		
६	अरहनाथ पार्श्वनाथ	१८४३	कासीराम सिंघई, दमोह.
७	सुमतिनाथ	१८४३	रानीबहू सेमरा, दमोह.
८	श्रेयांसनाथ		
९	नेमिनाथ	१८९९	हजारीलाल देवकरन, पटारी तः बन्डा.
१०	चन्द्रप्रभु	....	गुलखीनायक, खटोरा जि. सागर.
११	चन्द्रप्रभु	....	चुखर मोदी, चारोदा जि. दमोह.
१२	पार्श्वनाथ	....	उदेन परवार, सरावन तः बन्डा.
१३	नेमिनाथ	....	रजनबाई शाहपुर जि. सागर
१४	चन्द्रप्रभु	....	रोनवारे, जि. सागर.
१५	पार्श्वनाथ	....	लीलाधर महेरिया, धोघरा जि. सागर सुकारानी वहू, हीरापुर.

१६	चन्द्रप्रभु	१९४३	थोवन सिंघई, सहजपुर
१७	चन्द्रप्रभु	....	लटोरे पटवारी, कनौड.
१८	पार्श्वनाथ	१९४४	टूंडेसिंघई, मह्रूघा.
१९	चन्द्रप्रभु	....	सुखसिंघ परवार, खुरई.
२०	अजितनाथ	१९४८	भगोले चौधरी, लखदोनी.
२१	आदिनाथ	१९५२	रामचन्द्र गोलापूरव सुनवाव (पन्ना).
२२	चन्द्रप्रभु	१९५५	लटोरे टालिया, बमोरी जि. सागर.
२३	नेमिनाथ	,,	वसोरे चौधरी, सौरई (झासी).
२४	नेमिनाथ	,,	भरे साहू, सौरई.
२५	ऋषभनाथ	१९५८	रामलाल, पडरिया (सागर).

नोट—मंदिरोंकी संख्या २९ है परन्तु दर्शन ३३ जगह है. सवत जो लिखे हैं वह प्रतिमापर प्रतिष्टाके वक्तका है. मंदिरोंपर संवत वगैरह नहीं है मंदिर अभी दो नये बन रहे हैं.

१ खुदे सिंघई धबोली जिला सागरवालोंका
२ सिंघई गुलाबचंद्र, नैनवारवालों. } दो वेदी मकराने के पत्थर की.

फेहरिस्त श्री जैन दिगम्बर मन्दिर सिद्ध क्षेत्र रिसंदेगीर–नैनागिर–मांदिर तलेटीके.

मंदिर	नाम मूलनायक	संवत	बनानेवाले तथा प्रतिष्ठाकराकी प्रशस्ती.
१	पार्श्वनाथ	१९४८	गुलाबराय व दलपत, लुहरी तहसील मारोंनी जि० झांसी.
२	चन्द्रप्रभु	१८९९	खानजी वसोरे, जेरठ, जि० दमोह.
३	नेमिनाथ	१९६४	पुतराबाई भडराना, बन्डा (सागर)
	श्रेयांसनाथ	१८८९	खटोरे पटवारी, कनौडा.
	चन्द्रप्रभु	१८६४	रामप्रसाद सिंघई, बकसुआ.
	पार्श्वनाथ	,,	खटोरे पटवारी, कनौडा.
	,,	१८८९	वसुमोदी, वरखेरा.
	,,	१८४८	गिरधारी चौधरी, पथरिया
	अजितनाथ	१८४८	वंसीधर चौधरी ,,
	अरहनाथ	१८४८	,, ,,

नेमिनाथ	,,	भैयालाल मलैया	,,
आदिनाथ	,,	चौधरी भगवानदास	,,
नेमिनाथ	,,	चौधरी कोरेलाल	,,
श्रेयासनाथ	१८४८	,, भगवानदास	,,
आदिनाथ	,,	चौधरी वंशीधर	,,

गर्भस्थानके मदिरकी दिवाले फट गई है मरम्मतकी जुरूरत है. अयोध्याके मंदिरोका प्रवन्ध लाला देवीदासजी अग्रवाल लखनऊवाले देखते है और रत्नपुरीका हिसाव वावु महेशप्रसाद, कचेरी गोंडा (B. N. W. Ry.) स्टेशनके पास रहता है. यात्री सालभरमें करीव एक हजार आते हैं.

पंचमनगर ।

यह ग्राम जिला दमोहमें ग्रेट इन्डियन पेनिन्शुला रेल्वेका पठारिया स्टेशनसे निकट वेवस नदीके किनारेपर है । इसे गढाकोटाके राजा हिरदेशाहकी रानी मुसम्मात पांचोने निहायत ऊंचाईपर वसाया था इसीलिये इसका नाम पञ्चमनगर हुआ है। हिरदेशाहके पिताजी राजा छत्रसालने पंचमनगर और हटाके दरम्यान २० कोस लम्वी एक पत्थरोंकी दीवाल शत्रुओंकी रोकके लिये वनवाई थी उसका निशान अवतक मौजूद हैं । पहले यह ग्राम वहुत आवाद था परन्तु अव उजाड़ हो गया है। यहां प्राचीन कालमें जैनियोंकी वहुत वस्ती थी जिसके असरसे यहांके निवासी वैश्य, मुसमान, तेली, कोरी आदि परस्पर "जुहार" शब्द व्यवहारमें वोलते हैं और चालचलन महाजनी है। हालमें यहां दिगम्बर जैनियोंके २८ गृह हैं जिनमें मनुष्यसंख्या ११२ है। यहांपर वस्तीमें एक चैत्यालय तथा २ शिखरवन्द मन्दिर हैं जिनमें सहस्रावधि प्रतिमा मौजूद हैं। और भी वस्तीमें १ शिखरवन्द मन्दिर तथा एक चैत्यालय उजाड हो रहा हैं जिसका कारण जैनियोंकी क्षीणता है। पूजन प्रक्षाल गांवके लोग करते हैं। वस्तीके वाहर नदीके किनारे गांवसे पश्चिमकी ओर एक १७ वीं सदका वना हुआ दि० जैन मन्दिर है जिसको धीरता सिंगई नामक एक धर्मात्माने वनवाया था । यह मन्दिर सुदृढ़ वना हुआ है और चारों ओर परकोटा घिरा हुआ है। प्रतिमाएं सव खण्डित हो गई हैं। स्थानीय जैनी भाई "दशलाक्षणी पर्व" में दर्शन पूजनार्थ जाते हैं । जिस जगहमें यह मन्दिर है, वर्तमानमें वह जगह सरकारी महकमें वनविभागके (Under the control of the reserved Forest Department, Damoha Division,)

आधीन है जिससे वहां जानेवाले लोगोंको चौकीदारको इत्तला देना पडता है। यहांसे श्रीसिद्धक्षेत्र नैनागिरजी ९ मील है परन्तु रास्ता पहाड़ी है।

यहांका देशी कागज अच्छा बनता है और दूर २ बिकनेको जाता है। व्यापार तिलके बीज, घी यहांसे दमोह और बन्डाको जाते हैं और वहांसे गुड शक्कर आदि किराना और कपड़ा यहां आकर बिकता है। जंगल इस गांवके चारों ओर है। तेदुआं बहुत रहते हैं।

इस गांवमें औट पोस्टके पास गाजीमियांका मेला लगता है। इस गांवसे वायव्यमें एक मीलके अंतरपर भी दाहने पहाडपर एक चबूतरा चूनेका बना हुआ है जिसको राजा छत्रसालकी बैठक कहते हैं।

पटेरा।

यह ग्राम जिला दमोहमें हटासे १३ मील आग्नेयकी ओर है। और दमोह स्टेशन (G. I. P. Ry.) से ईशानमें १५ मील है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह १३ जिसमें मनुष्य संख्या ५२ है तथा १ शिखरबन्द मन्दिर और ३ चैत्यालय हैं।

यहां कांसेकी थाली और पीतलके बर्तन अच्छे बनाये जाते हैं तथा बंगडी, कासे पीतलके बर्तन और तमाकूका विशेष व्यापार होता है। इस ग्राममें प्राथमिक शिक्षणके लिये दो शाला हैं जिनमें ७० विद्यार्थी और कई विद्यार्थीनी पढ़ते हैं। ग्रामका प्रबन्धकर्ता एक परवार बनिया है। इस ग्रामसे २ मीलकी दूरीपर श्री अतिशय क्षेत्र कुंडलपुरजी है जिसका विशेष वर्णन अन्यत्र उध्दृत है।

पन्ना।

यह नगरी बुदेलखंडमें स्थित पन्ना राज्यकी राजधानी है जो कि चारों ओर विंध्याचल पर्वतकी सुरम्य श्रेणियोंसे घिरी हुई है यहांका राजा महाराज छत्रसालका वंशज है।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह २५ हैं जिनमें करीब १६० मनुष्यसंख्या है तथा २ शिखरबन्द मन्दिर और १ धर्मशाला है। मन्दिरमें अनुमान ६० धर्मशास्त्र हैं।

पन्ना हीराके लिये जगप्रसिद्ध है। यहांपर महाराजा रुद्रप्रतापसिंह बहादुर के. सी. एस. आई. ने एक मन्दिर बलदेवजीके बनवाया था जो पन्नाके सब मन्दिरोंमें शोभायमान विस्तृत और ऊंचा है और महाराजा माधवसिहजीने अपने राज्यकालमें एक इमारत 'महेन्द्रभवन' नामकी तयार कराई थी सो देखनेके योग्य है।

पनागर (देवरी)

यह ग्राम जिला जबलपुरमें G. I. P. रेलवेपर स्टेशन है। यह जैनियोंकाही ग्राम है। यह ग्राम पहले अच्छा आबाद था मगर बहुत कुछ उजाड है। दशा अच्छी है। यहांपर पहले जैनियोंकी ५००–६०० के करीब वस्ती थी। हालमें यहां दिगम्बर आम्नायके आबाद गृह ५९ हैं जिनमें २८५ आदमी बसते हैं। उक्त आम्नायके मन्दिर शिखरबन्द १७ व चैत्यालय ३ हैं जिनमें बड़े मन्दिरमें मूलनायक श्री शान्तिनाथ स्वामीकी प्रतिमा ८ फूट ऊंची खड्गासन है जिसको देखनसे ऐसा जाहिर होता है कि यह चौथे कालकी है। दूसरी प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पद्मासन ४॥ फूट ऊंची है यह सं० १५०४ विक्रमकी है, अति मनोग्य है।

जिन महाशयोंने इसबड़ा मन्दिरको बनवाया था उनका यह विचार था कि १ जगह प्रतिमा न्योछावरसे पधरावेंगे दूसरी जगह जब प्रतिमा मिलेगी तब पधरावेंगे कुछ दिनोंके बाद प्रतिमा श्रीशान्तिनाथ स्वामीकी पानीके पास स्वप्न देकर मिली। इसके साथ और भी छोटी २ चार प्रतिमाएं मिली। प्रतिमा शान्तिनाथ स्वामीकी निकालते समय बायां हाथ खंडित हो गया था फिर स्वप्न हुआ कि गुड़के सीरेमें डाल दो तो अच्छी तरह जुड़ जावेगी। इसी तरह करनेसे वह जुड गया जिसका चिन्ह भी इस समय मौजूद है।

बड़े मन्दिरके पास और चार मन्दिरजी हैं जिनकी मरम्मत श्री० सिंगई झब्बुलालजी वा श्री० चौधरी झब्बुलालजी वा श्री. मुख्त्यार मुरलीधर, श्री. सिंघई टेकचन्दजी व श्री. चौधरी भूरेलालजीकी तरफवालोंके चन्दासे हो रही है।

यहांपर सरस्वति भण्डारमें करीब ३०० ग्रंथ हैं।

यहांपर जैन दिगम्बर आम्नाय की १ पाठशाला और एक पुत्रीशाला भी प्रचलित हैं।

श्री अतिशयक्षेत्र पपोराजी ।

यह स्थान ओरछा स्टेटकी राजधानी टीकमगढ़से ३ मीलकी दूरीपर समस्थल है। आने जानेके लिये सिर्फ ललितपुर (G. I. P.) स्टेशन नजदीक है। ललितपुरसे बरनपुर होते हुए टिकमगढ तक २७ मील और टीकमगढ़से पपोराजीतक ३ मील पक्का रास्ता है। श्रीसिद्धक्षेत्र द्रोणागिरसे आनेवाले तथा जानेवाले यात्रियोंके लिये यहांसे २८ मील गाडीका कच्चा रास्ता है। मन्दिर ८२ शिखरबन्द बहुत विशाल बनें हुए हैं। सबसे प्राचीन मन्दिर भौंहिरेका है। यह सं० १२०२ विक्रमाब्दमें प्रसिद्ध चन्देलवंशीय राजा मदनबर्म्मदेवके समयका बना हुआ है, शेष मन्दिरजी बहुत पीछेके बने हैं। कार्तिक सुदी १४ को हरसाल मेला लगता है और पन्द्रह वीस सहस्र यात्री एकत्रित होते हैं ठहरनेके लिये धर्मशाळा बन्दैयाजी सवाई सिंघईकी प्रशंसनीय है।

इस क्षेत्रका प्रबंध टीकमगढ़के पंचोंके हाथमें है और उनकी तरफसे पूजारी पूजाके लिये रक्खा हुआ है।

पाटन ।

यह ग्राम रियासत बिजावरकी राजधानी बिजावरसे ८ मील दक्षिणकी ओर है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह १८ जिनमें ९३ आदमी रहते हैं तथा एक चैत्यालय भी है।

यहांपर लोहेकी खदानें बहुत हैं। **अकबर बादशाहाके सुविख्यात मन्त्री-बीरबलका जन्म इसी ग्राममें हुआ था** ऐसा लोग कहते हैं और इसी कारणसे कोई २ इसे "बीरों-की-पाटन" कहकर पुकारते हैं।

पिण्डरा रोड ।

पिण्डरा रोड बंगाल-नागपुर रेलवेका स्टेशन जिला विलासपुरमें पिण्डरा, घाट की चोटी पर वाके है। इसके २९ मील पश्चिमकी तरफ अमरनाथ का बहुत सुंदर

और पुराना मन्दिरजी है जो नर्मदा नदीके निकासपर है। यहांसे तीन नदियां—नर्मदा सोन और जोहिला—निकलती हैं और जहांसे ये जुदी २ होती हैं। वह जगह बड़ी सुहावनी है और हिंदूलोग उसको बहुत दिनोंसे पवित्र मानते हैं। अमरकंटकके शिरपर मैकाल पर्वत है उसपरसे इर्दगिर्द बड़ा सुंदर दिखाई देता है। कपिलदवड़ा मण्डवा और गुलवकावलीके महलको यात्रीलोग देखने जाते हैं। माघके महिनेमें यहां एक मेला होता है पर सूर्य और चंद्रग्रहणके समय हजारों यात्री नर्मदाको स्नान करनेके लिये जाते हैं।

यहांपर जैन आम्नायके परवार जातिके सिर्फ ३ गृह हैं जिसमें १६ आदमी रहते हैं। अमरकंटकमें कई धर्मशालाएँ भी हैं और पिण्डरासे अमरकंटककी तलेटीतक पक्की सडक भी तय्यार हो गई है।

पिंडरई।



यह बड़ा ग्राम जिला मंडलामें बंगाल नागपुर रेलवेपर दहिने किनारे पर आबाद है। यहांपर जैन दिगम्बर आम्नायके गृह ७७ हैं जिनमें ३४८ मनुष्य रहते हैं। तीन शिखरवन्द दिगम्बर जैन मंदिरजी तथा एक चैत्यालय भी हैं जिनमें करीब ३० धर्मशास्त्र हैं। संवत् १९६५ वि० में यहां पर जैन हितकारणी नामकी पाठशाला खोली गई है। पाठशालाका इन्तजाम श्रीयुत श्रीजसकरण लालजी करते हैं। व्यापार ज्वार कपास तिलीका होता है। यहां बहुधा किसानलोग रहते हैं तथा बहुत भारी जंगल बस्तीके नजदीक है।

पुसद।



यह ग्राम जिला यवतमालमें तहसीलका सदर मुकाम है और पुस नदीके दहिने किनारेपर बसा है। यहांपर बालाजीका मन्दिर देखने योग्य है। दिगम्बर जैनियोंके गृह ५१ है जिनमें मनुष्यसंख्या २३० है। दिगम्बर जैन मन्दिरजी एक है जिसमें धर्मशास्त्र कुछ नहीं है। लोगोंके घर २ में करीब ५० या ६० धर्मशास्त्र हैं यह ग्राम वाशीमसे ३९ मील और यवतमालसे ६४ मील है पर रास्ता विकट जंगली है। ज्वारी यहांपर विशेष पैदा होती है और दूसरी जगहको जाती है।

प्यावला।

यह ग्राम रियासत दतियामें है। यहांपर गुंदीलाल सुपुत्र वैशाखिया किशोरीलाल परवारका खाली १ गृह है और १ एक शिखरबन्द दिगम्बर जैन मन्दिरजी है जिसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथ और आदिनाथ स्वामीकी दो प्रतिमायें अतिशय मनोज्ञ और प्राचीन १२ फीट अवगाहनाकी खड्गासन स्थित हैं। इसके सिवाय भैंहरमें भी श्रीकमठमदद्लन स्वामी पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा शामवर्ण पद्मासन ४॥ फीट अवगाहनाकी अतिशय प्राचीन और मनोज्ञ स्थित हैं। कोईभी प्रतिमा खण्डित नहीं है। पूजन प्रक्षाल प्रतिदिन, उक्त महाशय जो झांसीमें रहते हैं पूजारी द्वारा अच्छी तरह कराते हैं।

फतेहपुर।

यह ग्राम जिला जबलपुरम दमोह स्टेशनके नजदीक फतेहासिंह आमीलके नामसे प्रसिद्ध है। यहांसे तीन मीलके दूरीपर जटाशंकरका किला संवत १७०० का बना हुआ है किलेसे थोड़ी दूरपर एक दिगंबर जैन मन्दिरजी उजाड़ पड़ा हुआ है। यहांपर पहिले दिगम्बर जैनियोंके २९ गृह थे परन्तु वर्तमानमें केवळ तीन गृह हैं जिसमें १४ आदमी रहते हैं। किलेके एक ओर केवड़े और केतकीके रमणीक उपवन हैं। फतेहपुरमें खिरणी (एक प्रकारका मेवा), कवीला धूरिया जो पँसारियोंके काम आता है, और लाख (Lac) वहुत पैदा होती हैं।

वदनेरा।

यह कसवा जिला अमरावतीमें जी. आई. पी. रेलवे और अमरावती शाखका जंक्शन है। यहांसे एलिचपुरको नजदीक सड़क गई है। कुन्दनपुर जो दिगम्बर जैनियोंका पवित्र क्षेत्र है वदनेरेसे करीव १८ मील है। नवम्बर और दिसम्बरके वीचमें यहांपर एक वड़ा मेला लगता है और ५००० के करीव लोग उसमें जमा होते हैं यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह सिर्फ ११ हैं जिसमें ५० मनुष्य हैं २। शिखरवन्द मन्दिरजी भी है। अमरावती स्टेशन यहांसे ६ मील है।

बलदेवगढ़।



यह स्थान ओरछा रियासतकी (बलदेवगढ़) तहसीलका सदर मुकाम है। यहांपर गवालसागर नामक एक बड़ा तालाब है उसीके एक ओर बहुत बड़ा और मजबूत सुरक्षित किला है जिसमें स्टेटकी कुछ फौज और तोपें रहती हैं। यहां दिगम्बर जैनियोंके २ शिखरबन्द मन्दिरजी और ७ गृह हैं जिसमें ३९ आदमी रहते हैं।

यहांपर पान "विलहरी" किस्मका बहुत अच्छा होता है और सब जगहको भेजा जाता है।

बाजनो।



यह ग्राम विजावर रियासतमें विजावरसे नजदीक है। यहांपर "भियाकुंड" नामक एक बहुत गहरा कुण्ड है, इसकी विचित्रता देखने योग्य है। पहले एक चौड़ा भूगर्भसा है जिसके ऊपर स्वाभाविक दीर्घ चट्टोनाकी छत पड़ीहुई है। उसी छतमें लगभग२० फूट लम्बा चौड़ा एक भाग खुला हुआ है जिसमेंसे भीतरको प्रकाश जाताहै।

बहुतसी सीढियां तथा दरवाजे पार करते हुए १९–२०फूट नीचे जानेपर बहुत बड़ा मैदान है जिसमें हजारों आदमियोंके ठहरने योग्य कोठरियां बनी हुई हैं वहींपर एक और अत्यन्त गहरा कुण्ड है जिसका जल निर्मल परन्तु दूरसे देखनेमें काला है। कहते हैं कि इसकी थाह आजतक किसीने नहीं पाई है। प्रतिवर्ष मकर संक्रान्तिके समयपर यहां बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें अधिकांश व्यापार लोहेके हथियार, वर्तन और कपड़ेका हुआ करता है।

यहां दिगम्बर जैनियोंके ९ गृह हैं जिसमें मनुष्यसंख्या ६८ है और एक शिखरबन्द मन्दिरजी भी है।

बामोरा।



यह ग्राम जिला सागरमें खास रेलवेस्टेशन (इण्डियन मिडलण्ड लेनमें) है। यहां दिगम्बर आम्नायके गृह ४७ तथा मनुष्यसंख्या २०० की है। बमोरा वस्तीमें बहुतायतसे दिगम्बर जैन मूर्तियां खण्डित पाई जाती हैं। एक प्राचीन विशाल मन्दिर

भूगर्भमें था जिसके ऊपर कूडा आदि पड रहनेसे कोई जानता नहीं था, पीछेसे कारणवश मालूम होनेपर देखा गया तो उसमें श्रीशान्तिनाथस्वामीकी विशाल मूर्ति पाई गई। अब सब लोगोंने मिलकर जीर्णोध्दार करानेका विचार किया है, और ३ चैत्यालय भी है। जिसमें अनुमान ३० धर्मशास्त्र हैं। स्टेशनपर बजरियामें व्यापार सब प्रकारका अच्छा होता है। ग्राममें एक प्राथमिक शिक्षणशाला तथा पोस्टआफीस है।

श्रीक्षेत्र बाहुरीबन्द।

श्री शान्तिनाथ महाराज।

यह बड़ा ग्राम सिहोरा तहसीलमें सिहोरा स्टेशनरोड (E. I. Ry.) से १८ मील तथा सलया स्टेशन (G. I. P. Ry.) से १८ मीलके फासलेपर है। यहांकी वस्ती वहुत पुरानी है।

यहां दिगम्बर जैनियोंके टूटे फूटे मन्दिरजी तथा मूर्तियां इधर उधर दिखनेमें आती हैं जिनमें श्रीशान्तिनाथ महाराजकी बहुतही बड़ी मूर्ति १२ फीटकी अनुमान ११०० संवत् की है ग्रामकी उत्तर ओर एक बड़ा तालाब है जिसकी नैऋत्यकी दिशामें बहुत पुराना मन्दिरजी होगा ऐसा ज्ञात होता है।

यहां देखने योग्य पिरनपीर अवलियाका चबूतरा बहुत बड़ा है जिसकी मरम्मतके लिये सरकारनें मौजा किसनपट्टन इनाममें दिया है। यहां गुरुवारके दिन बड़ी मन्डी होती है जिसमें लाखों रुपयोंका व्यापार होता है। यहां प्राथमिक शाळा, पोस्ट ऑफिस, और धर्मशाळा है। ग्रामका प्रबन्धकर्ता एक बनिया, कायस्थ और एक ब्राह्मण है।

बाळापुर।

यह नगर प्रान्त बरारका सदर मुकाम है। जैन दिगम्बर आम्नायके गृह २४ हैं और मनुष्यसंख्या ८० है। यहां पुराने दो दिगम्बर जैन मंदिर हैं उनमेंसे एक मन्दिरजीमें एक भोंहरा है जिसमें श्रीआदिनाथ स्वामी प्रथम तीर्थंकरकी प्रतिमा चतुर्थ कालकी

अति मनोग्य करीब २॥ फीट ऊंची पद्मासन विराजमान है। कहावतसे प्रसिद्ध होता है कि, जिस समय इस बाळापुर ग्रामको शाहनशाह बादशाहने बसाया था उस समय किसी एक पंचम श्रावक भाईको इसी ठिकाने मकान बनाते हुए यह प्रतिमाजी प्राप्त हुई थीं। इन मन्दिरोंमें अनुमान १५ धर्मशास्त्र हैं। बाळापुर ग्राम १३ वी शताब्दीका बसा हुआ है। यहांपर इस्मायलखां नव्वाव एलचपुरका बनवाया हुआ अति सुंदर किला अभितक पूरा बना हुआ है और राजा जयसिंहकी बनवाई हुई छत्री नामकी इमारत नदी किनारे बहुत रमणीय देखने योग्य है।

प्राचीन मंदिरका जीर्णोद्धार होना अति आवश्यक है पूजन प्रक्षालका कोई इन्तजाम नहीं रहता है—कारण कि यहां श्रावक मन्डली बहुत ही गरीब स्थितिमें है।

यहां पगड़ी, सतरंजी उत्तम बनाई जाती हैं।

श्री अतिशय क्षेत्र

बिनाजी।

यह स्थान सागरसे करेली जानेवाली सड़कपर रेहली तहसीलमें स्थित देवरीसे ४ मीलकी दूरीपर है। यहांपर ९ गृह दिगम्बर जैनियोंके और ३ शिखरबन्द मन्दिर हैं। इसी स्थानको "अतिशय क्षेत्र" बिनाजी कहते हैं। मन्दिरोंके सामने एक छोटीसी धर्मशाला है जिसमें अनुमान ५० के यात्री एक समयमें ठहर सकते हैं और इसीके बगलमें एक कुआं है इस लिये यात्रियोंको प्रायःतकलीफ नहीं होती है।

यहांपर सबसे पुराना मन्दिरजी मूलनायक श्रीशान्तिनाथ स्वामीका है जिसमें उक्त प्रतिमा १४ फूट अवगाहनकी अद्वितीय शान्तताको लिये खड्गासन विराजमान है। यद्यपि इस प्रतिमामें कोई शिलालेखादि नहीं है तथापि उसकी निर्माणशैलीही प्राचीनताकी साक्षी है जिससे इस प्रतिमाजीका प्रतिष्ठासमय १२ वी शताब्दीके प्रारंभमेंही प्रतीत होता है। यह मन्दिरजी प्राचीन ढंगका बना हुआ है और इसमें एक भूगर्भ (भोंहरा) चौथरा भी है।

दूसरा मन्दिरजी गाड़ा बाटवालोंके मंदिरके नामसे प्रसिद्ध है। इसमें एक प्रतिमाजी श्यामवर्ण १२ फीट अवगाहनाकी श्रीवर्धमान स्वामीकी अत्यंत मनोग्य

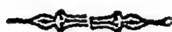
विराजमान है परन्तु प्रतिमा चूकी वनी हुई है इनके नीचे एक और प्रतिमाजी श्री चन्द्रप्रभु स्वामीजीकी पद्मासन पाषाणकी विराजमान है। आसनके लेखसे इस मन्दिरका निर्माणकाल तथा प्रतिष्ठाका काल १९ वीं विक्रम शताब्दीके आरम्भमें विदित होता है।

तीसरा मन्दिरजी छोटा परन्तु बहुत ऊंचा और गुमटीके आकारका है। इसके चारों ओरसे सीढियां ऊपर जानेको बनी हुई हैं जो यत्र तत्र भग्न हुई हैं। यहांपर बहुतसी प्रतिमाएँ खण्डित पडी हुई हैं और बहुतसी जहां तहां दीवालोंमें लगवा दी गई हैं और कोई विशेष इतिहास इस क्षेत्रके विषयमें ज्ञात नहीं है।

यात्रार्थ आने जानेवाले भाइयोंको सागर (बीना कटनी) लाईन यहा करेली (इटारसी, जबलपुर लाईन जी. आई. पी.,) रेलवे स्टेशनपर उतरना चाहिये। प्रत्येक स्टेशनपर सवारी-बैलगाडी, ऊंटगाडी, तांगा आदि-किरायेपर मिल सकती हैं। करेली स्टेशनसे ४२ मील और सागरसे ४८ मील पक्का रास्ता है। जो महाशय इस क्षेत्रके लिये बीना जंक्शन (Bina Junction G. I. P.) का भ्रम करते हैं वे भूलते हैं। बीनाजंक्शन "बीना-इटावा" और बीनाजी अतिशयक्षेत्र "बीनाबारओ" के नामसे प्रसिद्ध हैं।

यहांपर प्रतिवर्ष जलयात्राके लिये अगहन सुदी ९ से १३ तक एक बड़ा मेला भरता है जिसमें समीपी ग्रामोंके दो तीन हजार यात्री एकत्र जुड़ते हैं और अपने वर्षभरके पञ्चायती झगड़ोंका निवटारा करते हैं।

बिलहरी।



यह ग्राम जिला जबलपुर तहसील मुरवारामें मुरवारा स्टेशनसे ८ मीलपर है। पहले अच्छा आवाद था पर वर्तमानमें वहुत कुछ उजाड़ होता जाता है। हालमें इसकी आबादी २८०० की है जिसमें दिगम्बर जैनियोंकी संख्या ११९ है जो कि २९ गृहमें रहते हैं तथा दिगम्बर जैनियोंके ९ शिखरबन्द मन्दिरजी हैं जिसमें १९ धर्मशास्त्र हैं। कहते हैं कि पहले इसका व्यास २४ मीलका था और मध्यभागमें भैंसा नामक कुंड था जो हालमें ग्रामसे पश्चिमकी ओर ४ मीलपर मौजूद है। उस समय इसका नाम पुष्पावती नगरी था और राजा करणकी राजधानी थी पश्चात् राजा वल हुआ जव कोई बादशाह इनके ऊपर चढ़ आया और राजा वल हार गया इससे जाहिर हुआ कि वलहारा; इसीसे लोग इस ग्रामको वलहारा कहने लगे पर जब अंग्रेज सरकारका राज्य हुआ तब फिर इसका नाम विलहरी किया गया है।

यहांपर प्रतिमा खंडित बहुत पाई जाती हैं जिनमें ब्रह्मा, शिव और सूर्यकी प्रतिम मुख्य देखने योग्य हैं। यहांपर एक तालाव लक्ष्मण सागर नामसे प्रसिद्ध है। यहांके पान अच्छे होते हैं।

बीना (इटावा)।

जिला सागर तहसील कुराईमें यह कसवा बीना जंक्शन (G. I. P. Ry.) से २ मीलकी दूरीपर बीना-इटावा नामसे प्रसिद्ध है। यह कसवा दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है और तिजारतकी बड़ी भारी मण्डी है। बीना जंक्शनसे झांसी-देहली, भोपाल-इटारसी, गुना-वारक दमोह-कटनी ये चार लेन जी. आय. पी. की जाती हैं। आवादी अनुमान २००० है जिसमें दिगम्बर जैनियोंकी संख्या ४९८ है। उक्त आम्नायके गृह १२६ हैं और शिखरबन्द मन्दिरजी ४ हैं जिसमें दर्शनस्थान ८ हैं और १२९ धर्मशास्त्र हैं। एक धर्मशाला भी है। यहां एक अच्छी जैन पाठशाला हैं जिसका मकान चिरस्थाई है तथा कुछ ध्रौव्य आमदनी भी है मन्दिरके पास हिन्दीकी ३ पाठशाला और हैं।

बोरगांव (मंजू)

जिला अकोला, तहसील अकोलामें यह ग्राम है। यहांपर एक चैत्यालय बहुत प्राचीन करीब ६००–७०० वर्षका है जिसके नजदीक ५०।६० गजपर ५ प्रतिमाजी पाषाणकी मिली थीं। इसी चैत्यालयका भोंहरामें एक प्रतिमाजी श्रीनेमिनाथ स्वामीकी अति मनोज्ञ हैं। चैत्यालय कई जगहसे गिर पडा है जिसकी मरम्मत होना अति आवश्यक है पर वहांके लोगोंमें बिलकुल ज्ञान नहीं है इसलिये इस मन्दिरके पूजन प्रक्षालका भी कुछ इन्तजाम नहीं होता है।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह १४ हैं तथा मनुष्यसंख्या ७७ है।

श्रीअतिशय क्षेत्र भातुकली।

बाबजी महाराज।

यह दि. जैन अतिशय क्षेत्र जिला अमरावती, जी. आई. पी. रेलवेके अमरावती स्टेशनसे १० मीलपर है। बैल गाड़ीका रास्ता है। यह अतिशयक्षेत्र

श्री केशरियाजी (राजपुताना–माळवा) की तरह प्रभावधारी है। यहां ३ दि. जैन मन्दिरजी तथा २ चैत्यालय हैं जिनमेंसे एक मन्दिरमें श्रीऋषभदेव स्वामीकी चौथे कालकी प्रतिमा अतिशय संयुक्त पद्मासन करीब ३ फुट ऊंची श्यामवर्ण विराजमान है। बोल कबूल करनेवाले बहुत मानते है। एक धर्मशाला भी है। यहांपर मेला प्रतिवर्ष मिति कार्तिक वदी ५ को होता है। वर्षमें यात्री ४।५ हजार आते हैं। प्रबंधकर्ता अमरावतीकी पंचकमेटी है जिसके व्यवस्थापक नेमासा रतनसा हैं। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके खाली ३ गृह हैं जिसमें ८ आदमी रहते हैं।

भेड़ाघाट।



यह छोटासा ग्राम जिला जबलपुरमें नर्मदानदीके बायें तटपर मीरगंज रेलवेस्टेशनसे (G. I. P. Ry.) करीब ३ मीलपर बसा है। रास्ता अच्छा है और घोड़ा, गाडी आदि सवारी हरवक्त किरायेपर मिलती है। कहते हैं कि यहांपर भृगु ऋषि रहते थे इसलिये इसका नाम भेराघाट पडा है। यहांपर दिगम्बर जैनिका कोई भी घर नहीं है परन्तु एक शिखरबन्द मन्दिरजी अति मनोग्य है जिसमें चतुर्थ कालकी चौबीसीकी प्रतिबिंब अधिष्ठित है। पूजन प्रक्षालके लिये शेठ अमृतलाल जोरावल सिंघई लाडगंजवालोंके तरफसे एक पूजारी रहता है और कुल इन्तजाम उक्त सिंघई जीके यहांसे चलता है। सालभरमें ४ मेले वैष्णवलोगोंके होते हैं तथा वार्षिक मेला भी भरता है। यहांपर वैष्णव लोगोंकी बहुतसी खण्डित प्रतिमा हैं जिनको लोग नकटी बूची नाम कहकर पूजते हैं। यह पुतलियां खण्डित औरंगजेब बादशाहके समयकी हैं। और यहांपर सफेत पत्थर भी अच्छा निकलता है जिसके बर्तन मूर्तियां आदि हरप्रकारकी बनी हुई चीजें दूसरे देशोंको भेजी जाती हैं।

भेलसी



यह स्थान टीकमगढ़से २० मीलकी दूरीपर है। यहां वस्तीके बाहर एक दिगम्बर जैन मन्दिर छठी शताब्धिका बना हुआ है जिसमें ३ प्रतिमाएँ खड्गासन श्री शान्तिनाथ स्वामीकी हैं जो कई उपांगोंमें खण्डित हो गई हैं परन्तु यहांके जैनी भाई-पूजन इत्यादिकका प्रबन्ध सुयोग्य रखते है। यहां दिगम्बर जैनियोंके गृह २४ हैं जिनमें मनुष्यसंख्या अनुमान १०० है।

मलारा।



यह कसबा सागरसे कानपुर जानेवाली सडकके किनारे रियासत पन्नाकी तहसीलका सदर मुकाम है जिसका निकटवर्ति स्टेशन (G. I P Ry.) हरपालपुर और विजावर है। यहांसे होकर "श्रीसिद्धक्षेत्र द्रोणागिरजी" को जाते हैं। यहांसे उक्त क्षेत्र ७ मील हैं। गाडीका रास्ता सुगम है। यहां दिगम्बर जैनियोंके गृह सिर्फ ११ तथा एक चैत्यालय है जिसमें ५२ मनुष्यसंख्या है। यहां सुन्नेलालजी संघी (गोलापूर्व जैन) बहुत सुयोग्य पुरुष हैं। उनके मिलनेसे उक्त क्षेत्रके जानेवाले यात्रियोंको सवारी आदिका प्रबन्ध हो सक्ताहै। यहांपर सप्ताहिक बाजार भी भरता है जिसमें प्रायः परचूरण व्यापार हुआ करता है।

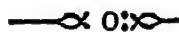
महाराजगंज।



यह ग्राम पन्ना स्टेटमें मलारासे ९ मील पूर्वकी ओर है। रेलवे स्टेशन-हरपालपुर और बिजावर) यहां दिगम्बर जैनियोंकी गृहसंख्या २१ है जिसमें मनुष्यसंख्या९१ है। १ शिखरबन्द मन्दिरजी और एक चैत्यालय भी हैं जिसमें १३ धर्मशास्त्र हैं।

यहांपर लोहेका व्यापार होता है। यहां एक सूरजशहा गोंडराजाके समयका क़िला है जिसके नीचे पहाड़की एक गुफामे बहुतसी जैन मूर्तियां खण्डित पडी हैं वहां महाराजगंजके श्रावक लोग दशलाक्षणी पर्वमें पूजन वन्दनार्थ जाते हैं। सूरजशा राजाके समयमें यहां उच्चपदस्थ कर्म्मचारी अधिकांश करके जैनीही थे।

मालेगांव।



यह ग्राम जिला अकोलासे जो सडक पूसदको गई है उसके वायें किनारेपर अकोलासे करीब३९ मीलके फासलेपर वसा हुआ है। इस ग्राममें महादेवका वाहन नादिया (वैल) देखने योग्य है। लोग कहते हैं कि, ऐसा नादिया काशी (वनारस) तकमें नहीं हैं। सिरपुर आनेवाले भाईयोंको देवमनसा मंगासाजीसे मिलनेपर गाडी आदि भाड़े (किराये) का सुभीता हो सक्ता है। सिरपुरजी यहांसे ६ मील है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके ३३ गृह हैं और मनुष्यसंख्या १७६ है। एक चैत्यालय भी उक्त आम्नायका है।

मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र।



अच्चलपुर वर णियडे ईसाणे भाए मेंढगिरीसिहरे।
आहुट्ठय कोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥
(णिव्वुयकंडे)

एलिचपुरसे १२ मील ईशान कोणकी ओर मुक्तागिरि वा मेंढगिरी सिद्धक्षेत्र है। बंगाल-नागपुर रेलवेके बडनेर स्टेशनपर उतरकर अमरावती जाना चाहिये। अमरावतीसे एलिचपुर ३० मील है। एलिचपुर जानेके लिये वहां टांगे वा गाडियां किरायेपर मिलती हैं।

एलिचपुरकी फौजी छावणी परतवाडामें है। परतवाडासे आगे २ मील जानेपर रास्तेके दाहिनी ओर मुक्तागिरि स्वेतवर्ण जिनमन्दिर दिखलाई पडते हैं। खरपी नामक ग्रामतक अच्छी सडक गई है। वहांसे दाहिनी ओर श्रीपद्मनन्दि भट्टारककी उत्तराभिमुखी समाधिके पाससे मुक्तागिरिका मार्ग फूटता है। इस समाधिके पास एक छोटीसी धर्म-शाला है, जिसमें यात्रीलोग आकर रहते हैं।

कारंजामें भट्टारकोंका एक प्रसिद्ध पट्ट है। उक्त पट्टपर आजतक ३६ अधिकारी हो चुके हैं। मलयाद्रि, मलखेड वा मान्यखेट (निजाम राज्य) जो जगत्प्रसिद्ध आचार्योंका पट्ट था, जिसको कि पूर्व कालमें भगवज्जिनसेन गुणभद्र आदि भुवनभूषण विद्वान् सुशो-भित कर चुके हैं; कारंजाका पट्ट उसी पट्टकी शाखा है। लगभग ५००वर्ष पहले इसकी स्थापना हुई थी। शक संवत् १५७९ तक इस पट्टपर १८ पट्टाधीश हो चुके थे। इस समय कारंजाकी गद्दीपर श्रीदेवेन्द्रकीर्ति भट्टारक हैं। पद्मनन्दिसे लेकर जिनकी कि उक्त समाधि बनी हुई है, भट्टारकोंकी परम्परा इस प्रकारसे है:—देवेन्द्रकीर्ति—पद्मनन्दी—

देवेन्द्रकीर्ति—रत्नकीर्ति—देवेन्द्रकीर्ति।

पद्मनन्दिका समाधिकाल संवत् १८७६ आश्विनवदी ५ का है। पद्मनन्दिके गुरु देवेन्द्रकीर्ति वा सेतवालजातीय प्रसिद्ध ब्रह्मचारी महतीसागर ये समकालीन विद्वान् थे।

भट्टारक पद्मनन्दि बड़े भारी विद्वान्, संयमी, मनोनिग्रही वा मंत्रशास्त्रज्ञ थे। संवत् १५०० के लगभग नांदेडके निकट अर्धापुरीमें एक उत्तम प्रतिमा थी। वहांके जैनियोंने उसे कारंजा लानेका विचार किया। परन्तु वहांके अन्य धर्मीय लोग

इसका विरोध करने लगे। भट्टारक पद्मनन्दि जैनियोंकी सहायता करनेके लिये गये, परन्तु वहां उनकी भी दाल नहीं गली। निदान उन्होंने निजाम सरकारसे सहायता लेनेके लिये अपने भट्टारकी वैभवके साथ हैद्राबादको प्रस्थान किया। कहते हैं कि, जिस समय वे बादशाहके दरबारमें पहुंचे, उस समय उनकी पालकी अधर थी! जैनाचार्यकी यह अद्वितीय शक्ति देखकर बादशाहने पूछा कि "आप क्या चाहते हैं?" भट्टारक महाशयने उत्तरमें कहा, "हमको कुछ नहीं चाहिये अर्धापुरीके लोग हमको प्रतिमा नहीं लाने देते हैं। बस इसी उपसर्गका निवारण होना चाहिये।" बादशाही हुक्म मिल गया। और प्रतिमा निर्विघ्नतासे कारंजा पहुंच गई। वर्तमानमें उक्त लाई हुई मूर्ति शिरडमें है। कहते हैं, एकवार उक्त भट्टारक महाराज रात्रिको गुप्तरीतिसे मुक्तागिरिपर दैविक चमत्कारको देखनेके लिये गये थे। परन्तु वहांके संरक्षक देवने उन्हें वहां नहीं रहने दिया। लौटते समय खरपीके पास ही उनकी एकाएक मृत्यु हो गई। अतएव वहींपर उनकी समाधि बनाई गई।

बदनूरकी बड़ी सडक बाईं ओर छोड़कर दाहिनी तरफके मार्गसे इस समाधिके पास होकर जानेमें थ्योरा गांव मिलता है वहांसे पर्वत १॥ मील रह जाता है। मार्गमें चार नालें मिलते हैं। मार्गमें वेदिका और गोमुख मिलता है यात्राके समय वेदिकापर पूजा होती है और गोमुखसें निरंतर जल बहता है।

मुक्तागिरिमें पहले प्रर्वतकी तलैटीमें रहनेका सुभीता नहीं थी परंतु एलिचपुरके प्रसिद्ध धर्मात्मा धीनक शेठ लालासा मोतीसाने जबसे (संवत् १९४७ में).जैनमंदिर बनवाकर धर्मशाला वगेरहका प्रबंध कर दिया है, तबसे सब यात्री तलैटीमें ही ठहरते हैं, इसके पहले पर्वतपर जो ६ धर्मशालाएं बनी हैं, यात्री उनमें जाकर ठहरते थे। तलैटीके मंदिरके साम्हने एक सुंदर जलप्रवाह बहता है जिससे यह स्थान बड़ा ही रमणीय जान पडता हैं।

नीचेकी धर्मशालामें एक मुनीम व ५–७ नौकर रहते हैं, जिनके द्वारा तीर्थक्षेत्रकी व्यवस्था होती है। एलीचपुरके शेठ नत्थूसावजीके द्वारा इस क्षेत्रका प्रबन्ध होता है। बापूजी लक्ष्मण आगरकर एक सुशिक्षित मुनीम हैं।

इस तीर्थके दर्शनके लिये बड़े २ यूरोपियन अधिकारी आया करते हैं।

पर्वतबन्दना।

नीचेके मन्दिरसे उत्तरकी ओर नालेको लांघकर जानेपर सीढ़िया शुरु होती है। १०२ सीढ़ियां चढ जानेपर दाहिनी ओर आठ मन्दिर मिलते हैं। इन मन्दिरोंमेंसे ४८ नम्बरके मन्दिरमें इस समय एक प्राचीन और एक नवीन इस प्रकारकी दो प्रतिमाएं स्थापित हैं। परन्तु मन्दिर प्राचीन है। उसपर संवत् १६९१का एक शिलालेख है। ४४ वें मंदिरमें संवत् १६९० की दो प्रतिमाओंके सिवाय और भी कई प्राचीन प्रतिमाएं हैं। एक प्रतिमापर "धर्मचन्द्रगुरूपदेशात्" इस प्रकार लिखा है। ४३ वें मन्दिरमें मूर्तियां प्राचीन हैं। इसका जीर्णोद्धार बम्बईके शेठ सौभाग्यचन्द मेघराजजीने कराया है। ४२ वें मन्दिरमें एक बड़ी भारी पाषाणप्रतिमा और कई छोटी २ प्रतिमाएँ हैं। ४१ वें मन्दिरमें आदिनाथ भगवान्की संवत् १९५० की स्थापित हुई मूर्ति है। ४५–४६ और ४७ नम्बरके मन्दिरोंमें कोई बात विशेष उल्लेख योग्य नहीं है। इन सब मन्दिरोंके नीचे धर्मशाला हैं।

आगे दाहिनी ओरसे धवधवा (कूंड़ा) के पास पहुंचनेपर पर्वतके गर्भमें खुदा हुआ एक मन्दिर (४० वें नम्बरका) मिलता है। मेंढागिरि नामसे यही मन्दिर प्रसिद्ध है। इसमें नक्काशीका काम बहुत ही आच्छा है। खंभोंकी रचना तथा ऊपरका कार्य देखकर प्राचीन भवननिर्माण विद्याका खासा परिचय मिलता है। लोग कहते कि, इस मन्दिरकी सन्धियां सीसा पिलाकर जोडी गई हैं। मन्रिके बाहिर हाथी, बाघ आदि जीवोंके चित्र देखने योग्य हैं। इस मन्दिरके समीप ही लगभग २०० फुटकी ऊंचाईसे पानीकी धारा पडती है, जिससे एक रमणीय जलप्रपात बन गया है। ऊपरसे अत्यन्त शुभ्रवर्णका जल फव्वारेके समान पतित होता है। दोनों ओर मनोहर हरितवर्णके वृक्ष लगरहे हैं। जीवनधारा निरन्तर बहती रहती है। धवधवाकी धाराके पड़नेसे नीचे एक पुरुषभर गहरा कुंड बन गया है। यलोराकी गुफाके धवधवेकी अपेक्षा इस धवधवेकी ऊंचाई कम है। इस धवधवेकी दाहिनी ओर भी एक छोटासा धवधवा है। इन दोनों धवधवोंका संगम होकर जलका प्रवाह पर्वतसे नीचे उतरता है। नीचे जाकर भी यह प्रवाह एक धवधवेके रूपमें प्रगट होता है। वर्षाऋतुमें इस प्रदेशकी शोभा बड़ी ही मनोरम हो जाती है।

इस मन्दिरके दर्शन करके पुल परसे आजानेपर पार्श्वनाथ भगवान्का (नं १) प्राचीन मन्दिर मिलता है। इस मन्दिरके खंभोंका तथा गुम्बजका शिल्प कार्य दर्शनीय है। इसमें उत्तराभिमुखी सप्तफणमंडित पार्श्वनाथ भगवानकी प्राचीन प्रतिमा है। प्रतिमाके पीछे भीतपर २४ तीर्थकरोंकी प्रतिमाएँ उकीरी गई हैं। मुक्तागिरि पार्श्वनाथके नामसे इसी मन्दिरकी सर्वत्र ख्याति है। इस मन्दिरके पास ही नं० २-३-४-५-६-७ के मन्दिर है, जिनमें पाषाणकी प्राचीन मूर्तियां हैं। नं० ८ के मंदिरमें चार प्रतिमाओंपर सं० १५४८ खुदा हुआ है। इस मंदिरमें एक प्रतिमा खड्गासन है। नं० ९ के मंदिरमें सिर्फ एक ही प्रतिमा है। कोनोंमें कई स्थानोंमें प्रतिमा रहनेके निशान हैं, परन्तु इस समय वे खील हैं। इस मन्दिरके पासके मन्दिरमें खंडित प्रतिमाएँ हैं। नं० १०-११-१२ में चरणपादुका हैं। नं० १३ में रत्नत्रयकी प्राचीन मूर्ति हैं और नं० १४ के मन्दिरमें अजितनाथ भगवानकी मूर्ति है।

पार्श्वनाथके मन्दिरके नीचे एक धर्मशाला है। यहांसे पास ही १५-१६ नम्बरके मन्दिर हैं, जिनमें संवत् १५४८ की दो प्रतिमाएं हैं। नं० १६ के मन्दिरमें एक भोंहरा है, जिसमें मन्दिरकी जोखिम रक्खी जाती थी।

पार्श्वनाथ मन्दिरके बगलकी पैडियोंसे चढ़कर ऊपर जानेपर १८-१९-२०-२१ नं० के चार मन्दिर मिलते हैं। इनके दर्शन करकेदाहिनी ओरसे पर्वत शिखरपर चढ़ना चाहिये यह स्थल सबसे अधिक ऊंचाईपर है, इसलिये यहांसे वनश्री बहुत ही रमणीय दिखलाई देती है। पहले जिस धवधवाका वर्णन किया हैं उसका सर्पाकार प्रवाह इसी शिखरपरसे मन्दिरके आगेसे होकर जाता है। इस शिखरपर२२-२३-२४-२५नम्बरके ४ मन्दिर हैं जिनमेंसे एक ऊपर चढते ही दाहिनी ओर मिलता है, इसमें पादुकाएं स्थापित हैं। साम्हने वीस तीर्थकरोंकी चरणपादुकाओंका कूट है। बाई ओर महावीर,वासुपूज्य और नेमिनाथ इन तीर्थंकरोंकी पादुकाओंका एक मन्दिर है। आगे साम्हने बहनेवाले जलप्रवाहको लांघकर जानेसे आदिनाथ भगवानकी पादुकाओंका मन्दिर है। पर्वतके इस भागकी शोभा, एकान्तवास, शान्ति, निःशब्दता, जलप्रवाह और वनश्रीकी रमणीयता देखकर बड़ा ही आनन्द होता है और ऐसा जी होता है कि, यहींपर ध्यानस्थ होकर जीवनको सफल करें। कहते हैं, यहांपर पहले भिल्ल लोगोंकी वस्ती थी, परन्तु इस समय कोई नहीं रहता है। इस पर्वतके समीपके पहाड़ी प्रदेशसे तापी और पूर्णा नदी वहती हैं।

शिखरस्थित कूटोंके दर्शन करके नीचे उसी मार्गसे आनेपर दाहिनी ओर दूसरे

धवधवेके पुलसे मार्ग जाता है। इस मार्गसे नं० २६ और २७के मन्दिर मिलते हैं। पहलेमें पादुका और दूसरेमें संवत् १५४० की पार्श्वनाथकी मूर्ति है। फिर २८-२९-३० नं० के मंदिर मिलते हैं। पिछले मन्दिरमें एक भोंहरा है। आगे दाहिनी ओरसे १३ सीढ़ियां नीचे उतरनेपर एक दाहलान (नं० ३१) मिलता है। इसमें पुरुषभर ऊंची शान्तिनाथकी दो खड्गासन प्रतिमाएं हैं। मध्य भागमें पहले प्रतिमा होगी, परन्तु इस समय नहीं है। यहांसे कुछ ऊपर जाकर फिर दाहिनी ओरसे नीचे उतरते हैं जहां कि एक पुरानी परन्तु उत्तम धर्मशाला बनी हुई है।

नीचे नं० ३२ के मंदिरमें श्री आदिनाथकी प्रतिमा और ३३वें में पादुकाएं हैं। नं० ३४ के मन्दिरमें सं० १५६६ की तीन मूर्तियां हैं। भीतपर २४ तीर्थंकरोंकी प्रतिमाएं हैं। इस मन्दिरका शिल्पकार्य भी दर्शनीय है। नं०३५के मन्दिरमें बाहर ४ खंभे हैं, जिनमें भगवान्की मूर्तियां और शिलालेख हैं। परन्तु शिलालेख बिलकुल ही नहीं दिखलाई देता है। भीतर एक बाहुबलि स्वामीकी और ५-६ दूसरी पंचपरमेष्ठी, नन्दीश्वर, सहस्रबिम्ब आदिकी प्रतिमाएं हैं। गृहमन्दिर श्रवणबेलगुलके मंदिरके ढंगपर बना है। इसका शिल्पकार्य भी अच्छा है। नं०३६ के मन्दिरमें देवीकी प्रतिमा है, जिसे देवी अम्बिका कहते हैं। इसके समीप ही एक जलकुंड है। नं०३७के मन्दिरमें एक रत्नत्रयकी पाषाण मूर्ति है, परन्तु उसकी दोनों ओरकी प्रतिमाएं खंडित हैं। नं०३८ में पादुका और नं०३९ में एक प्रतिमा है।

इस प्रकार सब मिलाकर ८ मंदिर हैं। इनके सिवाय चार मंदिर और हैं, परंतु वे धराशायी हो रहे हैं।

मन्दिरोंका समय।

प्रतिमाओंमें जो शिलालेख हैं, उनसे ये मंदिर १५ वें १६ वें शतकके मालुम होते हैं। परन्तु धवधवे (कूड़ा) के पासके मन्दिरको देखनेसे यह स्थान बहुत प्राचीन मालुम पडता है। वैतूलके एकस्ट्रा अ० कमिश्नर रायबहादुर बाबू हीरालालजी बी. ए. के पास जो अचलपुरी कताम्रपट्ट है, उससे राजा श्रेणिक (बिंबिसार) वा उसके पिता उपश्रेणिकका इस पर्वतसे कुछ सम्बन्ध मालुम पडता है। सो उक्त ताम्रपट्टसे इस तीर्थकी प्राचीनता ढाई हजार वर्षके लगभगकी ठहरती है।

प्राकृत निर्वाणकांडमें इस क्षेत्रको अचलापुरके निकट बतलाया है । वर्तमान एलिचपुर अचलापुरका अपभ्रंश मालूम होता है । परन्तु ऐसा भी जान पड़ता है कि, संवत् १११९ में एक एल नामका राजा हो गया है, उसीसे एलिचपुर नाम पड़ा होगा । यह एल राजा जैनधर्मका धारण करनेवाला था । (देखो, इम्पीरियल ग्याजीटीयर ऑफ इंडियाँ वोल्यूम १२)

मेंढ़गिरी वा मुक्तागिरी ।

इस पर्वतपरसे साढ़े तीन कोटि मुनियोंने मोक्ष प्राप्त किया है, इसलिये इसे सिद्धक्षेत्र वा निर्वाणभूमि कहते हैं । इस तीर्थके दर्शन करनेका बड़ा भारी माहात्म्य है । अनेक मुनि यहांसे कर्मबन्धनसे मुक्त हुए हैं, इसीलिये इस तीर्थका नाम मुक्तागिरि वा मुक्तागिरि पड़ाहोगा । और एक मेंढ़े (भेड़) ने इस पर्वतके जिनदेवोंको नमस्कार करते हुए प्राण छोड़ा था, और उस समयके शुभ परिणामोंके फलसे उसने देवगति प्राप्त की थी, इस कारण इसे मेंढ़गिरि भी कहते हैं । इसके सिवाय बेतूल ग्याजीटियरमें मेंढ़गिरिके विषयमें नीचे लिखी किंवदन्ती लिखी है :—

" पूर्वकालमें इस पर्वतपर एक गड़रिया लगभग एक हजार भेड़ोंका पालन करता हुआ रहता था । भेड़ें सारे दिन पर्वतपर चरती रहती थीं और संध्याको अपने घर आ-जाती थीं । एक दिन जब आधी ही भेड़ें वापिस आईं, तब गड़रिया उनकी खोजमें निकला । निदान जिस मन्दिरमें सुवर्णकी प्रतिमा है, उस मन्दिरके आगे उसे सब भेड़ें चरती हुई दिखलाई दीं । इसके पहले उक्त स्थल जहां कि मन्दिर है किसीको मालूम नहीं था । यह बात जब लोगोंको विदित हुई, तब उन्होंने पुराणवर्णित मेंढ़गिरि इसी स्थानको समझकर यहां और भी नवीन जैनमन्दिर बनवाये और उसी समयसे यहां कार्तिक सुदी १९ को मेला भरने लगा । इस क्षेत्रके विषयमें यूरोपियन लोगोंको ऐसा श्रद्धान हो गया है कि, इस तीर्थका यदि एक बार भी दर्शन हो जाता है, तो खूब तरक्की होती है और धन भी प्राप्त होता है ।

दैविक चमत्कार।

१ इस क्षेत्रपर निरन्तर दैविक चमत्कार होते हैं। उनमेंसे सर्वसाधारणकी दृष्टिमें आनेवाला केशरवृष्टिका चमत्कार है। इस पर्वतके उपरी भागपर, मन्दिरोंपर, तथा वृक्षोंके पत्रोंपर केसरी रंगके बिन्दु दिखलाई देते हैं। खुर्जाके सुप्रसिद्ध शेठ और पंडित मेवारामजीने यहां आकर एक स्थानपर स्वच्छ वस्त्र बिछाया था और अच्छी तरहसे विश्वास कर लिया था कि, वास्तवमें केसरकी वृष्टि होती है। और भी बहुत लोगोंने यह चमत्कार देखा है इसकी प्रसिद्धि भी बहुत है।

२ कभी २ रात्रिको पर्वतपर मनोहर बाजोंका शब्द सुनाई देता है और कभी २ एकाएक घंटानाद होता है। कहते हैं, कि ऐसी घटनाएं देवादिकोंके आगमनके कारण होती हैं।

३ धवधवे(कूंड़ा)के निकट पर्वतके कूलोंपर मधुमाक्खियोंके बड़े बड़े भारी छत्ते हैं। ये मधुमाक्खियां बड़ी ही भयंकर हैं। सैकड़ों वर्षोंसे ये छत्ते बराबर चले आ रहे हैं। रजस्वला स्त्री किंवा सूतक पातकयुक्त मनुष्यकी पर्वतपर चढ़नेपर बड़ी ही दुर्दश होती है। मक्खियां उसे अधमरा करके छोड़ती हैं। खूबी यह कि दूसरे साथी मनुष्योंपर एक मक्खी भी नहीं बैठती है। यह चमत्कार भी सर्वभूत है। कहते हैं कि, यह लीला इस पर्वतकी रक्षा करनेवाले किसी यक्षकी है।

मुडवारा।

यह कसबा जिला जबलपुरमें तहसीलका सदर मुकाम और बंगाल-नागपुर रेलवे और ईस्ट इडियन और इंडियन मिडलेंडके संगमपर स्टेशन है। शहरकी पूर्वकी तरफ जो स्टेशन है वह कटनी मुरवारा नामसे प्रसिद्ध है इस शहरका महत्व व्यापारके लिये बढ़ रहा है क्यों कि यहांपर गल्ले, तेलके बीज, घी, लाहा और चूनेका व्यापार होता है, चूनेकी खाणीका काम जोरसे चल रहा है। यहांकी आबादी अनुमान १५००० है।

यहांपर दि० जैन मन्दिरजी दो हैं। स्थानीय भाई उनका प्रबन्ध ठीक रखते हैं। इन सज्जनोंने अनुमान १०००० दश सहस्र मुद्रा व्यय करके अत्यन्त सुंदर और सुखप्रद शालागृह बनवाया है। भाई कन्हैयालालजी रतनचंदजी सवाई सिंघईके प्रयत्नसे यह शिक्षागृह बना है। श्रीयुत पण्डित शिखरचंद्रजी जैन तथा श्रीयुत पण्डित बंश गोपालजी शर्मा स्थानीय भाईयोंके ओरसे बालकोंको शिक्षा देते हैं।

मूर्तजापुर (आकोला)।

जी. आई. पी. रेलवेका खास स्टेशन मुंबई–नागपुर लाईनपर है और इसके दो टुकडे आबाद हैं कुछ स्टेशनके पास बसता है और कुछ स्टेशनसे १ मील दूरीपर ग्राम है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके २३ गृह हैं और मनुष्यसंख्या १३२ है। और दो मन्दिरजी हैं जिनमें २० धर्मशास्त्र हैं। एक मुसाफिरखाना ठहरनेको है। मूर्तिजापुरके स्टेशनके पास भी रुई दाबने और रुई निकालनेकी कलें हैं। अनाज और रुईका व्यापार होता है। यहांसे कारंजा जाना होता है।

रनेह।

यह पुराना ग्राम जिला दमोहमें हटासे ९ मील पूर्वमें है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंकी मनुष्यसंख्या २६ तथा गृह ७ हैं और दो चैत्यालय भी हैं। यहांसे कसारी ग्रामको जाते समय करीब १ मीलके फासलेपर एक तालाबके किनारे १२ दिगम्बर जैन प्रतिमाजी खण्डित पडी हैं। यह प्रतिमाएँ मैदानमें हैं जिनमें एक प्रतिमा श्री महावीरस्वमी अन्तिम तीर्थंकरकी ९ फीट ऊंची खड्गासन स्थित है जिसे कृषकगण 'स्यामलियाजी' की मूर्ति कहकर पूजते हैं। दरयाफ्त करनेसे इन प्रतिमाओंका कुछभी विवरण ज्ञात न हुआ। लोगोंनें कहा कि हम हमेशासे इन्हें यहीं देखते आते हैं। इसीतरह ग्रामके दूसरी ओर भी एक प्रतिमा खड्गासन खण्डित पडी है।

इस ग्राममें १६ तालाब हैं जिनमें सिंघाडे आदि बहुत पैदा होते हैं। बसंत-ऋतु और ग्रीष्मऋतुमें तालाबमें जल रहता नहीं। यहांपर देशी टाटपट्टि, दुसूती चारखाने, चदरे आदि अच्छे बनते हैं।

श्री अतिशय क्षेत्र

रामटेक।

मध्यप्रदेशके जिला नागपुरसे २४ मीलके फासलेपर यह नगर है। नागपुर जंकशन (G. I. P. Ry.) से एक लैन रामटेकतक गई है। स्टेशनसे नगर ३ मील है। यह जगह सदा पवित्र मानी गई है। दिगम्बर जैनियोंके यहांपर केवल १६ गृह हैं और मनुष्यसंख्या ७२ है। और दो धर्मशाला हैं। यहांपर दिगम्बर आम्नायके मन्दिरजी आठ हैं जिनमें (१) एक ग्रामके बाहर प्रदेशमें बहुत प्राचीन मन्दिरजी हैं जिसमें श्रीशान्तिनाथ स्वामीकी प्रतिमा बेदीमें विराजमान हैं। सबसे पुराना मन्दिर (२) सुर्ख पत्थरोंका बना हुआ है और नगरके उत्तरकी तरफ पहाड़ीके तलेटीमें है। इस मन्दिरमें बेदीमें श्रीमत् शान्तनाथस्वामी सोलहवें तीर्थंकरकी प्रतिमा चतुर्थ कालकी अति मनोज्ञ (कायोत्सर्ग) १५ फीट ऊंची पीले पाषाणकी विराजमान है। और इसके बांये तरफ और दो मूर्ति पत्थरमें खुदे हुए छत्रोंसे विराजमान हैं। इस मन्दिरके सामने (३) छोटासा मन्दिरजी संवत १९२५में बना हुआ है जिसमें दर्शन ३ जगह है। सीधी बाजूपर (४) एक जिनमन्दिर शिखरबन्द है जिसमें दर्शन २ जगह हैं। इसके सामने भी (५) एक शिखरबन्द मन्दिरजी है जिसमें दर्शन ३ जगह हैं। इसकी स्थापना संवत १९०४ में हुई है। (६-७) ऐसेही वांयें बाजूमें भी आमने सामने दो मान्दिरजी शिखरबन्द हैं। जिनमें दर्शन ६ जगह हैं। इन मन्दिरोंकी स्थापना सं० १९०२ में हुई है। (८) यहांसे नजीक एक दिगम्बर जैन धर्मशाला है जिसमें एक चैत्यालय है इसमें एक प्राचीन सं०२४७ मूर्ति श्रीनेमिनाथ स्वामीकी विराजमान है। कहते हैं कि यह मूर्ति खापा गांवसे लाई है।

पहाड़ीपर हिंदुओंका सबसे पुराना मन्दिर सुर्ख पत्थरोंका बना हुआ है और नगरके उत्तरकी तरफ है। पहाड़ीके पश्चिम किनारेपर श्रीरामचंद्रजीका मन्दिर सबसे बढ़कर है।

इस क्षेत्रके संबंधमें एक दंतकथा है:—दोसो वर्षके पूर्वमें नागपुरका राजा आप्पा साहेब भोसला जो प्रजाहिततत्पर और धर्मशील थे। वे एक समय अपने मंत्री वर्धमान

वजी सहित रामटेकको रामचंद्रजीके दर्शनके लिये आये थे। राजाने रामचंद्रजीका दर्शन करनेके बाद भोजन किया और अपने मंत्री वर्धमान सावजीको भोजनके बाबतमें प्रश्न किया तब उन्होंने जबाब दिया कि महाराज में दिगम्बर जैन हूं और जिनेंद्रका दर्शन करनेके बाद भोजन करता हूं। तब राजाने अपना हाथी देकर उसको कामटीको जाई दर्शन करनेको हुकम दिया परन्तु सावजीने कहा कि जो यहांपर रामचंद्रजीका मन्दिर है तौभी जिनेंद्रका मन्दिर भी यहांपर होना संभवनीय है कारण रामचन्द्रजी परम जैनी थे ऐसा हमारे शास्त्रमें लिखा है। तुरन्तही महाराज आप्पासाहबने रानटी लोगोंको बुलाकर नग्नदेवके बाबदमें पूंछा तब मालूम हुआ कि जंगलमें एक नग्न देवका मन्दिर बहुत घना झाडीमें मौजूद है। यह सुनकर सावजीने उस झाड़ीको काटनेको हुकम दिया और दूसरे दिन जिननाथका दर्शन लिया।

कुछ दिन पीछे यह जंगल सावजीने बक्षिसमें मिलवाया और पूजन प्रक्षालका इन्तजाम अच्छी तरहसे कर दिया जो आजतक चला आया है।

यहांपर प्रतिवर्षमें कार्तिक शुद्ध १२ से १५ तक बड़ा भारी मेला लगता है। जिसमें आमदनी करीब ५००—६०० रुपय्याकी होती है हालमें इसका प्रबन्ध नागपुरके लार्ड पंचोंके हाथमें है और उनके तरफसे पंडित बिहारीलालजी देख भाल करते हैं।

रामटेक पानोंके लिये बहुत मशहूर है।

रेहली—पटनागंज।

जिला सागरमें रेहली तहसीलका सदर मुकाम है। और दिहार और सोनार नदीका यहांपर संगम हुआ है इसकी आबादी अनुमान ३७००है जिसमें जैन दिगम्बर अम्नायकी मनुष्यसंख्या १३४ है। एक पुराना किला जो अहिर राजाने बनवाया था हालमें गिरा हुआ है। कसबा रेहलीमें हिंदुओंके तथा जैनियोंके बहुत सुंदर मन्दिरजी हैं जिसमें पंढलपुर पंढरीनाथका मन्दिरजी और जैन दिगम्बर आम्नायके दो शिखरबन्द मन्दिरजी देखने योग्य हैं। दिगम्बर जैनियोंके यहांपर ४० गृह हैं तथा १०३ धर्मशाला हैं। थोडी दूरपर पटनागंजमें १८ शिखरबन्द मन्दिरजी हैं जिनमें मूलनायक श्री वीरनाथजीका मन्दिर १९ वीं सदीका बनाहुआ है और प्रतिमा ९ फूट ऊंची विराजमान है। एक सहस्रकूट चैत्यालय और नन्दीश्वर द्वीपका मन्दिरभी है। ये सब मन्दिर परको-

टाके अन्दर बने हुए हैं। रेहलीमें कुछ देशी कपड़ा अच्छा बनता है। और यहांसे गेहूं और गुड़ अन्य देशोंको जाता है।

लखनादोन।

यह ग्राम तहसीलका सदर मुकाम और सिवनी-जबलपूर रोडमें सिवनीसे करीब ३८ मीलकी दूरीपर है। अगले जमानेमें यह बडा नगर था। और प्राचीन समयकी खण्डित प्रतिमाएँ भी पाई जाती हैं जो खेतरमाताजीके मन्दिरमें रक्खी हैं। यहांपर हिंदुओंके और जैनियोंके कई मन्दिरजी टूटे फुटे दृष्टिगोचर होते हैं। एक शिलालेख भी मिला है उससे मालूम होता है कि यहांपर विक्रमसेन नामका एक जैनी राजा था और उसके समयका यह मन्दिरजी है। यहांपर जितने पत्थर वगैरह खोदपर निकाले जाते हैं उनमें बहुत पत्थरोंमें जैन और हिंदुओंकी मूर्तियां खण्डित निकलती हैं। १ प्रतिमा श्रीशान्तिनाथ स्वामीकी खड्गासन अनुमान ७ फुटकी यहांपर निकली थी अरसा करीब १० वर्षका हुआ नागपुर चीफ कमिश्नरीके अजायब घरको चली गई वा १ दरख्त इमलीका है वह शान्तिनाथ स्वामीकी इमली करके प्रसिद्ध है। एक प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी खड्गासन अनुमान ४ फूट ऊंची आम रस्तामें पडी हुई है देखनेसे जाहिर होता है कि चौथे कालकी है क्योंकि बीजक वगैरह कुछ नहीं है। यहांपर एक शिलालेख भी मिला है उससे मालूम होता है कि यह विक्रमसेन राजाका है और यह राजा जैनी था। यहांपर हालमें दिगम्बर जैनेयोंके ३४ गृह हैं जिसमें मनुष्यसंख्या २०९ है और एक शिखरबन्द मन्दिरजी तथा २ चैत्यालय भी हैं। सब मिलकर यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान २१५० ह।

यहां शुक्रवारको बड़ा बाजार होता है जिसमें व्यापार हरतरहका होता है।

वर्धा।

यह शहर जिले वर्धाका सदरमुकाम है। १८६६ ईस्वीमें यह शहर वर्धा नदीके किनारेपर वसा है। इसका पहिला नाम पालकवाड़ी था जो कि अभीतक

मौजूद है। स्टेशन (G. I. P.) वर्धासे इस लैनका एक फाटा जिला चांदामें वरोरातक गया है। १९०१ ई० में इस नगरमें ९८७२ आदमी मनुष्य गणनाके अनुसार बसते थे। अब अनुमान १०००० बसते हैं जिसमें २४३ दिगम्बर जैनी हैं। और ३ शिखरबन्द मन्दिरजी हैं जिसमें ६६ धर्मशास्त्र हैं। यहांके मन्दिरमें भौंहरा अभी अच्छा बना हुआ है।

इस नगरमें हरतरहका व्यापार होता है विशेष करके कपाशीका बहुत क्रय विक्रय होता है।

वाशीम।

प्रान्त बरार जिला अकोलामें यह कसवा तहसीलका सदरमुकाम है। यहांपर वैष्णवांका बालाजीका मन्दिर अति मनोग्य देखने योग्य है वा दो तालाब १ पद्मतीर्थ नामका और एक बालाजीका मन्दिरके पास चंद्रतीर्थ नामका अच्छा बना है।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह ५७ हैं तथा आबादी २४० हैं। दो शिखरबन्द मन्दिरजी हैं और दोनोंमें २ भोंहरे हैं और उनमें धर्मशास्त्र ४० हैं। मन्दिरके पास एक धर्मशाला भी है।

यहांपर कपड़ा अच्छा बनता है। यह ग्राम पहिले निजाम सरकारके आधीनमें थ पर ५०-६०वर्षसे अंग्रेजोंके आधीनमें आया है।

शहडोल।

राज्य रींवा, परगना सोहागपुरमें यह ग्राम बंगाल-नागपुर रेलवेका बड़ा स्टेशन है और बहुतसे बंगले अंग्रेजोंके बने हैं।

यहांपर जैन दिगम्बर आम्नायके गृह २१ हैं मनुष्यसंख्या ९३ है, एक मन्दिर है जिसमें अनुमान १० दश धर्मशास्त्र हैं। यहांपर कई प्राचीन मन्दिर और छोटे २ तालाब हैं और खण्डित प्रतिमां भी पाई जाती हैं। यहां घी और अनाजकी बड़ी मण्डी है। जङ्गलकी इन्स्पेक्टरीका दफ्तर और गोदाम और परमिटकी इन्स्पेक्टर, मदरसा, डाकघर और पुलीसकी चौकी भी है।

श्रीसिद्धक्षेत्र श्रमणाचल (सोनागिर)।



नङ्गा नङ्ग कुमार सुजान। पंच कोडि मुनि अर्द्ध प्रमाण ॥
मुक्ति गये सोनागिर शीस। ते वन्दू त्रिभुवन पति ईश ॥

यह परम पूज्य निर्वाणक्षेत्र वर्तमान ग्रेट इन्डियन पेनिन्शुला रेलवे (G. I. P. Ry.) के आगरासे झांसीलैनमें गवालियर और झांसीके बीचमें सोनागिरका स्टेशन है। स्टेशनके बाहरही दिगम्बर जैन धर्मशाला है जिसे १० वर्ष पहले स्वर्गीय रायबहादुर सेठ हरसुखराय अमोलकचन्द्रजी रानीवालोंनें बनवाया था। अनुमान १२५ आदमी आरामसे ठहर सकते हैं। हाथेके भीतर एक कुआ है। और १३ कोठरी हैं एक चौकीदार नौकर है। सोनागिरको जाते हुए धर्मशालासे थोड़ी दूर एक नाला वहता है जिसका पुल झालरापाटनके सेठ विनोदीरामजी वालचन्द्रजीने एक वर्ष पहले बनवाकर पशुओंका दुःख दूर किया है। स्टेशनसे सोनागिरका पहाड़ दृष्टिगोचर होता है तथा सर्व मन्दिर बखूबी दिखाई देते हैं। स्टेशनसे पश्चिमकी तरफ सोनागिर २ मील है। यह क्षेत्र रियासत दतियामें है। दतियाका पूर्वनाम दिलीपनगर भी था ऐसा शिलालेखोंसे विदित होता है। सोनागिर गांवमें ब्राम्हण पंडे लोगोंकी वस्ती विशेष है। दिगम्बर जैन गृहस्थीका गृह नहीं है। प्रत्येक धर्मशालामें पुजारी ही रहते हैं। स्थानीयसिर्फ भट्टारक हरेन्द्रभूषणजी रहते हैं। पर्वतके नीचे गांवमें १६ मन्दिरजी इस भाँति हैं:—

१ मन्दिरजी फतेचंदजीलश्करवालोंका-प्रवंधकर्ता राजा फूलचंदजी ठि० हीरालाल चुन्नीलाल सराफावजार लश्कर, आम्नाय १३ पंथी। पूजारी पन्नालाल खंडेलवाल है। यहां धर्मशाला भी है। प्रायः कुल भण्डार इसी मन्दिरमें आता है।

(२) शेठ किसनलालका मन्दिर-प्रवन्धकर्ता उदयलाल रतनलाल ठि०सराफा ग्वालियर। पुजारी वकसी गोलालारे। जो इस धर्मशालामें उतरते हैं तथा कहींसे इकट्ठा भण्डार आता है उसका बराबर हिस्सा मिलता है।

(३) प्यारेलालका मन्दिर—प्रवन्धकर्ता प्यारेलाल व्रजलाल सराफ ठि० तहसील मेहगुआं जिला ग्वालियर आम्नाय १३ पंथी। पूजारी भुजवल गोलालारे। धर्मशाला है। आमदनीमें बराबर हिस्सा है।

(४) खैरोलीवालोंका मन्दिर-खेमचन्द श्यामलाल प्रबंध कर्ता, आम्नाय तेरह पंथी इस मन्दिरमें धर्मशाला नहीं है।

(५) एटावालोंका मन्दिर—प्रबन्धकर्ता—हीरालाल सराफ, एटा। आम्नाय १३ पंथी। पुजारी कन्नहिलाल गोलालारे। धर्मशाला नहीं है। आमदनीमें हिस्सा बराबर है।

(६) पोपलबारीका मन्दिर प्रबंधकर्ता मोतीलाल कजोडीमल दाना होलीबजार लश्कर। आम्नाय १३ पंथी। धर्मशाला नहीं है। आमदनीमें हिस्सा बराबर है।

(७) गोकलचन्दका मन्दिर—प्रबन्धकर्ता—रामलाल लोकमन मुरार (ग्वालियर) आम्नाय तेरह पंथी। पुजारी मूलचन्द खन्डेलवाल। धर्मशाला नहीं है।

(८) उमराव किशोरी सिंघईका मन्दिर-प्रबंधकर्ता खुद ठि० हांडीगंज, पुजारी—प्यारेलाल गोलालारे। इस मन्दिरमें पूजा धणीके निज खर्चसे होती है।

(९) भट्टारक सतेन्द्र भूषणजीका मन्दिर। प्रवन्धकर्ता—कुंजीलाल चौधरी। आम्नाय वीस पंथी। सोनागिर। पुजारी हरलाल जैसवाल। यहां भण्डार वही है। धर्मशाला है। इसके भण्डारसे पर्वतके १३ मन्दिरोंका भी पूजन होता है।

(१०) भट्टारक मुनीन्द्र कीर्तिजीका मन्दिर-इसका प्रवन्ध खुद करते हैं। ठि० दिल्ली, सवजी मंडी। पुजारी—चोखेलाल जैसवाल। यहां भी भण्डार वही है। धर्मशाला भी है।

(११) भट्टारक हरेन्द्रभूषणजीका मन्दिर—प्रवन्धकर्ता खुद मु० सोनागिर। २ पुजारी छोटेलाल भोगीराम। आम्नाय वीस पंथी। धर्मशाला और कुंआ है। यहां भण्डार दिया जाता है। पर्वतके ६७ मन्दिरजी तथा नीचेके छह मन्दिरोंका पूजन प्रक्षाल होता है। श्रीचन्द्रप्रभूजीके बड़े मन्दिरका पूजन नित्य होता है।

(१२) उक्त भट्टारकजीका।

(१३) खेरावालोंका। प्रबंधकर्ता भट्टारक हरेन्द्रभूषणजी।

(१४) आचार्यवालोंका ,, ,, ,,

(१५) भगवानदासका ,, ,, ,,

(१६) करय्यावालोंका ,, ,, ,,

सोनागिर पर्वतसे नङ्गानंग कुमार आदि साढे पांच क्रोढ मुनि मुक्ति गये हैं। पर्वतपर सवसे वड़ा प्राचीन और विशाल मन्दिर मूलनायक श्रीचंद्रप्रभु स्वामीका है।

नोट—पूजन तेरह तथा वीसपथ दोनों पक्षके मन्दिरोंमें नित्य होती है जो भण्डारके द्रव्यसे किया जाता है। फफ झासीवाले अपने घरमे १०) माहवार पुजारीको ६) और सामग्री ४) की देते हैं।

यह ३३५ की सालमें पौष शुक्ल १५ को श्रवणसेन कनकसेनका बनाया हुआ है जिसका जीर्णोद्धार सं० १८८३ विक्रममें सेठ लखमीचंद मथुरावालोंने कराया था। भीतर श्रीचंद्रप्रभू स्वामीकी प्रतिमा लगभग ७॥ फुट ऊंची अत्यंत मनोज्ञ खड्गासन विराजमान है। इसमें एक शिलालेख है जिसकी नकल इस भाँति है।

दोहरा—मन्दिरसह राजतभये चंद्रनाथ जिन ईस। पोश सुदी पूनम दिना तीन सतक पैंतीस। मूलसंघ अरगण करो बलात्कार समुझाय। श्रवणसेन अरु दूसरे कनकसेन दुइभाय। बीजक अक्षर वांचके कियोसु निश्चय राय। और लिख्यो तो बहुत सो नहि परयो लखाय। द्वादश सतक वरूतरा पुन्यीजीवनसार। पार्श्वनाथ चरणतैं तासों विदी विचार ॥

श्री।

श्रीश्रमणचला चंद्रनाथ प्रत सर्व सवदेल प्रसिद्ध पारीछित महाराजा दतियापति वाढै सदा फल फलै मनको मनीरामजी सोबिहुं पितुकी आज्ञा पाय चपाराम सहकर यात्रा सुख पाय संवत अष्टादश कहे तेरासीकी साल लाला लक्ष्मीचंदने पहिरी श्री जिन-माल प्रथम कियो आरंभ उन मन्दिर जीर्णोद्धार श्रावक हिय हर्षित भये सब मिलकरी संभाल विजय कीर्ती जितसरके शिष्य कहे प्रभुसेव पुरन सुख्य भागिरथ जुगदेस परमेव।

एक पत्थरपरभी कुछ अक्षर खुदे हुए हैं परन्तु पढनेमें नहीं आते। पहाड़की प्रदक्षिणाका भी मार्ग है जो करीब तीन ३ मील है। जिसकी यात्रीलोग हमेशा परिक्रमा किया करते हैं।

सहजपुर।

सहजपुर एक बड़ा ग्राम सॉगर जिलामें मीरगंज (G. I. P Ry.) स्टेशनसे करीब ३ तीन मील दूरीपर है। यहांकी जनसंख्या अनुमान १८०० की है जिसमें दिगम्बर जैनियोंकी संख्या १५० है। दिगम्बर आम्नायके २ शिखरबन्द मन्दिरजी तथा २ चैत्यालय हैं जिसमें करीब ३९ धर्मग्रंथ हैं। उक्त मंन्दिरमेंसे १ मन्दिरजी प्राचीन १६ वीं शताब्दीका अधबना हुआ पड़ा है। और वहांके जैनी भाई बहुधा और

जगहसे उन्नति दशामें हैं। पर इस मन्दिरके पास बहुत अत्याचार करते हैं और लोगोंमें धर्मभीरुची बहुत कम है। पहिले यह ग्राम बलभद्रसिंघके हाथमें था पर सन १८५७ सालकी गदरमें सरकारने उससे छीन लिया और कन्हय्यालाल तिवारीको ३२ ग्रामोंके साथ बक्षिसमें दिया है।

सागर।

यह शहर जिला सागरका सदर मुकाम बिना-कटनी रेलवे लाईनपर स्टेशन है। यहांकी आबादी अनुमान ४५००० है जिसमें दिगम्बर जैन १०२७ हैं। यहांपर एक बड़ा तालाब है जिसके कारण इस शहरका नाम सॉगर पडा। यहांपर एक किवदन्ती सुननेमें आता है कि, एक बंजारीको स्वप्न हुवा और उन्होंने अपना लड़का और लडकी उस सागरपर भीतीमें चिन दिया उस दिनसे उक्त तालाब जलसे बहने लगा। यह तालाब अनुमान ५ मीलके घेरेमें है। इसके किनारे सुंदर घाट तथा मन्दिरजी बने हुए हैं। इसके पासही एक किला मराठोंका बनवाया हुआ है। यहांपर सब प्रकारका व्यापार अच्छा होता है। इस शहरके चारों ओर पहाड़ है और बहुत ऊंचा नीची जगहमें बसता है। यह शहर मध्यप्रदेशके बड़े शहरोंमेंसे है।

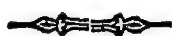
यहांपर दिगम्बर जैन मन्दिर कुल ३७ हैं जिसमें १ चैत्यालय है। और गृह २२७ दो दि० जैन पाठशाला तथा पांच धर्मशाला हैं मान्दिरोंमें ७५० धर्मशास्त्र हैं। यहांपर एक सरस्वती वाचनालय खुल गया है इसमें हर प्रकारके समाचार पत्रोंका तथा पुस्तकोंका संग्रह हुआ है। और लाला चुन्नीलाल रज्जूलालजी तथा कारेलाल कुंदनलाल बड़े सुज्ञ और धनवान पुरुष यहां हैं।

सिवनी (छपारा)

यह नगर जिला और तहसीलका सदर मुकाम है और उस पुरानी सड़कपर बसा हुआ है जो कि नागपुरसे जबलपुरको उत्तरकी दिशाको जाती है और नैनपुर जंक्शनसे जो रेलवे (B.N.Ry.) लैन जिला छिंदवाडाको गई है खास उसी लैन में स्टेशन है। यहांकी मनुष्यसंख्या १२००० है जिसमें दिगम्बर जैनियोंकी ३५७ है। ऊपर लिखे आम्नायके यहांपर गृह ५४ हैं और २१ शिखरबन्द मन्दिरजी हैं जो

मुकडवाडी नामसे प्रसिद्ध हैं। जिसमें ४० के अनुमान धर्मशास्त्र हैं उनमेंसे एक मन्दिरजीमें एक पुरानी प्रतिमा विराजमानहै जिसके नीचे इ. स. १४९१ खुदाहै। कहते हैं कि यह प्रतिमाजी चवन्रीसे लाई गई है यहांपर १ पाठशाला है। और यात्रिओंके लिये एक धर्मशाला बनी है। और एक तालाब है, जो सिवनीबन्ध नामसे प्रसिद्ध है उसके किनारे कई अच्छे २ मन्दिर बने हुए हैं। व्यापार हरप्रकारका होता है।

हटा।



हटा तहसीलका सदर मुकाम है। यह कसबा दमोहके २४ मील उत्तरकी सोनार नदीके दाहिने किनारे पर पुराना और धनवान नगर है। १७०० सदीका बनाया हुआ बुन्देलोंका एक किला उजाड़ पड़ा है जिसमें रंगमहलकी इमारत अच्छी है। नदीमें घाट उत्तम और पक्के हैं जिनपर कई मन्दिर व देवस्थान बने हैं।

इस ग्रामका हटा नाम पडनेका कारण इसको गोंड राजा हट्टेने इ० स० ११७७ वीं सदीमें बसायाथा। यहांकी लोकसंख्या करीब ५८०० है जिसमें जैन दिगम्बर आम्नायकी १७८ है, गृह ३२ और तीन शिखरबन्द मन्दिरजी हैं जिनमें करीब ८७ धर्मशास्त्र है और भी दो चैत्यालय और दो धर्मशाला हैं।

यहांपर सरकारी मकान, तहसीलकी कचहरी, पोलिस स्टेशन, अस्पताल, डाकघर सराय और एक अच्छा सरकारी स्कूल है। सप्ताहमें दोबार बाजार लगता है। फूलके कटोरे और कांसे पीतलके बर्तनकी उत्तमताके लिये यह कसबा प्रसिद्ध है। देशी सूती साडियां यहांपर बनवाकर व्यापारी और २ जगहको ले जाते हैं। और यहां घीकी बडी मण्डी है, जिसे दुकानदार लोग खरीद २ कर कलकत्ता भेजते हैं।

हरदा।



यह नगर ज़िला हुशंगाबादमें अजनार नदीके किनारे रेलवे (G. I. P.) का खास स्टेशन है। और गेहूंके व्यापारकी बड़ी मण्डी है।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह ५९ हैं जिनमें खंडेलवाल, समैया, लमेचूआदिकी लोकसंख्या २५१ है। यहांपर दिगम्बर आम्नायके ३ मन्दिरजी हैं जिनमें १०० के करीब धर्मशास्त्र हैं और मन्दिरजीके पास १ धर्मशाला भी बनी है।

यहांके मन्दिरमें १ प्रतिमा "चिह्न और संवत् आदि कुछ नहीं है" बहुतही मनोज्ञ अतिशयधारी है और अब भी कभी २ कई अतिशय दिखलाई देते हैं। यह प्रतिमा नर्मदा नदीमेंसे जो कि रियासत इन्दौर निमावर ग्रामके नीचे बहती है यहांके रहनेवाले किसी एक भाईको स्वप्नके द्वारा समाचार ज्ञात होनेसे निकाली गई थी। हरदाके समीप ग्रामोंमें इसकी महिमा प्रसिद्ध है। एक समयपर हरदेमें विशूचिका रोग हो गयाथा उस समय इस प्रतिविम्बसे पसेवके समान जल निकलताथा उसकी १ बिंदु देनेसे बीमारी नाशको प्राप्त होती थी, इसके सिवाय और भी कई अतिशय हैं। यहांपर एक प्रतिबिम्ब पार्श्वनाथ स्वामीकी धातुकी है, संवत अस्पष्ट होनेसे मालूम नहीं होता है।

हिंगणघाट।



इस जिलेमें सबसे बडा नगर वूना नदीके किनारे (ग्रेट इंडियन पेनिन्शुला) की जो लाईन वर्धा—वरोरा नामकी है उसमें एक स्टेशन है। जूना हिंगणघाट और नया हिंगणघाट ऐसे इस शहरके दो भाग हैं। यहांकी मनुष्यसंख्या १२९०० है जिनमें ११३ दिगम्बर जैनी हैं जिनके कुल गृह २८ हैं। यहांपर दिगम्बर आम्नायके मन्दिरजी एक तथा एक चैत्यालय है और इन्हींकी एक धर्मशाला नयी वस्तीमें है। रुईकी यहांपर वडीभारी मण्डी है और दो रुईकी कलें भी हैं जिनमें एक रा० ब० बन्सीलाल अबीरदासकी करीव ४ लाख लागतकी बनी हुई मौजूद है। यहां सोमवारके दिन साप्ताहिक बाजार होता है जिसमें विशेषकर पीतलके बर्तन, खेतीके हल वगैरःका क्रयविक्रय होता है।

हीरापुर।



यह ग्राम जिला सागरमें है। वस्तीके वाहर एक सुंदर किला है जहां थोडे दिन हुए एक सुंदर सफेद धातुकी खदान निकली है। यह ग्राम सागरसे कानपुर जानेवाली सडकके किनारे है। सागर रेलवे स्टेशनसे श्रीसिद्धक्षेत्र द्रोणागिरजी को जानेका मार्ग इसी ग्रामसे होकर है।

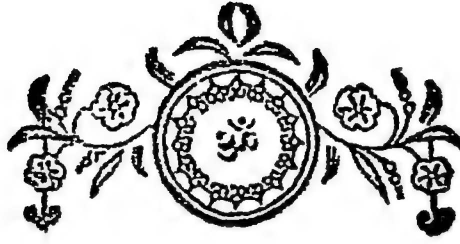
यहांपर दिगम्बर जैनियोंके १८ गृह, ८४ मनुष्य संख्या तथा एक शिखरबन्द मन्दिर हैं।

हुसंगाबाद ।



यह शहर जी. आई. पी. रेलवेपर है। स्टेशनपर वेटिंग रूम (Waiting Room) बना हुआ है, नर्मदा नदीके बायें तटपर बसा हुआ है, और जिलेका सदर मुकाम है। यहांकी मरदुम शुमारी करीब ५००० है, और मध्यप्रदेशमें तीसरे दर्जेका शहर ठहराया गया है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके गृह ६७ हैं जिनमें ८ परवारके, ९ पद्मावती पोरवाड, ४७ समैया और २ विनैक्याके हैं। मनुष्यसंख्या २९६ है। दिगम्बर आम्नायके शिखरबन्द मन्दिरजी दो और दो चैत्यालय हैं जिनमें धर्मशास्त्र पचास हैं। उक्त आम्नायकी एक धर्मशाला मंदिरके पास हैं तथा ऊपर लिखे सिवाय दूसरे धर्मादा खाते भी हैं। गिर्जेके सामनें स्टेशनसे करीब एक मील एक बंगला है और कई धर्मशालायें हैं जिनमेंसे ६ के करीब मन्दिरोंके साथ हैं एक धर्मशाला नर्मदा किनारे पर है। और एक जो रामजी बाबाकी धर्म्मशाला कहलाती है स्टेशनके सामनेही है लोग कहते हैं कि इस नगरको १५ वीं सदीमें मालवेके राजा सुलतान हुशंगशाह घोरीने बसाया था पश्चात् यह भोपाल और नागपुरके राजाओंके अधिकारमें चला गया। यहांपर गल्ले और रुईका व्यापार अच्छा होता है और पत्थरकी सिलें यहांसे बाहर जाती हैं।





नमः श्रीवर्द्धमानाय ।

राजपूताना-मालवाप्रान्तके



तीर्थक्षेत्र और प्रसिद्ध प्रसिद्ध शहरोंका वर्णन ।

अजमेर ।



म्बई बड़ोदा और सेन्ट्रल इंडिया रेल्वे और मालवा शाखाका "अजमेर" जंकशन-स्टेशन है । स्टेशनपर सवारी हरवक्त किरायेपर मिलती है । राजपूतानाके मध्य भागमें प्रायः चारों तरफ पहाड़ियोंसे घिरा हुआ अजमेर एक प्रसिद्ध शहर अंग्रेजी राज्यमें है ।

प्राचीन कालमें याने मुसलमानोंके पहिले यहांपर प्रसिद्ध दिल्लीपति "पृथ्वीराज चौहान" के खानदानके राजा राज्य करते थे । कहते है कि इसको चौहान राजपूत राजा "अजपालने" संवत् २०२ (सन् १४५ ई०) में बसाया था ।

यह शहर एक पहाड़ीके नीचे ढालू जमीनपर आबाद है—उत्तर और पश्चिमकी तरफ पत्थरकी दीवारोंसे घिरा हुआ है । इस समय शहरमें हिन्दू, मुसलमान, जैन, कृस्तान, सिक्ख, पारसी आदिकी करीब ७०००० हजार मनुष्यसंख्या है । शहरमें जैन, हिन्दू आदिके कई मन्दिर व मुसलमानोंकी मस्जिदें अति सुन्दर बनी हुई है । मन्दिरोंमें विशेषकर रायबहादुर श्रीमान् शेठ "नेमीचंदजी टीकमचंदजी" की नशियां (बाहिरी मन्दिर) बहुतही मनोहर देखने योग्य है ।

कहते हैं कि प्राचीन कालमें दिगम्बर जैनियोंकी बस्ती यहांपर बड़ी भारी थी, परन्तु इस समय ४८६ घरोंकी मनुष्यसंख्या १६०४ है । बस्ती (आबादी) हरएक मुहल्लों

में अच्छी फैली हुई है। दि० जैनियोंके शिखरवन्द मन्दिर १३ और २ चैत्यालय हैं मन्दिरोंमें शास्त्रसभा पूजन-प्रक्षाल इत्यादि प्रतिदिन होता है। 'धर्मशास्त्र' ७००० के लगभग हैं। एक 'जैनपाठशाला' भी है। यात्री तथा दि० जैन मुसाफिरोंके लिये दि० जैनियोंकी कोई खास धर्मशाला नहीं है। परन्तु विदेशी दिगम्बर जैन मुसाफिर तथा यात्रियोंको रायबहादुर श्रीमान् शेठ नेमीचंदजी टीकमचंदजीकी बनवाई हुई 'भोजन-शालामें' विशेषकर सुभीतासे आराम मिलता है। शेठसाहब धर्मप्रेमी व सज्जन पुरुष हैं। आपने कई बड़े बड़े धर्मकार्य अपने हाथसे करके जन्म सफल किया है।

शहरके उत्तरकी तरफ एक बड़ी सुन्दर "आनासागर" नामक झीलहै, जिसको "विशालदेवके" पोते राजा "आनाने" बनवाई थी, यह झील ६०० गज लंबी और १०० गज चौड़ी है, कई नालोंका पानी रोक कर बनाई गई है। वर्षाऋतुमें इस झीलका घेरा करीब ६ मीलके हो जाता है। झीलके निकट "जहांगीरबादशाह" का बनवाया हुआ "दौलतबाग" है, और किनारेपर मार्बलके मकानोंका सिलासिला है।

अजमेरसे करीब ७ मीलकी दूरीपर एक "पुष्कर" नामका कस्बा है, जोकि हिन्दुओंका तीर्थस्थान है। इसकी सीमाके भीतर कोई मनुष्य जीवहिंसा नहीं कर सकता। कार्तिकके अन्तमें बड़ा भारी मेला हरसाल धूमधामसे भरता है। इस मेलेमें बहुधा घोड़े, ऊंट, और बैलोंकी बिक्री अधिक होती है।

अजमेरमें रेलवे आफिस, मेयोकॉलिज, ढाईदिनका झोंपडा, जो मुसलमानोंने जैन मन्दिरोंको तुड़वाकर बनवाया था, एजेन्टसाहेबका बंगला, रेलवे ढलनेका कारखाना, ख्वाजासाहब की दरगाह, और शेठ साहुकारोंकी बहुतसी कोठियां वगैरः देखनेके लायक हैं।

यहां चीनी कपड़ा दूसरे देशोंसे आता है, रुई और गल्ला, दाना (अनाज) दूसरे देशोंमें जाते है। रेल बनने के पहिले ऊंट और बैलोंसे व्यापार होता था।

अलवर।

राजपूतानेमें, राजपूताना-मालवा रेल्वेलेन जो बांदीकुई से देहली की तरफ जाती है, उसके बीचमें खास रियासत अलवरका बड़ा स्टेशन है। यहांपर सूर्यवंशी श्रीमान् महाराजाधिराज श्री "जैसिंह" के. सी. एस. आई. इस समय गद्दीपर सुशोभित हैं, आपने राज्य भरमें अपनी मातृभाषा हिन्दीका प्रचार सब कचहरी आदि दफ्तरोंमें करा दिया है। आप बड़े दयालु प्रजापालक हैं।

यह शहर बड़ा रमणीय देखने योग्य सृष्टिसौंदर्ययुक्त है। दि० जैनियोंके खंडेलवाल और अग्रवाल आदिके सब करीब २९१ घरोंकी मनुष्यसंख्या ८१९ है। दि० जैन-मंदिर शिखरबंद ९, चैत्यालय २, और नशियां (बाहिरी मंदिर) एक है। मंदिरोंमें धर्मशास्त्र करीब १५०० हैं। पंचायती बड़े मंदिरके पास एक "धर्मशाला" भी बनी हुई है। सब मंदिरोंमें पूजनादि का प्रबंध अच्छा है। परन्तु शास्त्र-सभा वगैरः नहीं होती है।

व्यापार सब तरह का होता है, विशेषकर कपड़ेकी रंगाईका काम बहुत अच्छा होता है। "राजभवन" इत्यादि देखने के योग्य स्थान हैं।

आबूपहाड़ (दिलवाड़ा)।

(अतिशयक्षेत्र)

यह अतिशयक्षेत्र राजपूताना-मालवा रेलवेके स्टेशन आबूरोड (खराडी) से १८ मील है। स्टेशनसे आबू जानेके लिये सवारी हरसमय हर किस्मकी किरायेपर मिलती है। दिलवाड़ा आबूसे डेढ़ मीलपर है। इस गांवमें श्वेताम्बरियों के मन्दिर लगभग ९०० वर्षके पुराने सफेद संगमरमरके हैं, जिनमें बारीक नक्काशीका काम अत्यंत मनोहर और चित्ताकर्षक है। करोड़ों रुपयोंकी लागतसे बने हुए हैं, पत्थर काटकर विचित्र फूल पत्ते निकाले गये हैं। इनको विमलशाह वस्तुपाल और तेजपालने बनवाये थे, इनके समान और कोई दूसरी इमारत ताजमहलको छोड़के हिन्दुस्थानमें नहीं है। कदापि यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि यह भूगोलकी आठवीं अनोखी वस्तु है (Eight Wonders of the World)

इन पांचों मन्दिरोंके मध्यमें एक दि० जैनियोंका भी बड़ा, प्राचीन मन्दिर है, जिसमें २३ प्रतिमाएँ अनेक तीर्थंकरोंकी हैं, मूलनायक "श्रीकुंथनाथ स्वामीकी" प्रतिमा विराजमान है, इनके सिवाय उपर्युक्त मन्दिर समूहके बाहर सरकारी सड़कपर दाहिनी ओर दिगम्बरियों का एक और बड़ा भारी प्राचीन और पक्का मूलनायक भगवान् "आदिनाथस्वामीका" सहस्रों रुपयोंकी लागतका बना हुआ मन्दिर है, जिसमें १६ प्रतिमाएँ अनेक तीर्थंकरोंकी विराजमान है, शिलालेखसे प्रतीत होता है कि इस जिनालयकी प्रतिष्ठा "ईडरके" भट्टारकमहाराजने वि० सं० १४९४ मिती वैशाख शुक्ला १२ को कराई थी।

वर्त्तमानमें यहां पर कई अतिशय देखनेमें आते हैं, प्रातःकाल पूजन-प्रक्षालके समय तथा रात्रिमें यात्रियोंको तथा मन्दिरके सेवकोंको कई अतिशय देखनेमें आये

हैं। कई प्रकारकी सुगन्धि आने लगती है, अर्धरात्रिमें दीपकोंका उजियाला वादित्रादिकी ध्वनि, दिनमें साधुओंके भेषमें देवोंका आवागमन जो मन्दिरमें जाते हुये मालूम पड़ते हैं। यात्रियोंने भलेप्रकार विचारके मूलनायककी प्रतिमाके दर्शन किये, तो जुदी जुदी अवस्थामें दर्शन हुये। अर्थात् प्रातःकाल बाल्यावस्थामें मध्यान्हकालमें तरुणावस्थामें और सायंकाल वृद्धावस्थामें!

ये दोनों मन्दिर बहुत वर्षोंसे श्वेताम्बरियोंके अधिकार में थे, परन्तु सन् १९०७ ई० से दानवीर जैनकुलभूषण श्रीमान् शेठ माणिकचंद हीराचन्द जे. पी. के प्रयत्नसे जुदे कर दिये गये, और यहाँ पर धर्मशालादि बनवाकर यात्रियोंको बर्तन बिछौना आदिका भी सुभीता हो गया है।

इस अतिशयक्षेत्रका प्रबंध "श्रीमती भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्रकमेटी" की तरफसे मुनीम पुजारी माली आदि नौकरों द्वारा अच्छा होता है।

मन्दिरके अहातेके अन्दर ही चारों ओर धर्मशाला बनवाई है, जिसमें श्रीमान् शेठ माणिकचंदजी हीराचंदजी जौहरी जे. पी. बंबई, रायबहादुर शेठ नेमीचंद टीकमचंदजी सोनी अजमेर, शेठ विनोदीरामजी बालचंदजी झालरापाटन, रायबहादुर शेठ हरसुखराय अमोलकचंदजी व्यावर, तथा पादरा (गुजरात) निवासी शाह मोतीलालजी रामदासजीकी पुत्री श्रीमती फूलकुँवरबाई तथा बम्बई निवासी चौकसी माणिकचंद लाभचंदजीकी विधवा श्रीमती माणिकबाई आदि स्त्री-पुरुषोंने अपना धर्मोदार्य प्रगटकर यशके भागी हुये हैं।

यहांसे करीब ४ मीलकी दूरीपर "अचलगढ़" स्थान है, यहां श्वेताम्बरियोंके प्राचीन मन्दिर और धर्मशालाएँ हैं। ये मन्दिर बहुतही रमणीय हैं, यहांके मन्दिरमें बहुत बड़ी २ प्रतिमाजी १४४४ मन सुवर्णकी निर्माणकी हुई हैं। स्थान अत्यन्त ही सुंदर और चित्तको लुभायमान करने वाला पर्वतकी अत्यन्त ऊंची चोटीपर है। दिगम्बरी प्रतिमा भी इन ही मन्दिरोंमें विराजमान है।

जो दिगम्बरी धर्मात्मा भाई गिरनारजीकी यात्राको अपने कल्याणके लिये जावें वे इस अतिशय क्षेत्रपर भी दर्शनार्थ आकर जन्मको सार्थक करें।

आम्बेर।

जयपुरसे लगभग ५ मील पूर्वोत्तर पहाड़ी-झीलके किनारे आम्बेर कस्बा है, जो सन् १७२८ ई० तक जयपुर राज्यकी राजधानी था, परन्तु जब "सवाई जयसिंहने" जयपुर वसाकर राजधानी बनाई तभीसे इसकी अवनति होना शुरू हुई, आम्बेरकी

मनुष्यसंख्या अनुमान पांच हजार है। राजधानीके समयमें जैनियोंकी बस्ती भी अधिक थी, वर्त्तमानमें एकभी घर नहीं है । नशियां सहित ८ बडेभारी "जैनमन्दिर" है, मन्दिरों का प्रबन्ध जयपुरवालोंके आधीन है ।

आम्बेर उत्तम इमारतोंके लिये प्रसिद्ध है। किलेमें "कैदखाना" है, और राज्यका "खजाना" भी रहता है । जयपुरनरेश की आज्ञाके बिना पुराने "राजमहल" कोई नहीं देख सकता है ।

पुराना महल एक बड़ी इमारत है, इसका काम राजा "मानसिंह" ने अनुमान सन् १६०० ई० में आरंभ कराया था । पुराने महलसे ४०० फुट ऊंची पहाड़ी पर किला है, पहाडी छोरके पास आम्बेर कस्बेमें एक सुन्दर झील है ।

एक बडे आंगनसे सीढ़िया द्वारा प्रवेश करनेपर "दीवानआम" मिलता है । इसमें खंभोंकी दोहरी कतार (लेन) है । दीवानआम के दाहिनी ओर कालीका छोटा "मन्दिर" है । एक ऊंचे स्थानपर सवाई जयसिंहका खास कमरा है, एक सुन्दर फाटकसे यहां जाना होता है, ऊपर जालीदार खिड़कियोंके साथ "सुहागमन्दिर" नामक छोटा मकान है । इसके बाद महलोंसे घिरा हुआ एक सब्ज और शीतल बाग है, यहां मार्बुलका बहुत काम है, बागमें फव्वारे लगे हैं । बाई ओर "जयमन्दिर" है, इसमें सफेद पत्थरके चौखूंटे तख्ते जडे हुए है, स्नानका कमरा मार्बुलका है । ऊपर "यशमन्दिर" है, इसमें चमकीले पत्थर जड़े हुए हैं । यशमन्दिरके खंभों और महराबोंमें नक्काशीका सुन्दर काम है । पूर्वोत्तर कोनेके समीप "बालकानी" है, यहांसे आम्बेर और मैदानका सुन्दर दृश्य देख पड़ता है । दीवारके बाहर दूसरे जयसिंहसें प्रथम राजाओंकी कई "छतरी" हैं । जयमन्दिरके साम्हने "सुखनिवास" है। चन्दनकी लकड़ीके दरवाजेमें हाँथीदाँत जड़ा है। खीरीफाटकके रास्तेके निकट विष्णुका सुन्दर मन्दिर है, इसके जगमोहनमें नक्काशीसे कृष्ण और गोपियोंकी मूर्त्तियां बनी हैं, आम्बेरमें पहिले बहुत सुन्दर देव मन्दिर थे, परन्तु अब उनमेंसे अधिक उजड़े जाते हैं।

आलिनपुर

(अतिशयक्षेत्र).

जयपुर रि० में नागदा मथुरा रेल्वे लेनमें स्टेशन सवाईमाधोपुरसे करीब २ मीलपर यह अतिशयक्षेत्र है । जिसको "चमत्कारजी" भी कहते हैं । आलिनपुर ग्राममें एक शिखरबन्द आलीसान (बड़ाभारी) मन्दिर है, और वस्तीके बाहर एक नशियां चैत्यालयनुमा हैं । कहते हैं कि सम्वत् १८९८ में एक प्रतिमा स्फटिकमणिकी करीब

९ इंच अवगाहनाकी बस्तीसे वायव्य कोनमें एक बगीचेमें मिली थी, उस वक्त यहांपर केशरकी वृष्टि हुई, इस अतिशयसे यह मन्दिर चमत्कारजीके नामसे प्रसिद्ध है। परन्तु जो पहिलेकी असली मूर्ति थी वह खण्डित हो जानेके कारण भंडार (अलग) कर दी, और उसी प्रतिमाके बराबर की दूसरी प्रतिमाजी मंगवाकर और प्रतिष्ठा कराकरके विराजमान कर दी।

आश्विन सुदी १५ को प्रतिवर्ष एक दिन मेला भरता है। इस मन्दिरके भंडार आदिका प्रबन्ध सवाई माधोपुरके शेठ मनसुख पांतूलालजीकी तरफसे होता है। बस्ती यहांपर पूर्व कालमें अच्छी आबाद थी, परन्तु वर्तमानमें बहुत उजाड़ हो गई है। यहां का प्रबन्ध अच्छा है। मंदिरके चारों ओर धर्मशाला बड़ी भारी है, जिसमें करीब २००० यात्री आरामसे ठहर सकते हैं।

इन्दरगढ़ ।

राजपूतानामें इन्दरगढ़ खास इस नामकी रियासत की राजधानी कोटासे उत्तर दिसाको २० कोसकी दूरीपर B B. & C. I. लेनमें स्टेशन है। इसको अनुमान वि० संवत् १६६२ "इन्द्रसाल" राजाने बसाया था, और अबतक उनके खानदानमें ही चला आ रहा है।

यहांपर दि० जैनियोंकी मनुष्यसंख्या ३०७ और घर १०० हैं। एक शिखरबन्द मंदिर और एक चैत्यालय हैं, और नाईनके दरेमें (याने एक पहाड़के हिस्सेमें) नशियांजी है। मन्दिरमें प्रतिदिन शास्त्रसभा होती है।

दरबारकी तरफसे एक अच्छी पाठशाला नियत है, जिसमें बालकोंको हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओंकी शिक्षा दी जाती है। इसके प्रबन्धकर्त्ता वर्तमानमें "मागीलालजी" साहिब बन्नेरवाल (जैन) इन्स्पेक्टर जनरल हैं।

इस कस्बेके आसपास, म्याना, ककरावता, ढीपरी, सितोना, बोरदा, बालुका आदि ग्रामोंके मन्दिरोंको राज्यकी तरफसे मासिक सालाना तैलादि फुटकर खर्चको मिलता है। और रथयात्रा आदि उत्सवोंमें हाथी, घोड़े, सिपाही आदि राज्यकी ओरसे मिलते हैं, इतनाही नहीं परंतु दरबारके कई सज्जन पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ाते हैं।

इन्दौर ।

यह शहर मालवाप्रान्तमें रियासत हुलकर सरकारकी राजधानी 'सरस्वती' और खान' इन दो नदियोंके किनारेपर बसा हुआ है। करीब १७१५ ई० में किसी एक

'काम्पेग्रामके' जमींदारने बसाया था। यह परगना सन् १७३३ में मरहठोंके प्रधान पेशवाने श्रीमान् महाराज मल्हारराव होलकरको प्रसन्न होकर दे दिया था, तबसे यह उनके खानदानमें चला आता है। प्रथम राजधानी सन् १८०० ई० तक मन्दसौर था, पीछे इन्दौर हो गई। यहांकी सुप्रसिद्ध रानी 'अहिल्याबाई' जगतप्रसिद्ध होगई हैं। यह शहर दो भागोंमें बटाहुआ है, एक जूना (पुराना) इन्दौर, और दूसरा नया इन्दौर, इसमें कई मुहल्ले हैं। शहरकी मनुष्यसंख्या करीब ८७००० हजार है, इसमें ४२६ घर दिगम्बर जैनियोंके और १३०३ मनुष्य संख्या है। पहले जैनियोंकी मनुष्यसंख्या बहुत थी, परन्तु प्लेगके कारण बहुत घट गई है। यहांपर मुखिया श्रीमान् शेठ हुकमचन्दजी तथा शेठ कल्याणमल तिलोकचंदजी प्रसिद्ध व्यापारी और धर्मप्रेमी है, आपके धर्मप्रेमसे इंदौरकी जैनधर्मशाला, पाठशाला, औषधालय, और ९ मन्दिरोंका प्रबन्ध योग्यरीतिसे होता है। आपने और दूसरे दिगम्बर जैनबांधओंके प्रयत्नसे एक अनाथालय भी खोल रक्खा है।

इन्दौरमें जूना राजमहल, खान नदीके पश्चिमी पुलके पास महाराज जसवंतराव हुलकरकी पहली मासाहिबा केशरीबाई, महाराजा तुकोजीराव, तथा चिमाजीराव बोलिसा साहिब आदिकोंकी छतरियां और आगरा बम्बई रास्तेपरका होलकरकालेज, बृटिश पोष्टआफिस, तारआफिस, और सराय आदि देखने योग्य है।

इन्दौर स्टेशन राजपूताना-मालवाके अजमेरसे खंडवा लेनमें होनेके कारण यह शहर व्यापारकी बड़ी भारी मण्डी होगई है, विशेषकर अनाज और अफीमका व्यापार बहुत होता है।

ईशागढ़।

रि० ग्वालियर में ईशागढ़ स्टेशन है। विख्यात पं० "भागचन्द्रजी" अनेक ग्रंथोंके कर्त्ता यहींके निवासी (रहनेवाले) थे।

यहांपर परवार खंडेलवाल और जैसवालोंके ३१ घरोंकी मनुष्यसंख्या १४५ है, एक शिखरबंद मन्दिर और ४ दर्शनस्थान है, जैनसभा और धर्मशाला भी है। मन्दिरोंमें हस्तलिखित ९७ उत्तमोत्तम धर्मशास्त्र हैं।

व्यापार गल्ला और घीका अधिक होता है।

उज्जैन।

यह प्राचीन नगर मध्य भारतके मालवा देशके संधिया राज्यमें शिप्रा नदीके दहिने किनारेपर है। राजपूताना-मालवा, नागदा-रतलाम गोधा रेल्वे लेनका स्टेशन उज्जैन जंकशन है।

प्राचीन कालमें उज्जैन एक समय मालवा की राजधानी थी। कहते है कि, जब राजा "अशोकका" पिता "पाटलीपुत्र" (पटना) में राज्य करता था, उस समय ईसासे करीव २६३ वर्ष पहले अशोक उज्जैनका सूवेदार था। जब उज्जैन बड़ा भारी और प्रसिद्ध नगर सुप्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्यकी राजधानी थी, उस समय इसके कई नाम थे, जो कि संस्कृत ग्रंथोंमें पाये जाते हैं, याने अवन्तिका, अवन्ति, वसाखा, पुष्पाक्रातिनी आदि। लम्बाई १३ कोसकी थी। इस प्राचीन नगरीका ज्वालामुखीके स्फोट (धड़ाके) से व नदीका भयंकर प्रवाह होनेसे नाश हुआ था, तथापि अभीतक उसके खंडहरों जवाहिरात, दागदागिना आदि चीजोंसे इसके प्राचीन वैभवकी कल्पना होती है।

प्राचीन कालसे उज्जैन सर्व जातियों और मतवालोंका बड़ा भारी पवित्र क्षेत्र है। ईसासे १५० वर्ष पहले यह जैनियोंका भी पवित्र स्थान रहा है। और इस उज्जैन जिलेमें श्रीभद्रबाहुस्वामी संघसहित यहांसे दक्षिणमें दुर्भिक्षके कारण गये, जो कि मैसूर प्रान्तके श्रीक्षेत्र मूडबद्री (जैनकाशी)के पास चन्द्रगिरिपरसे स्वर्ग पधारे हैं।

रेल्वे स्टेशनसे एक मील दूर ६ मीलके घेरेमें नयाशहर है, जो कई मुहल्लोंमें विभाजित है। उज्जैनमें करीव २०००० हजार मनुष्य संख्या है। दिगम्बर जैनियोंके खंडेलवाल वगैरा अग्रवाल, जैसवाल वीसाहूमड़ोंके ४६ घर आवाद सर्व मुहल्लोंमें फैले हुए हैं। इनकी मनुष्यसंख्या १९६ के करीब है। दिगम्बर जैन मन्दिर यहांपर ३ हैं, धर्मशास्त्र अनुमान २०० हैं। पूजन प्रक्षाल पंचोंकी तरफसे योग्यरीतिसे होता है। लोनकी मण्डीके मन्दिरमें एक "जैनपाठशाला" है, इसका कार्य पंडित रामलालजी संपादन करते है। यहांके शेठ घासीरामजी तथा उनके सुपुत्रका ध्यान पाठशालाकी ओर विशेष रहता है। नयापुरामें "धर्मशाला" भी है।

उज्जैनमें शिप्रानदीके किनारे जो कि भैरवगढ़के नामसे मशहूर हैं, 'महाकालेश्वर' नामक एकशिवजीका विशाल मन्दिर तथा कई मन्दिर और अन्य मतवालोंके नदीके, किनारेके घाट, तालाब इत्यादि कई स्थान देखने योग्य हैं।

बड़ाबाजार खुला है, और इसमें २ मंजिलके मकान है। नयेशहरके दक्षिणकी तरफ जयपुरके महाराजा जयसिंहजीका बनवाया हुआ आकाशलोचन ग्वालियरके महाराजा साहिबका महल स्टेशनसे करीव दो मील है, देखने लायक है।

उज्जैनप्रान्तमें अफीम वहुत पैदा होती है, और विदेशोंमें भेजी जाती है। अफीमके व्यापारकी तो मंडी है, विदेशी चीजोंमें खासकर कपड़ा बुननेकी कलें रुईके प्रेस भी यहां है।

उदयपुर।

राजपूतानामें यह शहर उदयपुरराज्यकी राजधानी है। बी० बी० एन्ड सी० आई० रेल्वेकी शाखा "चित्तौरगढ़" इसी लेनका स्टेशनसे जुदा टुकड़ा U.P.R. का सीधा चलागया है। स्टेशनपर तांगे और बैलगाड़ी आदि सवारी किरायेपर मिलती है। स्टेशनसे २ मीलपर शहरके पास सराय और धर्मशाला बनी हुई हैं। एक तालाव है राजमहल तालावके किनारे एक छोटीसी पहाड़ीपर है, बहुत खूबसूरत (सुन्दर) बना हुआ है, जब १५६८ ई० में मुगलसम्राट अकबर बादशाहने चित्तौरगढ़ फतह किया तो मेवाड़के महाराणा उदयसिंहने यहां आकर पहाड़ोंमें बचावकी जगह बनाई, और फिर यहां एक नगर बस गया, जिसका नाम महाराणाजीने अपने नामपर उदयपुर रक्खा।

सन् १५७७ ई० में मशहूर वीरशिरोमणि महाराणा प्रतापसिंहजीके वक्तमें उदयपुरमें अकबरकी फौज रही थी, परन्तु प्रतापसिंहजीने १५८६ई० में अपनी राजधानीको फिर ले लिया १७६९ में महादाजी, सिंधेने उदयपुरको घेरलिया, लेकिन दीवान ऊमरावचंदकी हिम्मतसे कुछ राजधानीका अच्छा हिस्सा देकर बचालिया।

यहांकी मनुष्यसंख्या इस समय४५९७६,करीब है, जिसमें दिगम्बर जैनियोंके २४६ घरोंकी मनुष्य संख्या१०३५है, दि० जैनियोंके८शिखरबन्द मन्दिर और५ चैत्यालय हैं। मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षाल आदि योग्यरीतिसे होता है। मन्दिरोंमें करीब६८५ धर्मशास्त्र हैं।

उदयपुर पूर्वदिशाकी तरफसे अच्छा मालूम होता है। रानासाहिब और राजअधिकारियोंके महल व जगमंदिर जगनिवास मनोहर बने हुए हैं। सरकारी राजमहल के सिवाय कोई दूसरी मशहूर चीज देखनेके लायक नहीं है।

ऋषभदेव (केशरियानाथजी)

(अतिशयक्षेत्र)

उदयपुर रि० में खास उदयपुर स्टेशन (R M. Ry.) से करीब ४० मील की दूरीपर यह क्षेत्र है। स्टेशनसे यहांतक सड़क अच्छी बनी हुई है, और यात्रियोंको सवारी बैल, गाड़ी किरायेपर सुभीतेसे मिलती है, ग्रामका नाम 'धुलेव' है।

धुलेवगांवमें दि० जैनियोंके ११३ घरोंकी मनुष्यसंख्या ३४१ है। दो धर्मशालाएँ हैं, जिनमें एक बड़ी जीर्णावस्थामें है। इसी कारणसे यात्रियोंको ब्राह्मण लोगोंके घरोंमें ठहरना पड़ता है।

श्रीऋषभदेवजीका मन्दिर बहुत विशाल एक किलेके समान पत्थरका बना हुआ है, सबके बाहर मन्दिरके चारों ओर एक बडा भारी उंचा कंगूरेदार पत्थरका कोट है,

जिसको सागवाड़ा निवासी हुमड़ ज्ञातीय दि० जैनी 'शेठ धनजी करणजीने' संवत् १८६३ में बनवाकर पूर्ण किया है । इसकी भींतपर एक लेख भी खुदा है, और फाटकपर दो हाथी श्याम पत्थरके हैं, भीतर जाकर मध्यमें अनेक सुन्दर नक्काशीयुक्त देव देवियों तथा मूर्तियों करके आच्छादित (ढका हुआ) एक वृहत् मंदिर संगमर्मर पत्थरका है जिसके ४८ ऊंचे ऊंचे शिखर हैं, शिखरोंपर कलशे नहीं चढ़े हैं ।

इस वृहत् मंदिरके भीतर जानेसे श्रीऋषभदेवजीका बड़ा मन्दिर मध्यमें तथा चारों-ओर अन्तरवेदिया ४ के सिवाय शिखरवंद हैं । बड़े मंदिरके साम्हने फाटकपर हाथी के ऊपर नाभिराजा और मरुदेवीकी मूर्ति शोभित है, जिनके दोनों ओर चरण बने हैं, एक तरफ एक शिलालेख है जो सम्वत् १८७६ का लिखा है ।

मंदिरके भीतर ८ खंभोंकी एक दालान है, उसके भीतरके ऊंचे भागपर वेदीके बाहर दूसरी दालान है, इसीके दरमियानमें पूजाकी जगह बनी हुई है, यहाँ एक जगह बगलमें एक भैरोंकी मूर्ति है । यहां एक ब्राह्मणका लड़का बैठा हुआ भैरोंका पाठ पढ़कर पूजा करता है, इसीके बगलमें एक पत्थरकी छोटीसी मसजिद बनी है, लोग कहते हैं कि मुसलमान लोग फाटकपर आकर इसकी मानना करते है । इसही दालानके मध्यमे दो दरवाजे हैं, उसके आगे जाकर ६-७ फुट ऊंची पद्मासन श्यामवर्ण श्रीऋषभदेवकी सुन्दर दिगम्बरी प्रतिमा है । प्रतिमापर सम्वत् नहीं है, इसके चारों ओर एक धातुपटमें अन्य दिगम्बर मूर्तियां अंकित हैं, इस परम सौम्य दिगम्बर मूर्तिका प्रातःकाल जल और दुग्धसे अभिषेक करके केशर चढ़ाते है । यहांतक कि शरीरको केशरसे रंग देते हैं, और पुष्पोसे सारे अंग और मस्तकतकको ढक देते हैं । ७ से १२ बजे तक दर्शन ठीक तौर से नहीं होते; पश्चात् ब्राह्मण गोटी लोग सर्व अंगको साफ करते हैं, और अंगमें केशर चिपट जानेके कारण मूर्तिको कुंचीसे घिसना पड़ता है, कई अंगुलियां इसी सबबसे घिस गई हैं । दोपहर के एक बजे के करीब फिर जल और दूध चढ़ता है पश्चात् रत्नोंकी आंगी और मुकुट पहिनाया जाता है, और पुष्पादि चढ़ाये जाते है, रात्रिको आंगी उतारकर सारे अंगमें गुलाल चढ़ाई जाती हैं । यहांके श्रावकों तथा भट्टारक "क्षेमकीर्तिसे" मालूम हुआ है कि वि० सं० १७०२ में आंगीका आरोप (पहनावा) शुरू हुआ है, बडे मंदिरको छोड़कर साम्हने मरुदेवी नाभिराजाके बांई ओरसे घूमते हुए वेदियां मिलती है, एक दालानमें ४ वेदियां हैं, जिनमें ४ श्यामवर्ण मूर्तियां है, जो सं० १७४६ की प्रतिष्ठाकारक "क्षेमकीर्ति" भट्टारक २ सं० १७६७ व १७६८ प्रतिष्ठाकारकमें विजयरत्न भट्टारक इसके आगे दालानमें ७ वेदियां हैं, जिनमें सात मूर्तियां क्रम से सम्वत् १७३४ प्र० का० 'यशकीर्ति' भट्टारक, १७४९

१७७६ प्रतिष्ठाकारक देवेन्द्रकीर्ति सं० १७६०-१७६७, १७६४ प्र० का० 'त्रिभुवन-कीर्ति' १७३४ लिखा है।

इसके आगे पूजनके दालानकी बगलमें एक बड़ी कोठरी है, और उसके आगे दालान है, कोठरीमें एक बड़ी सौम्यमूर्ति शांतिनाथस्वामीकी सं० १७५३ प्र० का० भट्टारक 'सुरेन्द्रकीर्ति' २ प्रतिमाएं सफेद, बगलमें हैं। कोठरीके बाहरके दोनों आलोंमें २ श्यामवर्ण मूर्तियां है लेख प्रगट नहीं।

इसके बगलमें एक बड़ी लम्बी दालान है, जिसकी १९ वेदियोंमें १९ श्यामवर्णकी प्रतिमाएँ हैं, जिनके कि प्रतिष्ठाकारक भट्टारक ही हैं। इसके पीछे एक सहस्त्रकूट चैत्यालय है, फिर ऋषभदेवजीके बड़े मंदिरके पीछे एक वेदीमें शांतिनाथकी प्रतिमा सं० १७६४ की है, फिर एक बड़ी वेदीमें एक श्यामवर्ण प्रतिमा है, लेख वगैरः नहीं है। बगलमें देवता, पत्थरके चरण तथा एक श्यामवर्ण प्रतिमा है, फिर एक छोटी वेदीमें वासुपूज्यस्वामीकी प्रतिमा संवत् १७६८ की है। फिर बड़े मंदिरके दूसरी ओर एक दालानमें अलग २ प्रतिमा विराजमान हैं, ३ आले बीचमें खाली पड़े हैं, इनमें २ प्रतिमा संवत् १८६३ की हैं, इस दालानके आगे सामग्री धोनेकी वेदी है, इसकी बगलकी एक बड़ी वेदीमें एक श्यामवर्ण बड़ी प्रतिमा है। इसके आगे मुख्यमंदिरके साम्हने हाथीके बांई ओर एक दालानमें तीन प्रतिमाएँ और धातुके चौवीसपट है।

ये सब वेदियां पत्थरकी बनी हुई है, मंदिरके शिखरों व स्तम्भोंपर नक्काशीका वैसाही काम है, जैसाकि आबूके प्रसिद्ध जैनमंदिरमें हैं।

वर्त्तमानमें केशरियानाथका सब भंडार व हिसाब किताव महाराजा उदयपुरके पास है, महाराज सा० एक कमेटी उदयपुर के ८ भाइयोंकी नियत कर रक्खी है, जिसमें कि वैष्णव भाई व अन्य सब श्वेताम्बर जैनी है। भंडारकी तरफसे श्वेताम्बरी रीतिसें पूजन व आरती आंगी आदि होती है, और दिगम्बरी पूजन भंडारसे नहीं होती। धुलेवके दिगम्बर जैनी अपनी सामग्री लेजाकर पूजन करते हैं। एकही वेदीपर एक तरफ श्वेताम्बरी और दूसरी तरफ दिगम्बरी पूजन करते हैं, वेदी छोटी होनेके कारण दिगम्बरियोंको शास्त्र रखनेको तकलीफ होती है। मंदिरमें कोई आलमारी नहीं है।

बड़ी मूर्ति के सिवाय अन्य जो दिगम्बरी मूर्तियां चारों तरफ मौजूद हैं, उनपरभी आंगीका शृंगार करना सम्वत् १८४२ से शुरूहुआ है। यह कितने दुःखकी बात है, कि दिगम्बरी भट्टारकों द्वारा प्रतिष्ठित नग्न (दिगम्बर) मूर्तियां आभूषण आदि से विभूषित करदी जावें, यह सब हमारे भाइयोंके प्रमादका फल है। मंदिरके मुनीम

ब्राह्मण ओंकारलालजी जोशी हैं, यहांके भंडारखातेमें जो आमदनी होती है उस मेंसे ३५) सैकड़ा एक ब्राह्मण पंडितको दिया जाता है। गांवमें एक हिन्दीस्कूल भंडारकी तर्फसे है, जिसमें २ अध्यापक हैं, परन्तु धर्मशिक्षाका प्रवन्ध नहीं है। गांवके बाहर एक सूरजकुंड नाम का तालाव है, इसके किनारे एक पत्थरपर अंगरेजीमें यह लेख है:-

NOTICE.

To all whom it concerns the Shrine of Rikhabdev being one held in great sanctity by the Hindus of Gujrat and other countries, gentlemen and others encamping at the place are requested not to kill peafoul or peageons in the neighbourhood or to catch the fist in the small pucka tank near the Village or to kill animals.

there" Kherwara 22nd May 1854 } **(Sd) Johan C. Brooke, captain, Sule Hilly Trackts Mewar.**

तर्जुमा (अनुवाद) यहहै।

"सबको विदित हो कि ऋषभदेवजीका मंदिर गुजरात और अन्य देशोंके हिन्दुओंमें बहुत पवित्र माना जाता है, इस लिये इस स्थानपर जो साहब ठहरें, उनसे प्रार्थना है कि वह मोर आदि पक्षियोंको इसके आसपास कहीं परभी न मारें। गांवके पास जो छोटा पक्का तालाव है, उसकी मछलियां न पकड़ें और न पशुओंका वध करें अर्थात् जैनधर्मके विरुद्ध कोई कार्य न करें"

खेरवारा
२२ मई सन् १८५४ ई० } जानसी० ब्रूक कप्तान,
पहाडी मुल्क उदयपुर.

नकल शिलालेख धुलेवके मन्दिरकी।

श्रीआदिश्वरनी आदिना नाम महा छे।

सकल जिनेश्वर पद प्रणमि, प्रणमि सरस्वती माय।
श्रीगुरुना पद अनुसरहिं, करिहों बुद्धि उपाय॥

आदि जिनेश्वर मंदिरे, दिशे दुर्ग उत्तंग। चन्दकीर्ति सूरिव तहां शोभत मनतणे रंग॥
हेडाषडक देश मेवाड़में, जुही पापर सुजाण। राजकरे तह राजवी भीमसिंह राजन्त॥
हिन्दुपति पातशातले, समोवड़ अर्क प्रताप। गुण गंभीर सायसमा कल्पतरु सम साख॥

संवत् १८६३ असाढ़ सुदी ३ गुरुवारे मुहूर्त जो कर्यो भली तरे पूजा कीधी मूलसंघ गच्छ सरस्वती बलात्कारगण, कुन्दकुन्द सूरीवर भलो स आना तहते उधार अनुक्रमें, लो सकलकीर्ति गच्छपते तह पट्टे गुरू शोभतो भुवनकीर्ति नमू पाय। ज्ञानभूषण पट प्रगट विजयकीर्ति सूरी शुभचन्द्र सूरीवर सदा सुमतिकीर्ति नमू गुणकीर्ति गरु गुवातले चन्द्रभूषण तस पट रामकीर्ति पट शोभते रायके ...पद्मनन्दि पटे सुयश देवेन्द्रकीर्ति गुण अर खेमकीर्ति पट उजला नरेन्द्रकीर्ति मनहार। विजयकीर्ति पर गुरु नेमीचंद भवतार चन्द्रकीर्ति चन्द्रसमो रामकीर्ति सुखकार।
यशकीर्ति सूरीनासद् उदयो पुण्य अंकूर। करी प्रतिष्ठा दुर्गतणी जल ल्याओ भरपूर ॥
बागडदेश सुहावनो सागनपुर वर ग्राम। संघापति सायर लियमणे सुन्दर सोने नाम ॥
संघी धनजी करणजी क॰नजी सुत जान कमलेश्वर गोत्र तणुयसव............रणलाना भार्या आनंद कुँवर जे सुत माणिकचंद, जेह भार्या केनवाई निर्मली आणकदेवी तेह सुत वजेचन्दजी ाणय पुण्यवंत गुणवंत बाल भेद भार्या भली शीलवंती तसु संत सुत नवलचंद जन्मीये पुत्री हंसी जीण गुणवंत प्रत्योवण गुण कलाणि जिनचन्द कीर्ति गुरु उजला करणे दुर्गनु ....यशकीर्ति गुरु निर्मले करी प्रतिष्ठा मनरंग गंधी वेनचन्द जीवली गुरु आज्ञा प्रति पालक यश लिये अति उज्जेला यशकीर्ति तणुं प्रताप भट्टारक जी श्री नयरत्न..... ....ईश्वरजी...........जी धर्मचन्दजी पंडितजी किशनजी पंडित मोतीचंदजी रावतजी गोतसिहजी कुंवरजी हूमड़ ज्ञातिय वृछ शाखाय गांधी वजेचन्दजी सुत नवलचन्दजी चिरंजीव जती भागचन्द्रेण लिपिकृतं धुलेवनगरे श्रीरस्तु कल्याणमस्तु जोतसी दौलतरामजी भट्ट कृपाशंकरजी।

करौली।

यह शहर राजपूतानेमें करौली रियासतकी राजधानी नागदा मथुरा रेलवे लेनसे हिन्दौनसिटी स्टेशनसे १८ मीलकी दूरीपर है। स्टेशनसे शहरतक इक्की सवारी हर-समय मिलती है।

दि० जैनियोंके खण्डेलवाल, अग्रवाल, पल्लीवाल, श्रीमाल आदिके ५५ घर और १५३ मनुष्यसंख्या है, दिगम्बर जैनियोंके ४ शिखरबंद मन्दिर हैं, जिसमें पञ्चायती बड़े मन्दिरमें प्रतिदिन शास्त्रजी बंचते हैं। सवजमण्डीके आगे एक और भुडारा मुहल्लामें सोगानियोंका मन्दिर है मन्दिरके नीचे धर्मशाला भी है। प्रतिवर्ष पञ्चायती मन्दिरका रथोत्सव आश्विन सुदी १५ से कार्तिक वदी ३ तक होता है। इस उत्सवमें महाराजासाहिब भी पधारकर रथयात्राकी शोभा बढ़ाते हैं।

राजभवनके सिवाय और कोई चीजें देखने योग्य नहीं है।

करौलीमें लकड़ीकी चीजें अच्छी बनती हैं, तथा लालपत्थर यहां बहुतायतसे निकलता है और पत्थरका व्यापार अधिक होता है।

किशनगढ़।

अजमेरसे नैऋत्यकी ओर फलेरा जंकशनसे ३१ मीलकी दूरीपर किशनगढ़का स्टेशन है, सवारी हरतरहकी मिलती है।

किशनगढ़ छोटासा शहर है, वस्ती उजाड़ है, इसको राजा 'किशुनसिंहजीने' बसाया था।

शहर और किला एक छोटी झीलके किनारे पर है, इसके मध्यमें महाराजका 'ग्रीष्म-भवन' बना है, राजमहलके नीचे झीलके पास 'फूलमहल' नामक महाराजके बागका मकान है। शहरके ब्रजराजजी मोहनलालजी मदनमोहनजी, और चिन्तामणिके सुन्दर मन्दिर और कोठीवालोंके मकान देखने योग्य है। एक पोष्टआफिस और धर्मशाला भी है।

यहांपर खंडेलवालोंके २९ घरोंकी मनुष्यसंख्या ८९ है। ४ शिखरबंद मन्दिर हैं, मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र अनुमान २५० है। वस्तीसे बाहर एक कोसकी दूरीपर एक नशियां है, नशियांमें प्रतिमा नही है, मेलेके समय प्रतिमा लेजाकर विराजमान करते हैं, मन्दिरोंका प्रबंध अच्छा नहीं है।

यहांके कारखानोंमें 'साबुन' और 'कपड़ा' अच्छा बनता है, और इनहीका व्यापार होता है। किशनगढ़का 'चोल' बहुत प्रसिद्ध है।

कुशलगढ़.

राजपूतानेमें, कुशलगढ़ कस्बा है निकटवर्ती स्टेशन 'बजरंगगढ़' है।

यहांपर दशाहूमड़ोंके ९० घरोंकी मनुष्यसंख्या ४२५ है, ३ शिखरबद मन्दिर और एक चैत्यालय है, मन्दिरोंमें १२९ धर्मशास्त्र हैं, यहांपर तेरापंथी और बीसपंथी ऐसे दो भेद हो गये है।

कुशलगढके आसपासके ग्रामोंमें कई जैन मन्दिर है, परन्तु जैनियोंकी वस्ती नहीं है। 'बागोल' नामक ग्राममें एक शिखरबंद मन्दिर है, इसका प्रबंध कुशलगढ़के ही पंच करते है, प्रबंध संतोषप्रद नही है। 'अन्देश्वर' नामक ग्रामके पहाड़पर दो शिखरबंद मन्दिर हैं, इनमें मूलनायक 'श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी सवा फुट ऊंची प्रतिमा है, कहते है कि ये प्रतिमा कोई पुण्यात्माको स्वप्न देकर मिली थी, पांछेसे कई धर्मात्मा-

ओंने मन्दिर बनवाया, दूसरे मन्दिरका बनना वि० सम्बत् १९५६ में शुरू हुआ था, सं० १९६५ में प्रतिष्ठा हुई थी, एक 'धर्मशाला' भी ६०-६५ यात्रियोंके टहरने योग्य है, स्थान बहुत रमणीय है। मन्दिरोंकी सालाना आम्दनी अनुमान पांचसौ रुपया है। इस क्षेत्रका भी प्रबध कुशलगढ़वाले पंच करते हैं।

कोटा।

राजपूतानेमें देशीराज्यकी राजधानी नागदा-मथुरा रेलवेका जंक्शन है, स्टेशनसे शहर करीब ५ मीलकी दूरीपर है, सवारी हरसमय हरकिस्मकी बड़े सुभीतेके साथ मिल सकती है, किराया एक सवारीका दो आना लगता है।

दि० जैनियोंके ११ मन्दिर हैं, एक नशियां शहरसे करीब दो मीलके फासलेपर है। इनमें कई मन्दिर प्राचीन है। जैनियोंकी मनुष्य संख्या १००० के लगभग है। घर अनुमान ३०० हैं। शास्त्रसभा मंदिरोंमें रोज होती है।

यहांपर स्टेशनसे जाते समय राजासा०की कोठी, कोठीसे आगे राजासाहबका बाग, और इससे आगे पानीसे भरी हुई खाई है। खाईके जोड़में दरवाजे हैं, बादमें शहर है, शहरमें कुल दरवाजे ९ हैं। चम्बलनदीके किनारे कोटानरेशके महल देखने योग्य है।

व्यापार प्रायः हरप्रकारका अच्छा होता है।

ग्वालियर।

यह प्राचीन नगर ग्रेटइंडियन पेनिन्शुला रेलवेकी इंडियन मिडलेंड लेनमें ग्वालियर स्टेशनसे करीब एक मील दूरीपर खास शहर है। यह तीन भागोंमें बटा हुआ है। १ ग्वालियर शहर २ लश्कर ३ किला। यहां तीन बातें बड़ी अजीब हैं, पहले यहां जैनियोंकी सबसे पुरानी यात्रा थी। और प्राचीन कालमें दिगम्बर जैनियोंका विद्यास्थान रहा है। यहांपर भट्टारक 'श्रीमतसत्येंद्रभूषण' पट्टाधीश रहते हैं, जो कि इस समय बड़े साहुकार हैं। हिन्दुओंके अच्छेसे अच्छे सुन्दर महलोंके नमूनें मौजूद है। हिन्दुस्थानके सबसे बुद्धिमान राजाओंकी राजधानी किला देखनेसे मालूम होती है।

ग्वालियर शहर इस समय उजाड़ हो गया है तो भी इसकी मनुष्यसंख्या करीब १६५०० है, जिसमें दिगम्बर जैनियोंके ५० घर और ११३ मनुष्य निवास करते हैं। दि० जैनियोंके १२ शिखरबंद मंदिर हैं, जिनमें धर्मशास्त्र करीब १००० हैं। मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध भट्टारक तथा पञ्चोंकी तरफसे होता है।

लाल पत्थरकी जुम्मामसजिद सं० १६०५ की, और खंडोलाखान मास्जिदकी कारीगरी देखने योग्य है।

शहरसे उत्तरकी ओर २ मीलकी दूरीपर ग्वालियरका किला है। यह हिंदुस्थानके प्रसिद्ध किलोंमें से एक है, एक पहाड़की मजबूत तलेटीसे करीब ३०० फुट ऊंचा है। इसमें हजारों प्राचीन ऐतिहासिक चीजें पाई जातीं हैं। इसका मुख्य द्वार पूर्वकी ओर है, तथा पहाड़के शिखरतक दरवाजे बने हुए हैं। नीचेका आलमगीर, दूसरा बादलगड़ पोल १९ वीं सदीका बना हुआ है, इसके ऊपर भैरव दरवाजा तथा गणेश दरवाजा जो कि डुगरसी खानदानके राजाओंने सन् १४२९ से १४५४ ई० तक बनवाया था इसके पास कबूतरखानेमें नूरसागर नामक तालाव है। लक्ष्मण दरवाजेके पास वैष्णवोंका चतुर्भुजका मन्दिर पहाड़की चोटीमें उकीरा हुआ है, जिसमें कन्नौजके राजा भोजके समयका वि० सं० ९३२ से ९३३ तकका उल्लेख है। हाथीगड़ मानसिंह दरवाजेके समान है, और इसी दरवाजेमें से किलेके अन्दर जाना होता है। किलेमें छः राजमहल हैं, जिनमें चार हिन्दुओंके और दो मुसलमानोंके हैं। मानसिंह राज-महल गुजारीमहल आदि प्रसिद्ध और देखने योग्य हैं।

ऊपर लिखी चीजोंमें से सबसे प्राचीन एक श्रीमत्पार्श्वनाथस्वामीका छोटासा मन्दिर है, और दूसरे बहुतसे जैन मन्दिरोंके खंडहर पाये जाते हैं। पहाड़ी चट्टानोंके इर्द गिर्द काटकर अनूठी मूर्तियां जैनियोंने बनवाई हुई थीं, जिनमें ९, ७, फुट ऊंचाईसे मामूली आदमीके कद(आकार) बराबर मूर्तियां बनी हैं। इनमें से बहुतसी आदिनाथ तीर्थंकरकी हैं.चरणचौकीपर बैलका चिन्ह है। एक प्रतिमा श्रीनेमिनाथकी ३० फुट ऊंची है। और चरण चौकीमें संखका चिन्ह है। कहते है कि ये सब प्रतिमाएँ ३३ वर्षमें खोदी गई हैं। किलेसे दो मील लष्कर है, यह अति सुंदर नये ढंगका शहर है यहां महाराजा सेंधियाके बड़े भारी कई राजमहल हैं। यह शहर १९ मुहल्लोंमें बंटा हुआ है। मनुष्यसंख्या करीब १००००० के है, जिसमें दि० जैनियोंके ३८८ घर और ११०५ आदमी हैं।

दाना हालीबाजारमें दि० जैनियोंके ४ शिखरबंद मन्दिर दो पाठशालाएँ और एक कन्याशाला है। दौलतगंजमें २ मन्दिर, सराफा बजारमें ३ मन्दिर, और एक चैत्यालय लष्कर जयेंद्रगंजमें है, तथा १ मन्दिर पाटनकरके बाजारमें, और १ मन्दिर बाबूसिंधेकी छावनीमें एक नशियां भी है। इस मुहल्लेमें जैनियोंकी बस्ती नहीं है, इस लिये इसका प्रबन्ध सब पञ्चोंकी तरफसे होता है, प्रबन्ध अच्छा है। मामासाहिबके बाजारमें दो, भाऊसाहिबको बाजारमें एक, छत्रीलष्करमें एक, और चावड़ी लष्करमें एक मन्दिर है। इस मन्दिरका प्रबन्धादि कार्य श्रीयुत रामकरण फतेहलाल लुहाड्या करते है, आप मुहल्ला जयेन्द्रगंजमें रहते हैं। माधवगंजमें दो और 'मुरार' लष्करमें दो मन्दिर है। इन सब मन्दिरोंका पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध उन २ मुहल्लेवाले पंचोंकी तरफसे होता है।

रेशमी सूती कपड़े और चाकू अच्छे बनते हैं। कालेज हाईस्कूल इत्यादि स्थानभी देखने योग्य हैं।

व्यापार हर किस्मका होता है, पर अफीमकी पैदायश होनेके कारण बाहर बहुतायतसे भेजी जाती है, अनाजकी पैदायश भी अधिक होती है। और इनहीका व्यापार अधिक होता है।

गुना।

ग्वालियर रियासतमें जी. आई. पी. रेलवेका गुना स्टेशन (जंक्शन) है, यहांपर गल्ला और आढ़तका व्यापार अधिक होता है।

गुनामें ३ शिखरबंद मंदिर और७दर्शनस्थान है, मंदिरोंमें १४१ हस्तलिखित ग्रंथ हैं, इनमें कई ग्रंथ उत्तम है। परवार, खंडेलवाल, जैसवाल, खरौवा, ओसवाल, और श्रीमालके ११२ घरोंकी मनुष्यसंख्या ४४७ है। जैनसभा और जैनपाठशाला भी है, पाठशालाका प्रबंध अच्छा है।

व्यापारकी मंडी होनेसे यहांके जैनी व्यापारी ही अधिक हैं।

गंदावल।

ग्वालियर प्रान्तके उज्जैन जिलेमें सोनकच्छसे ३ कोसकी दूरीपर एक छोटीसी प्राचीन बस्ती है, उज्जैनसे सोनकच्छ तक रास्ता पक्की है, सवारी हरतरहकी मिलती है। 'मक्सीसे' भी रास्ता है।

११ खंडेलवालोंके गृहोंकी मनुष्य संख्या ३४ है, बिना कलशेका एक शिखरबंद मन्दिर है, मन्दिर जीर्णावस्थामें है।

३०-४० खंडित प्रतिमाएँ एक फुटसे लेकर १५ फुट ऊंची पद्मासन खड्गासन हैं। प्रतिमाओं पर लेख नहीं है। जमीन खोदनेसे, खंडित अखंडित प्रतिमाएँ निकलती हैं, प्राचीन मन्दिरोंके निशानात अस्पष्ट दिखलाई देते हैं।

इसका पुराना नाम चम्पावती नगरी था जब यहां 'गन्धर्वसेन' राजा हुआ तबसें इसका नाम 'गंदावल' प्रसिद्ध हुआ।

सोनकच्छके पास 'पादरीखेड़ा' छोटासा ग्राम है, इस ग्रामसे २ मीलकी दूरीपर एक पहाड़ है, पहाड़में खंडित प्रतिमाएँ और जैनमन्दिरोंके खंडहरोंके निशान, खुदाऊ पत्थर जिनसे प्राचीन समयकी कारीगरी मालूम होती है, बहुतायतसे पाये जाते हैं।

चन्देरी।

ग्वालियर रि० मं० 'ललितपुर' स्टेशनसे २१ मीलकी दूरीपर यह कस्वा है। रास्ता पथरीली है, ललितपुर स्टेशनपर वैलगाड़ी किरायेपर मिलती है।

'चेदिवंशके' राजाओंके बसानेके कारण इसका चन्देरी नाम प्रसिद्ध हुआ सौ वर्ष पहले यहा 'शिशुपालके' घरानेके राजा मर्दनासाहजी राज्य करते थे, फिर संवत् १९०१ से मरहठोंके आधीन होगया, इस समय ग्वालियर सरकारके आधीन है।

यहांपर दि० जैनियोंके ६१ घर तथा मनुष्यसंख्या ३५२ है, दि० जैनियोंके मन्दिर दो और एक चैत्यालय है। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र करीव ३०० है।

व्यापार यहांपर हरतरहका होता है, विशेषकर कपड़ेका अधिक होता है। चन्देरीकी साड़ी और पगड़ी प्रसिद्ध है।

यहांसे थोड़ी ही दूरपर 'रामनगर' ग्राममें एक शिखरवन्द मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा अतिमनोज्ञ है। रामनगरमें ४ घर परवारोंके हैं, जिनको २० मनुष्यसंख्या है।

चंदेरीसे दक्षिण दिशाकी ओर करीव डेढ़ मीलकी दूरीपर 'खंदार' नामक पहाड़ पर चट्टाने निकली हैं, चट्टानोंका रास्ता जातेही दाहिनी ओर ९ प्रतिमाएँ खुदी हुई हैं, जिनमें ३ पूजनीय और वाकी खण्डित पाई जाती है। ये प्रतिमाएँ सं० १६९० की प्रतिष्ठित हैं। शिलालेख नहीं है, यहांसे चलकर वांई ओर ऊपरको इसी पहाड़पर चढ़ते जाईये तो एक छोटी गुफामें १६ दि० जैन प्रतिमाएँ, ३ पद्मावती देवीकी और ३ क्षेत्रपालकी विराजमान हैं, परन्तु ये सर्व खण्डित है, ये वि० सं० १२३६ ज्येष्ठ शुक्ल ६ शुक्रवारकी प्रतिष्ठित है। इन दोनों जगहोंके नीचे दाहिनी ओर एक प्रतिविम्व अतिमनोज्ञ १५ हाथ अवगाहनाकी श्रीआदिनाथस्वामीकी है। सिर्फ मुखही दिखाई देता है शेष अंग पानीके पड़नेसे नष्ट हो गये हैं, भयंकर सघन जंगल होनेके कारण कोई नहीं जाता है, यात्री २०० गज दूरी ही से दर्शन करते हैं। इसकी मरम्मत तथा पूजन प्रक्षालका प्रवन्ध करना अति आवश्यक है।

'आईनअवकरीमें' लिखा है कि चन्देरीमें १४००० पत्थरके मकान ३८४ वाजार ३६० कारेवान-सराय और १२००० मसजिदें थीं!

चांदखेड़ी।

(अतिशयक्षेत्र)

कोटा (राजपूताना) रियासतमें खानपुर निजामतमे है। खानपुर प्राचीन शहर है, यहां ३१ घर दि० जैनियोंके खंडेलवाल, अग्रवाल, परवार वगैरह जातियोंके हैं।

इनकी मनुष्यसंख्या १३४ है। खानपुरसे रेल्वे स्टेशन मोरटका बी. बी. एन्ड. सी. आई. की नागदा मथुरा लेनसे करीब ४० मील है, सड़क पक्की है, स्टेशनपर सवारी हरप्रकारकी मिलती है। और बीना बारां लेनमें बारां और अटरू स्टेशन है। जिस स्टेशनसे यात्रियोंको सुभीता हो यात्रा करनेको जावें।

खानपुर शहरसे २ फर्लांगके फासलेपर चांदखेड़ी पुरानी वस्ती है। यहां अति विशाल प्राचीन एक जिनमन्दिर भूगर्भमें आदिनाथस्वामीका वना हुआ है। इस मन्दिरको सांगोद निवासी भाई 'सालकरामजी' कल्याणदासजी' व 'टोडरमल्लजी' मज्जागोत्रीने बनवाया था। और सम्वत् १७४६ वर्षकी माघवदी ६ चंद्रवासरको मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई थी। इसमें मूलनायक आदिनाथस्वामीकी प्रतिमा करीब ९ हाथ ऊंची पद्मासन विराजमान है। इसके दोनों बाजुओंमें श्री शान्तिनाथस्वामीकी दो प्रतिमाएँ करीब ७ हाथ ऊंची विराजमान हैं, और दोनों बगलोंमें चौवीस महाराजके चैत्यालय है, और दोनोंही तरफ श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान हैं। सब देशी पाषाणकी कुल प्रतिमाएँ ५७७ हैं। द्वारके उत्तरी दिशामें एक ही पाषाणका १० फुट ऊंचा 'कीर्तिस्तम्भ' है, इसमें चारों तरफ दिगम्बर प्रतिमाएँ खुदी हुई हैं। और तीन तरफ लेखभी खुदे हुए हैं, दक्षिण की बाजूमें यह लेख है—

शिलालेख—चांदखेड़ी।

'स्वस्तिप्रदं प्रमदभावयुतं विशेषं, निस्तीन्द्रमित्रशतवन्दितपादपद्मम्। पद्माक्यं हृदि निधाय जिनेन्द्रमेकं, लेखं लिखामि सुखकारणमङ्गलार्थम् ॥ १ ॥

संवत् १७४५ वर्षे माघ सुदि ६ षष्ठयां चंद्रवासरान्वितायां 'श्रीमूलसंघे' 'वलात्कारगणे' 'सरस्वतिगच्छे' 'श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये' भट्टारक 'श्रीधर्मकीर्ति' स्तत्पट्टे भट्टारक 'श्रीसुरेंद्रकीर्ति' स्तदुपदेशात् चांदखेड़ी—ग्रामे 'बघेलवारान्वये मडचा' गोत्रे सा० 'भोपति' स्तद्भार्या 'भागवती' तयोः पुत्रौ द्वौस्तयोर्मध्ये ज्येष्ठ सुतौ सा० 'नेतसी' तस्य भार्या 'शारदा' तत्पुत्रः स्वकुलाकाससरितादाधुर ४६ संघई 'श्रीकाशीदास' स्तद्भार्या द्वे ज्येष्ठा 'केसरी' द्वितीया भार्या 'केसी' तयोः पुत्रः चिरंजीव 'टोडरमल' इत्यादि—समस्त परिवारान्वितश्चिरजीयात्। इति शुभम् ॥''

यहांसे करीव७कोसपूर्वमें सांगोद नामक ग्राम है, वहां दो शिखरबन्द मन्दिर अत्यन्त सुन्दर हैं। दिगम्बर जैनियोंके घर ३० तथा मनुष्यसंख्या १२४ है। एक पाठशाला भी है। यहांसे उत्तर दिशाकी ओर डेढ़ मीलकी दूरीपर नशियांजी हैं, नशियांके चारों ओर परकोटा है, जिसमें पांच प्रतिमाएँ हैं, श्रीचंद्रप्रभुस्वामीकी सफेद वर्ण सं० १९४८,

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी सफेद वर्ण सं० १९४८ की एक प्रतिमा तो अतिमनोज्ञ है, जिनका संवत् चिन्ह आदि नहीं दिखाई देता है। यहां की नशियां देखने योग्य है, पूजन प्रक्षाल पञ्चोंकी तरफसे होता है। यहांके निवासी भाई 'सालगराम' आदि त्रिवर्ग बंधुओंने क्षेत्रचांदखेडीके मन्दिरका जीर्णोद्धार कराके अपना जन्म सफल किया है।

इस अतिशयक्षेत्रका सब प्रबन्ध नाथूरामजी बघेरवाल सारोला निवासीके आधीन है। मेला चैत्र शुक्ला ८ से १९ तक भरताहै। पूजन प्रक्षाल और मेला आदिका प्रबन्ध अच्छा होता है.।

चांदनगांव।

(श्रीमहावीरस्वामी)

जयपुर रियासतमें पाटूंदा महावीररोड (नागदा-मथुरा रेलवे लैनमें) हिन्दौन स्टेशनसे करीब ४ मीलकी दूरी पर यह क्षेत्र है। हिंदौन शहरमें दि० जैनियोंके १५ घर खंडेलवाल-अग्रवालोंके हैं, और मनुष्यसंख्या ९७ है। ३ शिखरबन्द मन्दिर बड़े सुन्दर हैं, मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र करीब ७५ है।

चांदनगांवमे ४ खंडेलवालोंके घरोंका मनुष्यसंख्या ९ है। और एक बड़ाभारी शिखरबन्द मन्दिर है। जिसमें श्रीमूलनायककी प्रतिमा महावीरस्वामीकी ३ फुट अवगाहनाकी पद्मासनस्थ देशी पाषाणकी है। कहते है कि यह प्रतिमा कोई महाभाग्यको नदीके किनारेपर मिली थी। मन्दिर बननेका और प्रतिमाजी मिलनेका संवत्का पता अभीतक नहीं लगा है। ये प्रतिमा कुछ कुछ जीर्ण हो गई है, इस लिये एक और प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराकर विराजमानकी है। पूजनके समय मूलनायकके सब शरीरमें केशर लगाई जाती है। मन्दिरके प्रबन्धके लिये जयपुरके भट्टारककी तरफसे पण्डित 'मनोहरलालजी' नियत (मुकर्रर) है, ये पूजन प्रक्षाल अच्छी तरहसे करते हैं। मेला प्रतिवर्ष चैत्र सुदी १९ को भरता है, और ३ दिनतक रहता है। प्रथम दिन जैनियोंका दूसरादिन मेंना जातिका और तीसरा गूजर लोगोंका होता है। इससे आमदनी तो अच्छी होती है। गूजर मेंना लोग मन्दिरमें जूता पहिने हुए चले जाते है, और अश्लील (बुरे) शब्दोंका उच्चारण करते हैं जिससे अविनय हुआ करती है।

चित्तौरगढ़ (मेवाड़)

राजपूतानेमें अजमेरसे ११६ मीलकी दूरीपर राजपूताना मालवा रेल्वेका मेवाड़ प्रान्तमें चित्तौरगढ़ स्टेशन है, स्टेशनपर सवारी हरतरहकी मिलती है।

सन् ७२८ ई० में 'बाप्पारावलने' चित्तौर राज्यका नींव डाली थी। यहां की पहाड़ीपर सुदृढ़ किला है, चित्तौरका विख्यात किला उजाड़ हो रहा है, किलेमें छोटे बड़े ३९ तालाब हैं। और ७ फाटक हैं. चित्तौरके मृत वीरोंके स्मारकके चिन्ह छतरियां बनी हैं। दर्शनीय चीजोंमें कीर्त्तनास्तंभ जयस्तंभ नामक बुर्जें हैं।

१ कीर्त्तनास्तंभ-७५ फुट ऊंचा नीचेका व्यास ३० फुट ऊपरका १५ फुट है, इसको लोग पुराना कीर्त्तना कहते हैं, जो कीर्तिस्तंभका अपभ्रंश (बिगड़ा हुआ रूप) है। इस स्तंभमें नीचेसे ऊपरतक संगतराशीका काम और सैकड़ों मूर्त्तियां बनी हुई हैं। यह स्तंभ ७ मंजिल (माला) का है, इसके भीतर तंग सीढ़ियां हैं, सबसे ऊपरका स्तंभ खुला हुआ है, लोग कहते हैं कि एक 'जैनमहाजन' ने इस स्तंभको बनवाया था, और कई लोगोंका कहना है, कि 'खतनीरानी' नामक स्त्री का बनवाया हुआ है। यह स्तंभ १० वीं सदीका बना हुआ जान पड़ता है। यहां बहुतसे 'जैनलेख' भी है। दक्षिणकी ओर स्तंभके बादका बना हुआ एक मन्दिर है।

जयस्तंभ-यह सफेद पत्थरका बना हुआ १२२ फुट ऊंचा नीचे का व्यास ३९ फुट और ऊपरका ७॥ फुट है, चित्तौरके प्रसिद्ध राणा 'कुम्भने' सन् १४३९ ई० में मालवाके बादशाह 'महमूद' को जीत, विजय-स्मारक चिन्हके निमित्त सन् १४४२ से १४४९ ई० तक इसको बनवाया था, यह ९ मंजिलका है, इसके भीतरकी नक्काशीमें कई हिन्दू देवताओंकी मूर्तियां बनी है, ऊपरके मंजिलमें बड़े लेखोंकी दो तख्तियां हैं।

(३) सूर्यफाटकके समीप बड़े २ तालाब हैं, राणा कुम्भका 'महल' है, 'रतनसिंह' का महल तेरहवीं सदीकी हिन्दू कारीगरीका उत्तम उदाहरण हैं। तालावकी ओर मुख किये सुप्रसिद्ध रानी 'पद्मिनीका' सुन्दर महल है 'अकबरबादशाह' इन महलोंमें से एक फाटक को ले गया था, जो अब आगरेके किलेमें है।

(४) राणा कुंभका बनवाया हुआ उंचा शिखरदार देवीका मन्दिर है, इसके ही निकट राणाकुम्भकी सुप्रसिद्ध पत्नी 'मीराबाई' का बनवाया हुआ कृष्ण (रणछोर) का मन्दिर है, चित्तौरमें यह सबसेऊंचा है, इसके ऊपरसे उत्तम दृश्य दिखाई देता है। एक जगह 'गोमुखी' झरना है, राणा 'मुकुलका' बनवाया हुआ पत्थरका नकाशीदार मन्दिर भी है।

यहांके राजाओं और मुसलमान बादशाहों अलाउद्दीन तैमूर अकबर आदिसे कई इतिहास प्रसिद्ध भारी भारी लड़ाइयाँ हुई हैं। जिनमें कई राजपूत वीर पतिव्रता स्त्रियों तकने युद्ध कियाहै। इनमेंसे रानी 'पद्मिनी' विख्यात है।

यहांके वाप्पारावल, राणा मुकुल, कुम्भ, समरसिंह, भीमसिंह, राणाहम्मीर, चंद, पृथ्वीराज, संग्रामसिंह[1], उदयसिंह[2], फताजी, बहुत प्रसिद्ध वीर हुए हैं, स्त्रियोंमें रानी पद्मिनी, मीरावाई[3], रानी तारा, जौहरबाई, वीरा, बहुत प्रसिद्ध हैं।

यहांकी मनुष्य संख्या १०२८६ है इनमें से दि० जैनियोंके खंडेलवाल अग्रवालोंके ८ घरोंकी मनुष्यसंख्या ३८ है, एक शिखरबंद मन्दिर और एक चैत्यालय है। व्यापार यहांपर हरतरह का होता है।

चौवलेश्वर।

(अतिशयक्षेत्र)

राजपूतानेकी शाहपुरा रियासतमें यह क्षेत्र है, निकटवर्त्ती स्टेशन 'मांडल' है। पहाडके ऊपर एक मन्दिर है, मन्दिरमें श्रीमतपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा २ फुट ऊंची पद्मासन विराजमान है, प्रतिमाकी हाथकी अंगुलिया घिस गई हैं, पूजन प्रक्षाल ४ ब्राह्मण करते है। प्रतिमाके नीचे लेख भी है, परन्तु अस्पष्ट होनेके कारण पढ़ा नहीं जाता है। पर्वतके नीचे एक और शिखरबंद मन्दिर है, इसकी जीर्ण शिखर मरम्मत न होनेके कारण गिर गई है। इस मन्दिरमें भी प्राश्वनाथस्वामीकी २ फुट ऊंची खंडित प्रतिमा विराजमान है।

इस क्षेत्रके प्रबन्धकर्त्ता श्रीयुत 'मन्नालाल फूलचंदजी' बागूंदार वाले हैं। प्रतिवर्ष पौष वदी ९ को मेला भरता है।

जयपुर।

राजपूतानाके मध्यमें राजपूताना-मालवा रेल्वे लेनमें शहर जयपुरखास इसी नामकी रियासतकी राजधानीका प्रसिद्ध नगर हिंदुस्थानमें बड़ा सुंदर और सुहावना है। इसकी लम्बाई दो मील और चौड़ाई एक मील है। चारों ओर दीवाल बनी हुई है, जिसपर ऊंची ऊंची बुर्जें है। और बीचमें मजबूत दरवाजे है, स्टेशनसे सवारी हरतरहकी मिलती है, जयपुरमें कई जैनधर्मशालाएँ है। शहरका बड़ा बाजार ४० गज चौड़ा एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सीधा चला गया है। दूसरे बाजार एक स्थानपर इमसे आ मिलते हैं, और मिलनेके स्थानपर खूबसूरत (सुन्दर) चौक बने हुए हैं।

---

(१) संग्रामसिंहने मालवेके बादशाह गयासुद्दीनको १८ बार हराया था।

(२) उदयसिंहके प्राणोंकी रक्षा धाय पन्ना ने की थी. कहते हे कि पन्ना जैन थी।

(३) यह रानी कृष्णकी वडी भक्त थी, और साधु सन्तोका बड़ा सत्कार करती थी, मीराबाईके भक्तिरसके भजन लोग अबतक गाते हैं।

यहांकी मनुष्यसंख्या डेढ़ लाखके करीब है, इसमें दिगम्बर जैन खंडेलवाल, अग्रवाल, और श्रीमाल आदि जातिके १८६३ घरोंकी मनुष्यसंख्या ६९२४ हैं। इस साल (सन् १९१३) में प्लेगके कारण जैनियोंकी संख्या कई हजार कम कई है, कहते हैं कि १९-२० साल पहिले करीब १० हजार दि० जैन थे। दि० जैनियोंके मंदिर शिखरबन्द ५२, कईमन्दिर प्राचीन विशाल और अतिसुन्दर हैं। चैत्यालय ६८ और १८ नशियां बस्तीके बाहिर है। मुख्य मुख्य मन्दिरोंमें प्रतिदिन 'शास्त्र-सभा' होती है। शास्त्रसंख्या करीब ४००० सब मन्दिरोंकी है। एक बृहत् शास्त्रभंडार बाबा दुलीचंदजीके आधीन हैं, बाबाजीकी उमर १०० वर्षके अनुमान हैं, तो भी आपको शास्त्र लिखने का बड़ाप्रेम है। दिगम्बर जैन पाठशालाएँ ६ बालक बालिकाओंकी हैं।

जयपुरमें श्रीमान् बाबू अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. की प्रेरणासे "भारतवर्षीय जैन शिक्षाप्रचारक समिति" की स्थापना सन् १९०६ में हुई, इसका मुख्योद्देश भारतवर्षमें धार्मिक तथा लौकिक विद्याके प्रचार करनेका है। उक्त समितिको कार्य्य करते अभी ४-५ वर्ष ही हुए हैं, इस थोड़ेसे अरसेमें बालक बालिकाओंकी शिक्षाके अर्थ केवल जयपुरमें ही ६ पाठशालाएं स्थापित हुई और ग्रामोंमें मोजमाबाद, शिवाड़, वरवाड़े, बोराज आदि स्थानोंमें भी पाठशालाएं समितिके प्रयत्नसे स्थापित हुई हैं।

समितिका मुख्य केन्द्र "श्री वर्द्धमान जैन विद्यालय" है, और उसके साथ एक छात्रालय (बोर्डिङ्ग हाउस) भी है। जिसमें विदेशी विद्यार्थी भोजनादि पाकर आनन्दसे शिक्षा पाते हैं, असमर्थ विद्यार्थियोंको भोजनादिके अर्थ छात्रवृत्तियां भी दी जाती है।

इस विद्यालयमें जैन धर्म्म, संस्कृत साहित्य, व व्याकरण, तथा अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, धर्म्म अविरुद्धभूगोल, व इतिहास, चित्रकारी (ड्राईंग) आदि सर्व प्रकारकी शिक्षाएं उत्तम प्रकारसे दी जाती हैं, शीघ्रही वैद्यक व ज्योतिषका भी प्रबंध होगा। इस समय समित्याधीन पाठशालाओंमें अनुमान ४०० लड़के लड़कियोंको शिक्षा दी जा रही है, समितिकी ओरसे ग्रामोंमे उपदेशक भेजे जाते हैं. और पाठशालाओंका प्रबंध कराया जाता है।

आधीन पाठशालाओंके उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको समितिसे मेडल (पदक) पारितोषक और सार्टिफिकट दिए जाते हैं, समिति सिर्फ जयपुरमें ही शिक्षा फैलानेसे संतुष्ट नहीं होगी. किन्तु इसके उदार उद्देश सारे भारतवर्षमें विद्या फैलाना है, और समितिका सम्बन्ध किसी खास एक सम्प्रदायसे नहीं है, किन्तु दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी आदि सर्व जैन समाजमें निज २ आम्नायानुसार धर्म्म पूर्वक शिक्षाका प्रचार करना

समितिका कर्तव्य है, 'समिति' और 'जैनयङ्गमेंसएसोसिएशन आफ इंडिया' (जैन महामंडल) इन दोनोंकी ओरसे 'जैनप्रकाशक' नामक मासिकपत्र जारी था जिसके सम्पादक बाबू सूरजभानुजी वकील देवबंद थे, थोड़े दिन हुए कि जैनप्रकाशक बंद होगया है।

'महापाठशाला' नामकी एक बड़ी संस्कृतपाठशाला है, इसमें ऊंचे दर्जेके काव्य, व्याकरण आदि विषयोंकी पढ़ाई होती है, जयपुर नरेशकी ओरसे इस पाठशालाको ५०) मासिक सहायता मिलती है।

जयपुरको सवाई 'जयसिंह' ने बसाया था, और इसी कारणसे इसको सवाईजयपुर भी कहते है। बसानेके समयमें 'रावकृपारामजी' (श्रावगी) वकील 'दिल्ली-दरबार' में थे, और उनकी सलाह से यह शहर बसाया गया, जो महल वगैरह बनाये गये उनके नाम प्रायःस्वर्गोंके नामपर रक्खे गये है। पहले दरबारमें जैनियोंका प्राबल्य(अधिकार)बहुत था। पूर्वमें पं० 'अमरचंदजी' आदि कई जैनी यहांके दीवान रह चुके हैं, वर्त्तमानमें भी कई उच्चपदोंपर जैनी हैं, जयपुर जैनियोंका केन्द्र है, यहांके आचार्यतुल्य पं० प्रवर टोडर-मलजी, पं० जयचंदजी, पं० मन्नालालजी, पं० दौलतरामजी, पं०सदासुखजी, संघी-पन्नालालजी,शाह दीपचंदजी, आदि कई विद्वानोंने संस्कृत प्राकृत अनेक ग्रंथोंकी टीका व रचनाकर जैनियोंका बड़ा उपकार निःस्वार्थ होकर किया है।

वर्त्तमानमें भी पं० चिम्मनलालजी आदि कई विद्वान् जैनधर्मके अच्छे ज्ञाता हैं। यहांके नरेश श्रीमान् माधोसिंहजी जी. सी, एस. आई. बड़े चतुर और धर्म प्रेमी हैं। देखने योग्य स्थानये हैं:-(१)महाराजा साहिबके 'राजमहल' शहरके बीचमें है, इसका घेरा और बाग आध मीलतक चला गया है। बागमें फव्वारे, नानाभांति के वृक्ष फूलदार पौधे लगे है, और चबूतरे बने हुये हैं। महलके अन्दर 'दीवान खास' दीवानआम और 'सुखनिवास' अत्यन्तसुंदर हैं। (२) आम लोगोंकी सैरके बाग जो ७० एकड़में फैले हुए है। जो डॉक्टर लिफेवेगकी तजवीजसे ४ लाख रुपयोंका लागत के बने हुये हैं। हिंदुस्थानमें यह बाग सबसे खुबसूरत (सुन्दर) है। (३) मेयो हास्पिटल, (४) अलबर्ट हाल जिसको कर्नेल 'जेकवने' तजवीज किया था, इसमें जयपुरका सुप्रसिद्ध 'अजायबघर' है। (५) 'दस्तकारीका स्कूल, 'टकसाल' (६) 'हवामहल' (७) और चिड़ियाघर यहां हर सोमवारके शामको अंग्रेजी बाजा (बैंड) बजा करता है। (८) 'महाराजा कॉलेज (९) सेन्ट्रल जेल (१०) जौहरी बाजार आदि कई स्थान देखने योग्य है।

यहांपर सोने चांदी और जड़ाऊ हर किस्मका माल अच्छा बनता हैं। तांबे पीतल कांसे आदिके बर्तन बहुत नामी और प्रशंसनीय बनते हैं। संगमरमर संगमूसाकी मूर्तियां और खलबट्टे खिलौने और लकड़ीका सामान आदि, प्रतिमाएँ भी अच्छा बनती हैं। और व्यापार विशेषकर इन ही चीजोंका होता है। जवाहिरातका भी व्यापार होता है।

जैसलमेर।

राजपूतानेके पश्चिमी भागमें जोधपुरसे १४० मीलसे अधिक दूरीपर जैसलमेर कस्बा है, शहरकी मनुष्य संख्या १०५०९ है, इनमें जैन ४५० है।

जैसलमेरका राजकुल 'यदुवंशी' राजपूत है, इसके नियत करने वाले 'देवराजका' जन्म सन् ८३६ ई० हुआ था, देवराजके पीछे छठवें राजा रावल 'जैसलने' सन् ११५६ ई० में जैसलमेर बसाया और 'किला' बनवाया था। देखने योग्य स्थान ये हैं:—

(१) कस्बेके धनिकोंके पीले पत्थरके बने हुये सुन्दर 'मकान' (२) शहरसे थोड़ी दूरीपर २५० फुट ऊंची पहाड़ीपर 'किला' है इसकी दृढ़ दीवार २५ फुट ऊंची है। (३) महारावलका 'महल' किलेके प्रधान दर्वाजेपर पीले पत्थरका बना है। (४) किलेके कई सुन्दर 'जैनमन्दिर' सबसे पुराना जैनमन्दिर सन् १३७१ ई० में बना था। (५) एक 'प्राचीनपुस्तकालय' (६) शहरसे उत्तरकी ओर 'कानोद' में नमक बनता है।

यहांपर वर्षा बहुत कम होती है, धरती बालूदार उजाड़ है, लोग वर्षातके रक्खे हुये पानीसे गुजारा (निर्वाह) करते हैं। जैसलमेर की आवहवा सूखी है, बर्सातीफसल ज्वार बाजरा तिली पैदा होती है। गेहूं जव आदि बहुत कम पैदा होते हैं। वर्षातके आरंभमें बालू (रेत) की पहाड़ियां ऊंटोंसे जोती जाती हैं। बीज बहुत नीचे डालते है। महारावलकी सेनामें ऊंटके सवारही अधिक हैं। स्थानान्तर गमनकी प्रधान सवारी ऊंट है। गोल छप्परदार मकान अधिक हैं ऊन, घी, ऊंट, मवेसी, भेड़, आदिका यहां व्यापार अधिक होता है।

जोधपुर (मारवाड़)

भर्तारोड जंकशनसे ६३ मील जोधपुरमहलका स्टेशन और ६४ मील जोधपुरका स्टेशन है, स्टेशनसे सवारी हर तरहकी मिलती है। बालूदार पत्थरकी पहाड़ियोंका

सिलसिला पूर्वसे पश्चिमको गया है, इसके दक्षिण छोरके नीचे ६ मीलकी हृढ़ दीवारसे घिरा हुआ जोधपुर शहर है, शहरमें ७ फाटक हैं।

राठौरवंशी महाराजा 'जोधरावने' सन् १४५९ ई० मे जोधपुर शहरको वसाया था। यहांके राजा अपने को सूर्यवंशी रामचन्द्रके वंशधर कहते हैं। जोधपुरके पहिले मारवाड़की राजधानी 'भांडोर' थी।

देखने योग्य स्थान ये हैः—

शहरके कई उत्तममकान, महामन्दिर, संगमरमरका मोतीमहल, एक पुराने महल में दर्वारसिंहका स्कूल, जेलखाना, किला, किलेके भीतर राजमहल, कचहरी, रायका, वाग, जोधपुरके पद्मसागर, रानीसागर, गुलावसागर, बाईजीका तालाव, सरदार-सागर, अखेराजीका तालाव, और शहरसे ३ मीलकी दूरीपर एक सुन्दर तालाव है. इसकी वांधपरका राजमहल, और वाग, देखने योग्य हैं।

जोधपुर राज्यको मारवाड़ कहते हैं, वर्षा यहां वहुत कम होती है, यहांके निवासी मारवाड़ी व्यापार करनेमें प्रसिद्ध हैं, जो भारतवर्षके सव विभागोंमें पाये जाते हैं, इनकी पगड़ी अजव तरह की होती है, स्त्रियोंका पहनाव भी विचित्र है।

यहां इन चीजोंका अधिक व्यापार होता है, पगड़ी, रेशमी सूत, चमड़ेके वक्स, पीतलके वर्तन, नमक, मवेसी, घोड़ा, कपास, ऊन, रंगा हुआ कपड़ा, चमड़ा, अनार, हांथीदांतका सामान, यहांसे अन्य देशों में भेजे जाते हैं।

मकरानासे मार्बुलपत्थर और मार्बुलकी दस्तकारियां और वहुतेरी खानोंके पत्थर भी अन्य देशोंको भेजे जाते हैं।

जोधपुरके आस पासमें कई नमककी खाने हैं, 'सांभर' नामक नमककी सुप्रसिद्ध झील जोधपुर राज्यकी सीमा पर है, नमकका वड़ा भारी व्यापार होता है।

यहां दि० जैनियोंका एक भी गृह नही हैं, श्वेताम्वरियोंके कई गृह हैं, जिनकी मनुष्यसंख्या ५०४० है।

शहरकी कुल मनुष्यसंख्या ६१८४९ (स्त्रीपुरुष सहित) है, मनुष्य संख्याके अनुसार यह शहर भारतवर्ष में ५८ वां और राजपूतानेमें तीसरे नम्बरका शहर है।

झालरापाटन शहर।

झालावाड़ स्टेटकी राजधानी स्टेशनसे करीव २२ मील तथा मोडकसे १८ मील पर है, शहरसे४ मीलके फासलेपर उत्तरकी तरफ झालरापाटन छावनी नामसे प्रसिद्ध है।

राजपूत झालाराजवंशज महाराज 'जालिमसिंहने' झालरापाटनके वर्तमान कस्बेको बसाया और उससे ४ मील उत्तर छावनी बनाई, और वहींपर झालावाड़ नरेशके रहनेके महल बने हुए हैं। शहरके दक्षिणमें 'सासबहू' नामक तालाव प्रसिद्ध है, इसका घेरा करीब चार मील है, और इसपर अच्छे अच्छे घाट बने हुए हैं। इसके नजदीक 'अयेरिया' नामक वाग बना हुआ है, जिसमें बहुतसे लोग हवा खानेको आया करते हैं। इससे ४ फर्लांग दूरीपर एक और तालाब २ मील घेरेका 'भवानी सागर' नामसे प्रसिद्ध है। और पासही 'द्वारकाधीशका' सुन्दर मन्दिर बना हुआ है, इसीके पास 'राज मन्दिर' है। शहरके तीन ओर दीवाल और खाई है।

दिगम्बर जैनियोंके यहां २०७ घर और ६११ मनुष्यसंख्या है। ये सब धर्मप्रेमी और व्यापारी है। १२ शिखरबंद मंदिर और २ चैत्यालय है, जिनमें एक मन्दिर शहरके बाहिर करीब १००० ईस्वीका बना हुआ श्री पद्मनाथस्वामीके नामसे प्रसिद्ध है। इस मन्दिरकी ईशान दिशामें श्रीशान्तिनाथस्वामीका बड़ाभारी (आलीसान) मन्दिर अतिशोभायमान करीब चार लाख रुपयोंकी लागतका संवत् ११०० के लगभगका बना हुआ है।

इस मन्दिरमें जो श्रीशान्तिनाथस्वामीकी प्रतिमा खड्गासन गेहुआं वर्ण (रंग) की लगभग ११ फुट अवगाहनाकी है। सवंत् ११०३ में प्रतिष्ठा हुई थी। स्थान वस्तीसे बाहर करीब २ मीलके फासलेपर अति मनोहर है, यहां कुछ खंडित प्रतिमाएँ और पुरानी नशियाँके खंडहर वा एक शिलालेख है, शिलालेख अस्पष्ट होनेके कारण पढ़ा नहीं जाता है। यहांपर जो श्रीशान्तिनाथस्वामीकी प्रतिमा पहिले जमीनके अन्दर होनेसे सिर्फ मस्तक और कंठ दिखाई देता था जिसको वहाँके रहनेवाले अहीर जातिके लोग पूजते थे। बाद किसी धर्मात्मा जैनी भाईको स्वप्न देकर यह प्रतिमा प्राप्त हुई। प्रतिवर्ष दो हजारके करीब यात्री जन बहुत दूर २ से वन्दनाके लिये आते हैं, प्रतिवर्ष रथयात्राका मेला आश्विन सुदी १५ को करीब ५० वर्षसे बराबर भरता है। रथयात्रा वस्तीसे बाहर एक मील दूरीपर नशियांमें होती है, यह नशियां शिखरबन्द अतिविशाल है, जिसके पूजन प्रक्षालका इन्तजाम श्रीशान्तिनाथस्वामीके मन्दिरसे चलता है। इस नशियाँपर एक वावड़ी वा सघन हरे भरे पेड़ अतिशोभायमान मनको प्रफुल्लित करने वाले हैं। यहां पैतीस वर्ष पहिले पं० चम्पालालजी हूमड़श्रावक नामी विद्वान् हो गये हैं, जिन्होंने 'चर्चासागर' नामक ग्रंथ एकत्र किया है। यहांके मन्दिरोंमें करीब १००० धर्मशास्त्र हैं। मन्दिरोंका -प्रबन्ध पञ्चोंकी तरफसे बहुत अच्छा होता है। शास्त्रसभा प्रतिदिन होती है, जिसमें ५०-६० के लगभग स्त्रीपुरुष

जमा होते हैं। यहांपर विशेष अधिकार जयपुरवाले भट्टारकका है। वर्त्तमानमें 'जैनपाठ-शाला' की स्थापना हुई है।

वस्तीके चारों ओर एक २ मील दूरीतक शिकार खेलनेकी सख्त मनाई है, ऐसा साईनबोर्ड (तख्ता) भी लगा हुआ है। इस शहरके अन्दर मद्य मांस आदिकी दूकानें बिलकुल नहीं है। यहांके वर्तमान महाराजा सा० बड़े दया प्रेमी हैं, और इसी कारणसे दशहरेके दिनमें जो बलिदान आदिमें जीवहिंसा होती थी वह बिलकुल बन्द करादी है।

व्यापार यहांपर मध्यम स्थितिका है स्व० शेठ बिनोदीराम बालचंदजी नामी धनी हैं, आपकी कई दूकानें बड़े बड़े शहरोंमें हैं।

टोंक।

जयपुरसे करीब ६९ मील दक्षिण, जयपुरसे बूंदी जाने वाली सड़कपर प्रायः दोनोंके बीचमें 'बनास' नदीके दहिने किनारेसे एक मील दक्षिणकी ओर देशी राज्यकी राजधानी टोंक एक छोटा शहर है, यहां रेलकी सड़क नहीं है. शहर दीवारसे घिरा हुआ है, घेरेके भीतर मिट्टीका किला है। शहरमें नव्वावका महल कचहरियां' और कई उद्यान (बगीचा) देखनेके योग्य हैं।

राजपूतानेमें केवल यही मुसलमानी रियासत है, मनुष्य संख्याके अनुसार हिन्दुस्थानमें ८६ वां और राजपूतानेमें ७ वां शहर है। टोंक राज्यकी नीव डालने वाले 'अमीरखां' १७९८ ई० में जबकि ३० वर्षका था, हुल्करके आधीन एक बड़ी सेनाका कमांडर हुआ, हुल्करने इसकी वीरतासे प्रसन्न होकर सन् १८०६ ई० मे टोंकका राज्य अमीरखां को दे दिया। अमीरखांने सन् १८०९ में नागपुरके राजा भोंसलापर चढ़ाईकी, लौटते समय सेनाने देशको लूटा।

अंग्रेजोंने सन् १८१७ ई, में पिंडारियों (डाकुओं) को दबानेके लिये टोंक को राज्य देकर सुलह करली।

वर्त्तमानमें टोंकके नव्वाव मुहम्मद इब्राहीम अलीखां बहादुर सैलातजंग जी० सी० एस० आई० हैं।

टोंकमें खंडेलवाल और अग्रवालोंके २९६ घरोंकी मनुष्य-संख्या ८१९ है। यहांके जैनी आढ़त सराफी किरानेकी दूकान आदि धंदा (व्यापार) करते हैं, सर्कारी मुलाजिम भी कई हैं। ५ शिखरबंद मन्दिर ४ चैत्यालय और २ नशियां वस्तीके बाहर हैं। एक नशियांमें प्रतिमा नहीं है। और दो जैनपाठशालाएँ भी हैं।

डूंगरपुर।

बांसवाड़ासे लगभग ४५ मील नीमचसे डीसा तक जो सड़क गई है, उसके पास नीमचसे १३९ मील राजपूतानेमें देशी रजवाड़ेकी राजधानी डूंगरपुर है, यहां रेल नहीं है। स्टेशनसे डूंगरपुर तक जानेको बैलगाड़ी किराये पर मिलती है। निकटवर्ती स्टेशन 'उदयपुर' और 'तलोद' है।

पहाड़ीकी बगलपर महारावलका 'महल' पादमूलके पास, झील, जेलखाना देखने योग्य हैं। यहां प्रतिवर्ष मेला भरता है, जो १५ दिन तक रहता है।

डूंगरपुरका राजवंश 'सीसोदिया' राजपूत है। यह प्रान्त पहाड़ी होनेके कारण भीलोंकी संख्या अधिक है। यहांपर दि० जैनियोंके बीसाहूमड़ दशाहूमड़ नरसिंहपुरा-बीसा नागदाबीसा आदि जातियोंके १०२ घरोंकी ३२१ मनुष्यसंख्या है, ४ शिखरबंद मंदिर है, मन्दिरमें धर्मशास्त्र ६० है, कुछ ग्रंथ ताड़पत्रोंपर लिखे हुए हैं।

डूंगरपुरसे २ मीलकी दूरीपर सुरपुर ग्राममें एक शिखर बंद मन्दिर है, इस मंदिरके पूजन प्रक्षालका प्रबंध डूंगरपुरके पंच करते है, प्रतिवर्ष कुआंर वदी प्रतिपदा (पड़वा-पख्खा) को यहां मेला भरता है, मेला एक दिन रहता है। मेलेमें श्वेताम्बर और वैष्णव भी आते है। सुरपुर ग्राममें जैनियोंका एक भी घर नहीं है।

डूंगरपुरके निकटवर्त्ती 'सापी' ग्राममें एक शिखरबंद मन्दिर है, मंदिरमें पूजन प्रक्षाल भी नहीं होता है, कहते हैं कि पहले इस ग्राममें नागदा जातिके ४० घर थे, परन्तु अब एक भी नहीं हैं। चुंडावाड़ा ग्राममें भी एक शिखरबंद मन्दिर ग्रामसे दो मीलकी दूरीपर पहाड़की झील में है, प्रक्षाल प्रति रविवारको एक ब्राह्मण पुजारी करता है यहां पर कई अतिशय लोगोंने देखे हैं।

डूंगरपुरमें व्यापार प्रायः सब चीजोंका होता है, परन्तु अफीमका अधिक होता है। डूंगरपुरका सफेद पत्थर जिससे मूर्त्तियां प्याले बनते है प्रसिद्ध है।

तालनपुर।

(अतिशयक्षेत्र)

इन्दौर रियासतमें यह क्षेत्र कूकसी ग्रामसे ३ मीलकी दूरीपर बड़वानीसें ८ मीलकी दूरीपर है, बैलगाड़ी घोड़ागाड़ीका रास्ता है। यहांपर वि० सं० १८९८ में १४ प्रतिबिम्ब अनेक तीर्थंकरोंकी जमीनके अन्दरसे किसी एक किसानको हल जोतते समय मिली थीं। कहते हैं कि शामके समय एक किसानका हल अटक गया, प्रयत्न करनेपर भी न निकल सका बाद रात्रिमें किसी भाग्यशाली को स्वप्न हुआ

कि यहांपर जैन मूर्तियां हैं सो निकाल ले। प्रातःकाल होतेही उस किसानने प्रतिमाएँ खोदकर निकाल लीं। और कूकसी ग्राम जो यहां से तीन मील है वहांके श्वेताम्बर भाइयोंको खबर दी। श्वेताम्बरी भाई पहिले आये, पश्चात् दि० भाइयोंको मालूम हुआ सो वह भी आये, दोनों सम्प्रदायोंमें झगड़ा चला। पीछे आपस में ऐसा फैसला हुआ कि १२ प्रतिबिम्बोंमें से ५ बड़ी बड़ी प्रतिमाएँ दिगम्बर भाई ले लेवें और शेष नौ छोटी छोटी श्वेताम्बर ले लेवें। तदपश्चात् दोनों सम्प्रदायमें ऐसा ही हुआ। भाइयोंने ये प्रतिमाएँ कूकसी लानी चाहीं, तब गाड़ीमें प्रतिमा रखकर ज्यों ही गाड़ी चलाने लगे तो गाड़ी नहीं चली, बहुत उपाय किये पर सब निष्फल हुये। बाद दोनों सम्प्रदायके जुदे जुदे मन्दिर बनवाकर और प्रतिष्ठाकर यहींपर उक्त प्रतिबिम्बें स्थापित कर दीं। एक दिगम्बर जैन मन्दिर और एक धर्मशाला है, मूलनायक 'श्रीमल्लिनाथस्वामी' पद्मासन ३-३॥ फुट अवगाहनाकी प्रतिबिम्ब सं० १३३५ की प्रतिष्ठित है, बाकी चार प्रतिमाओं पर लेख वगैरः कुछ नहीं है, यहांके प्रबन्धकर्त्ता, श्रीमान् 'रोडमल्ल सूरजमलजी' सुसारी वाले बहुत उत्साही सज्जन हैं। प्रबन्ध अच्छा है, परन्तु ब्राह्मणपुजारी योग्य नहीं है। ग्राम उजाड़ है, एक बड़ा भारी तालाब लाखों रुपयोंकी लागतका अनुमान३मीलके चक्कर (घेरे) में है, और कई सुन्दर बावड़ी भी हैं। प्राचीन मकानोंके खंडहर याद दिला रहे है कि पूर्व समय में यह कोई सुन्दर शहर होगा, यह क्षेत्र 'बड़वानीसे' करीब ८ मील की दूरीपर ईशान कोनमें है। बैलगाड़ी और घोड़ागाड़ी अच्छी तरह जासकती हैं.

देवलिया (देवगढ़)

राजपूताना-मालवा रेल्वे लेनमें मंदसोर स्टेशनसे करीब २२ मील प्रतापगढ़ रि० की प्राचीन राजधानी 'देवलिया' प्रतापगढ़से करीब ७॥ मील की दूरीपर है। रास्ता स्टेशनसे परतापगढ़ तक अच्छा है, यहांके लिये सवारी परतापगढ़से घोड़ा बैल ऊंट मिलते है, बैलगाड़ी नहीं जाती रियासत प्रतापगढ़को स्थापित करनेवाले राजा 'वीकाने' संवत् १५६१ नें इस प्रदेशकी भिल्ल राजकन्याको पराजित कर यह नगर बसाया था उस समय यहां पर दिगम्बर जैनियोंकी बड़ी भारी बस्ती थी, परन्तु कालकी विचित्र गतिसे इस समय केवल ८ घर और २० मनुष्य ही शेष रह गए हैं। दो मीनाकारीके बन हुए मंन्दिरभी हैं। इन मन्दिरोंमें ६ दर्शनीय प्रतिमाएँ है, जिनमें दो प्रतिबिम्ब चांदीकी श्रीशान्तिनाथ और आदिनाथस्वामीकी अति मनोज्ञ पद्मासन विराजमान है। धर्मशास्त्र करीब ५०० हैं।

राजा रावत हरिसिंहजीके सं० १६४८ ई० में व राजपुत्र तेजसिंहका संवत् १६७९का वनवाया हुआ राजमहल तथा तेजातालाव देखने योग्य हैं।

देवास।

मालवाप्रान्तमें इन्दौरसे अनुमान २० मीलकी दूरीपर देवास कस्वा है, देवास राज्यको 'वाजीराव पेशवा' ने कालूजीके पूर्वपुरषेको यह राज्य दे दिया था। कालूजीके दो लड़के 'तुकोजी' और 'जीवाजी' ने झगड़ा करके राज्यको बांट लिया। सन् १८१८ ई० में अंग्रेज गवर्नमेंटने दोनों राज्योंको संधि द्वारा अपनी रक्षामें ले लिया।

राजपूत पंवारवंशी दोनों राजा कस्वेके अलग अलग मुहल्लोंमें रहते हैं। यहांपर गल्ला अफीम ऊख और कपासका व्यापार अधिक होता है। देखने योग्य स्थान ये हैं:—कस्वेके पश्चिमोत्तर एक ऊंची पहाड़ीपर चामुंडादेवीका मन्दिर खड़ी पहाड़ीकी वगलमें गुफामन्दिर वना है इसमें देवीकी वड़ी मूर्त्ति है। इससे नीचे पहाड़ीके किनारेपर एक चौकोना तालाव और महादेवका छोटा मन्दिर है।

धार।

मालवा प्रान्तमें मऊसे वड़ौदा जाने वाली रेल्वे लेनमें धारानगरी (धारापुर) है। कस्वा मिट्टीकी दीवालसे घिरा हुआ है। महाकवि कालिदास वररुचि आदि कवि यहीं हुये हैं। उज्जैनके महाराज विक्रमादित्यके परमार (पंवार) वंशी सुप्रसिद्ध राजा भोजने अपनी राजधानी धारमें कायम की, यहांके राजागोपीचंद वहुत प्रसिद्ध हुये हैं जो राज छोड़ योगी हो गये थे। लगभग सन् ५०० में परमारोंका वल घट गया दूसरे राजपूत घरानेकी तरक्की होनेपर वहुतसे पंवार पूना चले गये।

कई वर्ष तक धार वाजीराव पेशवा और मुसलमानोंके आधीन रहा था, वर्तमान धारनरेश पंवारवंशी हैं। धारमें देखने योग्य स्थान ये हैं:—

(१) भारी भारी मस्जिदें *।

(२) वस्तीसे वाहर लाल पत्यरका वना हुआ किला धारनरेशका महलभी किलेके अन्दर है।

---

* इन मस्जिदोको दिल्लीके गवर्नर दिलावरखां ने सन् १३९३ ई० मे धारके हिन्दूमन्दिरोको तोड़ उनकी सामग्रीसे वनवाई थी।

(३) दो छोटे और आठ बड़े तालाब इनमें राजा मुंजका बनवाया मुंजसागर और कुंजका बनवाया हुआ कुंजसागर प्रसिद्ध हैं।

(४) शहरसे पश्चिमकी ओर एक मीलकी दूरीपर कालिकादेवीका मन्दिर है। लोग कहते हैं कि कविशिरोमणि कालिदासको इसी मन्दिरसे विद्या प्राप्ति हुई थी। मन्दिरके पास कमलोंसे सुशोभित सुन्दर तालाब है। कुआँर (आश्विन) सुदी ९ को मेला भरता है।

(५) शहरसे दक्षिणकी ओर लाटमस्जिदके पास २४ फुट लम्बी ४ फुट मोटी लोहेकी लाट पड़ी है, इसको गांगरीतेलनकी लाट कहते हैं। कहते है कि सम्पूर्ण लाटका यह तीसरा हिस्सा है।

(६) पश्चिमकी ओर कमालमौला मसजिद है जो राजा भोजकी निशाल नाम से प्रसिद्ध है, यहांपर प्राचीन कालके बहुतसे संस्कृत शिलालेख थे जो मुसलमानोंने नष्ट कर दिये और दीवालोंमें लगवा दिये।

इनके सिवाय हवाबंगला, झिरामहल, लालबाग (आनन्द-विलास) राजा आनन्दराव का बनवाया हाईस्कूल, संस्कृतपाठशाला, और पुरानी इमारतोंके खंडहर देखने योग्य हैं।

सन् १८९१ की मनुष्यगणनाके समय धारमें १८४३० मनुष्य थे। इनमें ६१५ जैनी थे। दि० जैनियोंके खंडेलवाल आदि जातियोंके ३० घरोंकी मनुष्यसंख्या ११३ है। एकशिखरबंदमन्दिर और ३ दर्शनस्थान हैं। एक धर्मशाला और जैनपाठशाला भी है।

व्यापार गल्ला अफीम कपासका अधिक होता है।

धौलपुर।

ग्वालियरसे ४१ मील और झांसीसे १०४ मीलकी दूरीपर धौलपुर (जी. आई. पी.) रेल्वेका स्टेशन है, स्टेशनसे शहर तक सवारी किरायेपर मिलती है।

शहर 'चम्बलनदी' * के बाये किनारेपर बसा है, कहते है 'हुमायूं' बादशाहने चम्बलनदीकी बाढ़से बचानेको उत्तरकी ओर धौलपुर बढ़ाया। इसको ईसाकी ११ वीं सदीके प्रारम्भमें राजा धौलनदेव तोनवारने बसाया था, धौलपुरका राजवंश जाट है।

देखने योग्यस्थान ये हैं:-

* इसका पुराना नाम चर्मण्वती है।

(१) धौलपुरसे लगभग ५ मीलकी दूरीपर रेल्वेका चम्बलनदीका 'पुल' कहते हैं इस पुलके बनाने में रेल्वे कम्पनीका ३२७१०३५) रुपया खर्च पड़ा था।

(२) धौलपुरनरेशके सुन्दर 'महल' और राना 'कीर्त्तिसिंहके' बनवायें हुये महल,

(३) धौलपुरसे २ मीलकी दूरीपर आधमील लम्बा 'मचकुंद' नामक तालाब है, इसमें छोटे २ टापू (द्वीप) हैं, जिनपर मकान बने हैं। तालाबके किनारेपर ११४ मन्दिर बने है। यहांपर कार्तिक सर्दपूर्णिमा नामक मेला १५ दिन रहता है।

(४) एक 'पक्कीसमय' जो कि 'अकबरबादशाहके' समयकी बनी हुई है।

(५) कई सुन्दर सुन्दर 'मसजिदें' और 'मकबरे' कहते हैं, इनको अकबर बादशाहके सेनापति 'सादिक़खां' ने बनवाये थे।

(६) शहरसे उत्तरकी ओर जाजऊ वा सराय जाजऊतंगन नदीके बायें किनारेपर बसता है, यहां सन् १७०७ई० में बहादुरशाह (औरंगजेबके पुत्र) ने 'आजिमशाहको' हराकर उसकी गादी लेली थी, इस संग्रामको 'धौलपुरकासंग्राम' कहते है। यहांकी जमीन उपजाऊ है, व्यापार हर तरहका होता है, परन्तु गल्लेका व्यापार अधिक होता है।

धौलपुरमें दि० जैनियोंके खंडेलवाल अग्रवाल जैसवाल और श्रीमालोंके ९ घरोंकी मनुष्यसंख्या ३० है। एक चैत्यालय भी है, धर्मशास्त्र ४० है।

नरसिंहगढ़।

राजपूताना–मालवा रेलवे लेनमें 'सिहोर' स्टेशनसे कुछ दूरीपर शहर 'नरसिंहगढ़' खास इसी नामकी रियासतकी राजधानी है। स्टेशनसे नरसिंहगढ़तक रास्ता अच्छा है। सिहोर स्टेशनपर सवारी हरसमय किरायेपर मिलती है।

इस शहरको इसी रियासतके स्थापक राजा 'परशुरामने' बसाया था, तीनों ओर पहाड़ीसे घिरा हुआ है। जब यह नगर बसाया गया तब यहांपर दिगम्बर जैनियोंकी बड़ी भारी आबादी थी, पर इस समय सिर्फ ६ खंडेलवालोंके गृह जिनकी २२ मनुष्यसंख्या है, और एक चैत्यालय है।

किलेमें दरबारहाल, कलिकाचौक, रावला, और नया राजमहल देखने योग्य हैं।

यहांसे करीब २४ मील आग्रा–बम्बई रास्तेपर 'नेवजनदी' के किनारे एक छोटासा 'पचोर' नामक ग्राम है, यहां खोदनेसे सहस्रों जैन प्रतिमाएँ मिलती है। कहते हैं कि प्राचीन काल में इसका नाम 'पारानगर' था, और जैनियोंकी यात्राका स्थान था इस समय गोलालारोंके सिर्फ २ गृहोंमें ६ आदमी हैं।

नवानगर (ब्यावर)

अजमेरसे ३३ मीलकी दूरीपर ब्यावर बड़ा स्टेशन है, ब्यावर अजमेर के मेरवाड़ा विभागमें पत्थरकी शहरपनाह (दीवार) के भीतर व्यापारी कस्बा है, यहां पर कई मिलें (कल कारखाने) है। सन् १८३५ ई० में मेरवाड़ाके कमिश्नर कर्नल 'डिक्सनने' इसको बसाया था। यहांकी मिलोंमें हरतरहका सूती कपड़ा तैयार होता है, और बाहर भेजा जाता है, लोहेकी चीजें भी अच्छी बनती है।

यहांपर खंडेलवाल अग्रवाल पल्लीवालके ११८ घरोंकी मनुष्यसंख्या ४३१ है। २ शिखरबंद मन्दिर और ५ दर्शनस्थान है। जैनसभा और जैनपाठशाला भी है। शेठ चम्पालाल रामस्वरूपजी प्रसिद्ध व्यापारी है, आपकी कई शहरोंमें दुकानें है। आपकी नशियांमें यात्री ठहराये जाते हैं।

नागौर।

जोधपुर रियासतमें नागौर सबसे बड़ा कस्बा राजपूताना मालवा रेलवेका स्टेशन है पहले बड़ा शहर होगा वर्त्तमानमें ऊजड़ दशामें है।

यहांके मिट्टीके बने हुये मकान विचित्र है। दि०जैनियोंके खंडेलवालोंके ११४ घरोंकी मनुष्यसंख्या ३२६ है, दो शिखरबंद मन्दिर और एक नशियां बस्तीके बाहिर है, नशियांही में लोगोंको ठहरनेको जगह दी जाती है, और ८ दर्शनस्थान भी हैं। यहांके भट्टारकके आधीन एक बड़ा 'शास्त्रभंडार' है। तेरापंथ और बीसपंथके झगड़ेने लोगों के हृदयमें फूटका बीज बो दिया है। व्यापार हरतरहका होता है।

प्रतापगढ़।

यह नगर राजपूताना-मालवा रेलवे लेनमें मन्दसोर स्टेशनसे करीब २९ मीलकी दूरीपर प्रतापगढ़ रियासतका राजधानी है। मन्दसोर स्टेशनसे यहां तक पक्की सड़क है। और बैलगाड़ी घोड़ा आदि सवारी किरायेपर मिलती है।

संवत् १६९८ ई० तक यह छोटासा ग्राम था और इसको 'डोडेरिया' कहते थे। उसी सालमें रावत 'प्रतापसिंहने' इसको परकोटासे घिरवाया और इसका नाम प्रतापगढ़ रखकर अपनी राजधानी बनाई तबसे इसकी उन्नति बराबर हो रही है।

इस समय यहांकी मनुष्यसंख्या करीब १०००० है, जिसमें दिगम्बर जैनियोंके ३५० घर और इनकी मनुष्यसंख्या १५४३ है। शिखरबन्दमन्दिर ९ और २७

चैत्यालय है। प्रायः सबही मन्दिरोंमें प्रतिबिम्बें बहुत ही मनोज्ञ हैं, इनमें दशा नरसिंहपुरा भाइयोंके मन्दिरमें श्री मूलनायक आदिनाथस्वामीकी प्रतिमा पद्मासन दो फुट अवगाहनाकी अत्यन्त मनोहर और वीतरागछविधारी विराजमान है। मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षाल प्रतिदिन होती है। परन्तु यहांके जैनी भाईयोंमें आपसमें तेरापंथी और बीसपंथोंके कारण फूट फैली हुई है।

देखने योग्यस्थान सरकारी 'राजमहलके' सिवाय कोई चीज नहीं है। यहांका मुख्य व्यापार गल्ला, अफीम, और घी आदिका होता है।

बजरंगगढ़ (जै—नगर)

(अतिशयक्षेत्र)

ग्वालियर रियासतके 'ईशागढ़' जिलेमें एक छोटा प्राचीन और रमणीय कस्बा है, निकटवर्त्ती स्टेशन 'गुना' है। यहांपर 'बजरंग' (हनुमान) की बड़ी भारी मूर्त्ति होनेसे इसका नाम बजरंगगढ़ प्रसिद्ध हुआ। प्राचीन कालमें यहां अहीर लोगोंका राज्य था, और पुराना नाम 'झरकौन' था। किला जो बस्तीसे २ फर्लांगकी दूरीपर आग्नेय दिशामें खंडितावस्था में है। पहिले किलेमें बँस्ती थी और बाजार भी भरता था। परंतु जब महाराज 'जैसिंहने' किलेसे थोड़ी दूर नई बस्ती बसाई और वर्त्तमान बस्तीका अपने नाममे अर्थात् 'जैनगर' रक्खा।

पहिले शहरके चारों ओर परकोटा था जिसमें १० दरवाजे थे, जो संवत् १९१४ अर्थात् बलवेके समयसे गिरा दिये गये।

बजरंगगढ़में परवार श्रीमालके ५१ घरोंकी मनुष्यसंख्या २४० है। ३ शिखरबंद 'मन्दिर' और ३ 'दर्शनस्थान' हैं। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र १४६ है। 'जैनसभा' 'पाठशाला' और बड़े मन्दिरमें 'धर्मशाला' है।

कहते हैं संवत् १९४३ में बाजारके मन्दिरकी प्रतिष्ठाके जन्म कल्याणकके समय अन्य धर्मियों अर्थात् वैष्णवोंने प्रतिष्ठामें विघ्न डाला और बलवा करके मन्दिरकी २७ प्रतिमाएँ खंडित करके 'पार्वतीनदी' में सिरा (डाल) दीं। और बादमें गुफाके मन्दिरमें अर्थात् जहां अरहनाथ कुन्थुनाथकी संवत् १२३६ की प्रतिमाएँ खड्गासन हैं। वहां प्रतिमाओंको खंडितकरने जाते थे कि इतनेमें अंगारोंकी बरसा और धुआं अधिकतासे हुआ। अन्य धर्मीलोग चकित हो गये, और लाचार होकर ठहर गये। इतनेमें जैनी भाइयोंने पकड़कर यथोचित सन्मान किया, और मुकद्दमा चलाया,

ग्वालियर नरेशने यथोचित दंड दिया। वल्वा करनेवालों में से कई आदमी आजकल मौजूद हैं, और यह हाल सुनाते हैं।

लोग कहते हैं कि कभी कभी प्रतिमाओंके बाल्यावस्था आदि दो तीन अवस्थाओं मे दर्शन होते हैं। परंतु ये बात सत्य नहीं मालूम होती है। और यह भी कहते हैं कि पूर्वसमयमें कभी कभी नृत्य गायन वादित्रादिका शब्द सुनाई देता था। बड़ामन्दिर 'पाणासाव' का बनवाया है, बाकी मन्दिर पंचलोगोंके बनवाये हुये हैं। भादों सुदी १४ को जिनेन्द्रदेवकी सवारी निकलती है, उस समय आसपास के बहुतसे जैनी एकत्रित होते है।

पूजन प्रक्षालका प्रबंध अच्छा है। भंडारी श्रीयुत 'गनेशरामजी' हैं। दो मन्दिरोंके आपही मालिक हैं।

बड़नगर।

यह शहर रियासत 'ग्वालियर' उज्जैन जिलेमें 'चमला' नदीके किनारे पश्चिमकी ओर बसा हुआ है। राजपूताना-मालवा रेलवेकी खंडवा-अजमेर लेनका स्टेशन है।

प्राचीन कालमें बड़नगर 'बरमालोट' नामक राजपूत राजाओंके आधीन था, पीछे १८ वीं सदीमें महाराजा सेंधियाके हाथमें आया। वि० संवत् १९१७ व १९१८ में 'नौलाई' करके पुकारते थे, पर जब 'जनकोजीराव' दीवान ग्वालियरसे दौड़ेपर पधारे तो आपने इसका नाम नौलाई सुनकर कहा कि सबेरेसे ये नाम लेना अपशकुन है, इस कारण नाम बदलकर बडनगर रख दिया। लोग कहते हैं कि इसको 'नोल' राजाने बसाया था। यहां एक प्राचीन 'किला' भी है। बड़नगरके पास 'बरो' ग्रामसे 'पाठारी' ग्रामतक प्राचीन शहर और तालावके चारों ओर जैनी और हिन्दुओंके मन्दिरोंके खंडहर पाये जाते हैं। इससे अनुमान होता है कि पूर्वकालमें यह बड़ा भारी शहर होगा। बस्तीके बाहिर पश्चिमकी तरफ दिगम्बर जैनियोंका मन्दिर है, इसकी मरम्मत यहांके जैनी भाईयोंने कराई है, चारों ओर अच्छी २ दहलाने (साहघन) है। इसमें जैन, बौद्ध, हिंदू आदिकी प्रतिमाएँ हैं। दीवालों में बहुतसी जैन प्रतिमाएँ भी है। मूलनायक श्रीशान्तिनाथस्वामीकी खड्गासन ३ फीट अवगाहनाकी अति शोभायमान प्रतिमा है। दूसरे प्राचीन वैष्णवोंके मन्दिरकी रचना पाई जाती है, इसमें अच्छे २ कारीगरीके नमूने पाये जाते हैं। इसके चारों ओर कोट बना हुवा था जो अभीतक खंडहर दशामें है। इसके अन्दर बहुतसे मन्दिर थे जिनके निशानात अब भी हैं।

बस्तीमें दिगम्बर जैनियोंके १५० गृह तथा इनकी मनुष्यसंख्या ५०९ है। ३ शिखरबन्द मन्दिर दिगम्बरियोंके हैं, इनमें दर्शन चार जगह हैं। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र करीब ९०० हैं। एक जैन धर्मशाला और जैनपाठशाला भी है। यहां कदीम (सदैव) से जैनी भाई रहते आये हैं, और उन्हींके उद्योगसे बस्तीके चारों तरफ दो दो कोस तक जीवहिंसा नहीं होती है।

यहांपर म्यूनिसिपालटी, दवाखाना, शाला. और सराय बंगला है। रेल्वे स्टेशन नजदीक है, अंग्रेजसरकारकी तरफसे पोस्टआफिस और टेलिग्राफआफिस भी है। व्यापार अफीम, कपड़ा, गल्ला, आदिका विशेष होता है।

बड़वानी।

(सिद्धक्षेत्र बावनागजा)

मालवाप्रान्तके जिला सरदारपुरकी छावनीमें यह नगर बड़वानी रियासतकी राजधानी महू (R. M. R) स्टेशनसे करीब ९० मील है। स्टेशनसे बड़वानी शहर तक सडक पक्की है। सवारी हरवक्त किरायेपर मिलती है। प्राचीन कालमें करीब ४०० वर्ष पूर्व इस नगरमें केवल कुछ मिट्टीकी झोपडियां देखी जाती थीं, समयानुसार इसकी व्यापार आदिमें बढ़ती होनेके कारण अच्छा आबाद हो गया है। प्राचीन कालमें इसका नाम 'सिद्धनगर' था, पीछे बड़वानी नामसे प्रसिद्ध हुआ। यह बात शहरमें जो रंगारा नामक बावड़ी है, उसके लेखसे मालूम होती है। सिद्धनाथका जो पुराना मन्दिर यहांपर है खास जैनियोंका ही था, शैवोंका प्राबल्य होनेके कारण उन्होंने यह मन्दिर अपने आधीन कर लिया और उसमें महादेवकी स्थापना करदी।

इस शहरकी मनुष्यसंख्या इस समय करीब ७००० है, जिसमें दि० जैनियोंके २७ घरोंकी १०९ मनुष्यसंख्या है। एक बड़ाभारी दि० जैन मन्दिर है, जिसमें 'धर्मशास्त्र' अनुमान २०० हैं। और एक 'पाठशाला' भी है तथा दो 'धर्मशालायें' हैं, जिसमें करीब २०० यात्री ठहर सक्ते हैं।

धर्मशालाओंमें एक रियासतकी और दूसरी प्रतावकुँवरबा साहेबके स्मरणार्थ बनवाई हुई है। विक्टोरिया हाईस्कूल, विक्टोरियाबगीचा, स्टेटडिस्पेन्सरी, पोस्टआफिस, राजमहल आदि देखने योग्य हैं। व्यापार हरतरहका होता है, विशेषकर अनाज और अफीमका अधिक होता है।

बड़वानीसे दक्षिणमें थोड़ी दूरीपर 'चूलगिरी' नामक पहाड़ है। यहांसे इन्द्रजीत और कुंभकर्णने मोक्षपद प्राप्त किया है।

'बड्वाणी' वरणयरे दक्षिण भायम्मि 'चूलगिरि' सिहरे।
'इंद्रजीद' 'कुंभयणो' णिव्वाण गया णमो तेसिं॥ निर्वाणकांड

पहाड़पर २२ मन्दिर और एक चैत्यालय है। मूलनायककी चरण पादुका है, तथा १०८ प्रतिमाएँ और हैं। इन मन्दिरोंपर जीर्णोद्धारका वि० संवत् १२२३-१३८०-१५०८ खुदा हुआ है। और प्रतिष्ठाकारक 'नन्दकीर्तिजी' और 'रामचंद्र' मुनिका नाम पाया जाता है। एक मन्दिरमें एक बहुत ऊंची और मनोज्ञ प्राचीन सुन्दर प्रतिमा है। इस प्रतिमाके कारण इस पहाड़को 'बावनगजाजी' भी कहते है।

बड़वानीपर हरसाल ९० वर्षसे पौष सुदि ८ से १५ तक बड़ाभारी मेला भरता है, करीव १५०० यात्री प्रतिवर्ष आते हैं। इस क्षेत्रके प्रबन्धकर्त्ता श्रीयुत 'भीलाजी चांदूलालजी' हैं। पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध अच्छा है।

बयाना।

भरतपुर राज्यान्तर्गत नागदा-मथुरा रेलवे लेनमें बयाना स्टेशन है। ग्राम स्टेशनसे पासही है। इक्का गाड़ी आदि सवारी किरायेपर मिलती है।

यहांपर खंडेलवाल जातिके ४७ घर जिनकी करीब १५० मनुष्यसंख्या है। बयानेमें तीन मन्दिर है, जिनमें एक शिखरबन्द अच्छा बना है। पूजन प्रक्षाल तीनों मन्दिरोंमें योग्य रीतिसे होती है। धर्मग्रंथ तीनों मन्दिरोंके मिलकर करीब १२५ है। पंचायती छोटे मन्दिरमें जैनपाठशाला भी ५ सालसे चल रही है। आगरा निवासी पंडित तुलारामजी छात्रोंको शिक्षा देते हैं।

व्यापार यहांपर सब प्रकारका होता है, परन्तु कपास और जीरेका अधिक होता है। ग्राममें पोस्टआफिस तारआफिस भी हैं।

मुसलमानी इतिहासमें बयानेका बहुत वर्णन पाया जाता है।

बांसवाड़ा।

यह शहर राजपूताना मालवा रेलवे लेनमें रतलाम तथा नामली स्टेशनसे करीव ४५ मीलकी दूरीपर है, राजधानी कागड़े नालेपर वसी हुई है। चारों ओर परकोटेसे घिरा हुआ है। इसको राजा जगमल्लजीने १५३० ई० में वसाया था।

यहांपर दि० जैनियोंके २९ घर तथा ९० मनुष्य हैं, दो शिखरबन्द मन्दिर एक चैत्यालय है।

यहांसे नैऋत्यकी ओर 'कालिंजरा' नामक ग्राम करीव १७ मीलकी दूरीपर 'अनास' नदीके किनारे है, प्राचीनकालमें यह वड़ा भारी शहर था, तव यहांका व्यापार जैनी लोगोंके अधिकारमें था।

कालिंजरामें ४० घर दि० जैनीभाइयोंके और १५० मनुष्य हैं, ४ शिखरबन्द मन्दिर दिगम्बरियोंके हैं, जिनमें एक बड़ा भारी विशाल मन्दिर है, जिसके चारों तरफ ५२ गुमठी बनी हुई हैं, पर ये सब खाली हैं, मन्दिरमें ३ शिलालेख हैं, पर पढ़े नहीं जाते हैं। पूजन दशलाक्षणपर्वमें होती है, ब्राह्मण पुजारी प्रतिदिन प्रक्षाल करता है, प्रबन्ध अच्छा नहीं है।

'अरथूना' नामक ग्राम बांसवाड़ासे १० मीलकी दूरीपर है, यहांपर ईस्वी सन् ११ वीं सदीके बनवाये हुए १०-१२ जैन और हिन्दुओंके मन्दिर खंडित स्थितिमें पड़े हुए है, मन्दिरोंमें खुदाईका काम बहुत अच्छा पाया जाता है, इसका प्राचीन नाम 'उच्छू नगर' (पाटन) था, यह नगर बागड़प्रान्तके पमार राजाओंके खानदानकी राजधानी थी, यहां दि० जैनियोंके ५४ घरोंमें १६५ मनुष्य हैं, एक शिखरबन्द मन्दिर और धर्मशास्त्र १०० हैं। पूजन प्रक्षाल प्रतिदिन होती है । बांसवाड़ामें देखने लायक सरकारी राजमहलके सिवाय और कुछ नहीं है। व्यापार यहांपर गल्ला आदिका होता है।

बिहार (नरसिंहगढ़)

रियासत नरसिंहगढ़से करीब १० मील और रेलवे स्टेशन सिहोर-ब्यावरा (G. I. P. R.) से करीब २ मीलपर बाकपुर और बिहारके बीचमें एक बड़ा भारी दिगम्बर जैनमन्दिर प्राचीन खंडित स्थितिमें है, जिसमें एक प्रतिमा अति मनोज्ञ विराजमान है । दोनों ग्रामोंमें दिगम्बरियोंकी बस्तीके अभावसे और भयंकर जंगलमें होनेसे पूजन प्रक्षाल नहीं होता है।

कहते हैं कि यह प्राचीन कालमें बड़ा भारी नगर 'भद्रावती' नामसे प्रसिद्ध था और सोलंकी और खीची खानदानके आधीन था । जैन मन्दिरोंके खंडहर और तीर्थकरोंकी प्रतिमाएँ बहुतसी मिलती हैं। यहांपर एक छोटीसी पहाड़ीपर एक गुफामें खुदी हुई करीब ८॥ फुट ऊंची श्रीआदिनाथस्वामीकी प्रतिमा शिर रहित विराजमान है, आसनमें बैलका चिन्ह साफ दिखलाई देता है।

उपर्युक्त वर्णनसे मालूम होता है कि यह प्राचीन क्षेत्र जैनियोंका प्रसिद्ध स्थान होगा । अब भी प्रतिवर्ष वैशाख वदी ९ से शुक्ला ९ तक मेला भरता है ।

बीकानेर ।

फलेरा जंकशनसे १९ मील पश्चिमोत्तर राजपूताना-मालवा ब्रेंच (शाखा) का आखिरी स्टेशन कुचामनरोड है, इससे ७३ मील पश्चिममें जोधपुर बीकानेर रेलवेपर भर्त्तारोड जंकशन है, भर्त्तारोडसे १०३ मील उत्तरकी ओर बीकानेरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनपर सवारी हर तरहकी मिलती है। शहरमें कई धर्मशालाएँ है ।

इस शहरको राठौरवंशी राजा **बीकारावने** सन् १४३९ ई० में बसाया था।

बीकानेर राजपूतानेमें प्रसिद्ध देशी रजवाड़ेकी राजधानी, मरुभूमि (रेतीली जमीन) में है, यह शहर पत्थरके साड़ेतीन मील लम्बे परकोटेसे घिरा है। जिसमें ९ फाटक है, ३ बगलोंपर खाई है, शहरमें बहुतेरे सुन्दर मकान हैं, प्रसिद्ध स्थान ये है:-

बीकानेरका किला जिसमें महाराजका महल है, महाराजका महल पुराने ढंगका देखने योग्य है। शहरके कोटफाटकसे ३०० गज दूर है, किलेके चारों ओर २५ फुट गहरी खाई है, राजा **रायसिंहने** सन् १५८८ ई० में बनवाई थी।

एक छोटा किला शहरकी दीवारके बाहिर बीकाराव का बनवाया हुआ है, इसके भीतर बीकाराव और उनके उत्तराधिकारियोंके अनेक समाधि मन्दिर हैं।

बीकानेरमें ४१ कूप (कुआ) हैं, शहरके बाहर अर्कसागर नामक कूप सबसे अच्छा है, बीकानेरके कुए ३०० से ४०० फुटतक गहरे हैं। यहां वर्षा बहुत कम होती है, लोग बर्षातका पानी कुंडोंमें भर लेते है, और यही काममें लाते हैं। बीकानेर राजभरमें एक भी नदी नहीं है। मरुभूमिके कारण ऊंटकी सवारीका अधिक व्यवहार होता है।

शहरसे ३ मील पूर्व बीकानेरका तालाब है, तालाबके चारों ओर १२ राजाओंके गुम्बजदार समाधिमन्दिर है, तालाबसे थोड़ी दूर एक महल है।

डूंगरसिंह-कालेजमें अंग्रेजी-पढ़ाई जाती है। बीकानेरकी मनुष्य संख्या ५६२५२ है, यहांपर पुरुषोंसे औरतोंकी संख्या कुछ अधिक है, कारण बीकानेरके लोग प्रसिद्ध व्यापारी हैं, और व्यापारके लिये ब्रह्मा चीन जापान तक जाते है, हिन्दुस्थानके बड़े २ शहरोंमें बीकानेरके व्यापारियोंका संख्या अधिक है। मनुष्यसंख्याके अनुसार राजपूतानेमें चौथे नम्बरका शहर है।

यहांपर दि० जैनियोंके सिर्फ ४ घर है, इनकी मनुष्य संख्या २० है, एक चैत्यालय भी ओसवालोंकी शामिलातमें है। श्वेताम्बरियोंकी मनुष्य-संख्या यहां अधिक है, यहांके श्वे० जैनी बड़े धनवान् हैं।

व्यापार इन चीजोंका अधिक होता है, ऊन, सोड़ा, सज्जी, गल्ला, चमड़ेकी मसक, हाथीदांतकी चूड़ियां यहांसे बाहर भेजी जाती है। यहांके पालतू पशु दूसरे प्रदेशोंसे हृष्टपुष्ट और अधिक दूध देनेवाले होते है। मतीरा काचरी और ककड़ी प्रसिद्ध है। बीकानेरके वर्तमान नरेश, प्रजापालक, विद्याप्रेमी, वीर, और हिन्दीहितैषी है।

बीजोलिया-पार्श्वनाथ।

(अतिशयक्षेत्र)



रियासत उदयपुर (मेवाड़) में रतलाम नीमच रेल्वे लेनमें भीलवाड़ा स्टेशनसे ३२ कोस पूर्व और नीमचसे ३० कोस उत्तरमें बीजोलिया रियासतका मुख्यनगर है। स्टेशनसे बीजोलिया तक ऊँट व घोड़ाकी सवारी पर जाना होता है।

ग्रामके समीपही आग्नेय दिशामें श्रीमत्पार्श्वनाथस्वामीका अतिशयक्षेत्र बहुत प्राचीन और रमणीय स्थानमें है। सैकड़ों स्वाभाविक चट्टानें बनीं हुई हैं। ऐसा मालूम होता है कि शायद् भगवानका विहार होते समय समवसरण इस स्थानपर आया होगा, यहांपर पत्थरकी बड़ी २ चट्टानोंपर दो भारी शिलालेख हैं।

आतेही दरवाजेके साम्हने जो शिखरबन्द मन्दिर है, उसमें शिखराकार पाषाणके मन्दिरके अन्दर स्थापित है। जिसके बीचमें एक ताक है, उसकी महरावपर २३ प्रतिमाएँ कई तीर्थंकरोंकी खुदी हुई हैं। परन्तु ताक खाली है, इस शिखरके पीछे कुछ आकार बेदीका बना हुआ है, जिसमें प्रतिमा स्थापित होनेके निशान पाये जाते हैं। चारों तरफ दीवारपर मुनीश्वरोंकी प्रतिमाएँ खुदी है, और एक लकीरमें कुछ लिखा भी है, पर पढ़ा नहीं जाता। मन्दिरसे जो सभामण्डप टूटा हुआ है, वह करीब ३६ फुट लम्बा और २५ फुट चौड़ा है, इसमें १४ खम्भें जुदे लगे हैं, मण्डपके देखनेसे प्राचीनता मालूम पड़ती है। मन्दिरकी चौखटमें दाहिनी बाजूपर ऐसा लिखा हुआ है "साधु महीधर पुत्र मेवा रघो प्रणमति नित्यम् सम्बत् १२२६ वैसाख कृष्णा ११" खुदा है। मन्दिरके चारों तरफ दुहरी गुम्बजदार चार गुमठियां बनी हैं, इनके भीतर भीतोंपर मुनीश्वरोंकी प्रतिमाओंके निशान हैं। मन्दिरके साम्हने दो मानस्तम्भ है, पहिला दाहिने हाथका जमीनसे बाहर निकला हुआ ६ फुट ऊंचा है। ऊपरके भागमें चारप्रतिमाएँ श्रीचंद्रप्रभु, श्रीनेमिनाथ, श्रीवर्द्धमानस्वामी, और श्रीमत्पार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमाएँ खड्गासन और श्रीपार्श्वनाथस्वामीके नीचे दो मुनीश्वरोंकी प्रतिमाएँ खुदी हैं, जिनके बीचमें शास्त्र बाँचनेकी रिहल (चौकी) का आकार बना है। पहिले स्तम्भमें भट्टारक श्रीपद्मनंदीदेव और दूसरेमें भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेव ऐसा लिखा है। दोनों नामोंके बीचमें दो कमंडलु बने है। कमंडलुके नीचे चरण बने हैं, बाकी तीन तरफ खड्गासन मुनीश्वरोंकी ३ प्रतिमाएँ खुदी हैं। इन चरणोंके नीचे एक लेख संस्कृत भाषामें साफ २ लिखा हैं जिसका कुछ भाग

जमीनके अन्दर दवा है । शेषमें श्रीकुन्दकुन्दाचार्यकी पट्टावलीमें श्रीधरमचंद्र गणीका व्यवरण लिखा हुआ है ।

दूसरा मानस्तम्भ जमीनसे ५ फुट बाहर ऊचा है, जिसमे चार प्रतिमाएँ श्रीपार्श्वनाथ, श्रीवर्धमानस्वामी, श्रीनेमिनाथस्वामी, श्रीसम्भवनाथस्वामीकी हैं । चिन्ह साफ २ मालूम नहीं देते । प्रतिमाओंके नीचे चारों तरफ मुनीश्वरोंकी प्रतिमाएँ खुदी हैं । इनमेंसे दो शास्त्रस्वाध्याय करते समयकी और खड्गासन है । श्रीमत्पार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमाके नीचे तथा श्रीमद्वर्धमानस्वामीकी मूर्तिके नीचे दो श्लोक अस्पष्ट पाये जाते हैं । मानस्तम्भके साम्हने थोड़ीही दूरीपर एक नवचौकी नामक इमारत है, इसमें १६ खम्भे लगे है, और नौ चौक जुदे २ मालूम होते हैं । मन्दिरकी दक्षिण बाजूमें वड़ीभारी वाटिका थी, पर इस समय इसी जगहमें एक बावड़ी और खजूरके वृक्ष है । उत्तर दिशामें एक कुंड ६० फुट लम्बा और ६० फुट चौड़ा तथा २१ फुट गहरा चौकोर बना है । उसी कुंडमें से एक बावड़ी निकली है, जिसका दरवाजा कुंडमेंसे है । इस कुंडकी उत्तरदिशामें एक विचित्र शिलालेख ११॥ फुट लंबा और ३॥ फीट चौड़ा 'पृथ्वीराजरासाकी वंशावलीका' संस्कृतभाषामें है । इसको सुरंग लगाकर किसीने फोड़नेका प्रयत्नकिया था परन्तु मधुमक्खियोंके उपद्रवसे वह निष्फल हो गयाँ । जिसके चिन्ह अब भी पाये जाते हैं ।

दूसरा शिलालेख १५ फीट लम्बा और ५ फुट चौड़ा सिद्धसूरी रचित उत्तमशिखरपुराण संस्कृत भाषामें ५२ पंक्तियोंमें साफ २ खुदा हुआ पढ़ा जाता है । उसमें जो श्लोक साफ २ पढ़े जाते है वह ये हैं:–

"अज्ञान तिमिरान्धानां त्रैलोक्ये सर्वजन्तुनाम् । नेत्रमुन्मीलितं येन तं वन्दे विशदं प्रभुम् ॥२॥
कलौ युगे महाघोरे नराणामल्पबुद्धिनाम् । येन मुक्तिपथि ...सुतीर्थ प्रकटीकृतम् ॥ ३ ॥
निगृहीतेन्द्रियग्रामो महावीरो महामतिः । तस्मिन् समागमद्देवः प्रभुः केनापि हेतुना ॥१०॥
तपःकामाग्रणीर्युक्तो ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः । .... ॥ ११ ॥

वैडूर्यचामीकरचारु चित्रं, प्रशासितं पुष्पितपादपंच ।
विचित्रमाश्चर्यमयं च दृष्ट्वा, सगोतमस्तं गिरिमारुरोह ॥ ३ ॥

इति सिद्धसूरिविरचितः शिखरपुराणे प्रथमः सर्गः ।

अथ मत्वोपरिगिरं ...द्वारत्या तथां सुतान् । सक्रिप्रंक्तनमस्कृत्य प्रहृष्टः सन्यवर्त्तत ॥३४॥
आगत्य पर्वताम्पाशे वहवस्तत्र तापसाः । प्रतिबोध्य जगद्वन्द्यं वन्दनाय प्रवर्तते ॥३५॥"

इन सब चिन्होंसे मालूम होता है कि यहभूमि पवित्र और तपश्चरणकी होनेमें कुछ संशय नहीं है । पं० प्रवर आशाधरजी सागारधर्मामृत प्रतिष्ठापाठ अनेक ग्रंथोंके रचयिता बीजोलियाके पास मांडलगढ़के रहने वाले ही थे । इन दोनों शिलालेखोंपर छाया कराके माजी नरेश हुजूररावकृष्णदासने रक्षण किया है ।

यह ग्राम अनुमान ७०० घरकी छोटीसी बस्ती है, जिसमें दिगम्बरियों के ४६ गृह आबाद हैं, और मनुष्यसंख्या १८६ है । बस्तीके बीचमें राजमहलके पास दिगम्बर जैनमन्दिर है, जिसमें श्रीचंद्रप्रभु महाराजकी प्रतिमा स्फटिकमणिकी एक फुट अवगाहनाकी पद्मासन पानीपत निवासी सीकरचंद बागड़ा बघेरवालसे प्रतिष्ठित हुई मनोज्ञ बिराजमान है । और ३ प्रतिमा ४ फुट अवगाहनाकी श्रीमत्पार्श्वनाथ श्रीवर्द्धमानस्वामी और श्रीऋषभदेव तीनतीर्थंकरोंकी पद्मासन जयपुरी पाषाणकी अति मनोज्ञ है । इस मन्दिरमें प्रतिदिन शास्त्रसभा होती है । यहां जैनपाठशाला भी है ।

बस्तीके बाहर पूर्व दिशामें ३ फर्लांगकी दूरीपर बड़ा भारी आलीसान (विशाल) ४ मन्दिर महादेवके लक्षोंरुपयोंके लागतके बने हैं । जिनके बीचमें एक मदागन नामक कुंड अतिशोभायमान ७० फुटके करीब लम्बा चौड़ा सं० १३२६ का बना हुआ देखने योग्य है ।

व्यापार यहांपर गल्ला, अफीम, कपास आदिका विशेष होता है ।

बूंदी ।

राजपूताना प्रान्तमें कोटासे २० मील पश्चिमोत्तर पहाड़ियोंके तंगरास्तेमें बूंदी बसी है । कोटा स्टेशन (R M. R.) से बूंदीतक सवारी हर समय मिलती है ।

बूंदी कोटा झालावाड़ तीनों रजवाड़ोंको 'हाड़ोती' कहते हैं । बूंदीका राजवंश चौहान राजपूतोंकी हाड़ा जाति है, जिन्होंने कई सदियों तक इस देशपर अधिकार रक्खा; बूंदीके नरेशोंको 'महारावराजाकी' पदवी है । बूंदीमें कई हाड़ाजातिके राजपूत वीर हुये हैं, जिनकी कथाएँ इतिहास प्रसिद्ध हैं ।

पहाड़ीकी खड़ी बगलपर राजमहल बना हुआ है, नीची ऊंची भूमिपर सड़क और मकान बने है । महलके नीचे अस्तबलके आंगन और दूसरे आफिसोंकी बड़ी पंक्ति है, जिससे ऊपर राजसम्बन्धी मकान हैं, इनसे ऊपर कचहरीकी खानगी कोठियां है, सबसे ऊपर पहाड़ी किला इतिहास प्रसिद्ध है ।

शहर चारों ओर कोटसे घिरा हुआ है, जिसमें चार फाटक है। पश्चिममें 'महलफाटक' दक्षिणमें 'चौगानफाटक' पूर्वमें 'मीनाफाटक' और पूर्वोत्तर 'जाटसागर फाटक' है।

किलेकी पहाड़ीपर अन्य धार्मियोंका बड़ामन्दिर, और दक्षिणकी शहरतलीमें एक दूसरा मन्दिर है। किलेकी पहाड़ीकी एक शिखरपर एक 'छतरी' है, जिसके उत्तर 'फूलबाग' इससे दक्षिण, शहरसे २ मीलकी दूरीपर 'नयाबाग' है। जाटसागरके उत्तर किनारेपर कई सुन्दर बाग हैं।

बूंदीमें खैराती (मुफ्ती) 'अस्पताल' एक 'अंग्रेजीस्कूल' एक 'पोष्टआफिस' और एक 'टकशाल' (जिसमें सोना चांदी और तांबेके सिके ढाले जाते हैं,) हैं।

यहां दि० जैनियोंके खंडेलवाल श्रीमाल अग्रवाल बघेरवाल आदि जातियोंके २०५ घरोंकी ६११ मनुष्यसंख्या है। १० शिखरबंद मन्दिर एक चैत्यालय और एक नशियां नगरके बाहिर है। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र अनुमान ७७९ हैं। एक जैनपाठशाला भी है, पाठशालामें, पढ़ाईका प्रबंध ठीक नहीं है।

कपास अनाज और अफीमका व्यापार अधिक होता है।

बैनेड़ा।

(अतिशयक्षेत्र)

इन्दौर रियासतकी देपालपुर तहसील (तालुका) में यह अतिशयक्षेत्र है, निकटवर्त्ती राजपूताना मालवाका रेल्वेस्टेशन 'अजनोद' है।

यहांपर २ उतंग अतिमनोज्ञ जिनमन्दिर एक चैत्यालय और ४ दर्शनस्थान है। धर्मशाला बहुत छोटी है अनुमान ३०-४० यात्री ठहर सकते है।

मन्दिरोमे धर्मशास्त्र १९ है। यहांपर प्रति वर्ष चैत्र सुदी ११ से १९ तक मेला भरता है, यात्री यहांपर वर्ष भरमें अनुमान ढाई हजार आते हैं। बनैड़ामें ६ खंडेलवालोंके घरोंकी मनुष्यसंख्या १६ है।

भरतपुर।

राजपूतानामें भरतपुर वड़ा शहर है। यह सुन्दर शहर राजपूताना मालवा रेल्वे लेनपर व नागदा मथुरा रेलेका जंकशन है।

इस शहरका नाम 'भरतराजाके' नामपर रक्खा गया है। कहते हैं कि यह शहर कृष्णजीकी हिफाजतमें है। जिनकी पूजा यहां बिहारीजीके नामसे की जाती है। चूडामणि जाटसे राजवंश नियत हुआ। यहांका किला सुप्रसिद्ध है, इसको भरतपुरके राजा बदनसिंहने सन् १७३३ ई० में बनवाया था। १८०५ और १८२७ में लॉर्डलेक और लॉर्ड कोम्बरमिअरने इसे घेरा था किलेकी खाई बहुत लम्बी चौड़ी है, जिसमें बारहों महिने पानी करीब १६–१७ फुट भराही रहता है। अलीगढ़, मथुरा, अलवर आदि भी भरतपुर राज्यमें थे, बाद अंग्रेजोंके साथ लडाई होनेसे ये जुदे २ हो गये।

यहांके 'सूरजमल्ल' जाट बहुत मख्यात हुये हैं। युद्धमें जाटोंने अच्छी वीरता दिखलाई थी। दि० जैनियोंके ११२ घर और २९५ मनुष्य हैं। मन्दिर एक शिखरबन्द और दो चैत्यालयनुमा और दो चैत्यालय है। इनमें बड़ा मन्दिर दरवाजेके पास है। और एक चैत्यालय ट्रन्सकोर्ट छावनी मडोली रियासत फौजके अन्दर है, बाकी सब शहरमें है। यहांके कई जैनी भाई राजमान हैं परन्तु धर्मप्रेम कम है।

भरतपुरमें चूड़ियां अच्छी बनती हैं, वस्ती तमाम उजाड़ दशामें हैं। राजमहल बाग, कचहरी, रूपसागरझील, हाईस्कूल, और किला देखने योग्य है। भरतपुरसे १९ मील डीग है, यहांका 'किला' और सूर्यमलका बनवाया हुआ 'राजमहल' देखने योग्य है।

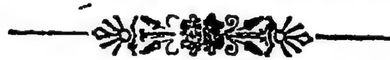
भानपुरा।

रियासत इंदौरमें (R M R) लेनपर नीमच स्टेशनसे करीब ५८ मील तथा झालरापाटन शहरसे १९ मीलके फासलेपर 'रेवानदीके' किनारेपर भानपुर वसा हुआ है। कहते हैं कि इसको 'भाना' नामक भिल्लने बनाया था। ईसाकी १४ वीं सदीमें यह नगर चन्द्रावतके राजाओंके आधीन था, पीछे १८ वीं सदीमें यह पेशवाके सूबेदार महाराजा 'मल्हारराव होलकर' के हाथ आया, और तबसे यह उनके खानदानमें ही है।

प्राचीनकालसे दिगम्बरियोंकी वस्ती है। यहांके दिगम्बरी प्रायः सबही व्यापारी हैं। घर ९६ तथा मनुष्यसंख्या ३५१ है। दिगम्बरियोके ८ मन्दिर है, ७ वस्तीमें और एक वस्तीके बाहर करीब डेढ़ मीलपर है। यह करीब ३०० वर्षका बना हुआ मन्दिर। पूजन प्रक्षालका इन्तजाम बिलकुल नहीं है। और भी अन्यमतियोंके ५। ६ अच्छे २ मन्दिर है, बीजक शिलालेख कुछ नहीं है। वस्तीके बड़े मन्दिरमें चमेलीके झाड़के पास एक शिलालेख खुदा हुआ है परन्तु इसके अक्षर बिलकुल घिस गये हैं।

कहते हैं कि यह मन्दिरभी ३०० वर्षका बना हुआ है। एक शिलालेख छतरी मन्दिरके दाहिने भागपर है जिसकी नकल नीचे दी है।

छतरी मन्दिरका शिलालेख।



"ॐ नमः सिद्धेभ्यः संवत् १७८७ वर्षे कार्तिकसुदि १५ शुक्रे श्रीभानपुरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे........कारणे कुन्दकुन्दाचार्या.........श्री रतनचंद्र त० भ० हर्षचंद्र त० भ० शुभचंद्र त० भ० अमरचंद्र त० भ० श्रीरतनचंद्र.... अमरचंद्र... श्रीदेवचंद्र तस्य भ्राता. .... श्रीसंघैःसह... श्रीरतनचंद्र रुपहची ...... श्री महावीर प्रतिमा पादुका विराजमान करी........वसुदेव चंद्रजी..................."

बस्तीके बड़े मन्दिरमें भट्टारकके जमा किये हुए ५०० के करीब धर्मग्रंथ मौजूद हैं। बड़े मन्दिरके पूजनप्रक्षालके लिये सरकारकी तरफ़से ७९ बीघा जमीन और ४०) रुपया सालयाना मिलता है। यहांपर हूमड़ और बघैरवाल भाइयोंमें फूट होनेसे प्रबन्ध ठीक २ नहीं होता है।

इस नगरमें राजमहलके अन्दर भूतपूर्व सूबेदार 'जसवंतराव होलकर' की मूर्ति संगमर्मरकी बनी हुई देखने योग्य है।

पैदावारी यहांपर गल्ला, अफीम, पानकी बहुत होती है, विशेषकर नारंगीके लिये यह शहर मशहूर है।

भेलसा।

ग्वालियर रि० में जी. आई. पी. रेल्वेके बीना जक्शनसे २८ मील दक्षिणकी ओर बेतवा नदीके किनारेपर है।

बीनासे भेलसा तकके प्रान्तमें हरिन बहुत हैं।

यह जगह बौद्धोंके स्तूपोंके लिये प्रसिद्ध है, बौद्धस्तूप अधिक फैले हुए हैं, कदाचित हिन्दुस्थानमें सबसे उत्तम बौद्धस्तूपोंका समूह भेलसाके आसपास और 'सांची' में है। भेलसाके बौद्धस्तूप ६९ के अनुमान है, और ये १७ मील लम्बाई और १० मीलकी चौड़ाईमें फैले हुए है।

भेलसा स्टेशनसे ५ मील 'सांचीका' स्टेशन है, सांचीमें ११ बौद्धस्तूपोंका एक झुंड है, जिनमें बड़ा स्तूप प्रधान है।

बड़ा स्तूप गुम्बजके आकारका है, इसका व्यास १०६ फुट और ऊंचाई ४२ फुट है। सिरेपर ३४ फुट व्यासका एक चिपटा स्थान है। १४ फुट ऊंचे और १२० फुट व्यासके ढालुए पुस्तेपर गुम्बज हैं। स्तूपमें भीतर ईंटें और बाहर पत्थर लगे हैं। स्तूपकी बगलोंमें गोलाकर दीवार है, जिसमें चारों ओर ४ फाटक वा तोरन हैं, कहते हैं कि कई स्तूप तो बौद्धसम्राट 'अशोकके' जमानेके हैं, सांचीका बड़ास्तूप ईस्वी सन्‌से २५० वर्ष पहिलेका, और अन्य स्तूप पहिली सदी तकके बने हुए होंगे।

सांचीके स्तूपोंके सिवाय इससे ५ मीलकी दूरीपर 'सोनाराके' पास ८ स्तूपोंका झुंड है, इनमेंसे २ तो समचतुर्भज चौगान में है, इससे ३ मील के अन्तरपर 'सधाराके' पास १०१ फुट व्यासका एक स्तूप है, एक स्तूपके भीतरसे जिसका व्यास २४ फुट है, दो डब्बोंमें 'सारिपुत्र' और 'महामोगलायनकी' हड्डियां निकली हैं। ये दोनों महात्मा 'बुद्धदेवके' शिष्य थे, सारिपुत्रका देहांत बुद्धकी वर्तमानता (मौजूदगी) में हो गया और मोगलायन बुद्धके निर्वाण (मोक्ष) के पीछे।

सांचीसे ७ मील भोजपुरके पास ३५ स्तूप है। सबसे बड़े स्तूपका व्यास ६६ फुट है।

भोजपुरसे ५ मील पश्चिममें 'अंधारे' के पास ३ छोटे उत्तम स्तूपोंका झुंड है, जो ई० सन् से २२० पहिले और पहली सदीके बीचके बने हुए हैं।

सन् १८८३ ई० में हिन्दुस्तानकी गवर्नमेंटकी आज्ञासे स्तूपोंके प्रधान झुंडोंपर अधिक ध्यान दिया, गिरे हुए फाटक खड़े किये गये, और स्तूपोंकी मरम्मत हुई।

कई जैनीभाइयोंने निश्चित किया है कि भेलसा (भद्दलपुर) में ही तीर्थङ्करका जन्म कल्याणक हुआ था इस कारण यह अतिशयक्षेत्र है। भेलसा में दि० जैनियोंके परवार गोलालारे खंडेलवाल जैसवाल आदिके ९३ घरोंकी ३४८ मनुष्यसंख्या है।

एक बड़ा भारी शिखरबंद मन्दिर है, मन्दिरकी रथप्रतिष्ठाके समय अन्यधर्मियोंने बहुत विघ्न किये थे, तो भी जैनियों ने बड़े भारी साहस से रथ चलाया था।

इसके सिवाय २ चैत्यालय और ७ जगह जिनदेवके दर्शनस्थान हैं, मन्दिरमें धर्मशास्त्र २१६ हैं। और एक धर्मशाला, और एक जैनपाठशाला भी है।

भेलसामें गेहूं घी अफीमका व्यापार अधिक होता है।

भोपाल।

मध्यभारतमें भोपाल जी० आई० पी० रेल्वेका स्टेशन है। एक प्रसिद्ध झीलके उत्तरी किनारेपर भोपालराज्यकी राजधानी भोपालशहर बसा है। राजा 'भोजने' इस शहरको ईसाका १२ वीं सदीके पहिले बसाया था, और इसका नाम 'भोजपाल' रक्खा, पीछेसे भोपाल प्रसिद्ध हुआ।

यहांके नब्बाब खानदानको नियत करनेवाला अफगानिस्थानका दोस्त 'मुहम्मद' हैं, जो 'औरंगजेबके' आधीन कर्मचारी थे और सन् ई० के १८ व शतकके आरम्भ में भोपाल स्वाधीन राज्य बन गया। इसके वंशवाले सदैव अंग्रेजोंके मित्र रहे।

भोपालकी वर्तमान बेगमका नाम नब्बाब शाहजहांबेगम जी० सी० एस० आई० सी० आई० है।

भोपालमें अंग्रेजी फौज रहती है। यहांकी 'झील' ४॥ मील लम्बी १॥ मील चौड़ी है, शहर २ मीलकी दीवार से घिरा हुआ है, घेरेके भीतर 'किला' है। शहरके बाहर एक तिजारती बस्ती है, और दक्षिण पश्चिम एक बड़ी चट्टानपर 'फतहगढ़' नामक किला है, इसमें भोपालकी बेगम रहती है, बेगमसा०के महलमें कारीगरीका बहुत काम नहीं है, तिसपर भी यह विशालभवन देखने योग्य है। मृत 'खुदसिया' बेगमकी बनवाई हुई 'जुमामसजिद' मृत 'सिकन्दरबेगमकी' 'मोतीमसजिद' और 'टकशाल' 'तोपखाना' खुदसियाबेगम और सिकन्दरबेगमकी 'वाटिका' भोपालमें देखनेकी प्रधान वस्तु हैं।

शहरके पूर्व नवीब हयातमुहम्मदखांके मंत्री छोटेखांकी बनवाई हुई २ मील लम्बी झील है, इसका बांध (पुल) पक्का है।

यहांपर एक 'जनानाअस्पताल' जनाना (औरतों) 'स्कूल' 'अंग्रेजीस्कूल' 'उर्दूस्कूल' 'हिन्दूस्कूल' भी देखने योग्य है।

भोपालके दि० जैनियोंके परवार खंडेलवाल जैसवाल अग्रवाल कटनेरा श्रीमाल गोलालारे खरौवा वरैया पद्मावतीपरवार आदि जातियों के ११४ घरोंकी मनुष्यसंख्या ४६४ है। परवारोंकी संख्या अधिक है। यहांके जैनी प्रायः व्यापारी अधिक हैं। एक शिखरबंद 'मन्दिर' और दो 'चैत्यालय' हैं। 'धर्मशालाएँ' ३ हैं, परन्तु प्रबंध ठीक नहीं है। एक दि० जैनपाठशाला भी है, जिसमें पं० प्यारेलालजी पढ़ाते हैं। पाठशाला का प्रबंध अच्छा है।

भोपालसे १० मीलकी दूरीपर 'समसगढ़' नामक अतिशयक्षेत्र है, यहां के जीर्णमन्दिरमें पाषाणकी ३ प्रतिमाएँ। मोतीसरीखी चमकती हुई अति सुन्दर हैं। मन्दिर प्राचीन है, प्रबंध ठीक नहीं है।

भोपालमें अफीम गल्ला और गांजा अधिक पैदा होता है, और इन्हीं चीजोंका व्यापार अधिक होसा है।

मऊकीछावनी।

इन्दौरसे १३ मील दक्षिणकी ओर मऊका स्टेशन है, मऊ इन्दौरराज्य में पहले दर्जेका जिलेका सदरस्थान है। वस्तीसे एक मीलकी दूरीपर बंबई फौजके एक डिवी· जनका सदरस्थान मऊकी अंग्रेजी छावनी है। मऊमें अंग्रेजी और देशी फौजोंकी प्रसिद्ध छावनी है।

व्यापार यहांपर कपड़ेका अधिक होता है। ३ शिखरबद्द मन्दिर एक चैत्यालय और ५ दर्शनस्थान हैं, खंडेलवाल अग्रवाल पल्लीवाल और लमेचूके ६० घरोंकी २२७ मनुष्यसंख्या है। मन्दिरमें अनुमान २४८ धर्मशास्त्र है, और एक धर्मशाला भी है। भाई 'फतेलालजी गोधा' प्रसिद्ध वैद्य हैं, आपकी बनाई हुई प्लेग की दवासे, हजारों रोगियोंने लाभ उठाया है।

मक्सीपार्श्वनाथ।

(अतिशयक्षेत्र)

रियासत ग्वालियरमें उज्जैनसे भोपाल लेन जी० आई० पी० आर० का खास स्टेशन है। यहांपर पोस्ट तारआफिस भी है।:

यहां एक प्राचीन जैनमन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी ढाई फुट ऊंची पद्मासन श्यामवर्ण पाषाणकी चतुर्थकालकी प्रतिमाजी विराजमान हैं। इनपर शाके संवत् वगैरः कुछ नहीं है। मूलनायकके मन्दिरके चारों तरफ ५२ देवरी और बनी हुई हैं, उनमें ४२ प्रतिमाएँ ऐसी विराजमान हैं जिनमें 'मूलसंघ' भट्टारक 'साह जीवराज पापडीवाल' स० १९४८ वैसाख वदी ६ लिखा है। इस मंदिरमें ९ बजेको सुबहतक दिगम्बरी पूजन करते हैं, पीछे श्वेताम्बरी पूजनकरते हैं, और मूलनायक

अपनी पूजनके समय कृत्रिमनेत्र लगा देते हैं। दिगम्बरी पूजन होनेके समय नेत्र निकाल लिये जाते हैं। इससे प्रतिमाकी बड़ी अविनय होती है।

बड़े मन्दिरके सिवाय दो दिगम्बर जैनमन्दिर और हैं, एकमें मूलनायक सुपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिष्ठा सं० १८९९ में 'प्राणसुख' 'लक्ष्मणदास' टीकमगढ़वालोंने कराई थी, और दूसरे में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिष्ठा सं० १८६१ में उज्जैनके जसवाल भाइयोंने कराई थी।

पूजनप्रक्षाल आदिका प्रबन्ध 'इन्दौर' 'उज्जैनके' पञ्चोंकी तरफसे मुनीम 'गणपत भंडारी' के आधीन है। वर्त्तमानमें प्रबन्ध अच्छा है, यात्रियोंको ठहरनेके लिये कच्ची एक 'धर्मशाला' है, जिसमें करीब ४० आदमी ठहर सकते हैं, मेलेके समय यात्रियोंको ठहरनेमें बड़ी तकलीफ होती है। यहांपर परवार (जैनी) भाईका एक ही गृह है, और सरस्वतीभंडारमें केवल दो ही ग्रंथ हैं। मेला फाल्गुन सुदी ८ से १५ तक होता है।

महोबा *।

यह प्राचीन शहर प्रायः मालवाकी सीमापर 'कवराई' स्टेशनसे १३मील पश्चिम झांसी मानिकपुर लेनमें महोबा का स्टेशन है। महोबा हम्मीरपुर जिलेमें तहसीलका मुकाम और पुराना कस्बा है।

'चन्देल' राजपूतराजा 'चन्द्रवर्मानें' सन् ईस्वीकी ८ वीं सदीमें इसको बसाया, और यहां महोत्सवयज्ञ किया, इससे इसका नाम महोबा पड़ा। यह 'मदनसागर' नामक झीलके किनारेपर बसा है। इसके ३ हिस्से हैं, एक मध्य पहाड़ीके उत्तर पुराना किला, दूसरा पहाड़ीके शिरपर भीतरका किला, और तीसरा दक्षिण और दरीबा।

चन्देलोंके समयकी कारीगरी दिखलाती हुई आसपासमें बहुत पुरानी इमारतें हैं। चन्द्रवर्मा जिस स्थानपर मरा वहां 'रामकुंड' है, किले उजाड़ पडे हैं। 'मदनवर्माका' बनवाया हुआ मुरवादेवीका 'मन्दिर' है, जिसके दरवाजेके आगे पत्थरके खंभेपर मदनवर्माका लेख है। बनवाई झीलोंमेंसे दो भर गई है, परन्तु ११ वीं और १२ वीं सदीके बने हुए 'कीर्त्ति-सागर' और 'मदन-सागर' अभीतक स्वच्छ और गहरे

---

* इसका वर्णन युक्तप्रान्तमें न छपनेके कारण राजपूताना मालवामें लिखा।

पानीसे भरे हैं। किनारों और टापुओंमें उजाड़ दशा में मन्दिर चट्टान काटकर बनी हुई बड़ी बड़ी प्रतिमाएँ और मन्दिरोंके निशानात देख पड़ते हैं। पहाड़ियोंपर पूर्वसमय के राजपूतोंके गर्मीके दिनोंमें रहनेके मकान और देवस्थान हैं। मुसलमानी समयका बना हुआ जालनखांका 'मकबरा' और 'मसजिद' है।

यहां कई इतिहास प्रसिद्ध लड़ाइयां हुई हैं जो कि 'आलाऊदल' नामसे प्रसिद्ध हैं।

महोबा पूर्वकालमें जैनियोंका प्रधान स्थान रहा होगा, कई लोगोंका कहना है कि राजा 'चन्देल' जैनधर्मावलम्बी थे, चन्देलके नामकी कई प्रतिमाएँ मिली हैं। यहांके पठान मुहल्लेमें कुआ खुदते समय २४ दि० जैन प्रतिमाएँ निकली थीं, दो प्रतिमा बड़ी और २२ छोटी हैं। श्रीयुत राजारामजी जैन बांदा और दि० जैनतीर्थ-क्षेत्रकमेटीके प्रयत्नसे ये प्रतिमाएँ दि० जैनियोंको मिल गई है।

महोबाके प्रतिबिम्ब।

(१) पार्श्वनाथ—सफेद पाषाण, पद्मासन, नागका चिन्ह, संवत् ८२१ फागुन सुदि ९ साबुराये साधुवदेरतन सतसासुदेवं गति सर्प फणिमाति नित्यः।

(२) पद्मप्रभु—सफेद पाषाण, पद्मासन, कमलचिन्ह ८२२ संवत्.

(३) महावीर स्वामी—सफेद पाषाण पद्मासन, सिंहका चिन्ह, १११४ संवत वैसाख सुदि ८ भौमेगह पतिसाहुथी भागे सुतः वुधौदऊ को विहां पुर वमति (हाथ-पैरकी उंगली टूट गई हैं)

(४) आदिनाथ—कालेपाषाणकी पद्मासन संवत १२०९ माघ सुदि ९ नवौग्रह अत्यासूच साबुसोढ देवपुत्र साबुदल्लक्त भार्वा तल्लपता प्रकेभनिवे.

(५) आदिनाथ—सफेद पाषाण संवत १२१९ गोल्ला पुर्ल्वान्येतस्य पुत्र साबुभस्म.

(६) धर्मनाथ—कालेपाषाण खड्गासन वज्रका चिन्ह सं. १२२३ वैसाख सुदी ५ पंडित कश सिद्धातदानकमोप सिहासवतु १२२३ वैसाख सुदि ५ प्रतिष्टं.

(७) चन्द्राप्रभु—सफेद पाषाग पद्मासन चन्द्रमाका चिन्ह सं १२२३ वैसाख सुदि ७ साबुमहागणतशारतनशडशमतेर. (आगेके अक्षर पढ़े नहीं जाते हाथका अंगूठा खंडित हो गया है)

(८) अभिनन्दन-काले पाषाण पद्मासन वन्दरका चिन्ह संवत १२४३ जेष्ट सुदि ९ गोल्लापुर्व्वान्ये सावुगल्लुतार्यच पातयो पुत्र सावु पोल्हे भार्या वांछि हणिपुत्र रामचंद्र विजयचंद (दाहिना कान खंडित हो गया है)

(९) मुनिसुव्रत-काले पाषाण पद्मासन कछवाका चिन्ह १२४३ जेष्ट सुदि ९ जेष्ट सुदि ५ चम्यां गुरवार प्रतिष्टा संवृत्ता गोल्ला पुर्व्वान्यो लाङ्ग न वसाधु मर्द्दवराणो गुणौ कुलशील दया दान सत्य शौचादि शालिनाम् शुर्ण पम्मनुरम्या इधुकिरवचन्द्रमणरात्कीर्ति चंद्रिका क्रान्तति शेष भुवतश्या चातुर्यौदार्या सोदर्या तो

झन् ॥ दिगुणवया । रक्षित्कारयांमाधपि पुर्वाज्ञा ॥ कातत्ररम ॥
साद्रुश्रीसूरेताद्यासातिणि तदापापासुतमूपढ प्रणमतिनित्तं ॥

(१०) चन्द्रप्रभु-सफेद पाषाण पद्मासन चन्द्रमाका चिन्ह (लेख संवत कुछ नहीं)

(११) मुनिसुव्रत-काले पाषाण खड्गासन कछवाका चिन्ह कातक वदि ४ कालष मसिववेलिका।

(१२) आदिनाथ-काले पाषाण खड्गासन (लेखसंवत कुछ नही है)

(१३) आदिनाथ-(गुमटीदार) काले पाषाणके बीचमें पद्मासन आजूबाजू खड्गासन (लेख संवत कुछ नहीं ह)

(१४) शान्तिनाथ-काले पाषाणके खड्गासन हरिनका चिन्ह संवत कुछ नहीं-- पंडित कदुसिंहरादनक गोपसिद्धप्रणमन्ति नित्यंसहस्त्रयोहि विताकर्तव्या.

(१५) आदिनाथ काले खड्गासन साल संवत कुछ नहीं है—

(१६) आदिनाथ काले पाषाण खड्गासन-संवत कुछ नहीं. इन्द्र यक्ष वगैरह नीचे खुदे हुए है.

(१७) आदिनाथ काले पाषाण खड्गासन संवत लेख कुछ नहीं. गुमटीदार पाषाणमें खुदी हुई है. बीचमें एक पद्मासन बांये तरफ एक खड्गासन दाहिने तरफ ३ खड्गासन प्रतिमा हैं.

(१८) एक मूरत सफेद पाषाणकी जो कलेक्टर साहबके पास है संवत १२१६ सालकी पुष्पदन्त स्वामीकी हैं.

नोट—(१) एक काली मूरत चार भुजाकी हथियार लिये और सिरपर कुछ उंचा २ लगा है, और दाहिने वाजूको एक इन्द्रके माफिक खड़ा है.

(२) एक काला पालिसदार चौकोर पत्थरके मध्यमें गोल भामंडल और नीचें दो प्रतिमा पद्मासन उकेरी हुई हैं. लेख संवत् कुछ नहीं है, यह मियासाहवके घरपर रक्खा है.

ये सब प्रतिमा लेकर विराजमान कर दी है ।

मंदसोर ।

ग्वालियर रियासतमें जिलेका सदरमुकाम शिवना नदीके किनारेपर राजपूताना-मालव रेलवेका अजमेर खंडवा लेनमें स्टेशन है । प्राचीनकालमें इसका नाम 'दशपुर' या 'दशांगपुरा' था । दशापुराका अर्थ दश मुहल्लोंका नगर है । प्राचीनकालके जैनियोंके तथा ब्राह्मणोंके मन्दिरोंके खंडहर पाये जाते है । पूर्वसमयमें यह शहर मालवाके राजा यशोधर्मन्के आधीन था । स्वामीसमन्तभद्राचार्यने अन्यधर्मियोंसे शास्त्रार्थ करके परास्त किया था ।

इस समय मंदसोरकी मनुष्यसंख्या करीब २१ हजार है, जिसमें दिगम्बारियोंके ११८ गृहोंमें ४०७ मनुष्य है । दिगम्बारियोंके ९ शिखरबन्द मन्दिर और २ चैत्यालय हैं जिनमें दर्शन ७ जगह हैं । जनकपुराके मंदिरमें पूजन प्रक्षाल तथा शास्त्रसभा प्रतिदिन होती है, जिसमें करीब ६०-७० स्त्रीपुरुष जमा होते हैं, इस मन्दिरमें एक 'जैनपाठशाला' भी है । ९०० के करीब धर्मग्रंथ हैं । दि० जैन धर्मशाला खास करकें दि० जैनियोंके लिये नहीं है पर दि० जैनियोंकी बनवाई हुई है ।

यहांपर वृटिश तथा सरकारी पोस्टआफिस, तारआफिस, म्यूनिसिपाल्टी, और हिन्दी अंग्रेजीके दो स्कूल भी हैं । व्यापार गल्ला अफीमका अधिक होता है । चुनरी डुंगड़ा आदिकी रंगाई छपाई उत्तम होती है, और दूर २ तक भेजी जाती है । शहर उजाड़ और अवनति दशामें है ।

मोरेना ।

ग्वालियर रि० में मोरेना व्यापारी कस्वा है, मोरेना जी. आई. पी. रेलवेका स्टेशन है, यहांपर गल्ला रुई सन तिलीका वहुत व्यापार होता है, प्रायः यहांपर व्यापारियोंकी ही संख्या अधिक है ।

मोरेनामें बरैया, खंडेलवाल, जैसवाल, पल्लीवाल, पद्मावतीपरवार, और लमेचूके ५१ घरोंकी मनुष्यसंख्या करीब २०० है, २ चैत्यालय और २ दर्शनस्थान है ।

यहांपर 'जैनसिद्धान्तप्रचारिणीसभा' और सुप्रसिद्ध 'जैनसिद्धान्तपाठशाला' है। पाठशालाके प्रबंधकर्त्ता श्रीमान् पं० 'न्यायवाचस्पति' 'स्याद्वादवारिधि' 'गोपालदास' जी बरैया हैं। आप स्वयं विद्यार्थियोंको उच्चकोटिकी धर्मशिक्षा निःस्वार्थ होकर देते हैं। न्याय व्याकरण काव्य भी पाठशालामें पढ़ाये जाते हैं, लौकिक शिक्षा वही खाता भी सिखाया जाता है। पं० जी सरीखा जैनधर्मका ज्ञाता वर्त्तमानमें कोई नहीं है। दूर २ से विद्यार्थी इस पाठशालामें आकर पढते हैं। पाठशालाका प्रबंध उत्तम है।

यहां पर धर्मशाला बन रही है, यह कस्बा व्यापारकी मंडी है।

रतलाम।

यह नगर मालवा प्रान्तार्गत राजपूताना मालवा रेल्वे और गोद्रा-रतलाम नागदा-मथुरा रेल्वेका रतलाम जॅक्शनसे करीब एक मीलपर है। स्टेशनसे शहरतक सवारी हरतरहकी मिलती है, शहरमें कई धर्मशालाएँ है। इसका रतलाम नाम यों प्रसिद्ध हुआ कि इसको राठौरवंशी 'राजारतनसिंहने' बसाया था। राजा सा० जोधपुरके थे, और वहांसे किसी कारण देहलीके बादशाहके आश्रयसे विजय प्राप्त की जिससे प्रसन्न होकर बादशाहने 'धराड़' नामका इलाका बक्शीस-इनाम (पारितोषक) मे दिया, बादमें यह शहर बसाया गया। इस समय महाराजा सज्जनसिंहजी क० सी० एम० आई० गद्दीपर विराजमान हैं, आप महाराज जोधपुरके राजपूत खानदानके हैं। शेठ माणिकचन्द पानाचन्द 'दि० जैनबोर्डिङ्गहाउस' महाराजा सा० के ही हाथसे खुलवाया था, आप बोर्डिंगको वार्षिक सहायता भी देते हैं।

दिगम्बरियोंकी मनुष्यसंख्या १३०० और ३१९ गृह आवाद हैं, ७ मन्दिर हैं जिसमें चांदनीचौकका शिखरबन्द मन्दिर बड़ा है, पूजन प्रक्षालका प्रबन्ध ठीक है बस्तीके बाहर पश्चिमदिशामें ३ शिखरबन्द मन्दिर है, इनकी व्यवस्था हूमड़ोंके जूने (पुराने) मन्दिरके भण्डारसे होती है, प्रक्षाल रोज होता है, पूजन पर्वोंके दिन होती है।

बागड़प्रान्तके विद्यार्थियोंको सुशिक्षित करनेके लिये यहां पर दि० जैनबोर्डिंगहौस भी है, बागड़प्रान्तके बहुतसे विद्यार्थी बोर्डिङ्गहौससे लाभ उठा रहे हैं, प्रबंध अच्छा है।

यहांपर राजमहल, सेन्ट्रलकालेज, लालबाग, बड़ा तालाब, चांदनीचौक, किला, बाग, श्वेताम्बर और स्थानकवासियों (ढुंढियों) की कई संस्थाएँ देखने योग्य है।

रतलाम अफीमके व्यापारका केन्द्र है। व्यापार कपास, अफीम, कपडा, गल्लेका अधिक होता है। रतलाममें तांबे कांसे पीतल आदिके बर्तन अच्छे बनते हैं, और खासकर बर्तनोंके लिये प्रसिद्ध है।

राघोगढ़।

ग्वालियर रियासतके गुना जिलेमें जी० आई० पी० रेल्वेकी बारां कोटा लेनके 'रोठयाई' स्टेशनसे करीब १० मीलकी दूरीपर राघोगढ़ हैं। चारों तरफ पहाड़ हैं, चारों ओर परकोटसे घिरा है, चारों तरफ चार दरवाजे हैं, और चारों कोनोंपर ४ मीनारें जीर्णावस्थामें है। वि० संवत् १७४० में 'राजालालसींगने' राघोगढ़को बसाया था, अभी आपके खानदानके राजा हैं। राघोगढ़में राजा छत्तरसिंह बड़े वीर हुये हैं, आपने कर्नल जानवत्तीसकी फौजको कईबार हराया था, बादमें संधि होगई, पहले कई जैनी राज्यमान् थे अबभी हैं।

यहांके राजा 'जैमंडलसींग' के समयसे जैनमन्दिरको ३४) सालाना तेल बत्ती पूजन आदि खर्च के लिये अभीतक मिलते हैं। और राज्यकी ओरसे भादांसुदी १४ के उत्सवके समय हाथी घोड़ा सिपाही आदि हरतरहकी सहायता मिलती है। दि० जैनियों के ३६ गृहोंकी मनुष्यसंख्या १९३ है, एक अतिसुन्दर शिखरबन्द मन्दिर ३ दर्शन स्थान हैं। जैनसभा भी होती है। बस्ती से २ फर्लांगकी दूरीपर वेदी है, वेदीका स्थान बड़ा सुन्दर है।

राघोगढ़ से पूर्वकी ओर एक पहाड़ीपर दृढ़ प्राचीन दो मीलके घेरेमें किला है, किलेके चारों तरफ खाई है। किलेके भीतर दो तालाब एक बावड़ी और ३ मन्दिर वैष्णवोंके है। प्राचीनसमयके तोप तलवार आदि हथियार सैंकड़ों पड़े है। लेखभी कई हैं।

किलेसे ४ फर्लांगकी दूरीपर दक्षिणकी ओर टेकरी है। टेकरीपर २ वैष्णवोंके मन्दिर रंगवाड़ी बावड़ी और तालाब हैं।

राघोगढ़ से वायव्यकी ओर नागनपुर नामक उजाड़ ग्राम है, झाड़ी सघन है। यहां कई जैनप्रतिमाएँ जमीनके अन्दर से प्राप्तहुई हैं। यहां एक पत्थरभी मिला है, कोई अपरिचित भाषामें लेख खुदा हुआ है। यदि यह स्थान खोदा जावे तो सैकड़ों जैनप्रतिमाएँ और मन्दिरोंके निशानात मिल सकते हैं। नागनपुरमें एक तालाबभी है,

तालावके चारों ओर वस्ती के चिन्ह हैं। और इनके सिवाय राघवगढ और आसपास के तालाब वावड़ी मन्दिर आदि स्थान देखने योग्य हैं।

रायसेन।

भोपाल रियासतमें सलामतपुर स्टेशनसे १२ मील दूर नैॠत्यदिशामें रायसेन एक धनवान कस्वा है। तौड (राजपूत) राजा रायसिंहने बसाया था। इसके पास 'बूढ़ीरायसेन' नामक ग्राम उजाड़ दशा में है। इस ग्रामसे जो लगा हुआ पहाड़ है, उसपर एक प्राचीन सुन्दर किला है, किलेमें बहुत बड़ी बड़ी २५–३० तोपें हैं। रंगमहल आदि महल किलेके अन्दर है। किलेके ऊपरी भागसे भोपालकी जुम्मामसजिद जो अनुमान ३० मील दूर है दिखाई देती है। किलेमें जो बीजक है वह अरबीभाषामें है। कहते हैं कि आलमगीर बादशाहने यह बीजक लगवाया था। कहते हैं पहिले ८४ तालाव थे, बहुत से तालाब तो नष्ट होगये हैं, और बहुत से अभीतक मौजूद है। इनमें 'मदागन' नामक तालाब प्रसिद्ध है। यह अगाध जलसे भरा हुआ है, इसका पानी पाचक है।

यहां से एकमीलकी दूरीके पहाड़पर एक तालाब सीतातलाई नाम से प्रसिद्ध है और दक्षिण दिशामें अनुमान डेढ़ मीलकी दूरीपर पहाड़ से ऊंचाई लिये हुए कुछ गुफा सदृश स्थानमें रामचन्द्रजीके चरण है, अन्यधर्मी लोग इसे 'रामसेज्या' कहते है, कहावतसे मालूम होता है कि रामचन्द्रजीने बनवास गमनके समय यहां विश्राम किया था।

रायसेनमें परवारोंके १२ घरोंकी ५० मनुष्यसंख्या है, एक चैत्यालय है। व्यापार प्रायः गल्ला अफीम आदिका अधिक होता है।

लाड़नू।

यह ग्राम जोधपुर रि० में 'जोधपुर–बीकानेर रेल्वेलेन' में जसवंतगढ स्टेशनसे करीव ६ मीलकी दूरीपर यह छोटासा ग्राम है। दि० जैनियोके गृह १०९ और मनुष्यसंख्या ५५१ है। चैत्यालयके आकारसदृश एक मन्दिर है, मन्दिर बहुत बड़ा प्राचीन होनेके कारण बिलकुल जीर्ण हो गया है। प्रतिमाएँ अतिमनोज्ञ होनेके कारण दर्शन करनेसे बहुत आनंद होता है। यह मन्दिर और प्रतिमाएँ बहुत पुरानी होनेके कारण प्रतिमाओंके ऊपरका प्रतिष्ठित संवत् आदि घिस गया ह जिससे पढ़ा नहीं जाता है। प्रदक्षिणामें भीतके ऊपर तीन 'शिलालेख' हैं, जो स्पष्ट नहीं पढ़े जाते है, । एक 'जीर्ण-

वहीं' से ज्ञात होता है कि इस मन्दिरकी बिम्बप्रतिष्ठा २३ बार हुई है। इससे यह मन्दिर तीर्थस्थान तुल्य है। चैत्यालयके अन्दर मुसलमानों द्वारा खंडित हुई भीतपर एक पुतली है, मन्दिर जमीनमें बहुत नीचा धस गया है, मन्दिर कब बना इसका पता अभी तक नहीं लगा है।

मन्दिरमें 'विद्याप्रकाशिनीनामक' 'सेठ लक्ष्मणलालजी पांड्या' बम्बई निवासीकी दि० जैन पाठशाला है, इसमें अध्यापक पं० नन्दनलालजी धर्मशास्त्र और लौकिकशिक्षा पढ़ानेका कार्य योग्यरीतिसे करते हैं।

शाहपुरा।

मेवाड़ प्रान्तमें रा० मा० रेल्वेका निकटवर्तीस्टेशन मांडल है, यहांपर व्यापार हर तरहका होता है।

शाहपुरामें ४ शिखरबंदमन्दिर और ९ दर्शनस्थान हैं खंडेलवालोंके ३१ घरोंकी मनुष्यसंख्या १५३ हैं मन्दिरोंमें अनुमान ४०० धर्मशास्त्र हैं, धर्मशाला भी है।

सवाई माधोपुर।

यह शहर जयपुर रि०में 'नागदा मथुरा रेल्वे लेन' में स्टेशनसे करीब ४ मीलकी दूरीपर पूर्वकी ओर है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके घर १५८ तथा मनुष्यसंख्या ४३९ खंडेलवाल पोरवाड़ श्रीमाल आदि जातियोंकी है। ७ शिखरबन्द मन्दिर हैं, और एक चैत्यालय है। पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध अच्छा है। मन्दिरके पासही धर्मशाला है। पंचायती बड़े मन्दिरमें पाठशाला भी है, परन्तु पढ़ाईका प्रबंध अच्छा नहीं है। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र करीब १५०० हैं।

यहांकी वस्ती करीब १०००० गृहकी होकर भी शहर में डाकखाना, तारआफिस नहीं है। शहर चारों तरफ पहाड़ोंसे घिरा हुआ है, व्यापारकी यहां बड़ीभारी मण्डी है, तांबे पीतल कांसेके बर्तन अच्छे बनते हैं।

यहांसे करीब १० मीलपर 'रणतंभोर' नामक किला महाराजा हम्मीरसिंहका बनवाया हुआ करीब एकहजार वर्षका प्राचीन बिलकुल जंगलमें खंडित अवस्थामें है। उसके अन्दर बहुत अच्छी वस्ती रही होगी। अनेक देवताओंके मन्दिर और तालाब हैं, जिसमें एक दिगम्बर जैनियोंका प्राचीन शिखरबन्द मन्दिर मठके आकारका बना हुआ है, जिसमें एक प्रतिमा श्रीचन्द्रप्रभुकी विक्रम संवत् १० की श्वेतवर्ण एक फुट

अवगाहनाकी पद्मासन विराजमान है। इस मन्दिरके प्रबन्धके लिये जयपुर राज्यकी तरफसे २५) रु० सालियाना मिलता है, पूजन प्रक्षालका प्रबन्ध सवाई माधोपुरके पञ्चोंकी तरफसे होता है।

अब किलेमें जयपुर राज्यका हाकिम-किलेदार रहा करता है। इसके आसपास आमके वृक्ष बहुत हैं।

सांगानेर।

जयपुरसे करीब ७ मील और सांगानेर स्टेशनसे ३ मील दूर सांगानेर एक प्रसिद्ध बस्ती है।

जयपुरसे रेजीडेंसी और मोतीडूंगरी होकर सांगानेर तक सड़क है, ६६ फीट ऊंचे उजड़े हुए फाटकसे होकर सांगानेरमें जाना होता है, दाहिनी ओर कल्यानजीका छोटामन्दिर है, इसके पास ६ फुट ऊंचा मार्बुलका स्तंभ है, यहां ब्रह्मा, विष्णु, शिव, और गणेशकी मूर्त्तियां हैं, बांई ओर पुराने महलकी तवाहियां निशानात वगैरः हैं। इससे उत्तरकी ओर ३ आंगनों सहित बड़ा मन्दिर है।

वर्त्तमानमें कस्वा उजाड़ दशामें है, यहां नशियां सहित जिनमन्दिर बड़े भारी अनुमान आठसौ नौसौ वर्षके प्राचीन हैं। संघीजीका मन्दिर सबसे बड़ा और अति सुन्दर है, इसमें पत्थरका काम प्रशंसनीय है, इस मन्दिरको देखनेके लिये अंग्रेज-लोग भी आते हैं। नशियां बस्तीसे डेढ़ मीलकी दूरीपर है। मन्दिरोंमें अनुमान २२५ धर्मशास्त्र हैं।

खंडेलवालोंके २५ घरोंकी मनुष्यसंख्या ९४ है, सांगानेरकी 'छीट' प्रसिद्ध है, कई तरहकी रंगाई और ठिकाईका काम यहां अच्छा होता है।

सांभर।

जयपुरसे ३५ मील (बांदीकुई जंक्शनसे ९१ मील) पश्चिम 'फलेरा' जंक्शन है, फलेरासे ४ मीलकी दूरीपर सांभर स्टेशन है।

सांभरकी समनुष्यसंख्या १२३६२ है, खंडेलवालोंके २१ घरोंकी मनुष्यसंख्या ६४ है, और ४ शिखरवन्द मन्दिर है।

स्टेशनसे एकमील नमककी झील तक पक्की सड़क है, चारों तरफका देश सूखा है, क्योंकि यह नमकदार चट्टानोंसे बना है, जब वर्षा होती तब निमक झीलमें चला

जाता है, वर्षाकालके बाद झील पूर्वसे पश्चिमतक २१ मील लम्बी, उत्तरसे दक्षिणतक ५ मील चौड़ी रहती है। किनारे से एक मील भीतर तक इसकी गहराई ढाई फुट है, झीलके पूर्व और उत्तर किनारोंपर नमकका काम होता है, प्रतिवर्ष झीलसे अनुमान चारलाख टन + नमक निकलता है, और एक मन नमक इकट्ठा करनेमें पौन आना खर्च पड़ता है। सन् १८६० ई० तक नमकका काम जयपुर और जोधपुरके अख्तियार में था, पश्चात् अंग्रेजगवर्नमेंटने इसका ठेका ले लिया, जो दोनों राजाओंको सत्रह अठारह लाख रुपया देती है।

सारंगपुर।

यह प्राचीन नगर मक्शी स्टेशन (भोपाल उज्जैन लेनमें) से ३० मीलपर रियासत 'देवासमें' कालीसिंध नदीके किनारे बसा है।

यहांकी मनुष्यसंख्या करीब ७००० के है, जिसमें दिगम्बर जैनियोंके २२ घर और १०९ आदमी हैं। दिगम्बरियों के दो शिखरबंद मन्दिर और एक चैत्यालय है, जिसमें एक प्राचीन शिखरबन्द मन्दिर स० ११७८ का बना हुआ है, और उसमें एक प्रतिमा संवत् १३१९ की विराजमान है। जैन और हिन्दुओंके मन्दिर खंडित दशामें पड़े हुए हैं।

इसका प्राचीन नाम क्या था यह नहीं मालूम हुआ है, परन्तु सन् १२९८ ईसवीमें 'सारंगसिंह' नामक राजा राज्य करता था, शायद उसके ही नामसे इसका नाम सारंगपुर हुआ होगा।

सारंगपुरमें रूपवती महल और सरकारी आफिसके सिवाय और कोई चीज देखने लायक नहीं है।

प्राचीनकालमें सारंगपुर मलमल बनानेमें बहुत मशहूर था, परन्तु सन् १८७९ ईसवीसे बुननेवालोंको उत्तेजन: सहायता वगैरः देनेवाला कोई न होनेसे ह्रास होने लगा है।

सिद्धवरकूट।

(सिद्धक्षेत्र)

होलकर रि० में इन्दौरके दक्षिणकी ओर राजपूताना मालवा लेनमें 'मोरटक्का' स्टेशनसे करीब ७ मील, और स्टेशन बड़वाहसे ६ मील बैलगाड़ीके रास्तेपर और सनावदसे

+ टन–२८ मनका होता है।

८ मील यह क्षेत्र है । मोरटक्कासे जातेही रास्तेमें अन्यमतियोंका 'ओंकारेश्वर' नामका मन्दिर नर्मदा नदीके दहिने तट बड़ा भारी तीर्थ है । यह ओंकारेश्वर बारा जोतिर्लिगोंमेंसे एक लिंग है । यह मन्दिर चट्टानमें खुदा हुआ है, इसके खम्बोंकी कारीगरी मनोहर है ।

कावेरी नदी उतरतेहीं यहांसे २ मीलपर जैनियोंका सिद्धक्षेत्र 'सिद्धवरकूट' है । यहांसे दो चक्रवर्ती और १० कामदेव आदि साड़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं ।

इस क्षेत्रको जानेके लिये नर्मदा नदीको पार करके जाना पड़ता है । बड़वाह तथा सनावदसे ६ या ८ मीलतक बैलगाड़ीका रास्ता है । बड़वाहमें दि० जैनियोंके ४७ घर हैं और मनुष्यसंख्या १७४ है। एक शिखरबन्द मन्दिर है, मन्दिर दर्शन दो जगह है। और एक 'दि० जैनपाठशाला' भी है। और पासही बड़ी भारी 'धर्मशाला' जिसमें कि १००० यात्री ठहर सकते हैं । धर्मशास्त्र करीब १०३ हैं । व्यापार हरप्रकारका होता है, विशेषकर कपासका अधिक होता है। 'सिद्धवरकूट क्षेत्रका' प्रबन्ध यहांके मुखिया सेठ 'देवासा' 'घनश्यामसा' के आधीन है।

(१) सनावदमें दि० जैनियोंके करीब १०० घर तथा ४०० मनुष्यसंख्या है। शिखरबन्द दो पञ्चायती मन्दिर है, बड़ीभारी दि० जैन धर्मशाला है, इसमे यात्रियोंको अच्छा आराम मिलता है, मन्दिरोंमें ३००० धर्मशास्त्र हैं। तथा पूजन प्रक्षालनके प्रबन्ध 'फत्तूसा' 'छज्जूसा' जी पञ्चोंकी तरफसे करते हैं।

(२) इस सिद्धक्षेत्रपर प्राचीन जैन मन्दिर थे, परन्तु जीर्ण होनेके कारण उनका जीर्णोद्धार इन्दौर निवासी शेठ 'भूरजी सूरजमल्ल' ने कराया और प्रतिष्ठा अनुक्रमसे शेठ 'मलूकचन्दगणेशजी' सोलापूर निवासी, तथा इंदौरनिवासी शेठ 'तिलोकचन्द' 'कल्याणमल्ल' तथा शेठ 'भूरजी सूरजमलने' सं०१९५१ मिती माघ सुदी १५ में कराई। इन तीनों मन्दिरोंमें मूलनायककी प्रतिमाएँ श्रीसम्भवनाथ, चन्द्रप्रभु, और श्री पार्श्वनाथ-स्वामीकी पद्मासन विराजमान है। तथा अन्य तीर्थकरोंकी ७९ प्रतिमाएँ पद्मासन विराजमान है। धर्मशालाएँ इसक्षेत्रपर १०–१२ हैं, जिनमें हजारों यात्री ठहरते है । और पहाड़ पर दो पुजारियोंके घर भी हैं । क्षेत्रका प्रबन्ध अच्छा है ।

सिरोंज।

टोंक रियासतमें सिरोंज जिला है, निकटवर्ती 'बामोरा' जी० आई० पी० रेल्वे का स्टेशन है।

सिरोंजमें परवार, गोलालारे, खंडेलवाल, चरनागरे (तारनपंथी *) के ७० घरोंकी मनुष्यसंख्या ३४५ है, २ शिखरबन्द मन्दिर ३ चैत्यालय और एक चैत्यालय तारनपंथियों का है।

यहां पर व्यापार हरतरहका होता है। विशेषकर यहांके जैनी भाई किराना सराफी और परचूनीका व्यापार अधिक करते हैं।

सिरोही।

आबूरोडके रेल्वे स्टेशनसे २८ मील उत्तर नाना स्टेशन १६ मील दूर राजपूतानाके सिरोही राज्यकी राजधानी सिरोही नामक छोटा कस्बा है।

वर्त्तमान सिरोही नरेश दिल्लीके महाराजा पृथ्वीराजके वंशज देवराज के वंशधर चौहान राजपूत हैं।

पूर्वकालमें सिरोहीमें भील लोग बसते थे, वहां राजपूतोंमें प्रथम गिहलोत राजपूत थोड़े दिन पीछे पमार राजपूत आये। पमारोंकी राजधानी चन्द्रावती थी, जिसके खंडहरों को देखनेसे जान पड़ता है कि एक समयमें यह एक बड़ा शहर था। अबतक पमारोंकी किलाबन्दियोंके खंडहर आबूपर विद्यमान हैं। पमारोंको जीतकर चौहानोंने अपने अधिकारमें किया।

सिरोही राज्यके कई ग्रामोंमें प्राचीन विशाल जैनमन्दिर हैं, भीलोंकी संख्या अधिक है, इनमेंसे बहुत लोग चोरीका पेशा करते हैं।

सिरोहीमें महारावका महल अस्पताल जेलखाना अंग्रेजी स्कूल शरणेश्वर शिवका मन्दिर देखने योग्य है।

व्यापार प्रायः हर तरह का होता है, यहां, तलवार बरछी छुरी इत्यादि हथियार सुन्दर बनते हैं।

---

* 'तारनपन्थ' को स्थापित करनेवाले 'तारनस्वामी' थे, इन्होंने कई नीच जातियोंको भी अपने पंथमे मिलाई, 'तारनस्वामी' ने मूर्त्तिपूजन निषेध का उपदेश दिया, तारनपंथी लोग शास्त्रकी पूजा करतेहैं। तारनपंथियोंका सबसे प्रसिद्ध मंदिर 'सेमरखेड़ी' (रि० ग्वालियर) में है।

श्रीवर्द्धमानाय नमः ।

पंजाब-प्रान्तके

तीर्थक्षेत्र और प्रसिद्ध प्रसिद्ध शहरोंका वर्णन ।



अम्बाला ।

पंजावप्रान्तमें (E. I. R.) पर यह एक व्यापारी शहर है, और इसके पासही शहरसे ५ मीलपर छावनी भी है, ईसाकी चौदहवीं सदीमें एक राजपूतने जिसका नाम 'अम्बा' था इस शहरको वसाया था, तब यह शहर एक छोटासा गांव था, सन् १८४३ ई० में शहरके दक्षिणकी तरफ छावनी डाली गई, और सन् १८४९ ई० में जब पंजाबसर्कारके इलाकेमें मिला लिया गया तबसे अम्बाला जिलेका मुख्यस्थान बनाया गया तभीसे इसकी तरक्की होना आरम्भ हुई शहरमें नई और पुरानी दो वस्तियां हैं। नई वस्तीकी सड़कें खुली चौड़ी और साफ हैं। शहर और छावनीमें सब मिलकर दि० जैनियोंके शिखरबन्द मन्दिर दो हैं, और आवाद घर ९४ हैं, जिसमें ४०४ आदमी रहते है। मन्दिरों में धर्मशास्त्र ७७३ हैं।

अम्बालेमें रुई, अनाज, तेल निकालनेकी चीजें अदरक (आदा) हलदी, कपड़ा, सोंठ, लोहा, ऊन, रेशम और दरियोंका वड़ा व्यापार होता है।

यहां रुई निकालने, रुई दवाने, ओंटे जानेकी कलं, शीशे कांच के कई कारखाने हैं। यूरोपियनदूकानें, गिर्जे, कोढ़ीखाना, छावनी, खजाना, स्कूल, खानकाह (मठ) छावनी में घुड़दौड़का मैदान, पब्लिकवाग, देखने योग्य है। अम्बाले जंक्शनसे २६ मील दक्षिण थानेश्वर (कुरुक्षेत्र) का स्टेशन है, थानेश्वर सरस्वती नदीके बाएँ तटपर है, इस नगरके समीप 'कुरुक्षेत्रकी' रणभूमि है, जहां महाभारतका प्रसिद्ध संग्राम हुआ था, इस शहरको सन् १०११ ई० में 'महमूदगजनवी' ने लुटा था यहां ग्रहणके समय बड़ाभारी मेला भरता है।

थानेश्वरसे आग्नेयमें 'तालवड़ी' ग्राम है, जहां सन् ११९१ ई० में प्रसिद्ध दिल्लीपति महाराजा 'पृथ्वीराजने' 'महमूदगोरीको' हराया था। इत्यादि प्राचीन स्थान भी देखने योग्य हैं।

अम्बालेके स्टेशनपर मुसाफिरोंके लिये अच्छी पक्की सराय है। इक्के शहर में और स्टेशनपर सदैव मिलते है।

अमृतसर।

व्यास और रावीनदीके बीचमें यह नगर आवादी और क्षेत्रफलमें पंजाबमें दूसरे नंबरका शहर है। और नार्थवेस्टर्न रेलवेकी शाखा पठानकोटका जंक्शन है। स्टेशनसे शहर आधमील दूर है, सवारी हर तरहकी मिलती है। लाहौर ३३ मीलकी दूरीपर है।

अमृतसर पिछले समयमें एक छोटासा गांव था, उस समय इसका नाम 'चक' था। सिक्खोंको चौथे गुरु 'रामदासजी' ने जो १५८१ ई० में कालवश हुए, इसको बसाया, उस समय इसका नाम 'रामदासपुर' प्रसिद्ध हुआ फिर उन्होंने इसके अन्दर एक बड़ा तालाव बनवाकर उसका नाम 'अमृतसर' अर्थात् अमृतका तालाव रक्खा इस तालावके कारण, इसका नाम अमृतसर प्रसिद्ध हुआ महाराज रणजीतसिंहके समय इसकी बहुत तरक्की हुई यहांतक कि सारे पंजाबमें अद्वितीय हो गया।

यहां सबसे बढ़कर देखने योग्य दरबारसाहेब है। यह छोटा होनेपर खुबसूरत हैं 'सुनहरी मन्दिर' शहरके अन्दर एक तालावके बीचमें संगमरमरके चबूतरेपर बना हुआ है, मन्दिरभी संगमरमरका है, और गुम्बज सुनहरी है, भीतर और बाहर खुबसूरत वेलबूटे बने है। सिक्ख लोग इसको बहुत पवित्र मानते हैं। तालावके एक किनारेपर 'घंटाघर' है। इनके सिवाय हालबाजार, टाउनहाल, गवर्नमेंटस्कूल, संतोकसर तालाव, जो कि शहरके अन्दर है, दरबारबाग, महाराजा रणजीतसिंहका बनवाया हुआ गोविन्दगढ़ किला, कई सुन्दर मसजिदें, कई गिर्जे, जेलखाना, नानकशाहियों के १३ अखाड़े, खालसा कालेज; कंपनीबागमें महारानी विक्टोरियाकी संगमरमरकी मूर्ति देखने योग्य है।

यहां दि० जैनियोंके अग्रवालोंके १३ घरोंकी मनुष्यसंख्या ४५ है, एक चैत्यालय है। लालाउम्मेदसिंह मुसद्दीलालजी वड़े धर्मप्रमी है।

यह शहर पंजाबमें व्यापारकी बड़ी मण्डी है। दुशाले और गलीचे यहांके बने हुये बहुत मशहूर हैं, ऊनी और रेशमी कपड़े और जरदोजीके बड़े कारखाने हैं।

स्टेशनपर मुसाफिरखाने और शहरमें बहुत धर्मशालाएं और सरायें हैं।

कर्नाल।

यह पुराना नगर अम्वाला कालका रेलवे लेनमें दिल्लीसे ७६ मील और अम्वाला छावनीसे ४७ मीलकी दूरीपर है, जिलेका सदरमुकाम है। इसको राजा 'कर्णने' जो पाण्डवों और कौरवोंके कुरुक्षेत्रके बड़े भारी संग्राममें कौरवोंका मददगार था, इस शहरको बसाया था। इसी शहरमें ईरानके बादशाह 'नादिरशाह' ने मुगल बादशाह मुहम्मदशाहको सन् १७५६ ई० में हराया था, बाद यह शहर राजा जींद और मरहठोंके हाथमें आया मरहठोंको लदवाके राजा गुरदत्तसिंहने निकाल दिया। १८०५ में राजा गुरुदत्तसिंहसे सरकार अंग्रेजने जब्तकर लिया। क़िला जो कई साल तक छावनीके काममें आता रहा अब स्कूलके काम आता है। काबुलकाअमीर दोस्त मुहम्मदखां १८४० ई० में यहांपर ६ महिने नजरबन्द रहा था।

१९०१ ई० में कर्नालकी आबादी अनुमान २३५५९ थी, दिगम्बर जैनियोंके अग्रवालोंके ५० घरोंकी मनुष्यसंख्या १७५ है। दो शिखरबन्दमन्दिर और एक चैत्यालय भी है, जिनमें करीब ९० धर्मशास्त्र हैं। यहांपर लाला रामजीदासजी तहसीलदार, तथा लाला रूपचन्दजी, लाला जुगमन्दरदासजी, लाला देवीसहायजी, लाला निहालचन्दजी प्रसिद्ध पुरुष और जातिके मुखिया हैं।

शहरके निकट ही एक जैनियोंका बगीचा है, जिसमें एक कमरा पुख्ता (मजबूत) बना है, इसमें बाहरके आये हुए लोग ठहर जाया करते हैं।

बाजार अच्छा घना बसा है। देशी कपड़े कम्बल और बूट यहां अच्छे बनते हैं। शाहकलंदर, करनातालाब, टाउनहाल, अजायबघर, एक सुन्दर मसजिद इत्यादि देखनेके योग्य स्थान हैं।

रेलवे स्टेशनसे शहरकी आबादी २ मील है, मुसाफिरोंके लिये कई सराएँ हैं। इक्के बग्घियां सवारीके लिये हरवक्त मिलती हैं।

गुड़गांव।

यह नगर दिल्लीसे नैऋत्य दिशामें राजपूताना मालवा रेलवेका बड़ा स्टेशन है। इसका यह नाम पड़नेका कारण यह है, कि राजा 'युधिष्ठिरने' अपने गुरु 'द्रोणाचार्यको' यह गांव दान कर दिया था, इस लिये इसका नाम 'गुरुग्राम' पड़ गया था गुरुग्रामका अपभ्रंश गुड़गांव हो गया है। इसके निकट 'हिदायतपुरकी' सीमामें बेगम 'शमरूने' छावनी डाली थी, परन्तु अब यह छावनीका स्थान पंजाबप्रान्तमें जिला बन-

गया है, यहांका मनुष्यगणना चार हजारके अनुमान है । जिसमें दिगम्बर जैनी ७० के करीव है । जैनियोंके गृह १४ अग्रवालों के और एक जैसवालका है ।

गुड़गांव में एक गुम्बजदार जैनमन्दिर है, जिसमें अनुमान ५० धर्मशास्त्र हैं, गुड़गांव से ४ मीलकी दूरीपर 'वादशाहपुरमें' एक रमणीय ऊंचा गुम्बजदार जैनमन्दिर देखने योग्य है ।

यहांपर शीतलादेवीका वड़ा मन्दिर है, चैत्रके महिनेमें पूजाके लिये हिन्दूलोग अनुमान ४० हजार इकठे होते हैं ।

गोहाना ।

यह कसवा रोहट नहरके तटपर रोहतकसे २४ मीलके फासलेपर पक्की सड़कपर तहसीलका सदरस्थान है । ७००० के अनुमान यहांकी मनुष्यसंख्या है, इनमें अग्रवाल जैनियोंके ३०७ गृह है, जिनकी मनुष्य-संख्या अनुमान २५०० है । दो शिखरवन्द जैनमन्दिर हैं, दोनोंमें संगमरमरका फर्श तथा वेदी है । और वेदियोंमें छतों और दीवारोंपर सुनहरी चित्रकारीका सुन्दर काम है । मन्दिर अतिमनोज्ञ शोभायमान है । इनमें करीव २०० धर्मशास्त्र हैं । एक नवीन जैनमन्दिर और वना है, जिसकी प्रतिष्ठा होनेवाली है, इस ग्रामसे डेढ़ मीलकी दूरीपर एक 'नगर' नामक छोटासा-ग्राम है यहां एक जिनचैत्यालय और ४० घर अग्रवाल जैनियोंके हैं ।

गोहानामें कांसे पीतलके वर्तन अच्छे वनते हैं ।

जगाधरी ।

अम्वाला जिलेमें तहसीलका सदरस्थान जगाधरी वड़ा कस्वा है, और इसके इर्द गिर्दका देश वड़ा सुहावना है । यमुना नदी और शाहनहर यहीं वहती है । यह कस्वा स्टेशन (*N. W. R.*) से ७ मीलकी दूरीपर है । सड़क पक्की कच्ची है । जगाधरीकी मनुष्यसंख्या अनुमान १४ हजार है, जिसमें दिगम्बर जैनियोंके आवाद ३५ गृहोंमें १६९ आदमी रहते है । उक्त आम्नायके यहांपर दो मन्दिर गुम्वजदार अति उतंग शोभनीय हैं, जिनमें अनुमान १०० धर्मशास्त्र हैं, और प्रतिदिन शास्त्रसभा होती है । यहांपर मन्दिरके निकट एक औषधालय भी है ।

कांसेके वर्त्तन और वहलियां वड़ी मजवूत और सुन्दर वनती हैं । वड़े वड़े साहूकार यहां रहते है ।

यहांसे ४ मीलकी दूरीपर बुड़िया नामक एक बड़ा ग्राम है, यहांपर एक शिखरबन्द मन्दिर अतिमनोज्ञ है, जिसमें करीब १०० धर्मशास्त्र हैं। बुड़ियामें दि० जैनियोंके गृह १९ हैं जिनकी मनुष्यसंख्या६० है। बुड़ियामें बीरबल (वजीर अकबरका) बनवाया हुआ रंगमहल देखने योग्य है।

जालंधर ।

पंजावमें जिला और कमिश्नरीका जालंधर सदर मुकाम है, नॉर्थवेस्टर्न रेल्वेका स्टेशन है। छावनीका स्टेशन ३ मील पहले मिलता है।

जालन्धर बड़ा पुराना शहर है, और 'सिकंदरके' हमलेसे पहले 'कटोच-राज्य' की राजधानी थी, कटोचका जिकर महाभारतमें है। पुराने नगरकी निशानीका अबतक तालाव है, जिसको 'देवीतालाव' कहते हैं। जूनमें गायकोंका प्रसिद्ध मेला होता है।

यहां पर बाहिरसे आये हुए अग्रवाल दि० जैनियोंके २५ घर हैं, जिनमें २१० आदमी रहते हैं। यहां विक्रम संवत् १९५५ में दिगम्बर जैनमन्दिर बना है। सर्व भाई पूजन-प्रक्षाल यथोचित और भक्तिपूर्वक करते हैं। धर्मात्मा भाई लाला सुखामलजी, दातारामजी, और गेंदामलजी जातिके मुखिया हैं।

शहरमें कई धर्मशालाएँ और ३ सरायें हैं, एक सराय स्टेशनसे थोड़े गजके फासलेपर है। आर्यसमाजियोंका विद्यालयभी देखने योग्य है।

छावनी शहरसे ४ मील है। छावनी और शहरमें सवारी हरवक्त मिलती है।

जालंधरसे रेशम बाहर जाता है, और लकड़ीका काम बहुत अच्छा होता है।

दिल्ली ।

(राजधानी)

दिल्लीशहर बहुत बड़ा सुहावना यमुनानदीके दाहिने किनारे अति रमणीय बहुत प्राचीन पंजावप्रान्तमें प्रसिद्ध शहर है। पुराना नाम 'इन्द्रप्रस्थ' प्रसिद्ध है। आगरेसे १२२ और बम्बईसे ९५७ मीलके फासलेपर है। बी० बी० एन्ड० सी० आई०, ईस्ट इन्डियन, अवध-रुहेलखण्ड, जी० आई० पी० और नार्थ-वेस्टर्न रेलवेका यहांपर जंक्शन है।

संक्षिप्त वृत्तान्तः—इस नगरको कई लोग महाराज 'दिलीप' का बसाया मानते हैं, पूर्व समयमें पांडव महाराज 'युधिष्ठिरकी' राजधानी थी, पीछे भारतके अन्तिम हिन्दू सम्राट

पृथ्वीराजकी रही, मुसलमान बादशाहोंकी राजधानी भी यही शहर रहा था। कई वर्षोंके पीछे यह शहर ऊजड़ गया, जिनके आजतक बड़े २ खंडहर पाये जाते हैं, उसको पुरानी दिल्ली कहते हैं।

फिर १६३० ईस्वीमें शाहजहां बादशाहने एक और शहर पासही बसाया और उसका नाम 'शाहजहानाबाद' रक्खा। सन् १८५७ ई० में 'बहादुरशाह' ने जो कि 'शाहजहां' के कुलमें नाममात्र सिंहासनपर चला आता था, अंग्रेजोंके विरुद्ध बल्वेमें शामिल हुआ इस लिये अंग्रेजोंने इन राजद्रोही बल्वेवालोका नाश करके दिल्लीको ले ली, और बादशाहको ब्रह्मदेशकी राजधानी 'रंगून' नगरमें कैद करके भेजा, इस उपद्रवके कारण यह नगर फिर उजाड़ हो गया था। अब फिर भरपूर होरहा है, और फिरसे दिल्लीका सौभाग्योदय हुआ है, क्योंकि दिल्लीदरबारके समय सम्राटने फिरसे राजधानी की नींव डाली है और कई सुन्दर इमारतें बन रही हैं।

मनुष्यसंख्या और प्रसिद्ध २ पुरुषोंके नामः–

यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान ढाई लाख है, जिसमें सर्व जाति तथा सर्व मताव लम्बी रहते हैं, दिगम्बर जैनधर्मके धारक महानुभावोंमे खंडेलवाल अग्रवाल पद्मावती परवारोंके सब मिलाकर ९५० गृह जिनकी मनुष्यसंख्या ३५२५ है। और प्रायःजैनी-भाई मालीवाड़ा, सेठका कूचा, सबजी मन्डी, पहाड़ी धीरज, दरीबाकलॉ, वकीलपुरा. कटरा खशहालराय, आदि मुहल्लोमे निवास करते हैं, यहांके जैनीभाई बहुत स्वच्छ प्रियवादी और लक्ष्मीपुत्र हैं, परन्तु इनमें दिखावा बहुत है। जैनियोंमें कई महाशय तो राजमान्य और बड़े २ ओहदोंपर हैं। लाला ईशरीप्रसादजी गवर्नमेंट खजानची आनरेरी मजिस्ट्रेट म्युनिसिपल कमिशनर और लाला सुलतानसिहजी वकील आनरेबल मेम्बर लेफ्टिनेन्ट गवर्नर पंजाब कौन्सिलके हैं, तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट भी है। इत्यादि कई प्रतिष्ठित पुरुष हैं, इनके अतिरिक्त इस शहरमें लाला 'महरचन्दजी' कन्टरेक्टर (ठेकेदार) जोकि बहुत प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने विक्रम संवत् १९३५ मे दिल्ली ऐसे शहरमें बिंबप्रतिष्ठा कराई थी, बड़े धर्मात्मा सज्जन पुरुष निवास करते हैं।

दि० जैनियोंके १९ जैनमन्दिर शिखरबन्द लाखो रुपयोंकी लागतके बने हैं. जिनमे सुवर्णकी चित्रकारीका काम कोरनीका काम संगमरमरपर जड़ाऊ सच्चे नगोंका काम तथा जिनमन्दिरोंके भीतर जरीके चन्दोवे आदि जिनके देखने से अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। और यहांपर ७ चैत्यालय भी हैं। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र करीब २००० हैं।

धर्मशाला और पाठशाला:-दिल्लीमें सब मिलाकर छह धर्मशालाएँ हैं, जिनमेंसे दि० जैनियोंकी सेठके कूचेमें बहुत अच्छी धर्मशाला है, पानीकानल इसके पासही है। जैनी लोग यहां विना किरायेके ठहर सक्ते हैं, दरीबा कूचासेठ मन्दिर सरावगियानके पतेसे रेलवे स्टेशनसे हरएक गाड़ीवाला यहां पहुंचा देता है। इस धर्मशालाका काम अब बढ़नेलगा है। एक दूसरी धर्मशाला मालीवाड़ेके मन्दिरमें एक जैसिंहपुराके मन्दिरमें और एक पहाड़ीधीरजके मन्दिरमें है। तथा एक पाठशाला मालीवाड़ेके मन्दिरमें एक पाठशाला पहाड़ीधीरजके मन्दिरमें और एक पाठशाला और एक कन्याशाला धर्मपुराके मन्दिरमें है। इस प्रकार पांच दिगम्बर जैन पाठशालाएँ हैं। जिनमें बालक बालिकाओंको धर्मशिक्षा दी जाती है, पाठशालाओंका प्रबंध अच्छा है।

औषधालय:-मालीवाड़ेके जैनमन्दिरमें एक औषधालय है, और इसके अतिरिक्त लाला मोतीरामजी जैन वैद्य दरीबाकलॉमें रोगकी परीक्षा करनेके पश्चात शुद्ध औषधिदान देते हैं। हिसारका अनाथाश्रम भी वर्तमानमें देहलीमें है।

देखनेयोग्यस्थान-लालकिला. सुनहरीमसजिद, गाजीउद्दीनखांका मदरिसा, जुम्मा मसजिद यह मसजिद प्रसिद्ध मस्जिदोंमें से एक है. सिमरूबेगमका बाग, साहिबा बेगमका बाग, मायोदासका बगीचा. आपा गंगाधरका शिवालय. हुमायूंका मकबरा. अजायबघर, घंटाघर, पृथ्वीराजका किला. जनरल निकलसन और उसके साथियोंका मीनार. सफदरजंगका मकबरा, शाहीहम्माम, कालीमसजिद, अमीर खुसरोका मकबरा, निकलसनका बाग. अंग्रेजोंका कबरिस्तान. कुतुबसाहिबकी लाट जो कि दिल्लीसे ११ मील दक्षिणकी ओर है. २३८ फुट ऊंची है, यह दुनियांकी सब मीनारोंसे ऊंची है. इस पर चढ़नेको ३७९ सीढ़ियां हैं. इस लाटके पास धातुकी लाट ३३ फुट ८ इंच ऊंची है. इसको हिन्दुओंने ३१९ ई० में बनवाई थी. चांदनीचौक भरतखंडके अत्युत्तम बाजारोंमेंसे है, अन्य कई बाजार, अंग्रेजीकालेज, अशोकस्तंभ लेखोंमें अशोककी धर्माज्ञा लिखी हुई है. 'हिसामतकरा' प्राचीन बस्तीके खंडहर और भी कई मुसलमानी इमारतें ऊपर लिखे जैनमन्दिर जो कि लक्षों रुपयेकी लागतके हैं देखने योग्य हैं।

दिल्लीमें हर तरहका व्यापार होता है. विशेषकरके गोटा. किनारी. रत्न. कपड़े. तांबे पीतलके बर्तन. लोहा. कागज. डबलरोटी. बिस्कुट. और विदेशी मालका बहुत क्रय विक्रय होता है।

नजफ़गढ ।

दिल्ली जिलेमें एक छोटासा कसवा दिल्लीसे वारह कोस पश्चिमकी ओर तहसीलका स्थान है। इसको नब्वाव 'नजवखांने' वसाया था। एक ओर किलेकी नींव भी इसी नब्वावने नगरके वाहर डाली थी, पर किला अधूरा रहा। इस नगरके पास एक बहुत वड़ी झील है जिसमें पानी भरा रहता है, अव सरकारने इसमेंसे एक छोटी नहर निकाली है, इस नगरके पास की पक्की दीवाल है, यह अव कहीं २ से टूट गई है।

यहां एक शिखरबंद दि० जैनमन्दिर है, और इसके पास एक जैनधर्मशाला जो इसी नगरके निवासी श्रीमान् जैनजातिभूषण डिप्टी चंपतरायजीने बनवाई है– आपने १६ वर्ष पर्यंत भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके महामंत्री पदका कार्य वड़ी योग्यताके साथ किया और कर रहे हैं। और डिप्टी सा० ने मन्दिरमें एक जैनपाठशाला स्थापित करा रक्खी है, जिसका मासिक खर्च आपही देते हैं। आपके वड़े भ्राता लाला 'गणपतरायजी' यहांकी सभाके सभापति हैं, और मंत्रीका कार्य लाला 'वनवारीलालजी करते हैं। और लाला 'किरोड़ीमलजी' प्रतिदिन भाइयोंको शास्त्रसभामें धर्मोपदेश देते हैं। मन्दिरका पूजन प्रक्षाल नित्य समयपर होता है।

यहांपर दिगम्बर जैनाग्रवालोंके गृह अनुमान ६० हैं जिनकी मनुष्यसंख्या २७५ के अनुमान है। तिजारत यहां सब प्रकारकी होती है।

पानीपत

यह प्राचीन नगरजिला 'कर्नालमें' तहसीलका सदरमुकाम कर्नालसे २१ मील और दिल्लीसे ५५ मील उत्तर पानीपतका स्टेशन है। कस्बेके चारों ओर पुरानी दीवाल और १५ फाटक हैं। इसके मैदानमे कई भारी भारी लड़ाइयां हुई हैं, जो कि भारतवर्षके इतिहासमें प्रसिद्ध हैं। यहां अग्रवाल जैनियोंके अनुमान २७५ गृह जिनकी मनुष्यसंख्या एक हजारके लगभग है। ४ शिखरबंद जैनमन्दिर हैं, इस ग्राममें भादोंके माहमें और रत्नत्रय पर्वके दिनोंमें हलवाइयोंकी भट्टी भरभूंजोंके भाड़ वन्द रहा करते हैं, और न चिड़ीमार जानवरोंको पकड़ते हैं, यह रिवाज वहुत वर्षोंसे यहां कायम है, और केवल चिड़ी न मारनेवालों ही को यहांके जैन पंच जीवहिंसा न करनेके वदले में उनको खानेपीनेके लिये रुपया देते हैं. प्रत्येक माहकी दोनों अष्टमी और चतुर्दशीको हलवाइयोंकी भट्टियां वन्द रहा करती हैं। यह नियम अहिंसा धर्मको पालन करा रहा है। पहला जैनमन्दिर लाला दन्दीमलजीका है इसके प्रवन्धकर्ता पंडित कल्लूसिंहजी है।

दूसरा जैनमन्दिर चौधरी बनवारीलालजीका बनवाया हुआ है, तीसरा और चौथा जैनमन्दिर पंचायती है, ये दो मंदिरतो मुहल्लेके मैदानमें हैं, और दो मंदिर श्रावगी मुहल्लेमें है। यह मुहल्ला रेलवे स्टेशनसे करीब एक या डेढ़ फलांगके फासलेपर है। मुहल्लेके मैदानमें मन्दिरके निकट जैनधर्मशाला और जैनपाठशाला भी है। जिसका पठनक्रम जैनशिक्षाप्रचारक समिति .जयपुरके अनुसार है। लड़के अनुमान १०० पढ़ते हैं।

यहांके लोग धनाढ्य और सुखी हैं और खेती: व्यापार वगैरः करनेके बहुत अच्छे ढंग जानते हैं। इस नगरमें कांच, शीशे, और बोतल आदि बनानेका कारखाना है। कांसे पीतलके बर्तन भी अच्छे बनते हैं।

पेशावर।

लाहौरसे २२५ मील पश्चिमोत्तर पेशावर शहरका स्टेशन और उससे ३ मील और आगे पेशावरछावनीका रेलवे स्टेशन है। पेशावर हिंदुस्थानकी पश्चिमोत्तर सीमाके पास जिलेका सदरस्थान बारा नदीके बाएँ किनारेके पास प्रसिद्ध सुन्दर शहर है।

पेशावर शहर मिट्टीकी दीवारसे घिरा हुआ है, जो सिक्खोंके राज्यके समय बनी थी, इसमें १६ फाटक हैं, जो नित्य रातमें तोपकी आवाज होनेपर वन्द कर दिये जाते हैं। काबुल फाटकसे शहरमें प्रवेश करना होता है। स्टेशनपर सवारी हरतरहकी मिलती है। एक सराय बहुत अच्छी और सुन्दर बनी हुई है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि अतिप्राचीनकालमें एक चन्द्रवंशी राजाके आधीन गान्धारदेशमें पेशावरकी घाटी थी, जिसकी राजधानी पेशावरसे २९ मील दूर स्वात नदीके बाएँ किनारेपर हस्तनगरके आसपास पिकलस (या पुष्कलावती) करके प्रसिद्ध थी, वहां अब तक पुराने मकानोंके खंडहर देख पड़ते हैं। सन् ई० की पाँचवी सदीमें चीनके 'फाहियान' और सातवीं सदीमें 'हुएंत्संगने' लिखा था कि पुष्कलावतीमें बहुत प्रसिद्ध बौद्धस्तूप है, उस समय गान्धारकी राजधानी पेशावर थी।

देखने योग्य स्थान ये हैं:—प्रधानसड़ककी सुन्दर दूकानें, बाजार, शहरकी कई सुन्दर मसजिदें, पंचतीर्थीनामक एक सुन्दर सरोवर है, इसके किनारे कई सुन्दर मन्दिर हैं, शहरकी दीवारके बाहिर बालाहिसार नामक किला, कचहरियां सब डिविजनल आफिस बौद्धस्तूप, * शहरसे २ मील पश्चिम बड़ी प्रसिद्ध छावनी, शहरसे ३ मील चांदमारी

---

* पेशावरके बौद्धस्तूपमें एक डब्बा मिलाथा, जिसमें बुद्धदेवकी हड्डियां रक्खी हुई थीं।

छावनीके निकट गोरखनाथका तालाव, और गढ़ी, कई वाग इनमें बजीरी बाग बहुत रमणीय है, गिर्जा, स्कूल, अस्पताल, इत्यादि कई स्थान देखने योग्य हैं ।

पेशावरमें सौदागरीका प्रसिद्ध वाजार है. मध्यएसिया अफगानिस्तान और आस-पासके स्वाधीन राज्योंके साथ वड़ा भारी व्यापार होता है । गेहूं और सव तरहके अन्न, नमक, सुगन्धित चांवल, घी, तिल, हींग, गुड़, मेवा, तम्बाकू, चांदी, सोना, लैस, चमड़ा, घोड़ा, खच्चर, भेड़, ऊनीकपड़ा, और चायका वड़ा भारी व्यापार होता है। यहां की वस्तुओंमेंसे, अनेक वस्तु भारतवर्षके दूसरे विभागोंमें नहीं देखनेमें आती हैं ।

मुसलमान (पठान) यहां वहुत रहते हैं, 'पश्तो' नामक भाषा वोली जाती है, कुरता और ढीला पायजामा पहिरनेका वड़ा रिवाज है, यहांके आदमी ऊंचे और वल-वान् होते हैं ।

पेशावरकी मनुष्यसंख्या छावनी सहित अनुमान ८९ हजार है, पंजाबमें चौथे नम्व-रका शहर है । यहांपर अग्रवाल जैनभाईके एक गृहकी मनुष्यसंख्या ८ है ।

पेशावरमें मिट्टी और तांवेके वर्तन, तलवार, पिस्तौल (वंदूक) खंजर वहुत अच्छे वनते हैं । सुप्रसिद्ध भयानक खैवरघाटीका रास्ता यहींसे है ।

फर्रुखनगर ।

यह कसवा गुड़गांव जिलेमें दिल्लीसे ३३ मीलकी दूरीपर (R. M. R.) लेनके स्टेशनसे ३ मीलकी दूरीपर वसा है ।

विक्रम संवत् १७७१ ज्येष्ठवदी १ को 'फौजदारखां' विलोचयाने 'फर्रुखशेर वाद-शाह' दिल्लीके शासनमें लाला सीतारामजी जैनकी सहायतासे वसाया था, और इस कारणसे लाला सीतारामजीका वादशाही दरवारमें वड़ी प्रतिष्ठा थी । और इस कार्यकी सफलतासे इनको चौधरीका पद मिला था । फौजदारखांका नाती ईशेखां जवाहरसिंह भरतपुरके जाट राजाके साथ लड़कर पकड़ा गया, और वारह वर्ष वंदीगृह (कैद) रहा. तव भरतपुर राजाके कारिन्दा लालाखुशालरायेजी खण्डेलवाल जैन शासनकर्त्ता नियत हुये थे जिनने फर्रुखनगरके जैनमन्दिरको अति मनोज्ञ उतंग वनवाकर धर्मप्रभावना की थी. और उस समय फर्रुखनगरका नाम "जवाहरगढ़" प्रसिद्ध रहा । विक्रम संवत १९१४ वा सन् १८५७ ई० के गदरमें नव्वाव फौजदारखांका सत्त्वाधिकारी नव्वाव अहमदअलीखांको ब्रिटिश गवर्नमंटके विरुद्ध होनेके कारण फांसी लगाई गई और फर्रु-खनगर जिला गुड़गांवमें शामिल कर लिया । यह नगर जैनियोंके हाथमें वसाया गया है.

इस कारण सदैव जैनी ही यहांके राज्यमान और मुखिया रहे हैं। अंग्रेजीराज्यमें भी चौधरी 'भोगीदासजी' को पांचवी पीढ़ीमें चौधरी 'माणिकचंद' और चौधरी 'मनीरामजी' को छट्ठी पीढ़ीमें और चोधरी 'मूलचंदजी' गदरमें मौजूद थे, इनको चौधरातका पद सरकार अंग्रेजने भी सन्मान पूर्वक दिया। और जैनी लोगोंका सन्मान पूर्वके समान ऊंचा रक्खा। विक्रम संवत् १९३७ में जैन पंचोंने एक भारी रथयात्रा कराई, जिसमें विधर्म्मियोंने विघ्न करना चाहा परन्तु कुछ न कर सके। यहांका शिखरबंद मन्दिर दो चौकका है, पूजन प्रक्षाल और शास्त्रसभा होती है। इस मन्दिरमें तीन बेदी हैं, मध्यकी बड़ी बेदीमें मूलनायक शीतलनाथस्वामीकी प्रतिमा अति प्राचीन अतिशययुक्त बिराजमान है, जो कि विक्रम सम्बत ४ की है, और धातु पाषाणकी सब मिलाकर ९१ प्रतिमायें हैं, और शास्त्रजी प्राकृत संस्कृत भाषाके सब मिलाकर ३१२ हैं। इस नगरमें ज्योतिषरत्न आयुर्वेदमार्तंड चौधरी पंडित 'जियालालजी' जैन निवास करते हैं, जो चौधरी माणिकचंदजीके पौत्र और चौधरी सुमेरचन्दजीके पुत्र हैं ये महाशय जैनजातिमें बहुत प्रसिद्ध हैं। आप ज्योतिषके अच्छे जानकार हैं, जैनपंचाङ्ग भी प्रकाशित करते हैं। और आपहीने सबसे प्रथम जैन जातिमें 'जैनप्रकाश' नामक पत्र सन् १८८४ ई० में निकाला और सन् १८९६ में अवैतनिक उपदेशक होकर देशाटन किया था। विक्रम संवत १९५२ में अपने नगरमें ही एक चैत्यालय मन्दिरसे पृथक बनाकर धूमधामसे मेला कराया था। ज्योतिषके सिवाय मंत्रशास्त्र और वैद्यकमें भी योग्यता अच्छी रखते हैं। जिसके लिये आयुर्वेदके सम्मेलन विद्यापीठ नासिकसे ता० २८ मई सन १९०७ ई० के प्रथम अधिवेशनमें 'आयुर्वेदमार्तण्ड' यह उपाधि मिली थी। यहां पर दिगम्बर आम्नायके जैनियोंके गृह ६० हैं, और मनुष्यसंख्या २४० है। और एक धर्मशाला भी है।

पहले इस नगरमें खारी नमकका व्यापार अधिक होता था, और ४ लाख रुपयेके लगभग वार्षिक आमदनी प्रजाको होती थी, और २० हजारसे अधिक मनुष्य इसमें बसते थे, सांभरके व्यापारने यह नमक बरबाद करादिया। अब अनुमान ४००० मनुष्य रह गये हैं जिनका आधार केवल अनाजके व्यापारपर है, इस नगरमें एक 'शीसमहल' नामक स्थान देखने योग्य है।

फ़िरोजपुर।

फ़िरोजपुर नगर लुधियानासे पश्चिम और लाहौरसे दक्षिणकी ओर ४६ मीलकी दूरीपर सतलज नदीके बाएँ किनारे बसा है। ज़िलेका सदर मुकाम और रेल्वे स्टेशन है।

दिल्लीके बादशाह 'फीरोजशाह' तुगलकने फिरोजपुर बसाया था। पश्चिमके बादशाहोंकी चढ़ाई और नित्यकी लड़ाइयोंसे यह नगर उजड़ गया था। अंग्रेजी राज्यमें फिर अच्छा बस गया है। पुराना किला जो बस्तीके अन्दर था गिरा दिया गया है। और ग्रामके बाहर अंग्रेजी ढंगका एक नया किला बनाया गया है, इस किलेमें पंजाबका प्रधान तोपखाना है, देखने योग्य स्थानोंमें उपर्युक्त किला, फौजीछावनी, कचहरियां, पुलिसस्टेशन, जेलखाना, टाउनहॉल, बाग, अस्पताल. स्कूल, मेमोरियलचर्च हैं।

छावनीमें हर एक जातिके लोग बसते हैं। यहां अग्रवाल दिगम्बर जैनियोंके ८९ घर हैं, और मनुष्यसंख्या अनुमान ३९० है। बाजारमें दो दिगम्बर जैन मन्दिर अति उतंग, रमणीय और एक साथ मिले हुए बने हैं। जिनको अंग्रेज लोग भी देखनेके लिये आया करते हैं। मन्दिरजीमें जैनी भाई पूजन प्रक्षाल समयपर भक्ति पूर्वक करते हैं। मन्दिरमें कुल धर्मशास्त्र १९२ हैं। शास्त्रसभा प्रतिदिन होती है। मन्दिरके सन्मुख धर्मात्मा लाला देवीसहायजीकी उदारतासे एक जैन औषधालय कई वर्षोंसे स्थापित है जिसमें हकीम 'पातीरामजी' जैन कायमगंज, फर्रुखाबाद निवासी बहुत अनुभवी वैद्य हैं। तथा बाजारमें एक जैनपाठशाला भी ढाईवर्षसे अच्छी चल रही है। पंडित 'चंपालाल' और 'अमोलकचंदजी' जैन अध्यापक हैं। अनुमान ६० जैन और हिन्दू विद्यार्थी शिक्षण पाते हैं। शिक्षा महाविद्यालयके पठनक्रमके अनुसार दी जाती है।

कुछही दिन हुये कि यहांके उत्साही युवकोंने 'जीवदयाप्रचारक' सभा स्थापित करके बड़ा भारी कार्य अहिंसा प्रचारका किया है। सभाकी ओरसे हिन्दी उर्दू अंग्रेजी आदि भाषाओंमें एक मासिकपत्र निकलनेवाला है। सभाके सेक्रेटरी बाबू 'अमोलकचंदजी, पद्मावतीपरवार हैं। 'फिरोजपुर' शहरमे २१ दिगम्बर जैनियोंके घर हैं जिनकी मनुष्यसंख्या ८३ है। पहिले यहां मन्दिर नहीं था सं० १९६९ में मन्दिर बना है जिसमें धर्मशास्त्र ३९ हैं। पूजन प्रक्षाल और रात्रिमें शास्त्र-सभा रोज होती है। यहांके भाई 'दुर्गाप्रसादजी' धर्मात्मा सज्जनपुरुष है। छावनीसे शहर २ मीलकी दूरीपर है।

कस्बेमें गल्ले आदि खेतीकी पैदावारकी तिजारत होती है।

फ़ीरोजपुर-झिरका।

यह ग्राम गुड़गांव जिलेमें 'रेवाड़ी' से ३२ कोस दूर पहाड़ी रास्तेपर है, सवारी कोई नही जासकती। अलवर स्टेशनसे २० कोस पक्की सड़कपर बांके है। इक्का आदि सवारी मिलती हैं। फिरोजपुर झिरका पहिले नव्वाब 'अहमद बकशखां' की जागीरमें था. जब उसके बेटे नव्वाब 'शमसुद्दीनखां' को फांसी हुई. तो उसकी जागी-

रका यह भाग छीन लिया गया। इस नगरमें एक स्थानपर पहाड़से पानी झिरता है, इसी लिये इसे झिरका कहते हैं। यहांपर दि० जैनियोंके ५१ घर हैं, आर मनुष्यसंख्या २१५ है। और ३ शिखरबन्द मंदिर हैं, जिनमें धर्मशास्त्र १८२ हैं।

भिवानी।

हिसार जिलेमें हांसीके रेलवे स्टेशनसे २२ मील भिवानीका स्टेशन है। जिलेमें सबसे बड़ा व्यापारी कस्वा और तहसीलका सदरस्थान है।

भिवानी पहले एक छोटासा ग्राम था, थोड़े दिन बाद बड़ी प्रसिद्धि होनेके कारण जेसलमेर, बीकानेर, जयपुरके साथ व्यापार होने लगा। शक्कर, मसाला, धातु, नमकका बड़ा भारी व्यापार होता है।

भिवानीकी मनुष्यसंख्या अनुमान ३७ हजार है, इनमें दि० जैनियोंके खंडेलवाल अग्रवालोंके ३४ घरोंकी मनुष्यसंख्या १३८ है। २ शिखरबंद मन्दिर हैं।

मुलतान।

यह नगर जिलेका सदर मुकाम है लाहौरसे २०७ मील नैऋत्य दिशामें चनाव नदीके बायें किनारे वसा है, नगरके गिर्दकी दीवाल १५ हाथ ऊंची है, यह बहुत पुराना नगर है पर विशेष सुंदर नहीं है। यूनान (ग्रीस) का सुप्रसिद्ध सिकन्दर जो सन् ई० से ३२७ पहले हिन्दुस्थानमें आया और 'अटक' शहरके पास 'सिन्ध' नदीको लांघकर 'झेलम' की ओर बढ़ा उसने झेलमके किनारेपर राजा 'पोरस' को परास्त करनेके पश्चात् राजा मालीकी राजधानी मुलतानपर आक्रमण करके मुलतान ले लिया इसके पश्चात् मगधके 'गुप्तवंशी' और ग्रीसवालोंके आधीन रहा। बादमें मुसलमानों और सिक्खोंके आधीन रहा सन् १८४९ ई० में अंग्रेज सर्कारने सिक्खोंसे ले लिया।

नगरके अन्दर पुरानी मस्जिदें और कबरें हर कहीं देखनेमें आती हैं। फकीर शहरमें बहुत हैं। गर्मी बहुत कड़ी पडती है। इसके चारों ओर खजूर और आमके वृक्ष बहुत हैं।

शहरमें दिगम्बर जैनियोंके ३२ और छावनीमें ७ गृह हैं. जिनकी मनुष्यसंख्या सब मिलकर २४० के करीब हैं। तथा शहरमें एक शिखरबन्द मंदिर और एक चैत्यालय

है. जिनमें करीब ३०० धर्मशास्त्र हैं । मन्दिरके पास एक जैनपाठशाला और एक धर्मशाला भी है । जैनसभा यहांपर नियमित समयपर हमेशा होती है ।

मुलतान छावनीमें भी एक शिखरवन्द मन्दिर है जिसमें अनुमान १० धर्मशास्त्र हैं. और मन्दिरके पास एक धर्मशाला भी है ।

इस नगरमें इन वस्तुओंका व्यापार वहुत होता है:—रेशमीकपड़े. सूतीकपड़े, ऊनी कालीन, रेशमी खेस, दुशाले, दरियाई मसाला मेवा, लुगियां, खजूरें. सज्जी और कालेतिल । यहांके मिट्टीके वर्तन और मिट्टी प्रसिद्ध हैं ।

इस नगरमें दो स्टेशनें हैं पहिली मुलतान सिटी (शहर) और दूसरी मुलतान कॅन्टोनमेन्ट (छावनी) मे हैं । सवारी हर वक्त दोनों स्टेशनों पर मिलती है ।

रावलपिंडी ।

लवनी (नार्थवेस्टर्नके) स्टेशनसे २१ (लाहौरसे १७८) मील पश्चिमोत्तर रावलपिंडीका रेलवेस्टेशन है । पंजाबमें जिलेका सदरस्थान फौजी छावनीकी जगह 'लेह' नदीके उत्तर किनारेपर शहर और उससे दक्षिण फौजी छावनी है ।

रावलपिंडीका वर्तमान शहर हालका है, पुरानें शहरके स्थानपर छावनी वनी है. चौदहवी सदीमें मुगलोंके आक्रमणसे शहर वरवाद हो गया था । गक्करोंके प्रधान झंडाखांने शहरको सुधारा और रावलपिंडी पिंडीघेव (पिंड अथवा, अर्थ-ग्राम) रक्खा । रावलपिंडी सिक्ख सरदारोंके आधीन रहा. सन् १८४९ ई० में अंग्रेजोंका अधिकार हुआ ।

देशी शहरमें तहसीली पुलिसस्टेशन शहरका अस्पताल. गिर्जा और मिशनस्कूल हैं. जेलखानेके समीप चारसौ एकड़ भूमिपर एक सुन्दर पवलिक (सर्वसाधारण) का वाग. सुवह और शामको वहुत लोग पार्कमे टहलनेके लिये आते हैं. प्रधान वाजारके दरवाजेके पास एक सुन्दर मेहराव वनी है वाजारमे वहुतेरी अच्छी दूकानें हैं । सरदार सुजानसिंहका वनवाया हुआ सुन्दर वाजार है जिसके वनवानेमें दो लाख रुपये खर्च पड़े थे इनके सिवाय रावलपिंडीमें कई एक स्कूल. कोढ़ीखाना, पांच पहला एक किला, जिसके प्रति कोनोंपर एक पाया वना हुआ है किलेमें अनेक शस्त्रागार वने हुये हैं ।

सिविल लाइनोमें कमिश्नर डिप्टी कमिश्नरकी कचहरियां. छावनीके मजिस्ट्रेटकी कचहरी, इत्यादि इमारतें हैं ।

लेह नदीके दक्षिण ३ मील लम्बी २ मील चौड़ी भूमिपर फौजी छावनी फैली है, यह पंजाबकी फौजोंके प्रधान सेनापतिका मुख्य स्टेशन और भारतवर्षके सबसे बड़ी छावनियोंमेंसे एक है, छावनीमें कई यूरोपियन दूकानें हैं।

रावलपिंडीके दक्षिणमें प्रसिद्ध "माणिक्यालयस्तूपा" नामक बौद्धोंका खंडहर पड़ा है।

शहरसे ३ मील पूर्व सोहन नदीपर पुल है, शहरसे पूर्वोत्तर "जोहरा" गांवमें गंधककी खानि है, और रावलपिंडीसे १३ मील पर और दूसरे स्थानमें भी कुएसे मिट्टीका तेल निकलता है।

छावनीमें २२ अग्रवालोंके गृहोंकी मनुष्यसंख्या १९७ है। एक शिखरबंद मन्दिर है, मन्दिरमें धर्मशास्त्र १०९ हैं। जैनियोंमें सर्कारी मुलाजिमां (नौकरों) की संख्या अधिक है।

गेहूं इत्यादि गल्ला रावलपिंडीसे पंजाबके दूसरे भागोंमें भेजे जाते हैं, यहां बडे बडे तिजारती और कोठीवाले हैं। सूसीनामक रंगदार कपड़ा, दूसरा कपड़ा, कंबल, नस, कंघी, साबुन यहांके कारखानोंमें अच्छे बनते हैं।

रेवाड़ी।

गुड़गांव जिलेमें दिल्लीसे ५२ मील दक्षिण पश्चिम रेवारीका (R. M R) रेल्वेका जंकशन है। रेवारी तहसीलका सदरस्थान व्यापारी कस्वा है रेवारी पुराना कस्वा है, जिसको लगभग सन् १००० ई० में राजा रेवतने बसाया और अपनी पुत्री रेवारीके नामसे इसका नाम रक्खा। शहरकी आबादी तीस हजारके अनुमान है। बस्ती सघन वसी हुई है, बाजारमें हर प्रकारका सामान मिलता है इस नगरमें विशेषकर चीनी, गेहूं, जव, चना, लोहा और नमकका बड़ा व्यापार होता है, और कांसे पीतलके बरतन भी वहुत अच्छे बनते हैं। २०१ गृह दि० जैनियोंके हैं, जिनकी मनुष्यसंख्या ७१९ है। लाला 'मक्खनलालजी' अग्रवाल ऑनरेरी माजिस्ट्रेट, बैंकर रईस चेअरमेन म्युनिसिपल बोर्ड, सब रजिष्ट्रार. वाईस नंबरदार (मालिक १६ आना) रईस राज्यमान् प्रतिष्ठित पुरुष हैं। आपकी कोठी जैनमन्दिरके निकटही है। तीन शिखरबंद जैनमन्दिर और एक चैत्यालय शहरमें लाला साहिबकी कोठीके पासही हैं। और एक मन्दिर शहरके

बाहर एक मीलकी दूरीपर नशियांके नामसे प्रसिद्ध है । इसमें धर्मशाला भी है, इस मन्दिरको लालाजीके पितामह लाला 'रामपतजी' ने अपने व्यय (खर्च) मे वनवाया था, और १२ बीघा जमीन मन्दिरके नाम लिखकर मन्दिर पंचायतीके सुपुर्दकर दिया था । शहरके मन्दिरसे मगसिर वदी ९ को प्रतिवर्ष जैनरथोत्सव (रथयात्रा) होता है। देखने योग्य स्थान ये हैं:–रेल्वे स्टेशनके निकटका सुन्दर तालाव, राव तेजसिंहका वनवाया हुआ सुन्दर तालाव, कचहरी, सर्कारी वड़ा स्कूल और एक उत्तम टैनहाल (व्याख्यान–भवन) है । मन्डी यहां सव अनाजकी हैं । लाला 'मुकुंदमल कपूरचन्दजी' कालकानिवासी यहांपर अनाजके प्रसिद्ध आढ़तिया हैं ।

रोहतक ।

यह कस्वा देहलीसे वायव्यकोनमें ४२ मीलकी दूरीपर नॉर्थवेस्टर्न रेलवेका वड़ा स्टेशन और जिलेका सदरस्थान है ।

यह नगर पुराना और टूटा फूटा है । नये कस्वेसे उत्तर पुराने कस्वेकी जगह है । शहरके चारो ओर पक्का कोट है, जिसमें ग्यारह दरवाजे हैं । पहिले वहुत लोग वसते होंगे, अव यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान २२ हजार है । इनमें दि० जैनी ९९५ हैं ।

सराय मुहल्ला हैं जिसमें अग्रवाल जैनजातिके १९१ गृह हैं तथा एक जिन मन्दिर शिखरवन्द हैं इसके पास थोड़ी दूरीपर दूसरा शिखरवन्द जैनमन्दिर वावरा मुहल्लामें है । दोनों मन्दिरोमें पूजन प्रक्षाल यथाकाल होता है । प्रति रविवारको 'वावरे' मुहल्लेके मन्दिरमें सभा भी हुआ करती है । वाजार वजाजामें एक जैन पाठशाला भी है. जिसको सरकारकी तरफसे मदद मिलती है. १०० विद्यार्थी रजिष्टरमें दर्ज हैं, जिनमें ४० जैन और शेष अजैन हैं । चार अध्यापक शिक्षा देते हैं । मास्टर शिवरामसिंहजी पाठशालाके मंत्रीका कार्य करते हैं ।

रोहतकके पश्चिमकी ओर एक तालाव है, जिसको 'कर्ण' कहते हैं. यह हिन्दुओंका तीर्थ हैं । कचहरियोंके मकान गिर्जाघर स्कूल वाटिका आदि स्थान देखने योग्य हैं ।

रोहतकमें पगड़ी और कलानौरमें घोड़ेकी काठी आदि चमड़ेकी चीजें अच्छी वनती हैं । गल्लेका व्यापार अधिक होता है । कार्त्तिकमें घोड़ोंकी नुमायश होती है ।

लाहौर।

पंजाबप्रांतकी :राजधानीका सदर मुकाम है। यह प्राचीन शहर रावी नदीके बायें किनारेपर बसा हुआ है। कहते हैं कि रामचन्द्रके पुत्र 'लव' ने लाहौरको बसाया था। पहले नदी शहरके पास बहती थी, १६६२ ई० में नदीसे बहुत नुकसान हुआ इस लिये बहुतसा रुपया खर्च करके ४ मील लंबा एक बड़ाभारी ईंटोंका बन्धान बनाना पडा था, पर थोडे दिनोंके बाद नदी उत्तरकी तरफ हट गई और फिर लाहौरके पास नहीं आई। लाहौर राजा 'जैपाल' के समयमें बड़ा भारी और नामी शहर था, और इसके चारों तरफ १५ फुट ऊंची दीवार थी और उसमें १३ दरवाजे थे। दीवार अब गिरा दी गई है, लाहौर ईसाकी दूसरी सदीमें प्रसिद्ध हुआ और जब मुसलमानोंने पंजाबपर चढ़ाइयां की उस समय यह शहर राजपूत राजाओंकी राजधानी थी। सन्१७६७ ई० में सिक्खोंके अधिकारमें रहा बाद अलीवाल, मुदकी, फीरोजशाह, सुबरोनकी लड़ाइयोंके बाद लाहौर और सारा पंजाब अंग्रेजोंके:हाथ आ गया।

लाहौरमें अग्रवाल जैनियोंके गृह ३३ हैं, जिनमेंसे शहरमें २८ और छावनीमें ५ हैं और मनुष्यसंख्या १५४ है।

लाला रामचंद्रजी प्रोफेसर एम्. ए. आई. सी. एस. लाला मुंशीलालजी एम्. ए. गवर्नमेंट पेन्शनर बाबू ज्ञानचंदजी प्रसिद्ध पुरुष हैं। कई जैन महाशय अंग्रेजीके अच्छे विद्वान् है। यहांके जैनी सर्कारी नौकरी और साहुकारी ज्यादः करते हैं। एक मन्दिर बिना शिखरका है, जिसमें धर्मशास्त्र अनुमान २८ हैं। यहांपर दो तीन सालसे एक 'जैनबोर्डिङ्गहौस' भी खुला है जिसमें अंग्रेजी पढ़नेवाले विद्यार्थी, धर्मशिक्षाका अध्ययन करते हैं। बोर्डिङ्गकी देख रेख बाबू रामलालजी रखते हैं। विद्यार्थियोंमें ऊंची क्लासोंमें पढ़नेवालोंकी संख्या अधिक है।

लाहौरका अजायबघर, सन् १८६४ ई० में बना था देखनेके योग्य है, इसके साम्हने अनारकलीमें जमजमा बड़ी भारी तोप रक्खी हुई है। यह तोप १७६१ ई० में हिन्दुस्थानमें बनी थी। लॉरेन्सबाग मन्टगुमरीहॉल चिड़ियाघर महारानीकी मूर्ति मेयोहास्पिटल जो इटालियन ढंगका बना हुआ है अनारकलीके पास एक तरफको है। यह हास्पिटल मेडिकल कॉलेजके लिये १८७० ई० में खुला था।

शालिमारबाग लाहौरसे ३ मीलके करीब है, जिसमें खूबसूरत चबूतरे और फव्वारे लगे हुए हैं, यह बाग बड़ा अद्भुत है, गवर्नमेंटहौस लॉरेन्सबागके साम्हने यानें ठंडी सड़ककी बाईं तर्फ है। किला, बादशाही मसजिदें, मुसलमानी इमारतें, महाराजा

रणजीतसिंहकी समाधि, शाहदरेमें जहांगीरका मकवरा, दादागंजवख्सकी समाधि, कपडा बुननेकी कलें, पं० जनार्दनका वाग, रेलका कारखाना, मियांमीर, लेफ्टिनेंटगवर्नरकी कोठी, वाटरवर्क्स, (नलघर) कालेज, कई दूकानें, बाजार और कई देवमन्दिर इत्यादि स्थान देखने योग्य हैं।

लाहौरमें, गलीचे और कम्वल वहुत अच्छे बनते हैं। शहरमें कई सराय और कई धर्मशालाएँ हैं, जिनमें २ धर्मशालाएँ स्टेशनके पास थोड़ेही फासलेपर हैं। स्टेशनसे सवारी हर तरहकी मिलती है।

लुधियाना।

अम्बाला जंकशनसे ७१ मील पश्चिमोत्तर लुधियानाका रेल्वेस्टेशन है। सतलज नदीसे ८ मील दक्षिण बुधा नालेपर जिलेका सदरस्थान दर्शनीय सुन्दर शहर है। सन् १४४० ई० में लोदीखानदानके यूसुफ और निहंग नामक २ शाहजादोने इस शहरको नियत किया इससे इसका नाम लुधियाना प्रसिद्ध हुआ। पहले छोटासा नगर था, अंग्रेजीछावनी पड़नेसे इसकी तरक्की हुई, यद्यापि छावनी उठ गई है तो भी इसकी शोभा वढ़ती ही जाती है। गल्लेके व्यापारका तो केन्द्र है।

शहरके पश्चिमोत्तर किला है, छावनीके पश्चिम गिर्जाघर पब्लिकवाग है, कचहरियां जेल, स्कूल और शेख अब्दुलकादिर जलानीकी दरगाह देखने योग्य है। दरगाहपर जूनके माहमें वडा मेला भरता है, हिन्दुओका अप्रेलमें चैत चौदसका मेला भरता है। 'अलीवाल' गांव लुधियानेसे दक्षिणकी ओर सतलज नदीके किनारेपर है, यहांके मैदानमें सिक्खोकी सेनाको अंग्रेजोंने हराया था।

पश्मीने ऊनके वने हुये शाल गलूवंद और मोटे सूती कपडेके लिये लुधियाना शहर प्रसिद्ध है, और रामपुरके मुलायम ऊनके शाल, कपड़ा दुपट्टा पगडी और गाडी अनेक तरहके असवावकी सौदागरी होती है।

यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान ५० हजार है, मुसलमान अधिक हैं, अनुमान जैनी ९०० हैं। परन्तु दिगम्वरी एक भी नही है।

यहां कई सराएँ स्टेशनके पास हैं, और पासही डांकवंगला है, स्टेशनसे शहरतक सवारी हर तरहकी मिलती है।

श्यालकोट।

अमृतसर विभागमें जिलेका सदरस्थान, नार्थवेस्टर्न रेल्वेके बजीराबाद जंकशनसे २६ मील पूर्व श्यालकोटका स्टेशन है। स्टेशनसे शहरतक सवारी हर तरहकी मिलती है, मुसाफिरोंके लिये कई सराएँ हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा पांडुके पुत्र नकुल और सहदेवके मामा राजा 'शल्य' ने श्यालकोट बसाया, जिसकी राजधानी झंग जिलेमें गुजरांवाला जिलेकी सीमाके निकट 'साकला' थी। सन् ६९ या ७० ई० में राजा 'शालिवाहन' ने इसको सुधार करके राजधानी बनाई, इस राजाके पुत्र रसालूकी बहादुरीकी सैकड़ों कहानियां पंजाबके हर विभागोंमें लोग कहते हैं। इस शहरका किला राजा शालिवाहनने बनवाया था।

श्यालकोट खुला साफ खुबसूरत, और व्यापारकी बड़ी जगह है, अंग्रेजी सेनाकी बड़ी छावनी इस नगरमें है। कागज पक्का और अच्छा बनता है। सारे पंजाबमें यह कागज बिकता है। इस नगरके पूर्वकी ओर 'एक' नामक नदी है, इसका पानी कागज बनानेके लिये बहुत उपयोगी है।

श्यालकोटमें सौदागरी तेजीसे बढ़ रही है, इसमें कईएक धनी कोठीवाल और तिजारती लोग रहते हैं।

देखने योग्य स्थान ये हैं:—राजा शालिवाहनका 'किला' राजा तेजसिंहका बनवाया 'मन्दिर' बाबा नानकसाहबकी 'समाधि' यहां हरसाल बड़ा भारी मेला भरता है, 'दरबार वा वलीसाहब' नामक ढका हुआ कुआ है, जो एक सिक्ख राजपूतने बनवाया था, सिक्खोंकी बड़ी पवित्र जगह है, इमामअलीउलहककी 'दरगाह' बड़ी सुन्दर इमारत है, इनके सिवाय, तहसील, स्कूल, बड़ा बाजार, जिलेकी कचहरियां टाउनहाल, जेलखाना और छावनीभी देखने योग्य है।

शहर और छावनीकी मनुष्यसंख्या अनुमान ६० हजार है। इनमें जैनी अनुमान १२०० हैं श्वेताम्बरी ढूंढिये अधिक हैं। दि० जैनाग्रवालके एक घरकी मनुष्यसंख्या ७ है।

श्रीनगर।

काश्मीरकी राजधानी श्रीनगर जानेके ५ पहाड़ी रास्ते हैं, जिनसे अधिक आवागमन होता है—(१) जम्बूसे, (२) गुजरात कस्बेसे भींबर और पीरपंजर होकर १६० मील

(३) झेलम कस्बेसे पंच होकर १९७ मील (४) रावलपिंडीसे मरी होकर १९२ मील और (५) हसनअवदालसे अवटावाद होकर २०३ मील श्रीनगरका मार्ग है। पीरपंजरका मार्ग सवसे सुन्दर है। रावलपिंडीसे गाडीका मार्ग सव रास्ताओंसे उत्तम है, क्योंकि मरी और रावलपिंडी में तांगे वहुत मिलते हैं। रावलपिंडीसे वरमूला तक १६० मील पूर्व तांगा (एक प्रकारका टमटम) जाता है, यहांसे टट्टू अथवा झेलममें नावपर सवार होकर ३२ मील श्रीनगर लोग जाते हैं। रावलपिंडीसे श्रीनगर तक इक्केका किराया २७) रुपयेसे ३०) रुपये तक है। इक्का ५ दिनमें श्रीनगर पहुंचता है। रावलपिंडीके रेल्वेस्टेशनसे वरमूला तक डॉकके घोड़ेके वदलनेके लिये १३ चौकी (पड़ाव) वनी हैं। तांगाके डॉकके एक आदमीका भाडा ३८) रुपया लगता है। डॉक रातमें नहीं चलती है, ३ दिनमें आदमी श्रीनगर पहुंच जाता है। एक चौकीका भाड़ा, चढ़नेके लिये टट्टूका २) असवाव लादनेके लिये टट्टूका ॥।) आना इक्केका एक आदमीका ॥।=) आना और कुलीका ।) आना लगता है।

रावलपिंडीसे ३७ मील उत्तर **मरी** स्वास्थ्यकर स्थान है, ६६ मील कोहाला, ७८ मील दुलई, ८७ मील डोमल, १०० मील गढ़ी, १३५ मील ऊरी, १६० मील वरमूला और १९२ मील श्रीनगर है, सब स्थानोंमें अंग्रेज और देशी आदमियोंको टिकनेके लिये मकान वने हुये हैं। श्रीनगरमें एक सराय है।

झेलम नदीके दोनों किनारोंपर करीव २ मीलकी लम्वाईमें यह सुन्दर शहर वसा हुआ है। नदीपर ७ पुल और पत्थरके कई सुन्दर घाट वने हुये हैं।

काश्मीरका विस्तृत इतिहास अमात्यचम्पकके पुत्र **विल्हन** कविने काश्मीरके राजा **जयसिंह** के समय शक संवत् १०७० (सन् १८४८ ई०) में श्लोकवद्ध **राजतरंगिणी** में लिखा है।

पांडवोंके समयसे काश्मीरके आदिगोनर्दसे लेकर अपने समयके राजा तकका श्रृंखलावद्ध वृत्तान्त इसमें है।

आदिगोनर्दके पश्चात्के ४७ वां राजा **अशोक** * काश्मीर मण्डलका शासक हुआ। जिसने **जैनमत** ग्रहणकरके वितस्ता नदीके किनारेका सम्पूर्ण मैदान स्तूपमंडलोंसे पूर्ण कर दिया। प्रथम धर्मरण्य विहारसे होकर वितस्ता नदी वहती थी, इसके वेगसे वहुतेरे

* जिस मौर्यवंशी अशोकके धर्माज्ञा-स्तंभ और चट्टानोंपर खुदे हुए लेख मिलते हैं, वह अशोक यह नहीं है, यह राजा शनीचरके भतीजे थे।

चैत्यस्तूप बह गये थे; इसी लिये राजा अशोकने फिर ९६ लाख लक्ष्मीसे 'श्रीनगर' बसाया, और श्रीविजयेशके जीर्णमन्दिरका प्राकार (मंडप) फिरसे सुन्दर पत्थरोंसे बनवाया ।

प्राकृतिकशोभा—सारे काश्मीरमंडलमें चारों ओर हरियालीकी विचित्र शोभा है, हजारों स्थानोंपर पानीके सोते धरतीसे और पहाड़ोंके ऊपरसे निकलते हैं । बाग इतने हैं कि मनुष्यकी आत्मा प्रफुल्लित हो जाती है, आब हवा अति उत्तम है । मेवे (फल) बहुतसे उपजते हैं, और यहांकी स्त्रियां अतिसुन्दर और कोमलांगी होती हैं । पृथ्वी-मंडलपर काश्मीर स्वर्ग है । +

श्रीनगरमें देखने योग्य स्थान ये हैंः—अमीरोंके सुन्दर मकान, अस्पताल, स्कूल, टकशालघर, शेरगढ़ीके भीतर दृढ़ दीवारसे घेरा हुआ शहरका किला, और एक सुन्दर राजमहल है, जिसमें गर्मीके दिनोंमें काश्मीरनरेश जम्बूसे आकर रहते हैं, शहरकी मस्जिदोंमेंसे जामामसजिद प्रधान और वहांकी सब मसजिदोंसे बड़ी है, शेखबाग, शाहहमीदन,मसजिद, राममुन्शीबाग, पूर्वोत्तर बगलपर ९ मील लम्बी ढाई मील चौड़ी झील, शहरके निकट सुलेमान नामक पहाड़ जिसपर चढ़नेसे शहर और उसके आसपासका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है, पहाडीके सिरेपर एक बहुत पुराना पत्थरका मन्दिर है, जिसको हिन्दूलोग शंकराचार्यका कहते हैं, परन्तु वास्तवमें यह सन् ई० से २२० वर्ष पहिलेका बनाहुआ था जोकि अशोकके पुत्र जलोकका बनवाया हुआ बौद्धमन्दिर था, शहरकी उत्तरी सीमापर हरिपर्वतके सिरेपर अकबर बादशाहका बनवाया हुआ किला,

---

\+ सुरपुर अरु कश्मीर, दोउनमें को है सुन्दर ।
को सोभाको भौन, रूपको कौन समुन्दर ?
काकों उपमा उचित दैन, दोउनमें काकी ।
याकौं सुरपुरकी, अथवा सुरपुरकौं याकी ?
याको उपमा याहीकी, मोहि देत सुहावै ।
या सम दूजी ठौर सृष्टिमें, दृष्टि न आवै ।
यही स्वर्ग सुरलोक, यही सुर कानन सुन्दर ।
यहिं अमरनकौ ओक, यही कहुं बसत पुरन्दर ॥ पं० श्रीधरपाठक ।

---

(१) निवासस्थान, घर (२) इन्द्र ।

महाराजगंज, बाजार, जिसमें शहरकी बनी हुई सब चीजें मिलती हैं बारादरी, जहांगीर बादशाहकी बनवाई सैरगाह, जिसको शालामारबाग कहते हैं नसीम या राहतबाग और निशातबाग बहुतही सुन्दर हैं, श्रीनगरसे आग्नेयमें 'पामपुर' है, यहां केशरकी खेती होती है। ऊलरझील इनके सिवाय गुप्तगंगा, अनेक देवमन्दिर परियोंके महल, इत्यादि कई स्थान देखने योग्य हैं।

श्रीनगरके दुशाले, रेशमी दस्तकारी सोना चांदी तांबा चमड़ाका सामान और बेशकीमती पत्थरका काम, कागज और इत्रके कारण प्रसिद्ध है।

केशर कस्तूरी मेवा सुरह गायके वाल ऊन जंगलकी बेशकीमती लकड़ीका बहुत व्यापार होता है।

शिमला।

अम्बाला जंकशनसे ३९ मील पूर्वोत्तर पहाड़की तलेटीमें 'कालका' रेल्वेस्टेशन है, कालकामें एक शिखरबंद जैनमन्दिर और अग्रवालोंके ९ घरोंकी मनुष्यसंख्या १६ है। कालकासे शिमला जानेके लिये पुरानी और नई दो सड़कें हैं, पुरानी सडक कालकासे 'जुटोग' होकर शिमले तक ४१ मील है, उसी सडकसे मुसाफिर लोग झंपान या टट्टूपर चढ़ करके कसौली जाते हैं, कालकासे ९ मील कसौली एक फौजी छावनी है। नई सड़क पुरानी सड़कसे पूर्व है, इस सडकसे तांगा (एक प्रकारका इक्का) शिमला जाता है।

शिमला पंजाबके अम्बाला विभागमें जिलेका सदरस्थान भारतगवर्नमेंटकी गर्मीके दिनोंकी राजधानी, समुद्रके जलसे ७०८४ फुट ऊंचा है शिमलेकी आब हवा बहुत ठंडी रोग नाशक है। गर्मीकी ऋतुभर लाटसाहिब संयुक्तप्रान्त .पंजाबसे और प्रायः साहिब लोग आते जाते हैं।

पूर्वसे पश्चिम ९ मील लम्बे पहाडी सिलसिलेके ऊपर नये चन्द्रमाकी शकलमें यूरोपियन कोठियां फैली हैं, नीचेकी घाटीमें कईएक धारें हैं, जिनमें २ झरने बड़े हैं, सिलसिलेके पूर्वभागको छोटा शिमला कहते हैं, और पश्चिम बेजीगंज है। स्टेशनसे अखीर पश्चिम एक ऊंची खडी पहाड़ीके सिरेपर 'जुटोग' एक छोटा फौजी मकान है, जिससे सवा मील पूर्व 'प्रस्पेक्ट' पहाडी समुद्रके जलसे ७१४० फुट ऊंची है. पहाडीके एक मील पूर्व वाइसरायकी पुरानी कोठी है, जिससे पश्चिम अबजर्वेटरी पहाड़ीपर उत्तम 'गवर्नमेंटहाउस' बना है, इनके सिवाय लड़के लड़कियोंके कई स्कूल, टाऊनहाल गिर्जे,

क्लब, बेंक, कचहरियां अंग्रेजी दूकान और बाहिरके चारों ओरका उत्तम दृश्य देखने योग्य है।

यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान १९ हजार है, अग्रवालोंके १० घरोंकी मनुष्यसंख्या ३९ है। और एक जैनधर्मशाला भी है।

सुनपत।

यह शहर दिल्ली जिलेमें दिल्लीसे वायव्यकोनमें २९ मीलके फासलेपर (E. I. Ry) लेनपर स्टेशन है। स्टेशनसे २ मील शहरकी आबादी है, जिसमें दिगम्बर जैनियोंके गृह अनुमान २०० हैं, जिनमें १००० अग्रवाल हैं। यहां पर दि० जैनमन्दिर ४ हैं। इनमें एक मन्दिर बहुत बड़ा उतंग शिखरबंद है, जिसमें तीन वेदियां हैं, तथा दो मन्दिर शिखरबन्द और १ चैत्यालय भी है। मंदिरोंमें धर्मशास्त्र ३२६ हैं। सभा, पाठशाला और धर्मशाला पंचायती बड़े मन्दिरमें हैं। और एक चतुर्विधि दानशाला भी है, सभामें यहांपर पंडित 'उमरावसिंहजी' धर्मोपदेश देते हैं। सब मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षाल यथासमय प्रति दिन होती है।

हिसार।

हिसार नगर यमुना नहरके तटपर दिल्लीसे ४२ मील तथा लाहौरसे २०० मीलकी दूरीपर (R M. R.) लेनमें स्टेशन है। जिलेका सदरस्थान है, नये कस्वेसे उत्तर पुराने कस्वेकी जगह है। पहिले यहांपर भारी वस्ती थी और इसके पहिले जैनियोंने वसाया था, वसानेवालोंकी संतानमेंसे लाला 'जुगलकिशोरजी' अग्रवाल जैन अब भी हैं। रेलवे स्टेशनके साम्हनेही एक धर्मशाला है। 'अग्रोहा' ग्राम जहांसे अग्रवाल जातिकी उत्पत्ति है हिसार शहरसे १४ मील है, राजा 'उग्रसेन' जीके महलोंके खंडहर अब तक मौजूद हैं परन्तु इस समय इस अग्रोहा ग्राममें जैनी कोई नहीं है केवल वैष्णव अग्रवाल अब भी अधिक हैं। और सारे हरियाना खण्डमें बड़ा नगर था, परन्तु अब इसमें केवल १७६४७ आदमी वसते हैं। यहांपर दिगम्बर जैनियोंके आवाद गृह ८० हैं, जिनमें ३५४ लोग रहते हैं। और दो शिखरवन्द मन्दिर हैं, जिसमें १२९ धर्मशास्त्र हैं। पूजन प्रक्षाल आदि यथा समय होता है। जैनियोंके प्रसिद्ध कवि 'न्यामतविलास' के कर्त्ता लाला न्यायमूतसिंहजी यहीं निवास करते हैं। शहरसे २ फर्लांगके फासलेपर जैन 'अनाथाश्रम' की एक पक्की कोठी लंब सड़क जो बागमें है उसमें है। इस कोठीका

३०) माहवार भाड़ा आश्रमको देना पड़ता है । अब आश्रमने ३०००) रु० की अपनी जमीन शहरके भीतर डाकखानेके निकट खरीद ली है ।

आश्रममें जैन अजैन , ब्राह्मण, क्षत्रीय तथा स्पर्श शूद्र तकके बालक ९० तथा ४ कन्या इस समय धर्मविद्या राजविद्या, शिल्पविद्या आदिमें शिक्षा पाते हैं, शिल्प विद्यामें विशेष कर बढ़ई, दरजी, कपडा बुननेका काम सिखाया जाता है । बालकोंकी हालत अच्छी हैं । भोजन उत्तम दिया जाता है, और हर तरहसे बालकोंकी रक्षाकी जाती हैं। और भी इस आश्रमकी ओरसे निराश्रित जैन विधवाओं तथा अंधे, लूले, लंगडे अपाहिजोंको उनके निज घरोंपर ३) से ९) रु० मासिक सहायता भिन्न २ प्रांतोंमें दी जाती है । इस समय इंनकी संख्या ६० के लग भग है । इस आश्रम में ९०० अनाथ बालक बालिका भरती हो सक्ते हैं । परतु जैनियोंके बालक बालिकाएँ भर्ती करनेका पहिला अधिकार है ।

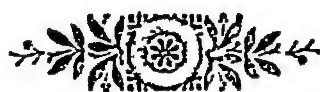
हिसाब आदि नियमानुसार रक्खा जाता है। प्रबन्ध योग्य और उत्तम है ।ब्रह्मचारी* चिरजीलालजी, सब योग्यरीतिसे करते हैं ।

देखने योग्य स्थान ये हैं । तारघर, डांकघर, सफाखाना और गवर्मेंट स्कूल शहरमें है। और शहरके बाहर स्टेशनकी बाजूपर डिप्टी कमिश्नरसाहिबकी कचहरी यहांकी गाय भैंस बैल प्रसिद्ध हैं जो दूध बहुत देती हैं । शहरके अंदर जुमामसजिद है, और फिरोजशाहका राजवाडीकी जगह कैटलफर्मके सुपरिंटेन्डेटका बंगला और कचहरी हैं । जुम्मामसजिद परके लेखसे मालूम होता है कि यह इमारत अह्लीमहमदने ई० सन् १५३९ में हुमायूंके समय बनवाई थी, अब भी फिरोजशाहके बाडेका नीचेका माला अच्छा है । एक पत्थरकी लाटभी गड़ी हुई है । और एक किला भी है ।

हिसारमें गल्लेका व्यापार अधिक होता है, और सुन्दर पगडियां बनती हैं कार्त्तिकमें घोड़ोंकी नुमायश होती है ।

---

* वर्तमानमे अनाथालय दहलीमे है और अनाथालयका प्रबध संतोषप्रद नहीं है ।



श्रीपरमात्मने नमः ।

बंगाल-बिहार प्रान्तके

तीर्थक्षेत्र और प्रसिद्ध प्रसिद्ध शहरोंका वर्णन ।



आरा ।

कलकत्तेसे ३६८ मीलके फासलेपर (ई. आई. आर. लाईनपर) स्टेशनसे एक मील उत्तर और गंगासे ६ मील दक्षिण आरा शाहाबाद जिलेका सदरस्थान रौनकदार शहर है। यह शहर अत्यन्त प्राचीन मनोज्ञ दि० जैन मन्दिर होनेसे प्रसिद्ध है। शहरमें १४ शिखरवन्द मन्दिर और १३ चैत्यालय हैं। एक शिखरवन्द मन्दिर शहरसे ८ मीलकी दूरीपर मसाढ़ ग्राममें है, और दो मन्दिर शिखरवंद धनपुरा ग्राममें जो शहरसे दो मील है वहां हैं। एक मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिविम्व १९०२ वि० सं० की प्रतिष्ठित विराजमान है, जिसकी नासिका सन् १८५७ ई० के गदरके समय कुछ खण्डित हो गई है। धनपुराके दोनों मन्दिरोंमें धर्मशालाएँ हैं। और मसाढ़के मन्दिरमें भी एक धर्मशाला है, इस प्रकार ३ धर्मशालाएँ तो शहरके वाहिर हैं। और यात्रियोंको सब प्रकारके आरामके योग्य एक वहुत वड़ी धर्मशाला शहर वाजारकी सड़कपर वावू हरप्रसाददासकी प्रसिद्ध है।

इसी शहरमें स्व० वावू देवकुमारकी इच्छानुसार वावू किरोड़ीचंदजीके प्रयत्नसे **श्रीजैनसिद्धान्तभवन** स्थापित हुआ है, इस भवनमें प्राचीन जैनग्रंथोंका वड़ा भारी समूह है, ताड़पत्रोंपर लिखे हुये कर्नाटकी लिपीके ग्रंथ भी सिद्धान्तभवनमें हैं। भवनकी ओरसे 'जैनसिद्धान्तभास्कर' ऐतिहासिक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित होता है।

पंचायती दि० जैनमन्दिर रेल्वेस्टेशनसे ४ फर्लांगकी दूरीपर शहरमें महाजनटोली नं० २ में है। इस मन्दिरमें भी एक धर्मशाला है। एक धर्मशाला जलमन्दिरके निकट, टुकटुककुंवरके मन्दिरमें, और एक. धर्मशाला वावू सुखानंदजीके वगीचेमें मन्दिरके पास है। इस शहरमें उपर्युक्त ७ दिगम्वर जैन धर्मशालाएँ हैं। जैनमन्दिर यहांके अत्यन्त रमणीय हैं। अग्रवाल, जैसवाल, दशाग्रवाल आदि दि० जैनियोंके सर्व गृह ६७ हैं, जिनकी मनुष्यसंख्या ३५० है। इस शहरके निवासी स्वच्छ,

प्रियवादी, और विद्वान् हैं, प्रत्येक मन्दिरमें हरदिन शास्त्रसभा होती है, सर्व मन्दिरोंमें ४३१ के करीव धर्मशास्त्र हैं। यहांपर एक कन्यापाठशाला भी है, आरेमें व्यापार सब प्रकारका होता है।

चौक, कचहरियां, मौलाबाग, नागरीप्रचारिणी सभा आदि कई स्थानभी देखने योग्य हैं।

कटक ।

उड़ीसा प्रान्तमें महानदीके दाहिने किनारेपर और उसकी शाखा काठजूड़ीके मेलके निकट उड़ीसा प्रान्तकी राजधानी जिलेका सदरस्थान है। कलकत्तेसे जहाज द्वारा भी लोग आते जाते हैं। स्टेशनसे सवारी हरतरहकी मिलती है। शहरमें कई धर्मशालाएँ हैं। यहांसे जगन्नाथपुरी जाना होता है।

कटकको केशरीवंशके एक प्रतापी राजा 'नृपतिकेशरी' ने जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था कटक शहरको बसाया और केशरीवंशकी राजधानी भुवनेश्वरीको छोड़ कटकमें रहने लगी। कई लोग इसे कटकबनारस भी कहते हैं, कई लोगोंका कहना है कि उडीसाके राजा अनंगभीमदेवने १२०० ई० के लगभगमें कटकको बसाया था। कटक शहरके उत्तर और पूर्व महानदी और पश्चिम काठजूड़ी नदी वहती है, बरषातमें महानदी वहुत वढ़ जाती है। नदीकी वाढ़से बचानेके लिये पत्थरका बांध बना हुआ है, और भी कई बांध हैं। इनमें महानदीका सबसे उत्तम है, इस बांधके वननेमें अनुमान १३ लाख रुपया खर्च हुआ था।

जोवराघाट आगवोट वनानेका कारखाना जोवराघाटसे एक मील कटक शहरका बक्सीवाजार और २ मील वालूवाजार और चौधरीवाजार है। वालूवाजारमें प्रधान दूकानें हैं। कटक शहर सोने चांदीके गहनेके लिये प्रसिद्ध है, यहांके समान साफ और सुन्दर चाँदी सोनेके गहने, हिन्दुस्थानके दूसरी जगहमें नहीं बनते हैं। कटक व्यापारी शहर है, वीमारी फैलनेके डरसे सर्वसाधारण यात्री शहरके भीतर जाने नहीं पाते हैं। अनंगभीमदेवका 'बारहवटी' नामक पुराना किला जो कि उजाड़ दशामें अब भी विद्यमान है, फतहखांकी मसजिद, नहर, कमिश्नरकी कचहरी, एक बड़ी इमारत, स्कूल, आदि कई स्थान देखने योग्य हैं।

मनुष्यसंख्या अनुमान ४८ हजार है, जैनियोंके परवारोंके ११ घरोंकी मनुष्यसंख्या ९७ है। दो जैनमन्दिर इनमें एक शिखरवंद मन्दिर है। मन्दिरोंमें अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त

पाषाण और धातुकी बहुतही प्राचीन मूर्तियां विराजमान हैं । शिखरबंद मंदिरमें १६ प्रतिमाएँ ऐसी हैं जिनमें सम्वत नहीं है, ये प्रतिमाएँ वि० सं० से पहिलेकी ज्ञात होती हैं, इन प्रतिमाओंमें खूबी यह है दोनों ओर चमरेंद्र चमर ढारते हुये खड़े हैं । यहांपर परवार जातिके प्रसिद्ध जागीरदार मंजू चौधरी बहुत प्रसिद्ध पुरुष हुये हैं । वर्तमानमें बाबू ईश्वरलालजी बेंकर प्रसिद्ध पुरुष हैं । कटकके आसपास कई जैन मूर्त्तियां मिली हैं इससे मालूम होता है कि यह जैनियोंका प्रधानस्थान रहा होगा । सुप्रसिद्ध खंडगिरि उदयगिरिको कटकसे जाना होता है । खंडगिरि उदयगिरिके पुराने कागजात उड़िया–भाषामें लिखे हुए बाबू ईश्वरीप्रसादजी कपूरचंदजी कटक निवासीके पास हैं ।

कटकके आसपास हजारों प्रतिमाएँ जैनियोंकी हैं । कुछका वर्णन इस प्रकार है:—

१ 'कंटाबणिया' नामक ग्राममें चौवीसीके २ पट ७ या ८ फुट ऊंचे हैं ।

२ कटकसे ३० मील 'वैदा' नामक ग्राममें ११ मूर्तियां हैं और इसी स्थानमें एक गुफामें ७२० प्रतिमाएँ हैं ।

३ कटकसे १५ मील 'साईबार' ग्राममें पांच सात प्रतिमाएँ हैं ।

४ कटकसे ६ मील पटिया ग्राममें ६–७ मूर्तियें हैं ।

५ कटकसे २० मील 'जगभारा' में २–३ प्रतिमाएँ हैं ।

६ कटकसे ४० मील 'जाजपुर' में ५–७ मूर्तियें हैं ।

७ कटकसे १० कोस 'हरिहरपुर' में २० मूर्तियां हैं ।

इस प्रान्तमें बहुतसी जैन प्रतिमाएँ हैं, परन्तु उड़ीसेमें जैनियोंकी संख्याकी कमी होनेसे रक्षाका प्रबन्ध नहीं होता है ।

कलकत्ता ।

यह शहर हिन्दुस्थानकी राजधानी + और सबसे बड़ा तिजारती (व्यापारी) शहर हुगली नदीके बायें किनारेपर बसा हुआ है ।

यहांपर (G. I. P. E. I. R:) और हिन्दुस्थानकी कई रेल मिलती हैं । शिवजीकी स्त्री और प्रसिद्ध देवी 'कालीमाई' के मन्दिर और 'काली [illegible]' कारण इस शह

रका नाम कलकत्ता पडा है । मन्दिर अनुमान: ३०० सालका पुराना है ।

कलकत्तेमें दि० जैनियोंके जो मन्दिर हैं उनका वर्णन नीचे लिखा है:—

पहला वडा मन्दिर चावलपट्टी गलीमें अति:उतंग शोभनीक है, इस मन्दिरमें विशेषकर खंडेलवाल भाई दर्शन पूजन शास्त्रादिमें आते हैं।

दूसरा नयामन्दिर चितपुररोड़ मछुवाबाजारमें संगमरमरका अति रमणीक है। ट्रामगाड़ी इस मन्दिरके साम्हनेसे ही आती जाती है, इस मन्दिरका प्रबंध अग्रवाल भाइयोंके हाथमें है ।

तीसरा मन्दिर अमरतल्ला गलीमें है।

चौथा कोलूटोलामें है ।

पांचवां आर्मेनियनस्ट्रीटमें सेठ शेठमल दयाचंदजीके कोठीके निकट कोठेपर एक चैत्यालय है ।

छठवां बलगछियाका मन्दिर कहलाता है जो कि वागमें है । इस मन्दिरमें केवल श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी मूलनायककी प्रतिमा सं० १८७८ के समयकी है । मन्दिरके साम्हने यात्रियोंके ठहरनेके लिये दुमंजली एक लालकोठी बनी है. धर्मशालामें रसोईघर आदिकी योग्य व्यवस्था है । यहांकी जैनपाठशाला चांवलपट्टीके वडे मंदिरमें है । यहांके भाइयोंमें शास्त्रस्वाध्यायकी प्रवृत्ति अच्छी है । सर्व मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षाल यथासमय योग्यरीतिसे होता है, यहांके दि० जैनियोंकी मनुष्यगणना १३८६ और ८५५ के करीव घर हैं। विशेपकर मारवाड़ देशके जैनी यहां अधिक हैं, यहां प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला १५को दि० जैनरथोत्सव बड़े समारोहसे होता है । दिगम्बर जातिके मुखिया नामी व्यापारी शेठ परमेष्ठीदासजी रानीवाले खुरजा निवासी शेठ पदमराजजी रानीवाले वावू धन्नूलालजी अटार्नी सुप्रसिद्ध हैं ।

इस शहरकी वड़ी वड़ी इमारतें देखने योग्य हैं, सुन्दर सुन्दर इमारतें होनेके कारण अंग्रेजलोग इस शहरको धवलधामपुरी कहते हैं। देखने योग्य स्थान:—

लाटसाहबकी कोठी, सरकारी दफ्तर, शाहीटकसाल (पृथ्वीभरमें सवसे भारी कोठी) स्टेंडमें, नवावातीवाग, शिवपुरमें चिड़ियाघर, अलीपुरमें अदनवाग, अखतर लोनीका मीनार मैदानमें, अजायबघर (अद्भुत पदार्थालय) में कई प्राचीन जैन प्रतिमाएँ भी हैं।

+ हालमें राजधानी दिल्ली होगई है ।

और एशियाटिक इंस्टिटयूशन चौरंगीमें, तारघर, बड़ा डांकखाना, मेटकाफहाल, संटपालका-गिर्जा, और कई गिर्जे, हाईकोर्ट, जैनियोंके मन्दिर, सेठ देवीप्रसाद और रायबहादुर बद्रीदासजी (श्वे०जैन) जौंहरीका बाग, और भी कई बाग, कई बाजार, फोर्ट विलियम (किला) लार्डों आदि कई प्रसिद्ध पुरुषोंकी मूर्तियां, मस्जिद, प्रेसीडेन्सी जेल, अलीपुरका जेल, प्रेसीडेन्सी कालेज, संस्कृत कालेज, मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज, विशिप्स कालेज, और भी कई स्कूल कालेज, अस्पताल, कई लाइब्रेरी, टौनहाल, टेलिग्राफ आफिस, कई बंक, रेल्वे आफिस, हवड़ेका स्टेशन, कालिकामन्दिर और घाट, कई हिन्दू मंदिर, पिंजरापोल, बंगालियोंकी कई संस्थाएँ इत्यादि कई स्थान देखने योग्य हैं।

यहां जलमार्गसे जहाजों द्वारा तथा थलमार्गसे रेलगाड़ी वैलगाड़ी आदि द्वारा हरप्रकारका बड़ा व्यापार होता है। इस शहरमें हिन्दू और जैन मुसाफिरोंके लिये बाजार नं० ९ शामाबाई लेनमें बाबू मोतीचंदकी धर्मशाला, और शेठ रामकृष्ण मारवाड़ीकी जैनधर्मशाला हरिसनरोडपर है। इन धर्मशालाओंमें किराया कुछ नहीं लिया जाता है एक और धर्मशाला हवड़ा स्टेशनके पास राजा शिवबकस बागलाकी है, इनके सिवाय छोटी २ और भी वहुतसी धर्मशालाएं हैं।

कासिम बाजार।

बंगाल प्रान्तमें मुर्शिदाबादके निकट कासिमबाजारमें एक दिगम्बर जैनमन्दिर ४०० वर्षका प्राचीन विद्यमान है। इसमें ११ प्रतिमाएँ हैं। पहले यहां जैनियोंके अनुमान ५०० घर थे, अव एक भी नहीं हैं। मन्दिरका प्रबन्ध यहांके निवासी श्वेताम्बरियोंके आधीन है। पूजन भोजक लोग करते हैं। यहांसे ७ कोस वालूचर ग्राम है, यहां दिगम्बर जैनियोंकी संख्या ५० है। ऋषभचंद रामचंद छावड़ा आदि भाइयोंने नया मन्दिर बनवाया है। वालूचरके जैनी गरीब और साधारण स्थितिके होनेसे कासिमबाजारके मन्दिरको श्वेताम्बरियोंसे अपने अधिकारमें नहीं ले सकते और न दिगम्बर पुजारी रख सक्ते हैं। दिगम्बर जैनीभाइयोंको उचित है कि, मन्दिर अपने अधिकारमें रक्खें।

कुलहा पहाड़।

यह पर्वत गयासे ३८ मील हजारीबाग जिलेमें राजा पद्माके राज्यमें ह। गयाजीके दक्षिण पश्चिम पक्की सड़क गई हुई है। १० मीलपर 'जिंदापुर' गांव है आगे १०

मील पर 'ढोवी' ग्राम। फिर वांई तरफ कच्ची सड़क मुड़ती है, तीन मील 'अमारुत' ग्राम है। फिर कच्ची सड़कके ६ मील आगे 'हंटरगंज' थाना हैं। यहां डांकवंगला है, तथा खाने पीनेका सामान कुलुहा पहाड़ जानेवालोंको यहांसे लेना चाहिये। इसके आगे जंगलके वीचमेंसे रास्ता है। 'हंटरगंज' में 'लीलांजन' और 'फल्गु' नदीका संगम है। नदीसे ६ मील आगे 'हतवरिया' ग्राम है। यहांपर मुसाफिरोंके ठहरनेको १ चट्टी है; ४, ५ कोठरियां वनी हैं। दक्षिणकी ओर करीव १ मील चलनेपर पर्वतके नीचे जंगलमें रास्तेकी दाहिनी तरफ एक बड़े वृक्षके नीचे वहुतसे पत्थरके टुकड़ोंका एक ढेर पड़ा है, इसके ऊपर 'श्री पार्श्वनाथस्वामी' की एक अखंडित अत्यन्त प्राचीन पद्मासन १। हाथ ऊंची कृष्णवर्ण दि० जैनप्रतिमा विराजमान है। यह मूर्ति वहुतही रमणीक है। अन्यमती लोगोंने सेंदूर और दही प्रतिमाके ऊपर इस कदर पोता है कि कई २ अंगुल चढ़ गया है। लोग हमारी इस पूजनीय प्रतिमाको 'द्वारपाल' के नामसे पुकारते हैं। मालूम होता है कि यह प्रतिमा या तो पर्वतके ऊपरके मंदिरकी यहां लाई गई है अथवा यहींपर मंदिर हो जिसमें यह मूर्ति विराजित हो। चढ़ाव वहुत जगहोंपर 'जैनवद्री' के समान है। सीधी उंची वड़ी २ चट्टानें हैं, जिनपर पग फिसलनेसे नीचे आ सक्ते हैं। २ मील ऊपर दाहिने हाथकी ओर एक मंदिर है, जिसको 'कुलेश्वरीदेवी' का मंदिर कहते हैं। इस मंदिरके वाहर इमलीके वृक्षके नीचे कई दिगम्बर जैनमूर्तियां पड़ी हैं। एक पार्श्वनाथकी अखंडित दि० जैनमूर्ति पद्मासन १। हाथ ऊंची वृक्षकी जड़में सट गई है, १ चौवीसी पटका पाषाण है, अन्य कई मूर्तियां इसी मंदिरमें विराजमान थीं। परन्तु वर्षोंसे जैनियोंके वेखवर रहनेसे ब्राह्मण पंडोंने इनको वाहर डाल दीं और उनके स्थानमें देवीकी मूर्ति स्थापित कर दी और इसे कुलेश्वरीदेवीका मंदिर प्रसिद्ध कर दिया। यह मंदिर ३ गज लम्वा २ गज चौड़ा होगा। वसंत पंचमी चैत्र आश्विनमें हजारों अजैन आते हैं, और यों भी नित्य आते रहते हैं। मिथ्यारूढ़िके अनुसार वहुतसे वकरे आदि चढ़ाते हैं. जिनका वध किया जाता है। पहाड़के पीछे 'दान्तार' और 'सर्गा' ग्राम हैं। वहांके पंडे प्रतिदिन अपनी २ वारीसे आते हैं, और शामतक ठहरकर लौट जाते हैं। इस मंदिरके साम्हने एक वड़ा भारी सरोवर है, जो पहाड़के ऊपर होनेपर भी चारों ओर ऊंची उठती हुई पर्वतकी शिलाओंके मध्यमें स्थित है, वड़ाही रमणीक और कमलोंसे प्रफुल्लित है। करीव ३०० गज लम्वा और ६० गज चौड़ा होगा। गहराई ४ मर्द (पुरुष) वतलाई जाती है, हर ऋतुमें पानीसे भरा रहता है, जल अत्यन्त निर्मल है। देवीके मंदिरकी दक्षिणकी ओर एक पीपलका वृक्ष है। इसके नीचे '२ दिगम्वरजैन प्रतिमाएं' पड़ी हैं। एक मूर्ति एक हाथकी पद्मासन है, मस्तक खंडित है, आसनमें लेख है संवत

१४४३ मालूम होता है। दूसरी मूर्तिका भी मस्तक खंडित है, पद्मासन है, आसनमें लेख है; पढ़ा नहीं जाता। इसके आगे 'भीम्मरगुफा' है। यहां कई गुफाएँ हैं। एक गुफाके नीचे १ हाथकी पद्मासन एक मूर्ति है, मस्तक खंडित है। दोनों ओर दो मुनियोंकी मूर्तियें हैं; नीचे अस्पष्ट लेख है, एक बड़ी गुफामें एक जीर्णमंदिरके चिन्ह हैं। वरुण वृक्षके नीचे बन्द गुफाके भीतर एक पार्श्वनाथस्वामीकी दि० जैनमूर्ति अत्यन्त प्राचीन और मनोज्ञ २॥ हाथ ऊंची पद्मासन कृष्ण वर्ण ९ फनकी बिलकुल अखंडित और पूजनीय विराजमान है। अन्यमती इस हमारी परम ध्यानाकार प्रतिमाको भैरोंके नामसे कहते हैं, और सेंदूर चढ़ाते हैं। इसके ऊपर कोई लेख नहीं है, इससे चतुथकालकी प्रतीत होती है। जो उपसर्ग जैनियोंकी वेखवरीसे इस समय प्रतिमाजीपर मौजूद है वह कब दूर होगा?

आगे इसी भीम्मर गुफाके सम्बन्धमें एक ऐसी गुफा है, जो एक बड़ी भारी शिलासे छाई हुई है, भीतर लेट करके जानेकी राह है। अन्दर केवल एक मुनिके पद्मासन आकारमें बैठनेकी ही जगह है।

आगे सरोवरके उत्तर पश्चिमके तटोंपर वृक्षोंकी ओर जलकी रमणीकता और एकान्तता है। सरोवरके उत्तरकी ओर एक ऐसा सुन्दर मैदान है कि जिसपर मालूम होता है कि किसी समय जैनमंदिर होगा। इस स्थानपर जैनमंदिरकी अपूर्व शोभा आ सक्ती है। दक्षिणकी ओर चढ़नेकी वहुत साफ कृष्ण वर्णकी एक ऊंची चट्टान है। १०० गजके अनुमान चढ़नेपर एक कुंड आता है, जिसको 'सूरजकुंड' कहते हैं। इसमें एक मर्द पानी भरा हुआ है। इसके किनारे एक छोटी बौद्ध मूर्तिका आसन पड़ा है। इस चट्टानके ऊपर जानेपर मैदान है। वहां एक छोटा दि० जैन ५ कलशीदार शिखरबंद मंदिर बना हुआ है। ५०० वर्ष पहलेका निर्मापित मालूम होता है। इस मंदिरमें वेदी है। वेदीमें एक मूर्ति ९ इंच चौड़ी पद्मासन सन् १९०१ में अखंडित विराजमान थी, परन्तु अब केवल आसन ही है, जिसपर सांतियेका चिन्ह है, इससे मालूम होता है, कि यह श्रीसुपार्श्वनाथस्वामीकी विम्व थी। सुनते हैं कई वर्ष हुए अजैनोंने इस मूर्तिको खंडित कर डाली है। मंदिरके चारों ओर चबूतरा और प्रदक्षिणा है। मंदिरके पीछे एक शिलाके ऊपर जानेसे करीब ८० गज मंदिरके उत्तर पूर्व एक साफ गोल चट्टान है, इसको पंडेलोग 'माधव मढ़ई' कहते हैं। किन्तु यह समोशरणका चिन्ह है। यहां मंडप छाया गया था मंडप छानेके ९ छिद्र हैं, एक बीचमें ८ कोनोंपर; मध्यमें पूजन स्थान बना हुआ है। इस चट्टानपर 'शिलालेख' है, ४ लकीर मालूम होती हैं, अक्षर नागरी हैं, वायु और धूपसे अक्षर घिस गये हैं, संवत् १०००, स म द स षा आदि अक्षर मालूम होते हैं, इस चट्टानके चारों ओर

लोगोंके वैठनेका चवूतरा है। इस ओर पहाडकी चट्टानें वहुत ही रमणीय हैं। यहांसे पर्वतकी शोभा वड़ी वहारदार है, चारों ओर हरे २ वृक्ष सुगन्धि विस्तारते हैं, इस पर्वतपर सालके वृक्ष वहुत हैं, इनकी लकड़ीमें वहुत वड़ी सुगन्धि आती है। वायुपुराणमें गयामहात्म्यमें इस पर्वतकी प्रशंसा लिखी है। एक श्लोकका आधा चरण इस भांति है. "कोलाहले गिरिवरे तपस्तेपे सुदारुणं"। इस पर्वतपर कौवे कभी नहीं वोलते न यहां मक्खियां थीं, परन्तु जवसे देवीके सामने पशुहिंसा होने लगी है, तवसे मक्खियां दिखलाई देने लगी हैं। सामने जो नवीन मंदिर है वह जैनियोंका है। ५०० वर्षका वना है तथा इसकी प्रतिमाको थोडे दिन हुए किसीने खंडित कर दी है। एक वहुत ऊंची शिलाके नीचे दवी हुई 'वानगंगा' हैं, जिसमें सदा पानी भरा रहता है; गहराई सिर्फ १ लोटा डूवने तककी है। वाहरसे जल दीखता नहीं है। न कोई पक्षी कभी चोंच दे सक्ता है, और न वरषातके पानीकी एक वूंद ही इसमें पड़ सक्ती है। भीतरही भीतरसे परम निर्मल जल भरा रहता है। यह जल मोतीके समान परम शुद्ध है। कहते हैं कि जेठ महीनेमें इसी प्रमाण पानी भरा रहता है। ऊपर चट्टानें चढ़नेपर 'आकाश लोकन' नामकी शिखा है यह चोटी सर्वसे ऊंची है, और कोसोंसे दिखाई देती है। नीचेसे १॥ मील ऊंची होगी। इस शिखरपर एक चरणपादुका वहुतही प्राचीन अंकित है। दोनों चरण १ वालिस्त लम्वे होंगे, याने ८ इंच लम्बे, और आध इंच चौड़े होंगे। यह चरणपादुका अवश्य किसी तीर्थंकरके कल्याणकके चिन्ह स्वरूप होगी, ऐसा विदित होता है। इस विषयमें एक अंग्रेजने लिखा है कि यही 'भद्दलपुर' है, और यह चरण भी श्रीशीतलनाथस्वामीसे ही सम्वन्ध रखते हैं। यहांसे ८ कोस १ 'भदिआ' ग्राम है, जो 'अमारुद' से ४ कोस है।

शिखरसे नीचे उतरनेपर महान शिलाकी एक ओरकी भीतमें १० दि० जैन प्रतिमाएँ पद्मासन प्रत्येक एक एक फुटकी ऊंची अखंडित पर्वतमें अंकित हैं। हरएकके दोनों ओर चमरेन्द्र वने हैं। प्रतिमाओंके आसनोंमें चिन्ह भी हैं, जो प्रगट होते हैं। वे वैल, हाथी. घोडोंके हैं। अनुमानसे मालूम होता है कि प्रथम तीर्थंकरसे १० वें तीर्थंकर शीतलनाथस्वामी तकके ये विम्व हैं। प्रक्षाल न होनेके कारण वहुत काई जम गई है। अन्यमतियों द्वारा सिन्दूर दही चढानेसे भी वहुत हानि पहुंचती है। इन दसों प्रतिमाओंके ऊपर नागरी भाषामें लेख है जो वहुत घिस गये हैं। केवल निम्न अक्षर पढ़े गये:—

"श्रीमत् महाचंद फलिंद सुपुत्र सघ धर मई स ह सिद्धम्" इन दस मूर्तियोंके स्थानको पंडोंने दशावतार गुफा मशहूर कर रक्खा है। इसी वृहद्शिलाकी दूसरी ओरकी भीतमें भी १० दि० जैनप्रतिमाएँ हैं। पांच पद्मासन एक २ फुटकी, और ५ खड्गासन डेढ़ २

हाथ ऊंची अत्यन्त मनोज्ञ ध्यानाकार सर्व अखंडित पर्वतमें अंकित हैं। चिन्ह अप्रगट हैं। ऊपर लेख हैं, नागरीमें ७ लाइन है, अस्पष्ट होनेसे पढ़ा नहीं जाता है। इस स्थानको पंडोंने पांडव गुफाके नामसे मशहूर कर रक्खा है। पर्वतकी उंचाई आकाश लोकन शिखरतक ३ मीलकी होगी।

इस पर्वतके विषयमें इन्डियन एन्टीकेरी मार्च १९०१ Indian antiquary March 1901 म एक लेख है जिसका शीर्षक है "Tour in South Bihar and Hagaribagh by M. A. Stein Ph. D." अर्थात् दक्खिन बिहार और हजारीबागमें दौरा महाशय एम. ए. स्टीन पी. एच. डी. का दौरा। इस साहबने इस पर्वतका बहुतसा हाल लिखा है और यही निश्चय किया है कि यह 'जैनतीर्थ' है।

एक स्थानमें वह लिखते हैं जिसका सारांश यह है:–

"आकाशलोकन शिलाकी चरणपादुकाको पुरोहित लोग कहते हैं कि विष्णुके हैं, परन्तु देखनेसे ऐसाही निश्चय होता है कि यह जैनतीर्थंकरकी चरण–पादुका हैं और ऐसाही मानकर इसकी असलमें पूजा होती थी"। आगे लिखता है:—

जिसका भावार्थ यह है:—

"पूव कालमें यह पहाड़ अवश्य जैनियोंका एक प्रसिद्ध तीर्थ होगा यह बात भले प्रकार स्पष्टतया प्रमाणित है। क्योंकि सिवाय दुर्गादेवीकी नवीन मूतके और बौद्ध मूर्तिके एक खंडके अन्य सर्व पाषाणकी रचनाके चिन्ह जो पहाड़पर हैं, चाहे अलग पड़े हुए, चाहे शिलाओंपर अंकित, वे सर्व तीर्थंकरोंको ही प्रगट करते हैं"।

'आकाश लोकन' शिलापर जो अत्यन्त प्राचीन चरण पादुका हैं वे खुली हुई हैं। धूप और वर्षातसे और अधिक हानिको प्राप्त होंगी। इसलिये इनके ऊपर एक गुमटी ईंट व पत्थरकी बननी चाहिये। जो ५०० वर्ष पहलेका अखंडित जैनमंदिर उसके भीतरकी वेदीमें प्रतिष्ठित प्रतिबिम्ब विराजमान करना चाहिये। जो पार्श्वनाथस्वामीकी मूर्ति देवीके मंदिरके बाहर वृक्षमें सटी है या तो उसको, या जो मूर्ति द्वारपालके नामसे पर्वतके नीचे है उसको इस मंदिरमें विराजमान किया जाय तो अच्छा है। इस मंदिरके आगे ऊपर जो समोशरणका स्थान है व शिलालेख है उसके ऊपर टीनकी छतरी छा देनी चाहिये, जिससे इस स्थान और लेखकी भले प्रकार रक्षा हो सके।

'भीम्भरगुफा' के पास जो जीर्णमंदिर है उसको ठीक कराके सुन्दर वेदी बनवाके चौथे कालकी श्री पार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिबिम्ब २॥ हाथ ऊंची पद्मासन जो गुफामें

रक्खी है उसको विराजमान करना चाहिये। पर्वतके नीचे द्वारपाल नामसे प्रसिद्ध जो श्रीपार्श्वनाथकी मूर्ति है उसको यदि वहांसे उठानेमें कोइ बाधा हो तो उसी स्थानपर एक गुमटी बना वेदीमें प्रतिमा विराजमान करना चाहिये।

हतवारियां ग्राममें १ धर्मशाला बननी चाहिये तथा एक पुजारी और एक आदमी मंदिरादिकोंकी रक्षा सेवाके वास्ते नियत होना चाहिये।

इस क्षेत्रके सुधारमें धन व्यय करना नवीन मंदिर बनानेकी अपेक्षा कोटिगुणा फलका देनेवाला है।

यात्रियोंको सुभीता—

यात्रियोंको उचित है कि गयाजीसे अवश्य इस क्षेत्रकी वन्दनाको जावें।

भद्दलपुर—श्रीशीतलनाथस्वामीका जन्म शास्त्रानुसार भद्दलपुर नगरमें हुआ है, वह भद्दलपुर क्या वही भदिया गांव है, जो इस पर्वतके निकट है ? यदि यह बात भले प्रकार प्रमाणित हो जावे तो यह कुलुहापहाड़ श्रीजिनेन्द्रके तप और ज्ञान कल्याणकका स्थान है, और भद्दलपुर गर्भ जन्मका ऐसा मानना होगा।

कहते हैं कि भदियामें एक सहस्रकूट चैत्यालय भी मौजूद है। भदेलीके जंगलके भीतर एक मंदिर है उसमें वौद्धोंकी कई प्रतिमाएँ हैं, जंगलमें सहस्रकूट चैत्यालय पाषाणका पडा हुआ है। उसमें १००८ मूर्तियें हैं, इनका आसन वौद्धमतकी प्रतिमाओं सरीखा है।

विद्वान् परोपकारियोंको उचित है, कि वे शास्त्रद्वारा इस बातका निर्णय करें कि भद्दलपुर यही है, या कोई दूसरा यदि यह साबित हो तो तीर्थक्षेत्रकमेटीको उचित है कि जन्मपुरीमें चरण स्थापित करावे और इस तीर्थको प्रसिद्ध करे।

श्रीक्षेत्र।

खंडगिरी और उदयगिरी।

बंगालके उड़ीसा प्रान्तमें मिदनापुर बेझवाड़ा रेल्वे लेनमें कटकसे तीसरा स्टेशन भुवनेश्वरसे ५ मील पश्चिम पुरी जिलेमें 'उदयगिरी-खंडागिरी' दो पहाड़ी हैं। भुवनेश्वरसे उदयगिरी और खंडगिरीकी तलहटी तक छोटे वृक्षोंके जङ्गलसे होकर मार्ग गया है। दोनों पहाड़ियोंके बीचमें एक तङ्ग घाटी है। दोनोंपर पत्थर काटकर अनेक

भाँतिकी बहुतेरी गुफा और मंदिर बनाये गये हैं। जो ईसासे लगभग ५० वर्ष पहलेसे ५०० वर्ष पीछे तकके बने हुए हैं।

'उदयगिरी'-यह पहाड़ी ११० फीट ऊंची है। इसके कटिस्थानमें भीतरसे पत्थर निकालकर जगह जगह गुफा, मंदिर बने हैं-सीढ़ियोंसे जाते हुए आगे दाहिने हाथपर 'अलकापुरी' गुफा है इसके द्वारपर हाथियोंके चिन्ह बने हैं। फिर 'जयविजयगुफा' इसके द्वारपर इन्द्र बने हैं। 'रानीनूर' (याने रानीका महल) इसका रानीका महल नाम पड़नेका कारण यहांके 'भूमिया' जातिके लोग कहते हैं कि एक रानी यहां भागकर आ ठहरी थी। यह दो खनकी है। इस गुफामें नीचे ऊपर बहुतसी ध्यानयोग्य अंतर गुफाएँ हैं। नीचे एक द्वारपर एक 'दिगम्बर जैन प्रतिमा' अंकित है। २० दरवाजे हैं, जिनमें स्त्री-पुरुषोंके चित्र बने हैं। ऊपर १० दरवाजे हैं; वृषभका चिन्ह, मनुष्य सहित सिंहका चिन्ह बना है, तथा भीतोंपर सीताहरण आदिके चिन्ह अंकित मालूम होते हैं। इसके आगे चलकरः—

'गणेशगुफा'-आती है। इस गुफाके बाहर मैदानमें दो बड़े २ पाषाणके हाथी बने हैं। इसके चार द्वार हैं द्वारपर चित्र हैं। भीतर गुफाके दो भाग हैं, एकमें एक दिगम्बर जैनमूर्ति अंकित है, दूसरीमें एक शिलालेख है, जिसके बगलमें एक गणेशकी मूर्ति है। इसके आगे एक ललिताकुंड नामक सरोवर है। यहांसे लौटकर स्वर्ग, मध्य, पाताल गुफा है। स्वर्गमें ३ द्वार हैं, दूसरे द्वारपर एक शिलालेख है। मध्यमें ७ द्वार हैं, २ लेख हैं, चित्र बने हैं। नीचे पातालगुफामें ६ द्वार हैं खम्भोंपर चित्र हैं। इसके ऊपर 'हाथीगुफा' १९ गज पश्चिमोत्तर है, यहां पत्थरके भीतर कई अन्दर गुफाएँ हैं। इस गुफाके ऊपर छतमें लाट अक्षरोंमें एक प्राचीन प्राकृत भाषाका बड़ा शिलालेख है जो कि खारावेल राजा द्वारा सन् ईस्वीसे १५५ वर्ष पहलेका अंकित है। इसके सिवाय इस गुफामें गुप्त अक्षर और कुटिला अक्षरोंमें कई छोटे शिलालेख हैं। इसमें कहते हैं कि कलिंग देशके जैनराजा ऐराका जिकर है।

खंडगिरि-यह पर्वत १३३ फीट ऊंचा घने दरख्तोंसे छिपा हुआ है। खड़ी राहसे ऊपर जाना होता है। सीढ़ियोंके सामनेही एक गुफा है जिसको 'खंडगिरिगुफा' कहते हैं। इसके अंदर ऊपर नीचे ५ गुफाएँ बनी हैं। यह सब मुनियोंके ध्यान करनेकी गुफाएँ हैं। ऊपर जातेही कोठरीगुफा, तांतुआगुफा, और अनंतगुफा हैं।

'अनन्तगुफा'-इस गुफाके भीतर मध्यमें एक कायोत्सर्ग प्रतिमा करीब १॥ हाथकी बिराजित है। इसको अजैन लोग 'अनन्तदेव' कहकर पूजते हैं। इस गुफाके दो द्वार

और एक खोल है। सर्प अंकित है, एक द्वारपर कल्पवृक्ष, दोनों ओर स्त्री पुरुष और ९ खम्भोंपर देवोंके चित्र खुदे हैं। गुफाके वाहर दीवालमें एक 'शिलालेख' है। ऊपर चोटीपर एक छोटा और एक वड़ा दिगम्बर जैनमन्दिर है। छोटे मन्दिरको अनुमान ७९ वर्ष हुए कटक निवासी जागीरदार ईश्वरलाल परवारकी काकी 'धूमावाई' ने निर्मापण कराया था। इसमें एक प्रतिमा कायोत्सर्ग प्राचीनकालकी प्रातिहार्य्य सहित ६ गिरह ऊंची विराजमान है। इसके दक्षिणकी ओर वड़ा मन्दिर है। जिसके दो शिखर हैं। ये शिखर मन्दिरकी चौकीसे ही ऊपरको उठे हुए हैं। एक शिखर वेदीके आगे गोल दालनपर है। दूसरा जहां वेदी विराजमान है उस दालानके ऊपर है। इस मन्दिरको कटकके सुप्रसिद्ध स्व० 'मंजूलाल चौधरी' परवार दिगम्बरजैनने अनुमान २०० वर्ष हुए वनवाया था इस वड़े मन्दिरकी वेदीमें ७ प्राचीन दिगम्बर जैन प्रतिमाएँ भीतपर लगी हुई हैं, जिनमें प्राचीनताके कारण किसी किसीके नासिकादि अंग खंडित हो गये हैं, परन्तु वीतरागता सवपर दर्श रही है। इनमें ५ प्रतिमाएँ श्रीआदिनाथस्वामीकी एक पार्श्वनाथस्वामीकी और एक प्रतिमाका चिन्ह दव गया है। यहां पुजारीका प्रवन्ध न होनेसे पूजन प्रक्षाल नहीं होता मन्दिरके पीछे चारों ओर मैदानमें सैकड़ों पाषाणके खंड पड़े हैं, जिनमें चार प्रतिमाएँ नन्दीश्वरकी अंकित हैं। इस स्थानको भूमिया लोग दवसभा कहते हैं। आगे चलनेपर नीचे उतरके एक जलसे भराकुंड है, जिसको आकाशगंगा कहते हैं। इसके आगे मुनियोंके ध्यानकी वहुतसी गुफाएँ हैं, जिनमें एक गुफाक कोनेमें एक कुंड है जिसका नाम 'गुप्तगंगा' है। इसक आगे 'श्यामकुंड' और 'राधाकुंड' नामके दो कुंड है। इसके आगे राजा ललाट इंदुकेसरीकी गुफा है। इसमें आठ खड्गासन दि० जैन प्रतिमाएँ अंकित हैं। इसी गुफाके पीछेकी भीतपर दो २ हाथकी दो कायोत्सर्ग दि० जैन प्रतिमाएँ खुदी हुई हैं। इसके पास एक 'शिलालेख' है। इसके आगे 'श्रीआदिनाथस्वामी' की गुफा है, जिसमें चिन्हांकित २४ दि० जैन प्रतिमाएँ हैं। इन प्राचीन मूर्तियोंके आगे थोड़े कालकी वनी हुई ३ वेदियां हैं। जिनमें एक २ प्राचीन प्रतिमा विराजमान है। यह गुफा ३ द्वारकी है। आगे घुसतेही वगलमें क्षेत्रपालकी २ पिंडी हैं।

इसके आगे दूसरी १२भुजी गुफा ३द्वारकी है। जिसके भीतर भीतमें २४ दि०जैनप्रतिमाएँ अंकित हैं, इनमें केवल एक खड्गासन है। २४ मूर्तियोंके नीचे २४ यक्षिणीकी मूर्तिएँ वनी है। अन्दर जाते ही दोनों वगलोंमें एक २ देवीकी मूर्ति है। इसको अन्यमती दुर्गा कहते हैं। इसके आगे 'नवमुनिगुफा' है। इसमें १० दिगम्बर जैन मूर्तियाँ पद्मा-

सन हैं; नीचे ८ यक्षकी मूर्त्तियाँ हैं, इस गुफामें प्रतिमाके साम्हने भीतपर बगलमें दो शिलालेख है वे नीचे दिये जाते हैं:—

मूर्तियोंके सामनेका लेखः—

ॐ श्रीमद्द्योतकेशरिदेवस्य प्रवर्द्धमाने विजयराज्ये सवत् १८........

श्रीआर्यसघप्रतिवद्धगृहकुलविनिर्गतदेशीयगण- श्रीआचार्य्य-श्रीकुलचंद्रभट्टारकस्य तस्य शिष्य-शुभचंद्रस्य ॐ ॥

मूर्तियोंके बगलका लेखः—

ॐ श्रीआचार्य्य-कुलचंद्रस्य तस्य शिष्यखल्लशुभचंद्रस्य।

श्रीगच्छत........छात्रपिजो........

खंडगिरि-उदयगिरीको 'बौद्ध' लोग भी पवित्र मानते हैं बौद्धोंकी कई प्राचीन गुफाएँ और बुद्धदेवकी कई मूर्तियां हैं।

इस क्षेत्रके प्रवंधके और धर्मशालादि बननेके बाबतमें भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र-कमेटी और अन्य धर्मात्माओं द्वारा कोशिष हो रही है।

गया।

बांकीपुरसे ५७ मील दक्षिण, बिहार प्रदेशके पटना विभागमें जिलेका सदरस्थान हिन्दुओंका तीर्थ गया शहर है।

गया श्राद्धके लिये भारतवर्षमें प्रधान है, आश्विन मासके कृष्णपक्षमें लाखों यात्री गया आते हैं।

स्टेशनसे शहरतक हरतरहकी सवारी मिलती है। शहरमें कई धर्मशालाएँ हैं।

गया २ हिस्सोंमें बँटा हुआ है, अर्थात् साहवगंज, पुरानी गया, दोनों फल्गु नदीके बाएँ किनारेपर हैं। साहवगंजमें रेल्वे स्टेशन यूरोपियन देशी लोगोंकी कोठियां कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल, पब्लिकलायब्रेरी, तैरनेका हम्माम और घुड़दौड़की सड़क है। साहवगंज व्यापारी जगह है। साहवगंजमें दि० जैनियोंके खंडेलवाल अग्रवालोंके ६४ घर और मनुष्यसंख्या २९७ है। एक शिखरबंद जैनमंदिर जैनसभा जैनपाठशाला और

जैनधर्मशाला भी है। खास गयामें एक चैत्यालय एक खंडेलवालके गृहकी ५ मनुष्य संख्या है। शहरकी मनुष्यसंख्या अनुमान ८१ हजार है, पंडे अधिक हैं।

देखने योग्य स्थान:—

रेल्वे स्टेशनसे डेढ़ मील पूर्वोत्तर फल्गुनदीके बाएँ तट 'बिष्णुपदका मन्दिर' नदीके किनारेके घाट रामसागर मुहल्लेमें 'रामसागर' नामक तालाव, पहाड़ी, अनेक देवमन्दिर, श्राद्धके स्थान, गयाके विष्णुपदके मन्दिरसे छह मील दक्षिण फल्गुनदीके किनारे 'बुद्धगया' है। इस स्थानपर महात्मा बुद्धने ६ वर्षतक ५ चेलोंके साथ कठिन तपस्या की थी। गयासे बुद्धगया तक पक्की सड़क गई है, बौद्धगया बौद्ध लोगोंके लिये संसारमें सबसे अधिक पवित्रस्थान है। कई लोगोंका मत है कि मगधदेशके राजा 'अशोक' ने इस मन्दिरको बनवाया। इतना प्राचीन मन्दिर शायदही कहीं हो। मन्दिरमें पूर्वाभिमुखकी बुद्धकी विशाल मूर्ति है। जिसका बायाँ हाथ ढोढ़ीके पास और दाहिना हाथ नीचेकी ओर गिरा हुआ है, मूर्तिपर सोनेका मुलम्मा है। और भी कई बौद्धमूर्तियां हैं, गयाके हिन्दू मन्दिरोंमें भी कई बौद्धमूर्तियां हैं। और आसपासके कई मन्दिर प्राचीन निशानातभी देखने योग्य हैं।

गुणावा।

(सिद्धक्षेत्र)

यह गौतमस्वामीका निर्वाणक्षेत्र बिहारप्रान्तके पटना जिलेमें नवादा (E. I. R.) के स्टेशनसे डेढ़ मील है, नवादासे बैलगाड़ी किरायेकर 'पावापुर' 'राजगृही' और 'कुंडलपुरकी' यात्राको जाते हैं। नवादा स्टेशनपर ६ महिने यात्रियोंकी बहुत भीड़ रहती है, जो रातको ९ बजे और शामको ६ बजेकी गाड़ीसे उतरते हैं उनको सवारी न मिलनेके कारण तथा स्टेशनपर धर्मशाला न होनेके कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ता है।

गुणावासे श्रीगोतमस्वामी पंचमगति (निर्वाण) को प्राप्त हुये हैं, उनकी चरणपादुका सहित एक छोटे तालावके मध्यमें एक बहुत अच्छा रमणीय मन्दिर है। मन्दिरके पास एक धर्मशाला भी श्वे० दि० की है। पक्के आंगनमें पक्का कुआ है, धर्मशालाके भीतरसे मन्दिरका रास्ता है, साम्हनेकी वेदीमें श्रीमहावीरस्वामीके चरण तथा दिगम्बराम्नायकी दो प्रतिमाएं और श्वेतम्बराम्नायकी एक प्रतिमा विराजमान है। इसी वेदीकी बाईं बाजूपर एक कोठरीमें गौतमस्वामीके चरण और दिगम्बर श्वेताम्बर दोनों सम्प्र-

दायकी प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मन्दिरके भीतर चारों तरफ हरएक तीर्थंकरके चरण बने हैं। बेदीके पीछे पाषाणकी एक और प्रतिमा विराजमान है, मन्दिरमें एक ब्राह्मण पूजन करता है। प्रबंध तीर्थक्षेत्रकमेटीकी ओरसे अच्छा होता है।

चम्पापुर (नाथनगर)

(सिद्धक्षेत्र)

भागलपुरसे ४ मील (ई० आई० आर) नाथनगर रेल्वे स्टेशनसे चम्पापुर (नाथनगर) मिला हुआ है। चम्पापुर पूर्व समयमें बौद्ध राजाओंकी राजधानी थी। यहां दिगम्बर जैन अग्रवालोंके ४ गृह और २७ मनुष्यसंख्या है, तथा दो शिखरबंद मन्दिर हैं। और दोनों मन्दिरोंमें बृहदाकार बड़ी धर्मशाला भी हैं। इनमेंसे एक मन्दिर तेरहपंथी कहलाता है, जो इस समय 'बाबू छन्नूलालजी' कलकत्तेवालोंके प्रबंधमें है। और दूसरा बीसपंथी; इसके बनवानेवाले छपरानिवासी बाबू गुलाबचंदजी आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं और उनकेही प्रबंधमें भी है। इन मन्दिरोंको जानेवाले यात्री सीधे नाथनगर भी उतर सक्ते हैं। तेरहपंथी मन्दिर बहुत प्राचीन है। मुख्य श्रीगृहके आगे दो ऊंचे मानस्तंभ बहुत प्राचीन है। श्रीगृहमें एक मुख्यबेदी और ४ बेदियां चारों कोनों पर हैं। मुख्यबेदीमें अन्य प्रतिमाओंके आगे श्रीवासुपूज्यस्वामीके चरण बहुत प्राचीन काले पत्थरपर अंकित हैं, जिनपर छत्र शोभित है। इस पाषाणके नीचे यह लेख है:—

"स्वस्तिश्री जय श्रीमङ्गल संवत् १६९३ शका १५५९ मनुनाम सम्बत्सरे मार्गशिर शुक्ला २ शनै शुभ मुहूर्ते श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुन्दकुन्दान्वये भट्टारक श्रीकुमुदचन्द्रस्तत्पदे भ० श्री धर्मचन्द्रोपदेशात् जयपुर शुभस्थाने वघेरवाल ज्ञाति से० श्रीपासा भा० से० श्रीसुनोई तथाँ पुप्रस श्री ५। नाभा० श्रीसजाई भर्तचम्पा पावापूज्यस्य शिखरबद्ध प्रासाद कारण्य प्रतिष्ठा व विद्याभूषणैः प्रतिष्ठित वर्द्धितां श्रीजिनधर्म्यं।"

इससे विदित होता है कि जयपुरनिवासी (नाम स्पष्ट नहीं) बघेरवाल जातिके किसी शेठने सं० १६९३ में श्रीधर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे चरणोंपर मन्दिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा विद्याभूषणजीने की। चरण बहुत प्राचीन हैं, उनपर केवल गुमठी आदि बनाना सं० १६९३ में हुआ। इस मन्दिरके मुनीम और पुजारी दोनोंका काम भाई बसुनन्दनप्रसादजी अग्रवाल करते हैं।

बीसपंथी कोठीमें भैरोंप्रसादजी जैसवाल पुजारी और मुनीम हैं, जो कि मन्दिरकी देख भाल और पूजन प्रक्षाल अच्छी तरहसे करते हैं धर्मशास्त्र दोनों कोठियोंमें ८७ के अनुमान हैं।

यहांसे आध मील गंगानदीके एक नालेके तटपर जिसको कि चंपानाला कहते हैं, एक जैनमन्दिर और धर्मशाला है। इसका प्रबंध श्वेताम्बरियोंके आधीन है। इस मन्दिरमें नीचे तो श्वेताम्बरी प्रतिबिम्ब और ऊपर श्रीगृहकी वेदीमें पाषाणकी सर्व दिगम्बराम्नायकी प्रतिबिम्ब विराजमान हैं, जिनमें कई प्रतिबिम्ब बहुत प्राचीन हैं। जिनकी तफसील (ब्योरा) इस भांति है:—

एक खड्गासन प्रतिमा श्रीआदिनाथस्वामीकी, एक पद्मासन कृष्णवर्ण छोटी, दो पद्मासन कृष्णवर्णकी बडी, एक पद्मासन कृष्णवर्णकी चौबीसी सहित, और एक पद्मासनस्थ श्रीआदिनाथस्वामीकी एक गज ऊंची चम्पानालेसे निकली है। प्रतिमा बहुत मनोज्ञ चौथे कालकी मालूम पड़ती है। एक श्वेत-पाषाणकी पद्मासन सम्वत् १९१९की प्रतिष्ठित, एक मूंग सरीखे रंगकी पाषाणकी पद्मासन, सं० १८८१ की भट्टारक जगत्कीर्त्ति द्वारा चंपापुरके सन्तलाल द्वारा प्रतिष्ठित, दो छोटी कृष्ण पाषाणकी पद्मासन, दो धातुकी छोटी पद्मासन, और एक पाषाणकी चरणपादुका है। यहांपर पूजन प्रतिदिन दिगम्बर आम्नायके अनुसार होती है। यहांपर श्रीवांसुपूज्यस्वामी १२ वें तीर्थंकरके पंचकल्याणक हुये हैं। गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पांचों कल्याणकोंके समय इस स्थानपर इन्द्रादि देवोंका आगमन हुआ तथा इस पवित्र धरा (जगह) की स्वयं वन्दनाकी, भगवानके पंचकल्याणक होनेसे यह क्षेत्र विशेष प्रशंसनीय है।

यहांपर भादोंसुदी ११ से १९ तक मेला भरता है, वर्षभरमें करीब तीन चार हजार यात्री वन्दना करनेको आते हैं।

छपरा।

विहारके पटना विभागमें सारन जिलेका सदर स्थान और प्रधान कस्वा सरयू नदीके बाएं किनारेपर ४ मील लम्बा और लगभग आधमील चौड़ा एक सुन्दर कस्वा छपरा नामका है। स्टेशनपर सवारी हर तरहकी मिलती है। कस्वेसे पश्चिमकी तरफ मंदानम राय वावू वनवारीलालजीकी वनवाई हुई एक उत्तम सराय है।

१८ वीं सदीके अन्तमें छपरेमें फरासीसी डच और पोर्तगीजोंकी कोठियां थीं, उस समय सारन जिला सोडाके लिये प्रसिद्ध था। फाटकपर घड़ीका ऊंचा बुर्ज है जिसके

पूर्व एक पक्का तालाब, पंचमन्दिर, धर्मनाथका मन्दिर, रायबहादुर महावीरप्रसादजीकी उत्तम कोठी, धनी लोगोंकी कोठियां, जेलखाना, गवर्नमेंटस्कूल, कचहरी, हथुआके महाराजकी उत्तम कोठी आदि स्थान देखने योग्य हैं। सारनकी मनुष्यसंख्या अनुमान ५८ हजार है। अग्रवाल जैनियोंके १९ घरोंकी ८७ मनुष्य संख्या है, एक शिखरबन्द मन्दिर, एक चैत्यालय, दो धर्मशालाएँ और एक दानशाला भी है। धर्मशास्त्र अनुमान २०० हैं। रायबहादुर बाबू गुलाबचंदजी प्रसिद्ध धनी हैं, आपके बनवाये हुये कई जैनमन्दिर और धर्मशालाएँ हैं, कई मन्दिरोंका प्रबंध आपके अधिकारमें है। सोडा और लाखका व्यापार होता है।

डिबरूगढ़ (आसाम)

यह प्राचीन नगर आसाम प्रान्तमें कमिश्नरीका सदर मुकाम है।

यहांके जैनीभाई प्रायः सब मारवाड़ आदि दूसरे प्रान्तोंके हैं, व्यापारके कारण यहां रहते हैं। रायबहादुर शेठ चुन्नीलालजी, शेठ सदाराम जेसराजजी, व कालूराम चांदमलजी मुखिया हैं। यहांका पंचायती मन्दिर नयेबागमें बना है, जो बहुतही सुन्दर एक लाख रुपयेसे अधिककी लागतका है। इस मन्दिरमें नीचे एक जैनपाठशाला है जिसमें दो अध्यापक है। विद्यार्थी जैन व अजैन करीब ५० के विद्याध्ययन करते हैं, पं० अर्जुनलालजी विद्यार्थियोंको शिक्षा देते हैं। आप गोमट्टसार, समयसारके अच्छे ज्ञाता हैं। डिबरूगढ़में चाकी खेती अधिक होती है, और अनेक कोयलेकी खदानें हैं।

बाढ़।

बंगाल प्रान्तार्गत पटना जिलेमें बाढ़ (E. I. R.) स्टेशनसे करीब २ मील गंगाके दाहिने किनारेपर बाढ़ कसबा है। गंगाके किनारेपर हिन्दु देवताओंके मन्दिर हैं।

यहां दिगम्बर जैन अग्रवालोंके २१ गृह हैं, और मनुष्य संख्या १३३ है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये दि० जैनधर्मशाला मन्दिरके निकट है। यहां दिगम्बर जैनियोंके दो मन्दिर हैं। एक मन्दिर तो खास लालबाबू द्वारा निर्मापित हुआ था, यह मन्दिर बहुत साफ सुन्दर और रमणीय है, प्रतिमा भी मनोज्ञ है, पूजन प्रक्षाल यथाविधि प्रतिदिन होता है।

दूसरा मन्दिर पंचायती है, इसमें चार वेदियां हैं, इस मन्दिरमें प्रतिमाओंका बड़ा समूह है। लाला नेमीदासजी जिन-धर्मके अच्छे ज्ञाता हैं। इस मन्दिरमें शास्त्रसभा प्रतिदिन होती है।

संतदासके पिता पं० राजा रामनारायणजी होगये हैं, ऐसा कहते है कि श्रीसम्मेदशिखरजी तेरहपंथी कोठीके मन्दिरकी प्रतिष्ठा इनके हाथसे हुई थी।

पच्छार–पहाड़।

गया जिलेमें औरंगाबादकी सीमाके पूर्वकी ओर रफिगंजसे २ मीलके फासले पर पछार नामक पहाड़ है, जिसकी एक गुफाका मुख ईंटोंसे बंद है, और बाहरकी बाजूपर वेदीमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा अति मनोज्ञ हैं; और इसके आस पास तीर्थंकरोकी प्रतिमाएँ हैं। इससे यह पहाड जैनियोका मालूम होता है. यहांपर बौद्ध और हिन्दुओंके कुछ भी चिन्ह नहीं हैं। यहांसे पहाडकी तलेटीमें २ फर्लांगकी दूरी पर 'चून' और दक्षिणकी ओर एक मीलपर 'देवकुली' नामके दो ग्राम हैं। इन दोनों ग्रामोंमें प्राचीन खंडहर बहुतसे पाये जाते हैं। इस पहाडका विशेष वृत्तान्त मालूम होनेपर दूसरी आवृत्तिमें छापा जायगा।

पटना।

बिहारप्रान्तमें गंगानदीके दाहिने किनारे पर बिहारकी राजधानी पटना बसा हुआ है, हिन्दुस्थानमें पटना प्रसिद्ध शहर है। ईस्ट इंडियन रेल्वेका स्टेशन कलकत्तेसे ३३२ मीलकी दूरी पर है। पूर्व समयमें इसी शहरमें 'समंतभद्रस्वामी' ने भेरी * बजाकर और बाद करके ब्राह्मणोंको हराया था। वर्त्तमानमें संस्कृत विद्याका केन्द्र काशी है पूर्व समयमें पटना था। आचार्य 'अमितिगतिने' 'धर्मपरीक्षा' नामक ग्रंथमें इस शहरका बहुत अच्छा वर्णन किया है।

शिशुनागवंशके राजा अजातशत्रुके पौते उदयाश्वने पाटलीपुत्र बसाया था। यहांकी जमीनके नीचे कई मकानोंके निशान हालमें मिले हैं, जिससे यह मालूम होता है कि, दो हजार वर्ष पूर्व यहां एक बड़ा नगर + बौद्ध सम्राट 'अशोकके' समयका था, जिसमें १४

---

* पूर्वं 'पाटलिपुत्र' मध्यनगरे भेरी मया ताडिता।

+ इसकी तलाशके लिये पटनेकी जमीन सुप्रसिद्ध पारसी धनी रतनजीताताके द्रव्यसे खोदी जा रही है, कई अशोकके समयकी चीजें मिली हैं।

लक्ष नरनारी वास करते थे। इसके पुराने नाम पाटलीपुत्र, कुसुमपुर, पुष्पपुर, पालिबोत्रा हैं। पाटलीपुत्रका जिकर यूनानी इतिहासवेत्ता 'मेगास्थिनीजने' जो 'सेलियूकसकी' तरफसे ईस्वी सन् से ३०० वर्ष पहिले 'चन्द्रगुप्त' राजाके पास राजदूत होकर आया था, और उसीने इसका नाम पालिबोत्रा अपने इतिहास * में लिखा है। मेगास्थिनीज लिखता है कि उस जमानेमें पाटलीपुत्रकी लम्बाई ८० स्टेडिया और चौडाई १५ स्टेडिया थी, इस हिसाबसे उसका गिर्द १९० स्टेडिया अर्थात् २४ मील होताहै। नगरके चारों ओर ३० हाथ गहरी खाई बनी हुई थी, और दीवारोंमें ६४ बड़े दरवाजे और ५७० बुर्ज थे।

मुसलमानोंके समय औरंगजेबके पौत्र 'अजीमके' नामपर पटनेका नाम 'अजीमाबाद' हो गया था। पटनेमें शाह अर्जानीकी दरगाह बड़ी मशहूर है. हिन्दू और मुसलमान दोनों इस दरगाहको मानते हैं, मुसलमानी जिकादके महिनेमें तीन दिनतक यहां मेला भरता है। दर्गाहके पासही कर्बला है, यहां मुहर्रम (ताजियों) के दिनोंमें एक लाखके करीब आदमी एकत्रित होते हैं। पासही एक तालाब है। लोग कहते हैं कि इस तालाबको शाह अर्जानीने अपने हाथसे खोदा था। शेरशाहकी मसजिद जो कि पटनेमें बहुत पुरानी मानी जाती है और 'सैफखां'का बहुत सुन्दर मदरसा ये तीन देखने योग्य है, यह शहर बौद्ध और सिक्खोंका भी पवित्रस्थान है। सिक्खोंका हरिमन्दिर नामक मंदिर है। पटनेमें सिक्खोंके सुप्रसिद्ध वीरगुरु गोविन्दसिंहका १६६० ई० में जन्म हुआ था।

चौकसे पांच मील पश्चिम 'बांकीपुर'की सिविलियन कचहरी तक ट्रामगाड़ी चलती है, पटना और बांकीपुरके मध्यमें नहर है। पटनेके कई हिन्दू मन्दिर, शेरशाहकी मस्जिद, बांकीपुरमें कचहरी, कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, नार्मलस्कूल, बिहार नेशनलकॉलेज, अस्पताल, गिर्जा, पब्लिक लायब्रेरी, प्रसिद्ध खड्गविलास प्रेस और बांकीपुरके रेल्वे स्टेशनसे डेढ मील उत्तर गोलघर नामक इमारत ये देखने भी योग्य हैं।

यहांसे शेठ 'सुदरशर्न' मोक्ष पधारे हैं। दि० जैनियोंके यहां पर ५ मन्दिर और १ चैत्यालय है। इनमें से एक जियातंबोलीकी गलीमें, एक कालीबीबीके कटरामें, एक बाडाकी गलीमें, दो कम्बलदहमें, और दो मन्दिर गुलजारबागमें हैं, एक तो सेठसुदर्शनका और दूसरेमें जिनप्रतिमा बिराजमान है, एक चैत्यालय बाबू हरखचंदजीका उनके घरके निकट है।

धर्मशाला स्टेशनके पासही शेठ 'गुरुमुखरायजी' सरावगी की है, और एक स्टेशनसे डेढ़ मीलकी दूरीपर कम्बलदहमें सेठ सुदर्शनके बगीचेके साम्हने श्रीनेमिनाथस्वामीके

* मेगास्थनीजका भारतवर्षीय वर्णन नामकी प्रसिद्ध पुस्तक है।

मन्दिरके पास है, और एक धर्मशाला जियातंबोलीकी गलीके मन्दिरमें है। पटनेमें बौद्धधर्मके कई सुप्रसिद्ध जलसे हुये हैं। शहरकी मनुष्यसंख्या १३४८८६ है। जिनमें दि० जैनियोंके सिर्फ ६ घर और कुल ३३ मनुष्यसंख्या है। मन्दिरोंमें धर्मशास्त्र १२ हैं।

पटनामें व्यापार तो हरतरहका होता है परंतु कपड़ा, तेलके बीज, नमक, सज्जी, शक्कर, अनाज, चांवल, वं धान तो बाहरसे आते हैं, और तम्बाकू, नारियल, रुई, गर्ममसाला, बाहरको भेजे जाते हैं। नील और अफीमकी बड़ीभारी मंडी है।

पावापुरी।

(सिद्धक्षेत्र)

यह सिद्धक्षेत्र बिहार प्रान्तके पटना जिलेमें पोष्ट 'गिरियक' से ३ मीलकी दूरीपर है। निकटवर्ती स्टेशन बिहार और नवादा, वख्त्यारपुर लाइन ब्रॉच रेल्वेमें है। स्टेशनपर घोड़ा गाडी आदि हर समय मिलती हैं।

इसका प्राचीन नाम आपापुरी (पुण्यभूमि) था। यहांसे भगवान 'श्रीमहावीरस्वामी' मोक्ष पधारे हैं, जैनियोंका पवित्र सिद्धक्षेत्र है। यहां एक दिगम्बर आम्नायका खास मन्दिर है। जिसमें ४ वेदी और ४१ प्रतिमाएँ हैं। मूलनायक 'श्रीमहावीरस्वामी' की प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा शेठ 'मोतीचंद खेमचंद' शोलापुरवालोंने भट्टारक 'सत्येन्द्र-भूषण' से कराई थी। पुरी, पोरवरपुर, महावीरस्वामीके मन्दिरकी जागीरमें है। मोक्ष-स्थानका मन्दिर ग्रामके निकट एक तालावके मध्यमें है, जिसको 'जलमंदिर' कहते हैं। जलमन्दिरमें महावीरस्वामी, गौतमस्वामी, और सुधर्माचार्यके चरण हैं। तालावके किनारे उत्तरकी ओर छोटासा गोल पहाड़ है, इसके एक मन्दिरमें महावीरस्वामीके चरण हैं। इसमें दिगम्बर श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायके यात्री दर्शन पूजन करते हैं। ग्राममें एक मन्दिर है, जिसमें एक वेदीपर दिगम्बर आम्नायकी प्रतिमा विराजमान है, और चार वेदियोंमें श्वेताम्बर आम्नायकी हैं।

इस स्थानपर कुल चार मन्दिर हैं, जिनमें अनुमान ५१ धर्मशास्त्र हैं। और ग्राममें दो जैसवाल जैनियोंकी मनुष्यसंख्या ९ है। ३ धर्मशालाएँ हैं जिनमें अनुमान तीन हजार आदमी ठहर सक्ते हैं। ये धर्मशालाएँ शेठ 'हरसुखराय फूलचंद' और आरावाले शेठ, 'गुलाबचंदजी' की बनवाई हुई हैं।

कार्त्तिक वदी १४ से अमावस्या तक बहुत बड़ा मेला भरता है, इस समय रथयात्रा होती है। यह मेला वीरनिर्वाण सं० २४३४ से प्रतिवर्ष भरता है। कार्त्तिक वदी अमावस्या यह तिथी महावीरस्वामीके निर्वाण गमनकी है, इसी तिथीको इसी क्षेत्रपर भगवानके निर्वाण कल्याणका उत्सव इन्द्रादि देव मनुष्य पशु, पक्षियोंने मनाया था।

भागलपुर।

भागलपुर बिहार प्रांतमें ईस्टइंडियन रेल्वे लाइनमें देखने योग्य प्रसिद्ध शहर जिलेका सदरस्थान है। रेल्वे स्टेशनसे शहर पासही है, स्टेशनके पास टोडरमलकी उत्तम धर्मशाला है। यह बड़ा सिविल स्टेशन तिजारती शहर गंगाके दाहिने किनारेपर २ मील लम्बा एकमील चौड़ा भागलपुर शहर है। दि० जैनियोंके यहांपर ३० घर हैं, जिनकी मनुष्यसंख्या १२८ है। मारवाड़ी टोलेमें दिगम्बर जैनियोंका एक मन्दिर है, यहां यात्री लोग अधिक आते हैं। गंगाके किनारे बूढ़ानाथका मन्दिर, देशीकालेज, सिविल अस्पताल, और शुजागंजबाजार देखने योग्य है, इसमें बाबू हरनारायण चंडीप्रसाद जैन आढ़तिया टसर कोसेके कपड़ोंकी दूकान है। टसरी कपड़ा जो भागलपुरीके नामसे प्रसिद्ध है यह भागलपुरमें ही बनता है, बाबू जीवनराम हरनारायण जैनकी स्वदेशी कपड़ेकी दूकान है, ये दोनों दूकाने प्रसिद्ध और विश्वासपात्र हैं। भागलपुरमें दरी कम्बल और पर्दे भी सुन्दर बनते हैं।

मन्दारगिरि।

(सिद्धक्षेत्र)

बिहारप्रान्तमें भागलपुरसे दक्षिण १६ कोस पर सब्बलपुर जमींदारीमें मंदारहिल नामकी स्टेशनसे करीब १ मील पर एक छोटासा पहाड़ अनुमान ७०० फुट ऊंचा अति प्राचीन सिद्धक्षेत्र है। यही मन्दारगिरि पर्वत साक्षात् श्रीवासुपूज्यस्वामीके मोक्ष कल्याणकका स्थान है। वर्तमानमें लोग चम्पापुरीमें ही पांचों कल्याणक मानकर पूजन करते हैं, इसका कारण यही प्रतीत होता है कि यह पर्वत जंगलके बीच होनेसे यात्री लोग पहाड़पर जानेका कष्ट न उठाते थे. दूसरे मन्दारगिरि पर्वतपर कोई प्रबन्ध कुछ काल पहिले बिलकुल नहीं था। वर्त्तमानमें तीर्थक्षेत्रकमेटीकी ओरसे मुनीम व पुजारी द्वारा प्रबंध अच्छा होने लगा है।

निर्वाणकांड पूजा आदिके अनुसार वासुपूज्यस्वामीका निर्वाण (मोक्ष) कल्याणक चम्पापुरीमें ही हुवा ऐसा लिखा है, तथापि श्रीगुणभद्राचार्यकृत 'उत्तरपुराण' में मोक्ष कल्याणक श्रीमन्दारगिरि पर हुआ ऐसा लिखा है, तो भी दोनोंमें कोई विरोध नही है, कारण कि चम्पापुरका वर्णन शास्त्रोंमें ४८ कोस अर्थात ९६ मील लम्बा और ३६ कोस चौड़ा लिखा है. और इस कारणसे यह पहाड इसही नगरमें गर्भित था. जो इस समय चंपापुरीसे ३२ मील है । इस कारणसे निर्वाणकांडमे सामान्य कथनकी अपेक्षा चंपापुर शब्द आया है परन्तु श्रीजिनसेनाचार्यके शिष्य गुणभद्राचार्यकृत उत्तरपुराणके ५८ वें अध्यायमें मन्दिरशैल स्पष्ट लिखा है । तो यह बात निःसंदेह सिद्ध हुई कि वासुपूज्यस्वामीको मोक्ष लाभ यहीसे हुआ है ।

मन्दारगिरिपर २ बहुत प्राचीन शिखरबन्द मन्दिर जो करीब १००० वर्षसे ऊपरके बने हुए हैं. एक बडा और एक छोटा मन्दिर सबसे ऊंची टोंकपर हैं । बडे मन्दिरमें युगलचरण पादुका और छोटेमें ३ युगल विराजमान हैं । कुछ कालसे ये मन्दिर जैनियोंकी शिथिलतासे बिलकुल वेमरम्मत हो गये हैं ।

भागलपुरसे मन्दारगिरि तक रेल खुली है, इस लिये जो यात्री क्षेत्र निमित्त भागलपुर, चम्पापुर पधारे अवश्य इस सिद्धक्षेत्रके दर्शन करके धर्मलाभ उठावेंगे ।

यह पर्वत बहुतही रमणीय चढ़ाव सुगम है और दर्शन करते ही मनका खेद चिंता आदि विकार दूर होकर मन प्रसन्न और प्रफुल्लित हो जाता है ।

अन्यधर्मी लोग भी इस पर्वतको पवित्र मानकर पूजते हैं । सीताकुंड रामकुंड नामक दो शीतल जलके कुंड और एक मंदिर है । तलहटीमे एक पापहरणी नामक पुष्करणी है, यात्री इसमें स्नान करते हैं । पौषकी संक्रांतिके समय ३ दिनतक मेला लगा रहता है। मन्दारगिरिसे २ मीलके फासलेपर अन्यधर्मियोंका मधुसूदनका मन्दिर और तालाव है ।

मुंगेर ।

विहार प्रान्तके भागलपुर कमिश्नरीमें गंगाके दाहिने किनारेपर जिलेका प्रधान कसबा व सदरस्थान मुंगेर है । स्टेशनसे सवारी शहर तक हर तरहकी मिलती है ।

देखने योग्य स्थान:-बड़ाबाजार, विजयनगरके महाराजका कर्णचौरा नामक मकान साहबमहल. शाहशुजाके रहनेका मकान, पुराना किला. जिलेकी कचहरियां. गंगाके

किनारेके सुन्दरघाट, देवमन्दिर, सीताकुंड नामक गर्मपानीका झरना और भी कई झरने देखने योग्य हैं।

यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान ५८ हजार है, दिगम्बर जैनियोंके अग्रवाल खंडेलवालोंके ११ घरोंकी ४० मनुष्यसंख्या है, और एक शिखरबंद मन्दिर है।

मुंगेरमें बंदूक, छुरी, पिस्तौल अच्छे बनते हैं।

मुर्शिदाबाद।

तीन पहाड़ जंक्शनसे ९० मील और साहबगंजसे ७४ मील दक्षिण मुर्शिदाबाद जिलेके नलहाटीमें रेल्वे जंक्शन है। लोग कहते हैं कि राजानलके नामसे इसका नाम नलहाटी पड़ा, नलहाटीकी बस्तीसे थोड़ीदूर पहाड़के नीचे सीताजीके चरण-चिन्ह है।

नलहाटीसे पूर्व २७ मीलकी रेल्वे शाखा भागीरथी गंगाके दाहिने किनारे पर अजीमगंजको गई है। अजीमगंज मुर्शिदाबाद जिलेमें एक बस्ती है, जिसमें कई एक धनी सौदागर रहते हैं और कई सुन्दर जैनमन्दिर बने हुए हैं। बाजारमें होकर एक पक्की सड़क गई है, अजीमगंज और मुर्शिदाबादके बीचमें नाव चलती है।

अजीमगंजके साम्हने उसपार अर्थात् भागीरथी नदीके बाएँ किनारे सुप्रसिद्ध शहर है। इसका प्राचीन नाम मकसूदाबाद है।

बंगालके बड़े नब्बाव मुर्शिदकुलीखांने सन् १७०४ ई० में ढाकाको छोड़कर मकसूदाबादको बंगालका सदरस्थान बनाया और मकसूदाबादका नाम बदलकर अपने नामके अनुसार मुर्शिदाबाद रक्खा। और एक महल बनवाया उस समय यह गंगाकी सौदागरीका बन्दर स्थान था, यहांके सुप्रसिद्ध नव्वाब सिराजुद्दौलाखां और अंग्रेजोंमें सन् १७५७ ई०, मे प्लासीके मैदानमें सुप्रसिद्ध लड़ाई हुई। इस लड़ाईके समयसे सारा बंगाल, ईस्टइंडिया कम्पनीके अधिकारमें आगया, इसके बाद और कई छोटी मोटी लड़ाइयां प्लासीके मैदानमें ही हुई हैं, अंग्रेजोंकी सिराजुद्दोलाके समयमें सुप्रसिद्ध धनिक जैनी जगतशेठने बड़ी सहायता की थी।

मुर्शिदाबाद एक समय बहुत बड़ा शहर था, यद्यपि इसकी मनुष्य संख्या घट रही हैं, किन्तु अबतक बहुतेरे नामी धनी ओसवाल जैन सौदागर विद्यमान हैं। नीचे लिखी चीजें देखने योग्य हैं:—

शहरके धनिकोंके मकान, सुन्दर देवमन्दिर, निजामत किलेसे अलग मुवारक मंजिलके निकट मनीवेगमकी वनवाई हुई मसजिद, किलेके बाहिर वरहमपुर जानेवाली सड़कके पास घोडे गाडीके मकान, घोडे और हाथियोंके अस्तवल, इसीके साम्हने कुछ दूरीपर निजामत कालेज जो नव्वावके रिस्तेदारोंकी शिक्षाके लिये ७८ हजारके खर्चसे वना है और कस्वेके वाहिर मोतीझीलके पूर्वोत्तरके कटरेमें मक्केकी वडी मसजिदके ढॉचेकी वनी हुई नव्वाव मुर्शिदकुलीखांका मकवरा है. इसके ७० फुट ऊंचे दो मीनार हीन दशामे पडे हैं, इसके पासमें तोपखाना है जिसमें १७ फुट लम्वी एक वडी तोप पडी है ।

कस्वेसे २ मील दक्षिण एक मनोरम स्थानमें मोतीझील है झीलमे वहुतेरे घड़ियाल रहते हैं, पहले झीलके वगलोंमें सिराजुद्दोलाका वनवाया हुआ उत्तम महल था, जिसकी कई एक महरावियां अवतक देखनेमें आती हैं ।

भागीरथीके दाहिने किनारेपर मोतीझीलके साम्हने मुर्शिदावादके नव्वावोंका सुखवाग नामक पुराना कवरगाह है, वहां वहुतेरे मकवरोंके सिवाय एक मसजिद और अन्य दो इमारतें भी हैं । एक मकवरेमें सिराजुद्दोला और उसकी स्त्रीकी कवर है ।

नव्वावका महल—मुर्शिदावादमें प्रधान देखने योग्य है, यह भागीरथीके किनारेपर वहुत वडी इमारत इटेलियन ढंगकी वनी हुई है. जो सन् १८३७ ई० में लगभग १७ लाख रुपयेके खर्चसे १० वर्षमें तैयार हुई थी । यह महल ४१५ फुट लम्वा २०० फुट चौडा ८० फुट ऊंचा है, मार्वुलका चमकीला फर्श वना है । जेवनारका मकान २९० फुट लम्वा. जिसमें आइने जडे हुये वहुतेरे दरवाजे हैं। इमारतके मध्यमें गुम्वजके नीचे १५० शाखाओंका एक वडा झाड लटका है. और फर्शपर हाथीदांतका मनोहर तख्त है । दीवारमें नव्वाव और उनके वंशके वहुतेरे लोगोंकी तस्वीरें टंगी हुई हैं, प्रधान दरवाजेके दाहिनी ओर जनानखाना है ।

हातेके भीतर उत्तरके प्रधान फाटकके साम्हने सन् १८४७ ई० का वना हुआ एक सुन्दर इमामवाडा है ।

खास महलको लोग आइनामहल कहते हैं । एक ही घेरेके भीतर नव्वावका महल, इमामवाडा और दूसरी इमारते हैं सव मिलाकर निजामत किला कहलाता है ।

प्लासीका मैदान जो कि कासिमवाजारसे २५ मील दक्षिणमें है । इत्यादि कई स्थान भी देखने योग्य हैं । रेशम, रेशमीकपडा सोने चांदीके कारचोवी और हाथीदांतका काम उत्तम वनता है । और इनही चीजों तथा नीलका अधिक व्यापार होता है ।

मुर्शिदाबादकी मनुष्यसंख्या अनुमान ३६ हजार है। इनमें ढाई हजारके करीब जैनी है। दि० जैनियोंके १९ अग्रवालोंके घरोंकी मनुष्यसंख्या ८९ हैं। एक दि० जैनमन्दिर भी है। कई जैनधर्मशालाएँ भी हैं।

राजगृह।

पटने जिलेमें वख्त्यारपुर रेलवे लाइनमें शिलाव स्टेशनसे ४ मील तथा बिहारसे वायव्यकोनमें २३॥ मीलपर पहाड़की तलेटीमें यह जैनियोंकी प्राचीन नगरी मगध देशकी राजधानी प्रसिद्ध है। राजमन्दिर भी कहते हैं। यहां 'श्रीमुनिसुव्रतनाथका' जन्म हुआ था। जरासन्धकी राजधानी थी। यहां आनेको बिहारसे रास्ता अच्छा है बिहारमें घोड़ा गाड़ी आदि सवारीके लिये मिलते हैं।

राजगृहसे बड़गांवा केवल ८ मील है बड़गांवा एक छोटी बस्ती है, बस्तीमें एक बौद्ध-मन्दिर है, यहां नियत समयमें बहुत बौद्धयात्री आते हैं, यहां प्राचीन नालन्दाके चिन्ह अब तक मिलते हैं।

चीनके रहनेवाले फाहियानने लगभग ४०० ई० में और हुएंत्सांगने सातवीं सदीमें राजगृहको देखा था और लिखा है कि यहां गर्म पानीके कई झरने हैं।

यह नगर चतुर्थकालमें वैभवके शिखरपर था, जब यहां धर्ममें बडी क्रान्ति मच रही थी, जैनधर्म नष्टप्राय होने लगा था और श्रीमहावीरस्वामी जैनधर्मके जीर्णोद्धारके लिये प्रयत्न कर रहे थे, उस समय यह राजगृह नगरी श्रेणिक महाराजकी राजधानी थी, यह राजा बौद्धधर्मका प्रचारक था राजा श्रेणिक जैनधर्मी कैसे हुए इसकी एक कथा 'पुण्याश्रवकथाकोष' में इस प्रकार लिखी है:—

एक दिन राजा श्रेणिक महा पापकर्म शिकार खेलनेको गये शिकारसे लौटते समय मार्गमें दिगम्बर मुनि तपस्या करते हुये मिले, तब राजाने अत्यंत क्रोधित होकर धर्म-द्वेषसे मुनिराजके ऊपर अपने शिकारी कुत्ते छोड़ दिये, पर मुनिराजकी तपस्याके प्रभावसे कुत्ते नमस्कारकर और नम्र होकर मुनिराजके समीप बैठ गये तब राजाने और भी क्रोधित होकर मुनिराजके गलेमें एक मरा हुआ सांप डालकर सातवें नरकका कर्म-बंध अपने गलेमें डाल लिया। तत्पश्चात् राजा श्रेणिक अपने महलोंको चले गये, और यह बार्ता अपनी पट्टरानी 'चेलना' को सुनाई, रानी सुनकर अत्यंत दुःखित हुई और

बोली, आपने यह महापाप कर्म करके नरकका रास्ता साफ किया मुनियोंके ऊपर उपसर्ग करनेके बराबर संसारमें कोई भी वडा पाप नहीं है।

चेलना बोली राजन्! मुनिराजका जब तक उपसर्ग दूर नहीं होगा तब तक मुनिराज वहीं स्थिर रहेंगे तब राजा श्रेणिक बोले वे मुनि अपने हाथसे गलेका सांप निकालकर नहीं फेंक सक्ते हैं. ? रानीने कहा वे अपने हाथसे कभी ऐसा न करेंगे, चाहे प्राण भी क्यों न चले जावे।

तब राजा पश्चात्ताप करता रानीको साथ लेकर जहां मुनिराज विराजमान थे वहां पहुंच कर देखा तो मुनिराज ध्यान लगाये उपसर्ग समझ कर खडे हुये हैं, और गलेमें सांप पड़ा हुआ है। राजाने उसी समय सांप निकालकर और गर्मजलसे स्नान कराकर राजा रानी हाथ जोडकर बोले भगवन्! उपसर्ग दूर गया हम लोगोंको धर्मामृत पिलाइये, मुनिराज उपसर्ग टला समझकर दोनोंको धर्मवृद्धिका लाभ हो ऐसा बोले तब राजाने मनमें विचारा कि मैं तो बौद्धधर्मका माननेवाला और रानी परम जिनभक्त मुनिराजने दोनोंको समान धर्मवृद्धिके लिये कहा मुनिराज! धन्य है मैंने आपके प्रति वहुत बुरा व्यवहार किया है. मुझे अपना शिर काटकर मुनिराजके ऊपर चढ़ाना चाहिये' राजाका ऐसा विचार जानकर मुनिराज बोले हे राजन्! यह तुमने वहुत बुरा विचार किया आत्मघातके समान दूसरा कोई पाप नहीं है। तब राजा रानीसे बोले मुनिराजने मेरे मनकी वात कैसी जानली रानी बोली महाराज! आपतो मनकी वात जाननेकी कहते हैं परन्तु मुनिराज आपके कई भव जानते हैं तत्पश्चात् राजा श्रेणिकने मुनिराजसे अपने भवांतर पूछे. भवांतर सुनकर राजा कहने लगा कि सचमुच जिनधर्म ही एक सच्चा धर्म है जिनदेवही सच्चे देव है जिनगुरु ही सच्चे गुरु है जैनशास्त्र ही सच्चे शास्त्र हैं. मैंने इतने दिन वृथा ही खोये राजा श्रेणिक जैनधर्मके परम भक्त हो गये. और जैनधर्मका वड़ा उपकार किया। राजा श्रेणिकने श्रीमहावीरस्वामीके समवसरणमें जाकर श्रीगौतमगणधरसे हजारों प्रश्न किये। राजा श्रेणिककी पट्टरानी चेलना परम जिनभक्त थी रानीकी ही कृपासे श्रेणिक जैनधर्मावलम्बी हुये और सुखपूर्वक वहुत काल तक राज्य किया और कई सुन्दर जैनमन्दिर बनवाकर बडी भारी धर्मप्रभावना की।

राजगृहीके पंचपहाडकी तलेटीमें एक ऐसा नया शहर वसाया कि मानो जिसके आगे इन्द्रपुरी भी तुच्छ थी. जिसमें पत्थरके ५२ कुंड वनवाये इन कुंडोंमें से २२ कुंड तो अब भी मौजूद हैं जिनके नाम ये हैं:- १ सरस्वतीकुंड. २ मार्कण्डेयवैतरणीकुण्ड ३ शालिग्रामकुंड, ४ सूतकुंड. ५ रामकुंड, (इस कुंडसे से २ धारायें एक गरम पानीकी और दूसरी

शीतल (ठंड) पानीकी बहती है) ६ गनेशकुंड, ७ सोमकुंड, ९ सीताकुंड, १० व्यास कुंड, ११ मार्कंडेयकुंड. १२ गोदावरीकुंड, १३ गंगायमुनाकुंड, १४ अनंतमुनिकुंड १५ क्रिशीथताकुण्ड १६ सप्तधाराकुंड. (इसमें से सातधारा निकलकर बहती हैं) १७ब्रह्मकुंड (इसमें एक हजार गरम पानीकी धाराएँ बहती हैं) शेष कुंडोंके नाम मालूम नहीं है, इन कुंडोंके कारणसे हिन्दुओंका भी यहां पर बड़ा भारी मेला प्रतिवर्ष भरता है।

सप्तधाराके किनारेपर एक शिवमंदिर और कन्हैयाका मन्दिर है । अन्यधर्मी कुंडमें स्नान करनेके अपनेको पवित्र पाप रहित मानते हैं। बहुतसी स्त्रियां पुत्र कामनाके लिये स्नान करती हैं।

राजा श्रेणिकके समय यहां जैनमन्दिर और धर्मशालाएँ बहुतथीं, जिनके खंडहर इस समय भी पाये जाते हैं।

राजगृहमें ३०, ४० गृह अन्य जातिके हैं, जैनियोंका कोई घर नहीं है। केवल एक मन्दिर और एक धर्मशाला है। यह दोनों दिगम्बरी और श्वेताम्बरियोंकी शामिलातमें हैं। इस मंदिरमें दिगम्बरी दो प्रतिमाएँ वेदियोंमें विराजमान हैं, नीचेकी वेदीमें ९ पाषाणकी प्रतिमाएँ हैं। मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा है। मन्दिरके बाहिर पश्चिमकी ओर कोठेके ऊपर जानेकी सीढ़ियां बनी हुई हैं। ऊपरकी वेदीमें ९ पाषाणकी तथा धातुकी एक प्रतिमा और एक चरणपादुका है।

पर्वत वन्दना:–इस ग्रामसे १ मीलपर पंचपहाड़ है, प्रथम नीचेके किसी एक कुंडमें स्नान करनेके बाद प्रथम 'विपुलाचल' पर्वतपर जाना चाहिये चढ़नेका रास्ता खराब है, यहां भगवान महावीरस्वामीका समवसरण आया था। ऊपर ६ मन्दिर हैं, एक मन्दिर में कायोत्सर्ग प्रतिमा विराजित है, दूसरेमें श्रीमहावीरस्वामीके चरण है, तीसरेमें श्रीचन्द्रप्रभके चरण चौथेमें श्रीमहावीरस्वामीकी प्रतिमा पाँचवेंमें श्रीमुनिसुव्रतनाथके चार कल्याणक और छठवें मन्दिरमें श्रीनेमिनाथ और शान्तिनाथस्वामीकी चरण पादुकाएँ विराजमान हैं।

विपुलाचल पर्वतपरके मन्दिरोंके दर्शन करके दक्षिण बाजू 'रत्नागिरि' पहाड़पर जाना चाहिये, इस पर्वतपर दो जैनमंदिर हैं, एक मन्दिरमें श्रीनेमिनाथ, श्रीपार्श्वनाथ, और श्रीमुनिसुव्रतनाथकी चरणपादुकाएँ हैं। और दूसरेमें श्रीपुष्पदंत तथा शीतलनाथ-स्वामीकी प्रतिमाएँ विराजमान हैं. जो कि खंडित हैं। मन्दिरकी एक बाजूमें शिला-लेख है जो अस्पष्ट है। रत्नागिरिके दर्शन करके उसके दक्षिणकी ओर तलेटीसे 'उदया-चल' पर्वतपर जाना चाहिये उदयाचल बहुत ऊंचा है रास्ता ठीक नहीं है। इस पर्वतकी

शोभा देखने योग्य है जहां तहां गगनचुम्बित वृक्ष अनेक हैं, पुष्पोंकी सुगंधिताके कारण चारों ओर भ्रमर गुंजार करते हैं। यहांके उद्यानके मध्यमें एक मुख्य और चार दि० जैनमन्दिर हैं जिनकी कारीगरी देखने योग्य है।

मुख्य मन्दिरमें श्रीऋषभनाथके चरण और उत्तराभिमुख श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा खंडित है। पर्वतसे दक्षिणकी ओर उतरनेका मार्ग बहुत तंग है। पहाडकी तलेटीमें एक छोटासा नाला है, इसको छोड़कर पूर्व बाजूमें 'श्रमणगिरि' पर चढ़नेका रास्ता है, यहां तीन मन्दिर हैं, ऊपरके मन्दिरकी वेदीमें श्रीअजितनाथ और शान्तिनाथस्वामीकी प्रतिमाएं विराजमान हैं, जो कि खंडित हैं, तथा श्रीवासुपूज्यस्वामीकी चरणपादुका है।

इस पहाडकी तलेटीमें एक विस्तीर्ण मैदान है, जहांकि राजा श्रेणिकके महलोंके निशानात पाये जाते हैं। बगीचेमें पुष्करणी (बावडी) थी वह भी इस समय यहां पाई जाती है। इसके थोडी ही दूर 'व्यवहारगिरि' (वैभारगिरि) नामक पंचम पहाड़ है। ऊपर चढ़नेका रास्ता खराब है, जो एक गुफाके नजदीकसे ही जाता है। इस गुफाके पूर्वभागमें ४ मुखवाली एक बुद्धदेवकी मूर्ति है गुफाके द्वारपर टूटी हुई २ छोटी मूर्तियां पडी हैं। द्वारपर घिसाहुआ एक शिलालेख है। बौद्धलोग सोनभंडारको बहुत पवित्र मानते हैं. कहते हैं कि इस स्थानपर सन् ईस्वीसे ५४४ वर्ष पहले बुद्धदेवकी मौजूदगीमें इनके चेलेंमें ५०० आदमियोंने इकठे होकर धर्मसभाकी थी और यही बौद्धलोगोंका पहला जलसा कहलाता है। इस गुफाकी छतमें एकद्वार है, जो इस समय बंद है, कहते हैं कि इसमें राजा श्रेणिककी अपार सम्पत्ति रक्खी है, इस द्वारको खोलनेका प्रयत्न सरकारकी तरफसे हुआ था पर कुछ फल नहीं निकला। पर्वतपर तीन जिनमन्दिर हैं। एकमें श्रीचन्द्रप्रभस्वामीकी प्रतिमा विराजमान है, और दूसरे में श्रीअजितनाथ और ऋषभनाथकी प्रतिमा वेदीपर विराजमान है, तीसरे मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी चरणपादुका है और एक प्रतिमा भी विराजमान है. सर्व प्रतिमाएं खंडित हैं। इन मन्दिरोंमें एकमीलपर गणधरस्वामीके चरणों सहित एक मन्दिर है। इन पाचों पहाडों और तलेटीमें ब्राह्मणोंके कई मन्दिर हैं। कार्त्तिक माहमें यहां बडा भारी मेला भरता है, जैनमन्दिरोंको भी हिन्दू पवित्र मानकर दर्शन करते हैं।

श्रावक पहाड़।

गयाजीके निकट रफीगंजसे ३ मील पूर्व यह श्रावक नामका पहाड़ करीब पाव मील ऊंचा एक:ही शिलाका मनोहर है, वृक्ष नहीं है. किनारे २ अनेक शिलाएं है। इसके

नीचे पाव मीलपर जो बस्ती है उसका नाम भी 'श्रावक' है। इस पर्वतके ऊपर ४० गज जानेसे १ गुफा मिलती है, जो १० गज लम्बी और ६ गज चौड़ी होगी। इसमें १ जीर्ण दि० जैन मन्दिर है, जो बिलकुल टूट गया है। ४ स्तम्भ पाषाणके द्वारपर लगे हैं। भीतर जाकर साम्हने ही प्राचीन पाषाणकी एक अत्यन्त मनोज्ञ श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी दि० जैन प्रतिमा पद्मासन विराजित है। आसनके स्थानसे २ हाथकी ऊंचाई है। सिवाय बाएँ पगके और सर्व आंगोपांग अखंडित हैं। विदित होता है किसी अजैन द्वारा यह उपसर्ग किया गया हो। दोनों ओर इन्द्र हैं, फन टूटा है। अजैनलोग (लहिंगावीर) (नंगावीर) ऐसा नाम ले करके पूजते हैं। दस २ बीस २ कोस चारों ओर बड़ी मान्यता है। सिन्दूर और दही चढ़ाया जाता है।

श्रावण सुदी १५ सलोनेके रोज यहां बड़ा भारी मेला लगता है। इस गुफामें अन्य बहुतसी खंडित प्रतिमाएँ पड़ी हुई हैं। १ पाषाणके पटमें ६ पद्मासन मूर्तियां हैं, नीचे यक्षिणीकी मूर्ति लेटी है। इस पटके नीचे एक लेख प्राचीन लिपीमें अंकित है। ऊपर एक बड़ा जैन मंदिर ईंटोंका मालूम होता है, जो कि घाँससे छाया हुआ है। शिखरका चिन्ह मालूम होता है। बीचमें १ खुदा हुआ सूराख है, जिसमें १५ हाथ डोर जाती है। इस मंदिरका द्वार पूर्व दिशाकी ओर मालूम होता है। भीतरसे प्रतिमा आदिका निकलना संभव है।

जिस स्थानपर यह श्रावक पर्वत स्थित है, इसके आस पासके लोग अब कोई जैनधर्म नहीं पालते हैं। 'श्रीपार्श्वनाथस्वामी' की प्रतिमाको उपसर्ग होना जैनियोंकी बेखबरीका ही कारण है।

श्रीसम्मेदशिखर।

(सिद्धक्षेत्र)

वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुद किलेसा।
सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

बंगालप्रान्तके हजारीबाग जिलेमें उपर्युक्त निर्वाणक्षेत्र है। ई. आई. आर. लाइनके ईशरी' स्टेशनसे १५ मील मधुवन तक सड़क पक्की है। बैलगाड़ियां स्टेशनपर मिलती हैं। दूसरा रास्ता ई. आई. आर. लाइनमें गिरीडिह स्टेशनसे १८ मील मधुवन है, रास्ता यहांसे मधुवनतक पक्की और साफ है। बैलगाड़ियां गिरीडिहमें भी मिलती हैं। इस

स्टेशनसे वाजार तथा जैनधर्मशाला निकट ही है। यहांपर एक दिगम्बर आम्नायका मंदिर और एक धर्मशाला वीसपंथी आम्नायकी और एक तेरहपंथी आम्नायकी है। तथा एक धर्मशाला और मन्दिर श्वेताम्बर आम्नायका भी है। हरएक धर्मशालाकी ओरसे एक२ चपरासी रेल्वेस्टेशनपर यात्रियोंकी तलासमें हर ट्रेनपर आते हैं चपरासी लोग यात्रियोंको वैलगाडीका प्रवंध भाड़ेपर मधुवन तक कर देते हैं।

मधुवन श्रीसम्मेदशिखरकी तलहटीमें अति रमणीय स्थान है, यहांपर तीन धर्मशालाएँ हैं, एक वीसपंथी आम्नायकी (उपरेली कोठी) जो बहुत बड़ी अति उतंग है. इस कोठी और धर्मशालाके प्रबंधके लिये 'भा० दि० जैनतीर्थक्षेत्रकमेटी की तरफसे एक मैनेजर एक मुनीम एक जमादार आठ चपरासी एक खिदमतगार एक भंडारी दो माली वगीचामें हैं, कोठीमें एक हाथी भी है जिसका एक महावत और एक हाथीके खानेको घास काटनेवाला है। कोठीके भीतरके चौकमें अति रमणीय दि० जैनमन्दिर है, जिसके पूजन प्रक्षालको दो पुजारी हैं, कोठीकी इमारत देखने योग्य है। प्रबंध हरप्रकारसे योग्य और प्रशंसनीय है।

दूसरी धर्मशाला—तेरहपंथी आम्नायकी (नीचली कोठी) है। इसके प्रबंधकर्त्ता बाबू 'छन्नूलालजी' कलकत्ता निवासी हैं. जिनकी तरफसे एक मुनीम छै चपरासी, दो पुजारी, एक माली, प्रबंधके लिये नौकर है।

तीसरी धर्मशाला—श्वेताम्बर आम्नायकी (मझली कोठी) इसमें श्वेताम्बर आम्नायके मन्दिर हैं प्रबंध ठीक है।

पर्वत बंदना।

पहिली धर्मशाला (उपरेली कोठी) के पाससहीसे पर्वतकी चढ़ाई आरम्भ होती है। मधुवनसे दो मीलकी चढ़ाईपर मार्गमें 'गंधर्वनाला' है। इसके पास एक धर्मशाला है। इससे एक मीलकी चढ़ाईपर 'सीतानाला' पडता है।

यहां यात्री लोग पूजनकी सामग्री धोते हैं। सीतानालासे कुछ दूर हनुमान और क्षेत्रपालका मन्दिर है। सीतानालासे ३ मील चढ़नेपर 'श्रीकुंथुनाथस्वामीकी' प्रथम टोंक है, इसके सन्मुख एक टोंक 'गौतमस्वामीकी' है, इसके वाएँ हाथकी तरफ वन्दना करने जाते हैं। दूसरी टोंक 'श्रीनेमिनाथकी' तीसरी 'श्रीअरहनाथस्वामीकी' चौथी 'श्री मल्लिनाथस्वामीकी' पांचवीं 'श्रीश्रेयांसनाथकी' छठी 'श्रीपुष्पदंतकी' सातवीं 'श्रीपद्मनाथकी' आठवीं 'श्रीमुनिसुव्रतकी' नवमी 'श्रीचन्द्रप्रभस्वामीकी' यह टोंक सबसे अलग और बहुत ऊंची है इस टोंकसे एकदम नीचे उतरना पड़ता है। दशमी 'श्रीआदिनाथकी'

ग्यारहवीं 'श्रीशीतलनाथकी' बारहवीं 'श्रीअनन्तनाथकी' तेरहवीं 'श्रीसम्भवनाथकी' चौदहवीं 'श्रीवांसुपूज्यकी' पन्द्रहवीं 'श्रीअभिनन्दननाथकी' टोंक है इसकी बंदना करके इकदम नीचे उतरना पड़ता है, यहां एक जलमन्दिर है, इस मन्दिरमें बाहरकी २ कोठरियोंमें आमने साम्हने दिगम्बर आम्नायकी दो प्रतिमाएँ बहुत वर्षोंसे विराजमान थी परन्तु इस समय दोनों कोठरियोंका ताला बंद है, एकका दरवाजा जरा हटानेसे दर्शन हो जाते हैं। इस स्थानसे फिर ऊपरकी तरफ चढ़ाई प्रारम्भ होती है। इकदम ऊपर चढ़नेसे प्रथम टोंक श्रीकुंथुनाथके पाससे ही दाहिनी तरफ जानेसे सोलहवीं टोंक 'श्रीधर्मनाथकी' सत्रहवीं 'श्रीसुमतिनाथकी' अठारहवी 'श्रीशान्तिनाथकी' उन्नीसवीं 'महावीरस्वामीकी' वीसवीं 'श्रीसुपार्श्वनाथकी' इकीसवीं 'विमलनाथकी' बाईसवीं 'श्रीअजितनाथकी' तेवीसवीं 'श्रीनमिनाथ की' चौवीसवी 'श्रीपार्श्वनाथकी' है, यह चौवीसवीं टोंक सबसे बड़ी और इतनी ऊंची है कि इसपरसे बहुत दूर २ के स्थान दिखाई देते हैं, इसी टोंकके कारण कई लोग इसको पार्श्वनाथ पहाड़ कहते हैं।

इस टोंकसे मधुवन आनेके मार्गपर एक डांक बंगला है, इससे नीचे उतरनेपर एक और छोटासा बंगला है, इस स्थानसे एक रास्ता 'निमियाघाट' को गया है और एक 'मधुवन' को।

इन रास्तोंमें पाटिया (सायनबोर्ड) भा० दि० जैनतीर्थक्षेत्रकमेटीकी तरफसे लगे हैं, इन पाटियोंमें देवनागरी अक्षरोंमें रास्तोंके नाम लिखे हैं।

इस पर्वतकी ६ मील चढ़ाई ६ मील टोकोंकी बंदना और ६ मील उतराई, इसप्रकार १८ मीलकी बंदना है, और २८ मील पर्वतकी परिक्रमा है।

इस गिरिराजसे अनंत तीर्थंकर अनन्तानंत मुनीश्वर कर्ममलसे रहित होकर निर्वाण पधारे हैं। वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरदेवोंमेंसे चार तीर्थंकरतो 'हुंडावसर्पिणी' कालदोषसे अन्य स्थानोंसे अर्थात् श्रीआदिनाथ भगवान 'कैलाशगिरि' * से श्रीवांसुपूज्य 'मंदारगिरि' से श्रीनेमिनाथ 'गिरनार' पर्वतसे और श्रीमहावीरस्वामी 'पावापुर' से मोक्ष गये। इन चारों तीर्थंकरोंकी टोंके यहां भी हैं। शेष २० तीर्थंकर इसी गिरिराजसे निर्वाण पधारे, तीर्थराजकी महिमा अपार है, गिरिराजसे असंख्यात मुनी और तीर्थंकरों मुक्त होनेके कारण इन्द्रादिक देवोंने पूजन प्रदक्षिणा करके अपने जन्मको सफल समझा। अब भी गिरिराजपर देवोंकृत कई अतिशय हुआ करते हैं। इस परमपवित्र गिरिराजकी

---

* कैलाशगिरिकी यात्रा इस कालमें अगम्य है।

भावसहित वन्दना करनेवाला भव्यजीव ४९ भवमें अवश्यही मोक्ष लक्ष्मी प्राप्तकर लेता है, उसे नरक और पशुगति नहीं होती पं० 'द्यानतरायजी' ने कहा है:—

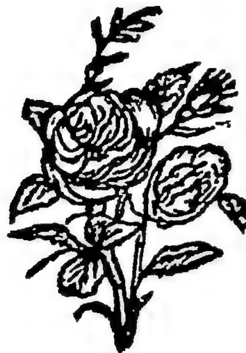
एकबार बंदे जो कोई । ताहि नरक पशुगति नहिं होई ॥

इस गिरिराजकी पृथक्२ टोकोंके माहात्म्यका वर्णन 'सम्मेदशिखरविधान' और 'वृहत्-शिखर माहात्म्य' नामक ग्रंथ तथा अन्य २ जैनशास्त्रोंमें विस्तारसे कहा है, गिरिराजकी वंदना करनेसे परिणामोंमें निर्मलता होती, परिणामोंमें निर्मलता होनेसे कर्मबंध कम होता और कर्मोंका बंध कम होनेसे और निर्जरा होनेसे क्रमशः मनुष्य मोक्षपदको पा सकता है।

लाखों नरनारी प्रतिवर्ष इस तीर्थराजकी वंदना करके मनुष्य जन्मको सफल करते हैं । प्रत्येक जैनी इस पर्वतकी बंदना करनेको अपना कर्त्तव्य समझते हैं। सम्मेदशिखरपर चायकी खेती अधिक होती है ।

हजारीबाग ।

रांचीसे लगभग ५० मील उत्तर हजारीबागको अच्छी सड़क गई है, छोटानागपुर विभागमें, जिलेका सदरस्थान है । कई छोटेगांव मिलकर यह कस्बा बसा है । हजारीबागमें सरकारी कचहरियां पुलिस स्टेशन और स्कूल है। मनुष्यसंख्या अनुमान १७ हजार है, दि० जैनियोंके खंडेलवालोंके ३४ घरोंकी मनुष्यसंख्या ९८ है । एक शिखरबंद मंदिर जैनपाठशाला और धर्मशाला भी है। अबरकका अधिक व्यापार होता है ।



श्रीपरमात्मने नमः।

बम्बई अहाता।

(गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिणमहाराष्ट्र)

के

तीर्थक्षेत्र और प्रसिद्ध २ शहरोंका वर्णन।

अजण्टाकी खोहें।



रियासत हैद्राबादमें (G. I P) यानी बम्बईकी बड़ी लैनके "जलगाव" स्टेशनसे ४० मील "फरदापुर" के पास यह स्थान है। जलगांवसे पर्वतकी तलेटीतक रास्ता अच्छा बना हुआ है तथा स्टेशनपर घोड़ा, गाड़ी, तांगा आदि सवारी हर वकत किरायेपर मिलती हैं। इस जगहकी मशहूर खोहें यानी पर्वतोंको काट कर बनाये हुए गुफा मन्दिर देखने योग्य हैं। खोंहें दिखलानेके लिये आदमी उसी जगह मिल सकता है। खोहों की संख्या २९ है। इनमें सब जगह बौद्ध मूर्तिया हीं पाई जाती हैं। जैनियोंका और हिंदुओंका इसमें कोई भी संबंध नहीं दीख पड़ता है। नं० १६ वीं और १७ वीं खोहोंमें एक शिलालेख पाया जाता है, जिसका सारांश इस प्रमाण है:—"महाराजा देवचंद्र दूसरा "चंद्रगुप्त" और "विक्रमादित्य" राजाओंने ई० सन् ३७५ से ४१३ तक पर्वतोंको काट-कर बनवाया है"। इनमें २४ विहारें या अस्थल हैं और ५ मन्दिर हैं। ये सब बड़े २ कील पायोंपर खड़ें हैं, और उनके अन्दरकी मूर्तियोंपर खूबसूरत रोगन किया हुआ है। खोहोंमें चित्रोंका काम ऐसा ही अच्छा और सुन्दर है, कि मानों किसी जगत् विख्यात यलोराके गुफा मन्दिरोंमें ही पाया जाता है। खोहोंमें और बाहर पहाड़पर बहुत से संस्कृतमें कुतुबे (लेख) खुदे हुए हैं। यह चित्रोंका काम करनेके लिये ई० सन् ६२६ के करीबमें चीन देशके सम्राटने एक प्रसिद्ध चित्रकारको भारतवर्षके बलाढय राजा "पुलकेशीके" पास भेज कर यहाँ चित्रोंका काम बनवाया था। अफसोस कि इस कामको 'अंविध राजाने' द्वेषसे खंडित करादिया था तो भी यह खोहें बड़ी ही सुन्दर देख-नेके योग्य हैं। यलोराकी गुफा भारतवर्षमें मशहूर हैं। दूर २ के दर्शक देखने आते हैं।

'वेरूलचलिंणी' नामक मराठी पुस्तकमें इन गुफाओंका विस्तृत वर्णन है।

अहमदाबाद।

शहर अहमदाबाद अहाता बम्बईमें जिलेका सदर मुकाम और इलाकेमें सबसे अच्छा आबाद है। यहांपर बॉम्बे बरोदा रेल्वे, जी. आय. पी. राजपुताना-मालवा और अहमदाबाद-प्रांतीज रेल्वेका जंकशन है।

इसे गुजरातके राजा "अहमदशाह" (प्रथम) ने १४४२ ई० में, हिन्दुओंके पुराने नगर "असावलके" पास बसाया, और बस्तीके चारों ओर शहरपनाह (कोट-पक्की-दीवार) बनवाई। इसके बाद मरहठोंके आधीन रहा। सन् १८०३ ई० में अहमदाबाद जिलेमें अंग्रेजोंका अधिकार हुआ। यहांपर अनेक पुरानी कारीगरीके मकान अब तक हैं। १६ वीं व १७ वीं सदीमें अहमदाबाद भारतवर्षके प्रतापशाली शहरोंमें से था। कहते हैं कि उस समय ९ लाख मनुष्य संख्या थी।

यहांपर दिगम्बरजैनियोंके घर १९ और मनुष्यसंख्या ६० है। माणिकचौकमें मांडवी पोलके पास दो दिगम्बर जैन मन्दिरजी हैं जिसमें पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध पञ्चों-की तरफसे होता है। जैनजातिमें विद्या-प्रचार करनेके हेतुसे तीन दरवाजोंके पास "शेठ प्रेमचंद मोतीचंद बोर्डींग" नामक स्कूल भी खोला गया है, जिसमें करीब ४०।५० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं और इस ही बोर्डिंगकी इमारतमें दि० जैन यात्री तथा मुशाफरोंके लिये एक धर्मशाला भी बनाई है तथा दर्शन हेतुसे एक मन्दिरभी बनवाया है।

यहांपर श्वे० जैनियोंकी संख्या अधिक है, कई श्वे० जैन धनसम्पन्न, वैभवशाली और प्रसिद्ध व्यापारी, हैं। शहरमें अनुमान १२५ जैनमन्दिर हैं। श्वेताम्बरियोंकी कई पाठशालाएँ, सभाएँ, धर्मशालाएँ, आदि धार्मिक संस्था हैं। स्थानकवासियोंका भी अच्छा समुदाय है। यहांसे दो तीन मासिक, साप्ताहिक पत्र भी निकलते हैं।

तीन दरवाजोंके पास जुम्मामस्जिद, शहाआलम मस्जिद, हाथीसींगकी कबर और 'सारखीज' में बनाया हुवा तालाब देखने योग्य है।

अहमदाबादमें देखने योग्य और स्थान ये हैं:—

(१) स्वामीनरायणका मन्दिर-शहरके पूर्वोत्तर भागमें, एक चौड़ी सड़कके किनारे सन् १८५० का बना हुआ विशालमन्दिर है। मन्दिरमें भोगरागकी बड़ी तैयारी होती है, इसके खर्चके लिये भारी आम्दनीका प्रबंध है।

(२) पिंजरापोल (पशुशाला) मन्दिरके पास ही है। धार्मिक लोगोंके चन्दे से लगभग एक हजार जानवर पाले जाते हैं, एक कमरेमें कीड़े भी हैं।

(३) मोहाफिजखांकी मसाजिद-स्वामी नरायणके मन्दिरसे पश्चिमोत्तर दिल्ली फाटकसे दक्षिण, सन् १४६५ की बनी मसजिद है, इसकी एक मीनार बहुत सुन्दर है।

(४) हाथीसिंहका श्वे० जैनमन्दिर–दिल्ली फाटकसे लगभग ६०० गज उत्तर सड़कसे पूर्वकी ओर हाथीसिंहका बड़ा जैनमन्दिर है। यह मन्दिर सन् १८४८ में दसलाख रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था, मन्दिरमें रत्नजड़ित प्रतिमाएँ हैं। इस मन्दिरसे १ मील पूर्वोत्तर "दादा हरिका" प्रसिद्ध कुआ और इससे पूर्वोत्तर 'असरवा' गांवमें 'भवानी' का सुन्दर कुआ है।

(५) नया श्वे० जैनमन्दिर–शहरके भीतर सड़ककी बगलमें सुन्दर जैनमन्दिर है। मन्दिरकी बहुमूल्य रत्नजड़ित प्रतिमाएँ देखने योग्य हैं।

(६) अहमदशाहका मकबरा–शहरके मध्यभागमें दरियापुर फाटक और कालूपुर फाटककी सड़कके मेलके पास अहमदाबादको बसानेवाले, अहमदशाहका मकबरा है। इसका फर्श अनेक रंगके मार्बलके टुकड़ोंसे बना हुआहै इसके आस पास और कई मकबरे हैं।

(७) जुमामसजिद–अहमदशाह–मकबरे से दक्षिण, मानिकचौंक के दक्षिणी बगलमें जुमामसजिद है, इसको सन् १४२४ ई० में अहमदशाहने बनवाई थी, खास मसजिदमें २६० जैन स्तम्भ लगे हैं।

(८) तीन दरवाजा–जुमामसजिदसे दक्षिणकी ओर खास सड़कपर अहमदशाहका बनवाया हुआ यह दरवाजा है, इसमें सुन्दर नक्काशीका काम बना हुआ है। इसीके पास दि० जैन बोर्डिंग हौस है।

(९) अहमदशाहकी मस्जिद–तीन दरवाजेसे दक्षिण–पश्चिम, यह मस्जिद है। जुमामस्जिदसे पहले अर्थात् १४१४ ई० में बनी थी।

(१०) रानी सिप्रीकी मसजिद–शहरके दक्षिणके घोरिया फाटकसे उत्तरकी ओर यह मसजिदहै, एक मकबरा भी है। इसके पास 'आसाभील' जिसके कि नामसे पहिले अहमदाबादका नाम असावल था, डेरा है। यहां पूर्व कालमें भीलराजा आसाका किला था।

(११) काकरिया झाल–शहरके दक्षिणके राजपुर फाटकसे पौन मील दक्षिण–पूर्व दर्शनीय यह झील है, इसको लोग हौजीकुतुब भी कहते हैं। इसको अहमदाबादके सुल्तान कुतुबुद्दीनने सन् १४५१ ई० में बनवाई थी। इसके मध्यमें एक छोटा टापू और सुन्दर फुलवाड़ी है।

(१२) शाहआलम–कांकरिया झीलसे डेढ़ मील दक्षिण–पश्चिम बतवारोडके पास, शाहआलम नामक प्रसिद्ध स्थान है यहांपर कई सुन्दर मकबरे मस्जिद और हौज हैं।

(१३) सांभरमती नदी–इसका प्राचीन नाम 'साभ्रमती' है। इसको हिन्दूलोग बहुत पवित्र मानते हैं। इसके किनारे कई मन्दिर और घाट हैं।

(१४) चिन्तामणिका श्वे० जैनमन्दिर—रेल्वेस्टेशनसे पूर्व सारसपुर नामक ए सुन्दर शहरतली है, सारसपुरमें सं० १८६८ में 'शान्तिदास' नामक धनी व्यापारीने यह मन्दिर ९ लाख रुपयेके खर्चसे बनवाया था।

इनके सिवाय लायब्रेरी, जिलेकी कचहरियां, अस्पताल, पागलखाना, कोढ़ीखाना, दवाखाना, लड़के लड़कियोंके स्कूल, कालेज मिलें, अजीमखांका महल, जो अब जेलखानेके काम आता है, और शहरसे ३३ मीलकी दूरीपर फौजी छावनी आदि कई स्थान देखने योग्य हैं।

व्यापार हर तरहका होता है, यहांके सुनार ठठेरे (तमेरे) जवाहिरी, बढ़ई, संगतराश, कागज बनानेवाले, और हाथीदांतका काम बनानेवाले कारीगर प्रसिद्ध हैं। देवताओंके मूर्तियोंके भूषण, (गहने) बक्स, सूती कपड़े, सुनहरी रेशमी कमख्वाब, सोना चांदीकी लेस, गलीचे चमड़ेकी ढाल, इत्यादि चीजे अच्छी बनती हैं। यहांकी दस्तकारियां भी प्रसिद्ध हैं। शहरमें बड़े बड़े कोठीवाले धनवान् रहते हैं। अनेक भाँतिके कल कारखाने हैं। यहां १२ से अधिक केवल कपड़ा बुननेकी मिलें हैं। यहाकी मुख्य भाषा गुजराती है।

स्टेशनके पास एक धर्मशाला है, शहरमें कई धर्मशालाएँ हैं स्टेशनपर हरतरहकी सवारी किरायेपर मिलती है।

आतनूर (श्रीचंद्रनाथजी)

मोगलाई (निजाम रि०) में शोलापुरके पास दुधनी (G. I. P.) स्टेशनसे करीब ९ मीलपर 'आतनूर' नामक छोटासा ग्राम है। यह ग्राम प्राचीन कालमें भाग्यवान था, ऐसा उसके खंडहरोंके चिन्होंसे मालूम होता है। ग्रामके बाहरी भागमें चारो ओर खंडित प्रतिमाएं और मन्दिरोंके खण्डहरोंके चिन्ह पाये जाते हैं। १०–१२ वर्ष पहले ग्रामसे अग्नि कोनमें जंगलमें दबा हुआ एक पत्थरका मन्दिर श्रीचन्द्रप्रभु स्वामीका शा०'अमीचंद देवचंद आलंद' निवासीको एका एक दृष्टि गोचर हुआ था आपने अपनेको भाग्यशाली जान कर वहांकी झाडी तुडवा कर मन्दिरको साफ कराया। मन्दिरमें मूलनायक श्रीचंद्रप्रभुस्वामीकी प्रतिमा दो हाथ ऊंची काल पाषाणकी पद्मासन विराजमान है। इसके पास बाई ओर एक शिलालेख कनड़ी लिपिमें अस्पष्ट पाया जाता है, वह यह है:—

"श्रीमत् सच्चिदानन्द....देवर मूर्ति....पुण्य श्री....अंशर...मार्गशीर्ष" और पीछे चौवीसीकी प्रतिमा एक पाषाणमें खुदी हुई रक्खी है। मन्दिरमें और भी तीन प्रतिमाएँ कायोत्सर्ग १॥ फुट ऊंची विराजमान हैं। इनके पास और एक चौवीसीकी प्रतिमा है। दूसरी बाजूमें श्रीवीरनाथस्वामीकी प्रतिमा पद्मासनस्थ है। इस प्रतिमाके

दोनों बाजुओंमें इन्द्र चमर ढालते हैं। और एक या दो मन्दिर ग्राममें भी हैं परन्तु उनमें प्रतिमा विराजमान नहीं है। ग्राममें जैना भाईयोंके केवल २ घर हैं। इस मन्दिरकी पूजन-प्रक्षालका प्रबंध शेठ 'अमीचंद देवचंद' की तरफसे एक उपाध्या २५) साल-नापर करता है।

आरटाल।

जिला 'धारवाड़' की तहसील 'बंकापुर' में धुंडसीके पास 'आरटाल' क्षेत्र है। रेलवे लैन पास न होनेसे यात्रियोंको मद्रास और सदर्न मरहठा रल्वेके 'हुबली' स्टेशनपर उतरना चाहिये। स्टेशनसे आरटाल करीब २४ मील नैऋत्य कोनमें है। स्टेशनपर गाड़ी घोड़ा आदि सवारी हरवक्त किरायेपर मिलती है। ग्राममें जैनियोंकी बस्ती नाम मात्र है। ग्रामके पास जंगलमें अति प्राचीन शिखरबन्द पाषाणका बना हुआ मन्दिर अति उत्तंग है। इसमें श्रीपार्श्वनाथ २३ वें तीर्थंकरकी प्रतिमा पाषाणकी बृहदाकार कायोत्सर्ग विराजमान है। इस मूर्तिके पास एक शिलालेख प्राचीन कनड़ी लिपिमें पाया जाताहै जिसकी नकल नीचे दीगई है। मन्दिरके पास ही एक तालाब है। तालाबमें जल कम होनेसे यात्रियोंको बड़ी तकलीफ होती है। इस देवस्थानके प्रबन्धके लिये सरकारसे २ एकड़ जमीन इनाम है। पूजनके लिये धुंडशी ग्रामसे पुजारी प्रतिदिन आता है ठहरनेके लिये धर्मशाला नहीं है।

इस क्षेत्रपर संवत् १९६७ में मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिये कर्नाटक सीमा धारवाड़में "प्रान्तिक जैन महासभा" स्वस्ति-'श्रीजिनसेन' भट्टारक स्वामी मठ नांदणीके सभापतित्वमें स्थापित हुई है।

आरटाळ पार्श्वनाथ मंदिरका

शिलालेख.



श्रीमत्परमगंभीर स्याद्वादामोघ लांछनम्।
जीय्यात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् १

स्वस्ति यम नियम स्वाध्याय ध्यान मौनानुष्ठान समाधि शीलगुण संपन्नरप्प कनकचंद्र सिद्धांत देवरगुडं गंगर बोम्मशट्टि माडिसिदबसादि मंगलमहा।

श्री श्री श्री श्री श्री

स्वस्तिसमस्त भुवनाश्रय श्री पृथ्वीवल्लभम् महाराजाधिराज परमेश्वर परम भट्टारक-सत्याश्रयकुळ तिळक चालुक्याभरणम्।

श्रीमस्तिभुवन मल्लदेवर विजय राज्य उत्तरोत्तर चंद्रादि प्रवृध्यमानमाचंद्रकितारंवरं सलुत्तमिरे, तत्पादपद्मोपजीवि.

स्वस्ति समदिगत पंचमहा शब्दारोह मंडळेश्वरम्। बनवासी पुरवराधीश्वरम्। जयंति मंधुकेश्वर देवलब्धवरप्रसादम् मृगमदामोदम् त्र्यक्षयक्षसंभव चतुरासीति नगराधिपतिम्। ललाटलोचनम्। चतुर्भुजम्। जगद्विदिताष्टादशाश्वमेधदीक्षादीक्षितम्। जाकवधीरेंद्ररुम्। प्रशेखरी शेस्वरस्वस्थापितस्फटिक शिलास्तंभम्। बद्धरोधनगज रिपु महि महाभिरामम्। कदंवचक्रिमयूरमर्ममहामहीपाळकुळभूषणम्। पेर्मट्टेतूर्यनिर्घोषणम्। शाखाचरेंद्र ध्वज विराजमानम् मानतुंग सिंहलांछनं दत्तातिकुंभनम्। समरजयकारणकदंबराभरणम्। मार्कोळपरगंडम्। प्रतापमार्तांडम्। मंडळिकगंडमंगारं श्रीममहामंडळेश्वरम्। तैलपदेवर वनवासी पन्निच्छासिरमहामहर्नुगत्यै नुरुमनु भयसाम्य मालुत्त सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गैयुत्तमिरे।

वृत्त॥ हरिराज ध्वज सत्पसत्पतिकदंवादेशपेर्मट्टेतू।
र्यरवाष्टादशवाजिमेद चतुरश्रासीति शंखापुरे-॥
श्वररुद्रान्वय सिंहलक्ष्ममहिमशैलेंद्रो परिस्थापित।
स्थिरशक्त्यूर्ध्वहिरण्यगर्भ महिमंकादंबचक्रेश्वरम्॥

व॥ अन्तुपमयनान्ते तैलपदेवरसं शकवरुष १०४५ ने शोभकृन्नाम संवत्सरद् पुष्यमासद् अमवादसे आदित्यवार सूर्यग्रहणदंदु कोंतकुलिय मोदलवाडप इट्टणद् वेट्टकेरेय गंगरवोम्मशेट्टियरु माडिसिद वसिदगे मूरुंकेरेय प्रभुगामुंडुगलुं अरुवत्तुकोलुं रोनूर्वरुं कदंव कुलतिलकमदु पेसरिट्ट, विन्नपगैदु धर्म प्रतिपालनार्थम्।

कंद॥ नतभूपालकमौळि।
स्थितरत्नद्युतिगळि पद द्युतियेसेगुम्॥
सततंसध्यारुचिवोल्।
तत्सम्य द्विचारिकनक चंद्रप्रभृतिय।

व॥ नोडिदरसं संतोषंवट्टु

वृत्त॥ अनुपमरेंबुद वण्णि पुदनरियंतनु, कल्लकंभदम्
तेनिंतुपरीपह प्रभळभारमनान्तु-द्धुचितवातमभा॥

वनेयोडगूडेत्ति कनकचंद्र महामुनि पंगेकालव ।
तंनदवसर्पणं नेगळदिर्दंळ स्टेटिनेरदैपुट्टिदम् ॥ १ ॥
धीरमनोभव प्रबलेदर्पविभं जनरुद्यतत्रिदम् ।
डारिकुळाचलेंद्रकुळेशकालिकालविमोह राजनि ॥
धरिकरस्यशून्यमतसंतमदोदयचंद्ररेंदुवि ।
खारदि बणिणकुंकनकचंद्र मुनींद्रने निज सज्जनम् ॥ २ ॥
मुनियेजंगम जैन बिंबन नयद्याचारनेजैनशा ।
सनरक्षामणिशांतनं सकळरागद्वेष दावप्रभम् ॥
जनन्नुतविनुतनेवे गुणप्रणयितानंबी विश्वमे ।
धिनीयोळ माधवचंद्र देवनेसेदंचारित्र चक्रेश्वरम् ॥
जिनमत लक्ष्मिग भ्युदयमादुदुभव्यजनानुरागव ।
तंनेगे विशुद्धमार्गमळवद्दु सत्यतपोनिदाननम् ॥
दनवन पिराजि पल्लविसिर्दुदुमादवचंद्रदेवनम् ।
बनुपम पुट्टवदुमीवसुधावळयांतराळ भागदोळ ॥

वचन ॥ अंतुनेगळ्तेवेत्त महामहीमोन्नतमुनिवरर् समूहदिंदोडगुडिरुव श्रीमूलसंघदक्राणाग्रणदमेष पाषाणगच्छदकनकचंद्र सिद्धांतदेवर पादप्रक्षाळनम् गैयुद्द धारापूर्वकं माडिदेवरष्टविदार्चनेगंऋषियरआहारदानकं विनयपूर्वकवागि बिट्टकेय्य (होल) सीमासंमंधम् । बेट्टादिर्यिमूडल्लुगागेरेयिंतेंकल्लमलितगाल्लडगेरेय मूडणकोडियिम् केळगे गद्देपिरेयकोलल्लु मत्तुवाडु ऊॅरपडुवणवेंडेय केरेय केळगे गद्दे-९-कम्मतइप्पत्तु अल्लिपूदोटं ओंदु बसदिय उत्तरदबीदिर्यि बडगल्लुपदिनैदकेय्य (१९ होल) ई निवेशणंदानश्याले (ऐंदनूरुवरहबिट्टधर्म) आगडियोळुसोटिगे होरगणिंवंदभंडक्के हेरिगे सोटिगेयांदुऐवत्तोक्कल्लु देवरसोडरण्णेगे गाणदोळ कोट्ट सोट्टिगेयोंदु (१) इंतिनितुधर्ममं सर्वरुमवश्यवागी प्रतिपालिसिदवर्गेवारणाशियोळु अनर्घ्यतीर्थदोळुं सहस्रकपिलेयम् सहस्रब्राह्मणर्गेकोट्ट फलमक्कुम्-इंती धर्ममनळिदातनु आ कपिलेयुमम् ब्राह्मणरुमम् आतीर्थदोळुवदयिसिदमहापातकमक्कुम् ।

श्लोक-स्वदत्तां परदत्तां वा योहरेद्धि वसुंधराम् ॥
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥

आष्टे (श्रीविघ्नेश्वर-पार्श्वनाथ)।

यह अतिशयक्षेत्र निजाम हैदराबाद रियासतमें (N. S. Ry.) 'दुधनी' स्टेशनके पास 'आळंदसे' करीब १६ मील है। रास्तामें "मटकी, निरगुडी, आलूर और अचलूम"

आदि ग्राम हैं। अचलूरमें एक प्राचीन पत्थरका बना हुआ मन्दिर है, जिसमें वेदिका आदि जैन मन्दिरके चिन्ह पाये जाते हैं, वर्तमानमें इसमें महादेवजीकी मूर्ति है। एक और मन्दिर जंगलमें है परन्तु उसमें प्रतिमा नहीं है।

आष्टा ग्राममें एक अति प्राचीन चैत्यालय है। इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा चौथे कालकी कृष्ण पाषाणकी करीव २ फुट ऊंची पद्मासन विराजमान है, इसके नीचे एक अस्पष्ट शिलालेख है। तो भी उसकी प्रतिष्ठा या मन्दिरका जीर्णोद्धार का शक ५२८ मालूम होता है। करीव २५ या ३० वर्ष पूर्वमें 'हिरोली' निवासी शेठ 'लीलाचन्द हेमचंदने' इसका कुछ जीर्णोद्धार कराके दो प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा कराई थी।

इस समय यह मन्दिर जीर्ण होनेसे गिरने लगा है। पूजनप्रक्षाल रोज होती है। यहांके निर्माल्यकी आमदनी करीव ७००) रु० हैं। इस निर्माल्य द्रव्यसे पुजारी अपन निर्वाह करता है। प्रत्येक वर्षमें यात्री करीब दो हजार के लगभग आते हैं। शोलापुर जिलेमें इसकी अत्यन्त प्रसिद्धि है लोग इसको विघ्नेश्वर पार्श्वनाथ नाम लेकर कहते हैं।

ईडर।

बम्बई प्रान्तके महीकांठा जिलेमें, एक छोटे रजवाडेकी राजधानीमें ईडर कस्बा है। ईडरमें पहिले रेल नहीं थी परन्तु अव रेल्वेस्टेशन होगया है। यह अतिशय क्षेत्र गुजरातमें है।

यहांपर वहुत प्राचीन जैनमन्दिर और प्रतिमाएँ हैं। मन्दिरों की संख्या ६ है। सवसे वड़ा आर प्राचीन मन्दिर श्रीशान्तिनाथस्वामीका है। हूमड़ोंके अनुमान १४० घरों की मनुष्य संख्या ३०० है। पहिले जैनियों की बड़ी भारी वस्ती थी।

एक दि० जैनपाठशाला वम्बई निवासी श्रीमान् शेठ 'माणिकचंद लाभचंदजी' की ओरसे है, पाठशालामें लड़के और लड़कियाँ पढ़ते हैं। पं० नन्दनलालजी अध्यापक पढ़ाते हैं।

ईडरमें भट्टारककी गद्दी है, कई वर्षोंसे सुयोग्य आदमी न मिलनेसे गद्दी खाली है। एक प्राचीन शास्त्र भंडार है जो कई वर्षोंसे नहीं खुला है, भंडारकी सम्हाल न होनेसे सैकडों अलभ्य ग्रंथ नष्ट होगये और हो रहे हैं। ईडर नरेशका महल देखने योग्य है।

ईडर से तीन चार कोसकी दूरीपर 'पोहीना' नामक ग्राममें दो प्राचीन जैनमन्दिर हैं। मन्दिरका प्रबंध पोहीना निवासी ही करते हैं।

उखलद।

(अतिशयक्षेत्र)

यह क्षेत्र निजाम रियासतके परभिणी जिलेमें पिंगली (N.S.Ry.) स्टेशनसे करीब ४ मील पूर्णा नदीके किनारेपर बसा है। उखलद ग्राममें दिगम्बरियोंके केवल २ घर सैतवालोंके हैं जिनकी मनुष्य संख्या ७ है। पूर्णा नदी पूर्वसे पश्चिमको बहती है। प्राचीन जैनमंदिर पत्थरका बना हुआ इसीके किनारेपर होनेके कारण यहांकी शोभा और सृष्टि सौंदर्य अत्यन्त मनोहर है। मन्दिरके आगेका हिस्सा नदीके सामने होनेके कारण उसका कुछ भाग अधिक बरसातसे गिर पड़ा है, इसलिये इसका जीर्णोद्धार होना आवश्यक है। इस मन्दिरमें श्री नेमिनाथस्वामीकी प्रतिमा काले पत्थर बृहदाकार अति मनोज्ञ विराजमान है। ` हैं कि, इस प्रतिमाके दाहिने पांवके अंगूठेके बीच एक पारस पत्थर (जिसके स्पर्शसे लोहेका सोना बन जाता है) था और यह बात अंगूठेके पासके चिन्हसे सत्य मालूम होता है। प्राचीन कालमें कोई एक धर्म परायण श्रावक इस मंदिरका पुजारी था, उसका उदर निर्वाह इस पारससे होता रहता था, अर्थात् पूजाके बाद वह पुजारी प्रतिदिन उस पद-पारसको लोहेकी सुई लगाकर सोनेकी बनाता था, उसीसे निर्वाह करता था। जब वह बढ़ा पुजारी धाराशायी हो गया तब उसने अपने पुत्रको अपने पास बुलाकर पारसका भेद (गुप्तरीतिसे) बतलाया, और धर्म श्रद्धासे चलनेका उपदेश दिया। वृद्ध पुजारीके मरनेके बाद पुत्र लोभी होकर बहुत सोना पैदा किया और दुराचरणसे रहने लगा। कुछदिनोंके बाद यह बात उस प्रान्तके मुसलमान अमलदारके (राज्याधिकारी) कानों तक पहुँची। अमलदार उस पारसका निकालनेके लिये प्रतिमाके पास आया, और उसको स्पर्श करनेके लिये तैयार हुआ ही था कि उसी समय एकाएक बड़ी आवाज हुई, और प्रतिमाके अंगूठेके बीचका पारस नदीके गड्ढेमें गिर पड़ा। यह अतिशय देख वह मुसलमान अमलदार आश्चर्यान्वित हो गया तो भी उसका लोभ रंचमात्र भी कमी नहीं हुआ, और उसने एक मस्त हाथीके पांवमें बड़ी लम्बी लोहेकी जंजीर (संकल) बांधकर नदीमें छोड़ दिया। नदीमें वह पारस था, पारससे स्पर्श होनेके कारण जंजीरकी कई कड़ियां सुवर्ण की हो गई। परन्तु पारस प्रयत्न करनेपर भी प्राप्त नहीं हुआ। उसी समयसे यह क्षेत्र अतिशय क्षेत्र नामसे प्रसिद्ध हुआ। प्रति वर्ष यहांपर माघ ९ शुक्लसे १० तक बड़ी भारी यात्रा होती है जिसमें दो हजार के लगभग यात्री इकट्ठे होते हैं। इस मन्दिरका प्रबन्ध वर्तमानमें प्रसिद्ध धर्मात्मा श्रीयुत "सन्तोबा बजाबा अण्णा संगवे पिंपरी निवासी" के हाथमें है। पूजन-प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध भी इस सद्गृहस्थकी प्रेरणासे अच्छा होता है।

औरंगाबाद ।

यह शहर निजाम-रियासतके जिलेका सदर मुकाम है। इसको करीब ३०० वर्ष पहिले "अहमदनगरकी अदीलशाही" रियासतके मुख्य प्रधान 'मलिकंवर' ने १६१० ई० में वसाया और इसका नाम 'खड़की' रक्खा था। परन्तु जब अदीलशाहीका राज्य 'दहली' के प्रसिद्ध मुगल वादशाह 'औरंगजेवने' जीत लिया और इसका नाम 'औरंगावाद' रखकर अपने सुवे (प्रान्त) का सदर मुकाम करदिया था। वादमें यह निजाम साहिवके जिलेका सदर मुकाम होगया। कहते हैं कि इसम पहिले ५२ मुहल्ले थे, वर्त्तमानमें वहुत कुछ उजाड़ दशामें हैं।

यहां तथा इसके पास छोटे २ ग्रामोंमें सव मिलाकर दिगम्वरियों के घर ४० और २०० के करीव मनुष्य संख्या है। दि० जैन मन्दिर यहां पर ५ हैं। धर्मशास्त्र अनुमान २००के हैं। यहांके जैनीभाई धर्मप्रेमी और उद्योगप्रिय हैं। वेगमपुरासे उत्तरकी ओर एक मीलपर वौद्धोंकी खोहें खंडहर दशामें हैं। एक खोहमें श्रीनेमिनाथस्वामीकी प्रतिमा करीव ५ फीट ऊंची पाषाणकी शंख चिन्हांङ्कित सिंहासनपर विराजमान है। प्रतिमाके चारों ओर यक्ष-यक्षिणी आदि द्वारपालोंकी मूर्त्तियां हैं। प्रतिमाके दर्शन करनेके लिये यहांके जैनीभाई हमेशा जाया करते हैं।

औरंगावादमें देखने योग्य स्थान दो हैं:—

औरंगजेव वादशाहकी स्त्री 'रविया दुराणी वेगम' का मकवरा जिसकी वनावट आगरेके ताजमहल' के सरीखी है और 'पवनचक्की' भी देखने योग्य है।

एरंडोल ।

वम्वई अहातेमें जिला खानदेशके सव डिवीजनोंमें खान्देशका वडा नगर है और जी. आई. पी. याने वम्वईकी वडी लैनकी शाखापर जलगांव आमलनेर स्टेशन है। एरंडोलरोडसे स्टेशनपर सवारी हमेशा किरायेपर मिलती है।

इसका प्राचीन नाम 'एरणवेल, अरुणावती' था। प्राचीन कालमें यहांपर वडी भारी जैनियोंकी वस्ती तथा ५२ जिनालय थे, परन्तु काल-दोपसे वर्त्तमानमें केवल एकही घर दिगम्वरजैनीका है। और ५२ जिनालय नामक दिगम्वर जैन मन्दिर "पांडववाड़ा" नामसे प्रसिद्ध है। मुसलमानोंके समयमें इस पांडववाडामें जो जैन मूर्तियां विराजमान थीं वे सव उन्होंने खंडित करदीं। और मन्दिरोंकी मस्जिदें वनवादी गई। इस समय यह स्थल वृटिशगवर्नमेंट के हाथमें है। इसमें एक अखण्डित जैन प्रतिमा शिलालेख युक्त तथा एक प्रतिमा और जो नगर के वाहर जंगलमें मिली थी, वह ऐसी दो प्रतिमाएँ रा. रा.

शेठ 'चुन्नीलाल अंबूसा' धरणगांववालोंके प्रयत्नसे धरणगांवके मन्दिरमें विराजमान करदी हैं। शिलालेखका सारांश यह है:—

"संवत १३९१ वैशाख मासे सोमवारे कुन्दकुन्दान्वये भट्टारक 'धर्मभूषण' तच्छिष्य 'रत्नकीर्ति' उपदेशात् बघेरवाल ज्ञाति 'क्षमंधर' सा भार्या 'पद्मिनी' और माता देमाई"।

एरंडोलमें रुई और रुईके बीज (बिनोले) का व्यापार अधिक होता है।

कचनेर।

(अतिशयक्षेत्र)

निजाम गोदावरी रेल्वेके, औरंगाबाद स्टेशनसे अनुमान २० मील, चिखलडानासे १६ मील और करयालसे १२ मील दक्षिणकी तरफ बहुत प्राचीन कचनेर नामका एक ग्राम है। यहां एक विशाल जैनमन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा वेदी पर अतिशय धारण करनेवाली विराजमान है। यह प्रतिमा किसी समय खण्डित होकर किसी देव लीलासे जुड़ गई थी। प्रतिमाकी गर्दनमें खण्डित होनेका चिन्ह अब भी दिखलाई देता है। इसी अतिशय के कारण कचनेर अतिशयक्षेत्र प्रसिद्ध हो गया है। कार्त्तिक सुदी १५ से ३ दिन तक प्रतिवर्ष बड़ा भारी मेला भरता है। मन्दिरकी आमदनी प्रतिवर्ष करीब १०००) के हो जाती है। इस क्षेत्रका भण्डारखाता तथा प्रबन्ध "शेठ जसरूपजी लछीरामजी" औरंगाबाद निवासीके आधीन है। प्रबन्ध अच्छा है।

श्रीक्षेत्र (कुण्डल)।

यह क्षेत्र सतारा जिलेकी औंध रियासतमें मद्रास सदर्न मरहठा रेलवेके कुण्डल स्टेशनसे करीब २ मील है। ग्राममें दिगम्बरियोंके गृह १० हैं, जिनकी मनुष्य संख्या ४५ है। और एक प्राचीन जिनमन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी वीतरागताको धारण करनेवाली प्रतिमा विराजमान है, मन्दिर मजबूत है, पूजन-प्रक्षालका इन्तजाम बहुत खराब है। ग्रामके पासके पहाड़पर दो मन्दिर अति उतंग श्रीगिरीपार्श्वनाथ और झरीपार्श्वनाथ-नामधारक विद्यमान हैं। और एक मन्दिर इराण्णा नामका इनके मध्यमें है।

(१) झरी पार्श्वनाथ-यह मन्दिर पहाड़की दक्षिण बाजूमें है इसमें श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा पद्मासन विराजमान है। इसपर अधिक जलवृष्टि होती है, इसलिये इसका नाम झरी पार्श्वनाथ हो गया है। मुकाम मन्दिरमें एक छोटीसी जलसे भरी

रहनेवाली टांकी है जिसमें वारहों महीना स्वच्छ जल भरा रहता है । श्री पार्श्वनाथकी वाई ओर यक्ष और यक्षिणीकी मूर्तियां विराजमान हैं । इसके पास ही श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर है ।

(२) गिरी पार्श्वनाथ-पहाड़के उत्तरकी ओर यह मन्दिर है, इसमें पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान है ।

इराण्णाका मन्दिर-पहाड़के मध्यमें यह स्थान है । यहांपर भी एक गुफामें स्वच्छ जलसे भरी रहनेवाली छोटीसी टांकी है । गुफाके एक पाषाणमें मनुष्याकृत मूर्ति खुदी हुइ है, जिसको इराण्णा कहते हैं ।

कहते हैं कि, इस गुफामें प्राचीनकालमें 'श्रीमहावीरस्वामीकी प्रतिमा थी, और महावीर शब्दसे वीर, अपभ्रंश (बिगडा नाम) होकर वीराप्पा, इराप्पा, इराण्णा होगया ह । इससे यह जैनमन्दिर ही ज्ञात होता है ।

श्रावण मासमे यहांपर वडी भारी यात्रा होती है, जिसमें यात्री कर्नाटक आदि प्रान्तोंसे आते हैं । परन्तु यात्रियोंको ठहरनेके लिये धर्मशाला आदिका कुछ प्रवंध नहीं है इस लिये यात्रियोंको ठहरनेमें बड़ी तकलीफ होती है ।

इस क्षेत्रका प्रबंध 'आण्णापा चोळापा' के आधीन हैं । सर्कारसे इनाम मिली हुई जमीनकी आमदनी से प्रबंध होता है ।

कुंथलगिरि (रामकुंड)

(सिद्धक्षेत्र)

वंसत्थलवरणियरे पच्छिम भायम्मि कुंथुगिरिसिहरे ।
कुलदेसभूषणमुने णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥

यह प्राचीन सिद्धक्षेत्र 'निजाम' रियासतके जिला 'उस्मनावाद' ताल्लुका 'कळंवमें बार्शीटौन' (G. I P) रेलवे स्टेशनसे करीव २१ मीलके फासलेपर है । स्टेशनपर घोडा गाड़ी आदिकी सवारी हमेशा १॥) या २) के किरायेपर मिलती है। 'रामकुंड' ग्रामम दिगम्बर जैनियोंके ८ घर और ३० मनुष्य संख्या है । ग्रामसे थोड़ी दूर पर्वतपरसे 'श्रीकुल-भूषण, देशभूषण मुनि मोक्ष गये हैं । पर्वतकी चोटीपर तथा मध्यमें मुख्य मुनियोंके 'चरणमन्दिर' सहित १० मन्दिर हैं ।

में प्रसिद्ध सृष्टि-सौंदर्यकी मनोहरिता अपूर्व है । लोग इसका अतिशय यह वताते हैं कि भूत पिशाचादिकोंकी वाधा नष्ट होजाती है । माघ मासमें प्रतिवर्ष सुदा पूनमको वडा भारी मेला भरता है जिसमें रथोत्सव बड़े समारोहसे होता है । इस क्षेत्रका प्रवन्ध और भंडारखाता 'मोतीराम गुलावचंद' रामकुंडवालेके हाथमें ।

श्रीसिद्धक्षेत्र कुंथलगिरीपर के मन्दिरोंकी फेरिस्त.

शुमार नं०	मन्दिरका नाम	बनवानेवालोंका नाम और ठिकाना	संवत्	रिमार्क
१	श्रीदेशभूषण कुलभूषण मुनीयोंके चरणोंका	शेठ हरीभाई देवकरण सोलापुरवाले तथा शेठ वेणीचद देवचद इदोरवाले	१९३२	यह प्राचीन मन्दिर जीर्णावस्थामें था इसका जीर्णोद्धार इन महाशयोंने श्रीकनककीर्ति भट्टारक ईडरवालोंकी तरफसे सं० १९३२ में कराया था ।
२	श्रीशान्तिनाथस्वामी	हरीभाई देवकरण सोलापुरवाले	”	
३	श्रीआदिनाथस्वामी	शेठ गणेश गिरधर परंडवाले	१९३१	
४	श्रीजिन मन्दिर	शेठ मानचंद जोतीराम जवळेकर	१९३२	
५	श्रीनन्दीश्वर महाराज	शेट पदमसी निहालचद सोलापुर	१९४७	
६	”	शेठ निहालचद देवचंद ”	१९५२	पर्वतकी तलेटीमें
७	श्रीनेमिनाथस्वामी	शेठ जयचंद हेमचंद, खर्डे	१९५८	”
८	श्रीमहावीरस्वामी	कोठारी अभयचंद जयचद, बावी	१९५८	”
९	श्रीरत्नत्रय महाराज	शा० तुळजाराम हरिचद सांगवी	”	”
१०	श्रीचन्द्रप्रभु	पचायती मन्दिर		”

श्रीक्षेत्र कुम्भोज ।

यह क्षेत्र कोल्हापुर रियासतमें हातकलंगड़ा (कोल्हापुर स्टेट रेलवे) स्टेशनसे करीब ४ मील वाहव्य कोनकी ओर है । स्टेशनसे तीन मील तक रास्ता अच्छा है, और आगे १मील साधारण है । स्टेशनपर गाड़ी घोड़ा बैल गाड़ी आदि कुम्भोज पहाड़की तलेटी तक हमेशा १॥) या २) किरायेपर यात्रियोंको मिलती है । कुम्भोज ग्राममें दिगम्बर जैनियोंकी गृह संख्या ३१३ और मनुष्य संख्या करीब १०१९ है । दिगम्बर जैन मन्दिर १ शिखरवन्द और १ चैत्यालय है ।

ग्रामके पास पहाड़पर दिगम्बर जैन मन्दिर पांच हैं । तलेटीसे ऊपर जानेके लिये सीढ़ियां बनी हैं ।

पर्वत बन्दना—पहाड़पर चढ़नेसे पहिले ब्रह्मायक्षका मन्दिर आता है, जिसमें ब्रह्मदेवकी पत्थरकी विशाल मूर्त्ति करबि ५ फुट ऊँची है। इसी मन्दिरसे दक्षिणमें ३ फर्लांगकी दूरीपर एक सोलह खम्भोंका प्राचीन शिल्पकलायुक्त पाषाणका मन्दिर है । जिसमें श्रीवाहुवलि स्वामीकी चरणपादुका विराजमान हैं इसी कारण यह क्षेत्र बाहुबलि स्वामीके नामसे प्रसिद्ध है । इस मन्दिरके पास एक और छोटा मन्दिर और धर्मशाला है। मन्दिरमें प्रतिमा नहीं है । धर्मशालामें ५००० आदमी ठहर सकते हैं । यहांसे पश्चिमकी ओर ४ फलागपर तीन शिखरवन्द मन्दिर पाषाणके बने हुए हैं, जिनमें अनुक्रमसे श्री आदिनाथ स्वामी और श्रीवर्द्धमान स्वामी, श्री शांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा पाषाणकी विराजमान हैं । मन्दिरोंके साम्हने यक्ष और यक्षिणीकी मूर्तियां तथा मानस्थंभ है । इसके दक्षिणमें एक बड़ा भारी कुण्ड है जो वर्षाऋतुमें भर जाता है । इसका जल यात्री तथा पुजारियोंके काममें आता है। इसके पास एक छोटीसी धर्मशाला जीर्णावस्थामें पाई जाती है । थोड़े ही दूरपर १ सहस्रकूट चैत्यालय है, जिसमें श्रीवाहुवलि (गोमट स्वामी) स्वामी की प्रतिमा खण्डित विराजमान है । प्रतिमापर "शके १०७८ नल नाम संवत्सरे वैशाख सुदी १० बुधवार श्रुतसागर विचारपर" ऐसा लिखा है । प्रत्येक मासकी अमावस्याको यहांपर मेला भरता है, बड़ा मेला आश्विन वदी अमास्या और पौष वदी ३० को होता है । कहते हैं कि शके १७७८ से मेला भरता चला आता है । मेला एक दिन रहता है । हर सालमें करीब पांच हजार यात्री आया जाया करते हैं । इसका प्रबन्ध पंचायतकी तरफसे मुनीम "भाऊ गोंडा दादा पाटील" द्वारा होता है। मन्दिरके सुप्रबन्धके लिये २० एकड़ गठ्ठे जमीन लोगोंने समर्पण की है ।

इन मन्दिरोंके अतिरिक्त उत्तरकी ओर स्वेताम्बरियोंका अनुमान ४०००) रु० की लागतका शेठ रावजी गुलावचंद कुंभोजवालोंका मन्दिर जगवल्लभ पार्श्वनाथ नामक संगमरमरका बना हुआ अति उत्तंग प्रसिद्ध है। इसमें नक्काशीका काम अच्छा पाया जाता है। मन्दिरके प्रवेशद्वारके पास शेठ साहवने अपनी और अपने भाईकी मूर्ति रक्खी है। एक और मंदिर देवीका कोल्हापुर नरेशने बनवाया है।

श्रीक्षेत्र कुलपाक।

निजाम रियासतके हैदरावाद जिलेमें अलेर स्टेशनसे (Bejwada Lire) करीब ४ मील कुलपाक नामक स्थान दि० जैनियोंका प्राचीन क्षेत्र है। यहां श्रीआदिनाथस्वामी की 'माणिकस्वामी' के नामसे मूलनायक प्रतिमा तथा और भी बहुतसी प्रतिमाएं हैं। परन्तु बड़े दुःखकी बात यह है कि 'सिकंदराबाद' निवासी श्वेताम्बरी श्रीयुत शेठ 'पूनमचंद हीराचन्द' ने जीर्णोद्धारके वहाने यहांकी सात दिगम्बरी मूलनायककी प्रतिमाओंके चक्षु आदि चढ़ाकर प्रतिमाकी वीतरागता नष्टकर 'श्वेताम्बरी' बना ली हैं। मूलनायक प्रतिमा काले पाषाणकी अर्ध पद्मासन विराजमान है। इसके पास और भी पांच प्रतिमाएं कायोत्सर्ग तथा अर्ध पद्मासन विराजमान हैं। इनमेंसे एक हरे रंगकी प्रतिमा तेजःपुंज युक्त अति मनोज्ञ है। और एक शासनदेवीकी प्रतिमा भी है।

खम्भात।

वम्वई हातेके गुजरात देशमें खम्भातकी खाड़ीके शिरके पास माहीनदीके मुहानेसे उत्तर देशी राज्यकी राजधानी खम्भात अर्थात् कांवे कस्वा है। पेटलादसे खंभात तक रेल वन गई है, पेटलादसे १८ मील खंभातका स्टेशन है। स्टेशनसे शहर डेढ़ मील दूर है स्टेशनपर सवारी बेलगाड़ी, घोड़ागाड़ी आदिकी हर समय मिलती हैं।

ग्यारहवीं वारहवीं सदीमें "खंभात" अनहिलवाड़ा राज्यके मुख्य वन्दर स्थानोंमेंसे एक था, सन् १२९७में जब मुसलमानोंने अनहिलवाड़ा राज्यको जीता तव खंभात हिन्दुस्तानके सवसे धनी कस्वोंमेंसे एक था। सन् १३०४ ई०में दिल्लीके अलाउद्दीन वादशाहने खंभातको लूटा और यहांके मन्दिरोंको वरवाद किया। सन् १३२५ की महम्मदशाहके समयकी वनी हुई एक मसजिद है, इसमें जैनमन्दिरके स्तंभ लगे हुए हैं। बहुतेरी इमारतोंके

खण्डहर पूर्ववैभवको दिखा रहे हैं। १६ वीं सदीके प्रारंभमें यह व्यापारका प्रधान स्थान था। सन १६१३ ई० में अंग्रेज लोगोंने अपनी कोठी कायम की थी।

यहां लकड़ी और पत्थरकी वनी हुई चीजें अच्छी होती हैं। यहांके बने हुए भूषण और जवाहरातके कामोंके कारण खंभात प्रसिद्ध है। नव्वाव साहवका महल और प्राचीन खण्डहर देखने योग्य हैं।

शहरके मध्यमें एक दि० जैन मन्दिर अति प्राचीन जीर्णावस्थामें ह। इसमें मूलनायक श्रीविमलनाथस्वामीकी प्रतिमा पद्मासन विराजमान है, कुल प्रतिमाएँ ७९ हैं। पूजन प्रक्षालका प्रवन्ध ठीक नहीं है। काणीसा और सायमभाके दि०जैनियोंकी तरफसे एक भाट पूजन प्रक्षाल करता है।

खारेपाटन।

वंबई प्रान्तके जिला रत्नागिरीके ताल्लुका देवगढ़में यह ग्राम प्रसिद्ध है। यहांपर दिगम्बर आम्नानुयाई कासार और पंचमोंके आवाद ग्रह ७२ और इनकी मनुष्य संख्या २८० के करीव है। यहांके भाई धर्माचरणरत और उद्योगप्रिय हैं। इनके प्रयत्नसे यहां पर आठ वर्षसे "कोंकण प्रांतिक दिगम्वर जैन सभा" स्थापित है। सभाकी तरफसे एक ग्रन्थ "संग्रहालय" भी खोला है, जिसमें १७०० के करीव ग्रन्थ मोजूद हैं। करीव २८ वर्ष पहले यहां एक शिखरवन्द मन्दिर था। वर्त्तमानमें एक चैत्यालय नया वनवाया है। प्राचीन मन्दिरमे जो श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथकी प्रतिमा काले पाषाणकी करीव २॥ फीट ऊँची कायोत्सर्ग फणेन्द्र युक्त विराजमान है। और प्रतिमा अति मनोहर वीतरागता दर्शानेवाली है। इसके दर्शन करनेसे चित्त आनन्द-सागरमें डूव जाता है। यह प्रतिमा कोई भाग्यवान श्रावकको नदीके किनारे गडी हुई मिली थी। एक और प्रतिमा श्रीआदिनाथ स्वामीकी खेतमें हल चलाते समय किसी किसानको मिली थी, किसानने पूजापाठ करनेकी शर्त्तपर दी है। और हर वर्षपर भाद्रपद वदी १४ के दिन तोरणके लिये "इक्षुदण्ड" भेज देते हैं। कुछ दिन पीछे कासार और पंचम जातिमें झगडा होनेके कारण कासार जातिने अलग नया चैत्यालय अपना वनवा लिया है।

खिद्रापुर।

यह ग्राम कोल्हापुर रियासतमें 'कृष्णा नदी' के किनारेपर 'शेडवाळ' (M. S. M. रेलवे स्टेशनसे करीव ४ मील है। यहां पर दिगम्वरियोंके ४० घरोंकी करीव १३०

मनुष्य संख्या है । प्राचीन पत्थरका बना हुआ एक चैत्यालय है, चैत्यालयकी भीतोंपर यक्ष यक्षिणी आदिकोंके चित्र सुन्दर खुदे हुए हैं । इस मन्दिरमें श्रीऋषभनाथस्वामीकी बृहदाकार विशाल प्रतिमा सर्वांगपूर्ण शिरपुरके अन्तरीक्ष पार्श्वनाथकी प्रतिमा समान पद्मासन विराजमान है । यहांपर 'कोपेश्वर महादेव' का मन्दिर अति प्राचीन पत्थर का बना हुआ प्रसिद्ध है । इसपर जैनियोंके शासन देवी देवताओंके मूर्तियोंकी कारीगरी का काम देखने योग्य है । प्राचीन कालमें यह मन्दिर जैनियोंकाही होगा ऐसा इसकी मूर्तियोंसे व दीवालमें स्थित हुई क्षेत्रपालकी मूर्तिसे मालूम होता है । इस मूर्तिको ब्राह्मण लोग 'ब्रह्मदेव' कहते हैं । यह मन्दिर जैनियोंकी प्राचीनताकी साक्षी दे रहा है ।

गजपन्था ।

(सिद्धक्षेत्र)

संते जे बलिभद्दा जदुवणरिंदाण अट्टकोडी ओ ।
गजपंथे गिरि सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १ ॥

बम्बई प्रान्तमें 'नासिक' (G. I. P. Ry) स्टेशनसे करीब ९ मील और नासिक शहरसे ४ मील उत्तरकी ओर 'मसरूल' नामक एक ग्रामके निकट अनुमान एक मील-पर 'गजपंथ' पर्वत है । इसकी ऊंचाई करीब ४०० फुट है । पहाड़के शिखरपर दो दिगम्बर जैनमन्दिर हैं जो पर्वतके स्वाभाविक पाषाणको काटकर बनाये गये हैं । मन्दिरोंमें अनेक मूर्तियां हैं, जो भीतमें उकीरकर बनाई गई हैं । मूर्तियोंके अतिरिक्त दो स्थानोंमें दो चरणपादुका हैं, जिनके भव्यजन बड़ी भक्तिसे दर्शन करते हैं । दूसरे मन्दि-रकी बाई ओर एक जलका कुंड है इसमें निरन्तर (हमेशा) जल भरा रहता है । यात्री लोग पूजनके द्रव्यका प्रक्षालन इसीके जलसे करते हैं ।

पर्वतकी तलेटीमें भी एक वापिका है । इसका जल बहुत अच्छा रहता है । वन्दनाको जानेवाले प्रायः इसी वापिकासे पूजन द्रव्य धोया करते हैं । इस वापिकाके निकट भट्टा-रक 'क्षेमेंद्रकीर्तिजी' की एक 'समाधि' बनी हुई है । इसमें भट्टारकजीके चरणोंकी स्थापना है । इस समाधिके पाससे ही पर्वतपर चढ़नेका मार्ग है । और थोड़ी दूर चढ़कर ही सीढ़ियोंका प्रारम्भ है । सीढ़ियों की संख्या ३२९ है । इन सीढ़ियोंपर सफेद कलई की गई है, इससे बहुत दूरसे दिखाई देती हैं । मन्दिर और कोटपर भी कलई की गई है । इससे सीढ़ियों सहित वह दृश्य ऐसा मनोहर जान पड़ता है, मानों यह दूधका सरो-वर पर्वतके शिखरपर भरा हुआ है और सीढ़िया ऐसी जान पड़ती हैं कि दूधकी धारा

वहा रही हो। भगवद्दर्शनके लिये आकुल हुए धर्मात्माओंके हृदयमें इस धारासे एक अपूर्व आनंद होता है।

यह जैनियोंका परमपूज्य सिद्धक्षेत्र है। निर्वाणकांडकी ऊपर लिखी गाथाके अनुसार पूर्वकालमें इस स्थानसे वलभद्रादि ८ कोटी मुनियोंने मोक्ष प्राप्त किया है।

इस क्षेत्रमें प्रतिवर्ष माघ सुदी १३ से तीन दिनतक मेला लगता है। और आसपासके वहुतसे यात्री बन्दना करनेके लिये आते हैं।

इस पर्वतके आस पास अनेक छोटे २ ग्राम हैं, परन्तु उन सवोंसे निकट 'मसरूल' है, यहां शोलापुरके प्रसिद्ध शेठ 'रावजी' के पिता शेठ 'नानचन्द फतेहरचंदजी' नें 'नागौर' की गद्दीके स्वामी स्व० क्षेमेन्द्रकीर्ति भट्टारककी प्रेरणासे एक सुंदर मन्दिर सं० १९४२ में वनवाया और १९४३ में प्रतिष्ठा कराई थी। इस मन्दिरके चारों ओर एक कोट है, जिसके भीतर दो धर्मशालाएँ, एक कूप और वहुतसे झाड़ हैं। धर्मशालाओंमें ३०० आदमी आरामसे ठहर सकते हैं।

इस मन्दिरका और तीर्थक्षेत्र का प्रवन्ध शोलापुरके शेठ 'रावजी' नानचंदजीके तरफसे वर्त्तमानमें पेन्शर 'वावूराव गुरनाथ बुवने' जैन शोलापुर निवासी करते हैं।

इस समय उपर्युक्त ७ प्रतिमाओंके सिवाय ४ प्रतिमाएँ शिरपुरके अंतरीक्ष पार्श्वनाथकी प्रतिमाके समान अर्धपद्मासन करीव ३ हाथ ऊंची हैं, और ७ कायोत्सर्गस्थ दिगम्बर प्रतिमाँएं करीव ३॥ हाथ ऊंची और भी हैं, जिनको वहुत अनावस्थासे मन्दिरके पीछे एक प्राचीन पत्थरके वने हुए जीर्ण मन्दिरमें अव्यवस्थितरूपसे रख दी हैं।

जीर्णोद्धार करते समयमें मन्दिरका शिखर और अंदरका कुछ भाग पुराना ही रक्खा है। यहांपर एक खण्डित शिलालेख भी पायाजाता है। जिसका सारांश यह है:—

"संवत १४४१ में 'हंसराज' माता गोदीवाईनें 'माणिक' स्वामीके दर्शन करके अपना जन्म सफल किया है"।

कोल्हापुर।

यह प्राचीन नगर कोल्हापुर रियासतकी राजधानी 'पंचगंगा' नदीके किनारे वसा हुआ है। पूर्व समयमें यह स्थान जैनियोंका था ऐसा यहांपर जो 'शिलालेख' पर्वतमें खोदे हुए 'गुफामन्दिर' और प्राचीन राजाओंके 'सिक्के' पास हुए हैं, उनसे मालूम

होता है। ईसाकी पहली सदीमें 'अंध्रभृत्य' आदि राजाओंके अधिकारमें यह स्थान था, पीछे ५ वीं सताब्दि समाप्त होनेके समय यह 'कदंब' राजाओंके हाथमें गया, अनुमान ५५० ई० में 'चालुक्य खानदान' के राजाओंने 'कदम्ब' राजाको हराया, और यह प्रान्त अपने आधीन कर ली। अनन्तर ९९३ ई० तक 'राष्ट्रकूट' वंशके राजाओंका अमल (अधिकार) शुरू हुआ, अनन्तर चालुक्य राजाओंने राष्ट्रकूटोंसे पुनः छीन लिया तबसे यह (१०५० ई० से ११२० ई०तक) महामंडलेश्वर या मांडलिक 'शिलाहार' राजाओंके आधीन था। फिर १३ वीं सदी तक शिलाहार राजा बलवान् हो गये। ये जैनी थे। इनमें 'सिंह, भोज, बल्लाळ, गंडुरादित्य, विजयादित्य और दूसरा भोज' आदि राजा बड़े २ पराक्रमी और दानशूर होगये हैं। भोज राजा जिसके आधीन सातारके उत्तरमें 'महादेव' पर्वतसे कोल्हापुरके दक्षिण तक 'हिरण्यकेशी' नामक नदी तक उसके राज्यका विस्तार था, बड़ा दानवीर और शूरवीर था। इसकी दानवीरताके शिलालेख प्राचीन जैन मन्दिर आदि ही मालूम होते हैं। द्वतीय भोज—सिक्केभी यहांपर मिले हैं जिससे इनके कालका निर्णय हो सक्ता है। इस राजाने कोल्हापुर प्रान्तमें किले बनवाये थे, जिसमें 'बावड़ा, भूधरगद, विशाळगढ़, पन्हाळगढ़, पावनगढ़' आदि प्रसिद्ध हैं। शिलाहारों की शासन देवी पद्मावतीका मन्दिर भी इस समय 'महालक्ष्मी' नामसे कोल्हापुरमें प्रसिद्ध है।

वर्त्तमानमें कोल्हापुरमें दिगम्बरियोंके घर २०१ हैं जिनमें मनुष्य संख्या १०४६ है। शिखरबन्द मन्दिर ४ और ३ चैत्यालय हैं। इनमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीके प्राचीन मन्दिरपर दो शिलालेख शिलाहार खानदानके राजाओंके पाये जाते हैं।

यात्रियोंको ठहरनेके लिये दो धर्मशालाएँ मन्दिरोंके पासही हैं। शिक्षणके लिये जैन 'बोर्डिंगहौस, श्राविकाश्रम' आदि इस समय जैनसंस्थाएँ मौजूद हैं। इनके सिवाय 'पांजरापोळ' खोली है, जिसमें निराश्रित पशु पक्षी आदिकी रक्षा की जाती है। और यहांपर राजाराम हाईस्कूल, सरकारी मकान, बड़े २ प्राचीन स्तूप और राजमहल देखने योग्य हैं।

कोल्हापुरका सदर्न मराठा रेलवेमें स्टेशन है, स्टेशनपर हर वक्त घोड़ा गाडी आदि सवारी किरायेपर मिलती हैं।

कोल्हापूरमें

पार्श्वनाथ स्वामीके चैत्यालयके शिलालेखकी नकल।

श्रीमतपरम गंभीर द्वादामोघ लांछनम्॥ जीयात्रैलोक्य नाथस्य शासनं जिनशासनम्॥ ॥ १॥ स्वस्ति समदिगत पंचमहाशब्द महामंडलेश्वरम्॥ तगर पुरवराधीश्वरम्॥

श्रीशिलाहार नरेंद्रजीमूतवाहनान्वय प्रसूतम् । सुवर्णगरुडध्वजम् । मरंव्हक्क सप्पलग्यन शिगम् । रिपुमंडळीकभैरवम् । विद्विष्ट गजकंठीवरम् । इडुवरादित्यम् । रूपनारायणम् । कलियुग विक्रमादित्यम् । शनीवार सिद्धीगिरी मग्गलम् धनम् । श्रीमहालक्ष्मीदेवी ळंलीदवरप्रसादादि समस्तराजावली विराजितस्य ॥ श्रीमन्महामंडलेश्वरम् । तंडुरादित्य-देवरूवलवादन्यत् नळ् । विदिनल सुखसंकथा विनोददिम् । राज्यं गयुतिमिरे । तत् पादपद्मोपजीवी समदिगत पंचमहाशब्द महासामंतम् । विजयलक्ष्मीकांतम् । रिपुसा-मंत श्रीमंतिनी श्रीमंतनांगम् । वीरवारांगणा प्रियभुजंगम् वैरीसामंत मेधरिपुदिन समी-रण नागल देवीयगळा धारणम् । विद्विष्ट सामंत निळेकाळम् । सामंत गडगोपान-ळम् दायादसामेत तारासुर वीरकुमारंसामंत केह्वरं । त्वंडसामंत पुंडरीक दण्ड प्रचण्ड मदवेदण्डम् । तण्डरादित्यदेवदक्षिणभुजपट्टम् ॥ याचकजनमनो खिलहित चिंतामणी । सामंत शिरोमणी । जिनचरण सरतीरुह मधुकरम् ॥ समत्कव रत्नाकरम् आहारा-भय भैषिज्य शास्त्रदान विनोदम् ॥ पद्मावतीदेवी लब्दवरप्रसादम् ॥ नामादिसमस्त प्रसाद•सहितं श्रीमन् महासामंतम् । निंबदेव रसरुपक वडग्वंडवलीय संतियमुधेडेय रमा-डिसीदा । वसदीयदापार्श्वनाथदेवरष्टयिदार्चन । मावसदीय जीर्णो धारकम् यलिरपा ऋपिराहारदानकम् ॥ स्वस्तिसमस्त भवनविख्याता । पंचाशताधिकशासन लद्रानिक । गुणगणालंकृत । सत्य शौचा चारुचारुचारित्र नयविनय विह्नवीरवळम् । जिनधर्म प्रतिपालक विशुद्ध गुरुध्वजविराजमानाानुन साहसतुगं । कीर्त्यांगना लिंगित निजभुजो पार्जित विजयलक्ष्मी निवासवक्षस्थलरुम् । भुवनपराक्राजित् । वासुदेव खंडाळी मुळ चंद्रवंशोद्भवरुम्—भगवति गद्भवरप्रसादरुम् ॥ मरुवक मालिगळुम् ॥ परस्त्री परधनवर्जि-तरुम् । चतुः शष्टिकलगळु प्रवीणरप्युदरिम् ॥ ब्रह्मनन्नरुम् । चक्रमुळुदरिम् ॥ नारा-यणनन्नरुम् । दृष्टीयोळ नोडीक्कल्वउदरिम् ॥ परशुरामनन्नरुम । तुळिदक्कलव उदरिम् । मदांध मंड सिधुरदन्नुरुम् । गिरिदुर्गमम् मरेव्होक्करम् । त्यगेट्ठ कोरव दयाळ सिंहदन्न-रुम् । पाताळसुंमपोक्करम्० । कूल्वंडेयोळ वासुगीयन्नरुम् । आकाशदोळिर्दरम् । कूल्वे-डेयोळ गरुत्मनुन्नरुम् । पेपिनलि पृथ्वीयन्नरुम् । विणपीनलि कुल गिरियन्नरुम् । गुणी नल्लि हालसमुद्रदन्नरुम् । उद्योग दळ्ळ रामनन्नरुम् । पराक्रमदोळ पार्थनन्नरुम । शौचदोळ, गंगेयनन्नरुम् । साहसदोळु भीमनन्नरुम् धर्मदोळु धर्म पुत्रनन्नरुम् । मानदोळु सहदेवनुन्नरुम् । भोगदोळु इंद्रनन्नरुम् । त्यागदोळु कर्णनन्नरुम् । तेज दळु आदित्यनन्नरुम् । अहिछत्र मिनिसुमप्पवाळ पुर परमेश्वर मोप्पु यलवस्वाश्वासगिळुम । गवरयरुम् । गात्रियरुम् । सिद्धियरुम् । सिद्धगुरुरुम् । भोमंडरुम् । गामण्डस्वामीग-ळुम् । चिररुम् । वरवणिगरुम् । कोल्हापूरदमिल्वाण शट्टीयरुम । गोविद शट्टीयुम् । स्वोमराणमथनुम् । मिरंजयचिज्जिशट्टियम् । वोवशट्टियम् गण्डरादित्य देवराज श्रेष्ठी

दत्त पै शंट्टियरुम् ॥ आमण्डलेश्वरनु बीडिन बोमशट्टियुम् । कण्डिपट्टणदादित्य गृहते ग्वरविशट्टियुम् । बळेय बट्टनदशान्ति शंट्टियुतम् ।

अय्यदोल पैनूरवरं सिंगम् । हाय शंट्टियुम् कवडगोंडद प्रमुख रप्प पैय्यरप्पणादि या दिसमस्त देशम् । न्यरदु शंक वर्षदसा सिर दैवत्यंटनेय राक्षस संवत्सर कार्निबहोल पंचमी सोमवार–दन्द, श्रीमूल संघ देशीयगण पुस्तक गच्छदकोल्हापूरद श्रीरूपनारायणना बसादियार्चारप्पा । श्रीयुत कितींत्रैविद्य देवरकालं खचिंदारापुर्वमागि कोट्टा आयमेत्यदोडे आडिके हेटिंगे ऐवतु, जवलिगे. इप्पतु, हसक रोट्टु, यले हेरिंगे ३॥ तले हेरिंगे. ऐवतु हसकक इप्पतु रोटु । लुप्पायेणे यवेड कुडके, स्वरिंगे. अरेवाना । संगदिगे वम्माणम् ॥ मासिगद सर्क मक्क सालिगम्. वंदुहणं ॥ हतिमववेंगै वरुम् । मडिय कडुजेय मलवेग यरडुबिजिगे जवलकें फलुं पलु ॥ अर्क रोकलालि । अरुलिंगलिमें मणिती स्वर्गं मरदियं विग्ददकुम । वर्षके मंब बंदुकुम् । अल्ला अराशित्य सुंटिब्यवलि, बजे भद्रमुस्ते यीवे मोदलागि । तूगी मारुवा भलिगल, हेरिंगे ऐवरुम्. जवलिके. इप्पलम्. हसर कोप्पलम् जीगें मेणसुसासवे यल, हेरिंगे वम्माणम् । जवलके आटमानम् । हसगक स्वरिंगे । उपु मोदलादा हदणैद, धान्याधान्यगलुम् । भाडिगे. कोलगा, वंद, हरिंगे मानायरड, तेली वरेगी मानम् । बाड, काई यज्यऊ भंडिगेहतु तेली वरीगे नाल्कु भंडिगे दाणिगे वारु । जवेरोद, हुडे यरडकम् दंडगे बंद, शेवियरडु हुविनयमुलिगिगे माले वंद । कुंवारद हसगक मडके वंद, इति आयमन लिदातंग बाणराज्ञी कुरुक्षेत्र्या दिगकाले पंचमहापातकम् माड़िदा पाव फल मक्कुम् ॥

शासनशिलालेख दूसरा ।

श्रीमत्परम गंभीर स्याद्वाद मोघलांच्छनम् ॥ जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासनं जिन शासनम् ॥ १ ॥ स्वास्ति श्री जयश्चाभ्युदयश्च ॥

जयत्यमतु नानार्थ प्रतिपद सकल हत पुरुष देवस्य शासनं मोहशासनम् ।

स्वास्ति श्री शिलाहरक रोह क्षत्रियान्वदि त्रिसुक्ति परिधैः प्रताति जति गो नाम नरेंद्रः पूतः ।

तस्य सूनवो दान्तलो गोदलः कीतिराजश्चंद्रादित्यश्चेति चत्वारः ॥ तत्र गोदलपातिः सूरसिंह नाम्नाजातः ॥ तस्य तनुजाः गोदलोंगदेवः बल्लालदेवः भोजदेवः । गंडुरादित्यः प्रसारितिः पंचार तेपु धार्मिक धर्मजस्य वैरिकान्ता वेद्य व्यदीक्षागुरोः सकलचक्षुघंटा श्री मतो गंधरादित्यदेवस्यप्रियतनयः । स्वास्ति समधिगत पंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः तगर

पुरवराधीश्वरः । श्री शिलाहारनरेंद्रः निजाविलासा द्विजितदेवेंद्रः ।। जीमूतवाहनान्वय प्रसूतः ।। कार्ये विख्यातः सुवर्ण गरुड़ध्वजः । युवतिजनमकरध्वजः निर्दलित रिपुमण्डल कंदर्पः । मरुलोकसूर्यः अयवसंघः सकलगुण तुंगः रिपुरुद्दालितभैरवः ।।

विद्विष्टरजकणिकारिः । उड्डवरादित्यः । कलियुगविक्रमादित्यः । रुपनारायणः । नीति-विजितचारायणः । गिरिदुर्दधरलंधनः । विहितविरोधिवंचनः । शनिवारसिद्धिः । धर्मै-कवुद्धिः । महालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादः । सहजकरतूरिकामोदः । इत्येवमादिनामावलि-विराजमानः । श्रीमद्विजयादित्यदेवः । सम्यक स्थिरशिविरे सुखसंकथाविनोदेन । राज्य-रक्षणः । शकवर्षषट्पंचषडुत्तरसहस्र १६।५६ । प्रमिताष्टतिथिषु प्रवर्तमानदुदुंभिनामसं-वत्सरमाघमासपौर्णिमास्य सोमवारे सोमग्रहणपक्षनिमित्त माजिररेखोलानुगत (हाविन-हरेल) ग्रामे। सामन्त कामदेवस्य हडपवेलेन श्रीमूलसंघदेशियगण पुस्तकगच्छाधिपतिः। क्षुल्लकपुरश्रीरूपनारायण जनालयाचार्यस्य । श्रीमाघनंदिसिद्धान्तदेवस्य प्रियपात्रेण । सकलगुणरत्नपात्रेण । जिनपदपद्मभृंगेण । विप्रकुलसमुत्तुंगधुरीणेन । सत्केतनव्याजेन । वासुदेवेन । कारितायावसतिः । श्रीपार्श्वनाथदेवस्य । अष्टविधार्चनारतः । चैत्यालयखंड-स्फुटितजीर्णोद्धारार्थं । तत्रस्थयतिनामाहारदानार्थं । तत्रैव ग्रामे श्रीकोंडिमंडितनिवर्तन चतुर्थभारप्रमितं क्षेत्रं । द्वादशहस्त निर्मितं गृह निवेशन भूतन्माघनंदिसिद्धान्त देवशि-ष्याणां मानिक्यनं दिपंडितदेवानां पादौ प्रक्षालय धारापूर्वकं सद्विजयस्य सकलवाधा परिहारार्थमाचंद्रार्कतारं । शासन दत्तं दानमिति ।।

गिरनार (ऊर्जयन्ति) ।

णेमिसामि पज्जण्णो सम्बुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
वाहत्तर कोडीओ उज्जते सत्तसया सिद्धा ।।

गुजरात–प्रान्तकी जूनागढ़ रियासतमें यह सिद्धक्षेत्र है। वम्वईसे जहाज द्वारा जानेका मार्ग नीचे प्रकार है, रेल द्वारा भी जा सकते हैं, किन्तु जल–मार्ग जानेमें आराम और सुभीता है।

करनाकवन्दरसे वाम्वे स्टीम नेवीगेशनकंपनीका स्टीमर (जहाज) ग्यारह वजे दिनके रवाना होता है। वंवईसे विरावल तकका थर्डक्लासका टिकट तीन रुपया और सेकिन्डक्ला-सका चार रुपया है। थर्डक्लासमें भीड वहुत रहती है।

दूसरे दिन सवेरे ८।। वजेके लगभग विरावलके पास जहाज पहुँचता है । यहांसे किनारा १।। मीलके करीव है। पानी उथला होनेसे स्टीमर आगे नहीं जा सकता। किना-

ऐसे वहुतसी डोंगियां माल और मुसाफिरोंके उतारनेके लिये आती हैं । फी आदमी एक आना महसूल देना होता है वहां किनारेपर कस्टम डयूटीके कर्मचारी प्रत्येक आदमीका नाम, आनेका कारण, कहांसे आये, कहां जाओगे आदि लिखकर और फी आदमी चार आना टैक्स लेकर जानेकी आज्ञा देते हैं । विरावल छोटासा शहर है परन्तु सुन्दर और समृद्ध है यह जूनागढ़के नव्वावके अधिकारमें है । यहांसे तांगेमें वैठकर धर्मशालाको जाना चाहिये । धर्मशालामें एक ब्राह्मणकी भोजनशाला है । उन लोगोंके लिये जो ब्राह्मणके हाथका भोजन कर सकते हैं, उसमें सव प्रकारके भोजनका प्रवन्ध रहता है । धर्मशालासे रेलवे स्टेशन विलकुल समीप है । विरावलसे जूनागढ़का थर्डक्लासका किराया तेरह आना है । ११। वजे गाड़ी छूटती है ।

गाड़ी करीव २॥ वजे जूनागढ़ स्टेशन पर पहुँचती है जूनागढ़में वडी भारी दिगम्वरी धर्मशाला है । यहांसे तांगा करके गिरनारजीकी तलहटीमें जाना चाहिये, तांगेका किराया एक रुपया लगता है ।

तलहटीमें एक श्वेताम्वरी और दिगम्वरी इस तरह जैनियोंकी दो धर्मशालायें हैं । दिगम्वरी धर्मशालामें लगभग १००० आदमी ठहर सकते हैं । श्वेताम्वरी धर्मशाला उससे कुछ छोटी है । दिगम्वरी धर्मशालाके कंपाउण्डके भीतर दो और श्वेताम्वरी धर्मशालामें एक जिनमन्दिर है । दिगम्वरी धर्मशालामें इन्तजामके लिये एक पुजारी और एक चपरासी है । मुनीम रूपचन्दजी हैं, वे जूनागढ़की धर्मशालामें रहते हैं । जव यात्री जियादा आते हैं, तव अकसर तलहटीमें आ जाया करते हैं । इस तीर्थका प्रवन्ध करनेवाली एक कमेटी है जिसका प्रधान कार्यालय प्रतावगढ़ (मालवा) में है । इसको स्थापित हुए अभी थोड़े ही दिन हुए हैं—पहले सेठ वंडीलालजीके कुटुम्वी यहांका इन्तजाम करते थे । कमेटीमें सवसे अधिक मेम्वर प्रतावगढ़के हैं और उनको प्रधानता भी विशेष दी गई है । कोठीका नाम भी सेठ वंडीलालजी दि० जैन कोठी है । दिगंवरियोंकी यह कोठी, धर्मशाला आदि सव उक्त वंडीजीके ही प्रयत्नके फल हैं, इसमें कुछ संदेह नहीं, परन्तु उसके कुटुंवी उनके इन धर्मबुद्धिसे किये हुए कार्योंको क्या यह सिद्ध करना चाहते हैं कि उन्होंने अपने नामके लिये किये थे ? या उन्होंने इस कोठीको अपनी निजकी चीज वनानेके लिये स्थापित की थी ? उन्होंने तो अपने जीते जी कारखानेके साथ अपना नाम भी जुड़वाया था । वे समझते थे कि यह कोठी मेरी नहीं सारे दिगंवरियोंकी है । अफसोस कि प्रतावगढ़वाले कमेटी वनाकर भी इस ममत्वको नहीं भुला सकते हैं कि यह कोठी हमारी है । प्रवन्ध साधारणतया अच्छा होता है, परंतु धर्मशालामें सफाई

बिलकुल नहीं है। तीर्थक्षेत्र कमेटी सुधारके लिये बहुत दिनोंसे कोशिश कर रही है परंतु सफलता नहीं हुई।

धर्मशालासे कोई सौ कदमके फासलेपर पर्वतपर चढ़नेका द्वार है। यहां अँगरेजी और गुजरातीके दो शिलालेख लगे हुए हैं। उनसे मालूम होता है कि जूनागढ़के भूतपूर्व दीवान वेहचरदास विहारीलाल, उनके भाई, और डाक्टर त्रिभुवनदास मोतीचंद शाहके उद्योगसे 'जूनागढ़ लॉटरी' खोली गई और उसमें जो रुपया एकत्र हुआ, उसमेंसे १॥ लाख रुपयोंकी लागतसे काले पत्थरकी मजबूत सीढियां गिरनारजी पर्वतकी चारों टोंकों तक लगवाई गईं।

इस द्वारसे ही पर्वतपर चढ़नेकी सीढ़ियां शुरू होती हैं। गिरनारका एक नाम उर्जयन्तिगिरि भी है। कई ग्रंथकारोंने रैवतक नामसे भी इसका उल्लेख किया है। नेमिदूत काव्यके कर्त्ताने इसे रामगिरि बतलाया है। बहुत प्राचीनकालसे यह पर्वत अपनी पवित्रताको लिये प्रसिद्ध है। अशोकके शिलालेखोंसे कमसे कम २२०० वर्ष पहलेका तो ऐतिहासिक सुबूत ही मिलता है। यद्यपि हम इसे केवल जैनियोंका ही तीर्थ समझते हैं, परंतु दिगम्बरी श्वेताम्बरी जैनियोंके सिवाय यह शैव, वैष्णव, शाक्त आदि हिंदुओंका और मुसलमानोंका भी पूज्य स्थान है। प्रत्येक सम्प्रदायमें इस तीर्थके बडे बडे माहात्म्य प्रसिद्ध हैं। जैनी मानते हैं कि यहांसे बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान् और दूसरे करोडों मुनि मोक्षको प्राप्त हुए हैं और अनेक तीर्थंकरोंकी यहां समवसरण सभायें हुई हैं। श्वेताम्बर सम्प्रादायमें 'गिरनारमाहात्म्य' नामका अच्छा एक संस्कृत ग्रन्थ है। हिंदुओंके स्कन्दपुराणके प्रभासखंडमें भी गिरनारका बहुत ही बड़ा माहात्म्य वर्णन किया है। यहांके एक एक कुण्डमें स्नान करनेसे अथवा मंदिरोंके दर्शन करनेसे ही बड़े बड़े पाप क्षय हो जाते हैं और स्वर्गादि सुखोंकी प्राप्ति होती है।

गिरनार पर्वतकी ऊँचाई ३, ६६६ फीट है। अपनी ऊँचाईके कारण यह बहुत दूर दूरके स्थानोंसे दिखलाई देता है। जिस समय आकाश स्वच्छ होता है, उस समय शत्रुंजय या सिद्धाचल पर्वतपरसे भी इसके दर्शन होते हैं। इसके दाहिनी ओर जो पर्वत है उसकी ऊंचाई २.७७९ फीट है। वह मदारपीरका पर्वत कहलाता है। मुसलमान भाइयोंका वह बहुत ही पवित्र पर्वत है। वायीं ओरको भी एक ऊंचा पर्वत है। इन दोके सिवा दो पर्वत और भी हैं। इस तरह यह चार पर्वतों और चार नदियोंसे घिरकर विलक्षण शोभा धारण कर रहा है।

पर्वतपर चढ़नेका प्रत्येक परदेशी यात्रीको एक आनेका और देशीको आधा आनेका टिकट लेना पड़ता है। जूनागढ़ राज्यकी ओरसे यह कर बिठाया गया है। यहां डा-

लियां भी मिलती हैं । एक डोलीका किराया साढ़ेपांच रुपया देना पड़ता है । और भी यहांपर कई प्रकारके टैक्स लगाये गये हैं जिससे इस पर्वतसे जूनागढ़ राज्यको खासी आमदनी होती है ।

लगभग तीन हजारसे अधिक सीढ़िया चढ़नेपर इस पर्वतकी पहली टोंक मिलती है । यहांपर एक धर्मशाला दिगम्बरियोंकी और एक श्वेताम्बरियोंकी है ।

पहली टोंकपर ही जैनियोंके मुख्य मुख्य मन्दिर हैं । अन्य टोकोंपर या तो चरण हैं या छोटी छोटी देवलियां । अधिक मन्दिर श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं । उनकी संख्या २२ है । इनमेंसे कोई १८ मन्दिर एक बड़े भारी कोटके भीतर घिरे हुए हैं । ये मन्दिर कई समूहोंमें विभक्त हैं और उनके एक एक समूहको टोंक कहते हैं । मानसींग भोज-राजकी टोंक पहले आती है । इसकी मरम्मत उक्त नामके सेठजीने संवत् ११३२ में कराई थी । दूसरी टोंक नेमिनाथस्वामीकी है । इसमें कई मन्दिर हैं । एक शिलालेखसे जो चैत्रसुदी ७ सं० १११५ का लिखा हुआ है मालूम होता है कि यदुवंशके 'मंडलीक' नामके राजाने नेमिनाथका मन्दिर बनवाया था । यह मन्दिर बहुत विशाल है । सब मिलाकर २१८ प्रतिमायें इसमें स्थापित हैं । इसमें कई शिलालेख हैं । एक शिलालेखमें लिखा है कि संवत् ६०९ में रत्नशाह श्रावकने नेमिनाथके देवालयका उद्धार कराया । इससे मालूम होता है कि उक्त मंदिरके स्थानमें पहले और भी कोई प्राचीन मंदिर था । इसके सिवा १११३, ११३५, १२७८, १३३३, १३३५ और १३३९ के पांच छह लेख और भी हैं । तीसरी टोंक मेरकवंशीकी कहलाती है । इसकी कारीगरी दर्शनीय है । इसमें भी कई मंदिर शामिल हैं । एक मंदिर संवत् १८५९ का बना हुआ है । मंदिरा-का चौथा समूह सगराम सोनीकी टोंक कहलाता है । सगराम सोनी बादशाह अकबरके समयमें पाटणमें हो गये हैं । संवत् १८४३ के लगभग सेठ प्रेमाभाई हेमाभाईने इन मन्दिरोंकी मरम्मत कराई थी । इसके आगे 'कुमारपाल' की टोंक है । कुमारपाल गुजरातके एक प्रसिद्ध राजा हो गये हैं । जैनधर्मपर उनकी बड़ी श्रद्धा थी । उनके प्रयत्नसे उस समय जैनधर्मकी बड़ी भारी प्रभावना हुई थी । प्रसिद्ध श्वेताम्बराचार्य 'हेमचन्द्र' इन्हींके गुरु थे । उनके समयमें जैनसाहित्यने भी बहुत उन्नत की थी । कहते हैं कि उक्त महाराजने जैनग्रन्थोंकी नकल करानेके लिए सात सौ लेखक नौकर रख छोड़े थे । केवल हेमचन्द्रसूरिके ही बनाये हुए ग्रन्थोंकी उन्होंने इक्कीस इक्कीस नकल कराके जुदे जुदे भंडारोंमें स्थापित कराई थीं । महाराज कुमारपालने वि० संवत् १२०० से १२३१ तक राज्य किया है । यह 'अभिनन्दन' जिन का मंदिर उन्हींका बनवाया हुआ है । लगभग १०० वर्ष पहले इसका जीर्णोद्धार सेठ धरमसी हेमचन्दने करवाया।

था । इस मंदिरके वाहर भीमकुंडके पूर्वमें वहुतसी प्राचीन खंडित प्रतिमायें पडी हैं । इसके वाद 'वस्तुपाल तेजपाल' जीकी टोंक है । इसमें तीन मन्दिर हैं । इनका जीर्णोद्धार संवत् १९३२ में नरसी केशवजी नामके सेठका करवाया हुआ है । वस्तुपाल और तेजपाल भाई भाई थे । ये 'धोलका' के सुप्रसिद्ध राजा 'वीरधवल' के मंत्री थे । ये वड़े ही वुद्धिमान् और शूरवीर थे । इनकी सहायतासे वीरधवलके राज्यका वहुत विस्तार हुआ था । सारा सौराष्ट्र और गुजरात उसके अधिकारमें आ गया था । महाराष्ट्र देश तकके राजा उसके करद हो गये थे । वस्तुपाल और तेजपाल पोरवाड़ जैनी थे । उन्होंने धर्मके कार्योंमें जो द्रव्य व्यय किया था उसे इतिहासोंमें पढ़कर आश्चर्य होता है । १३०० नवीन जैनमंदिर, लगभग एक लाख जिन प्रतिमायें, ८४ तालाव, ४६४ वापिकायें, ९०० कुए, ४०० प्रपायें, (प्याऊ) ७०० धर्मशालायें, और ९८४ औषधशालायें उनकी वनवाई हुई कही जाती हैं । ज्ञानभंडारमें उन्होंने ३६ लाख रुपये खर्च किये थे और ३,२०२ मंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया था । राजनीतिके खयालसे दूसरे धर्मोंपर भी उनकी कृपादृष्टि रहती थी । पाठक सुनकर आश्चर्य करेंगे कि उन्होंने हजारों शिवमन्दिरों और सैकडों मसजिदोंके वनवानेमें भी अगणित रुपये खर्च किये थे । वस्तुपालकी मृत्यु संवत् १२९८ में और तेजपालकी १३०८ में हुई थी । इन मंदिरोमें पीले रंगका और सलीका वढ़िया पत्थर काममें लाया गया है । कहते हैं यह पत्थर वस्तुपालने भारतवर्षके वाहरसे मँगाया था । इन तीनों मंदिरोंके मूलनायक पार्श्वनाथ हैं । एक मन्दिरकी प्रतिमा वि० संवत् १३०६ की प्रतिष्ठित है । वह श्रीमाल वैश्य 'वाहड' (वाग्भट) की वनवाई हुई ह । दाहिनी ओरके मंदिरमें तीन प्रतिमायें पार्श्वनाथकी संवत १५५९ की और एक चन्द्रप्रभकी १४८५ की है । वाई ओरके मंदिरके पीछे वस्तुपाल तेजपालकी माताका मन्दिर है । उसमें जो पार्श्वनाथकी प्रतिमा है वह श्रीमालज्ञातीय 'वाहड' और महामात्य 'सलखणसिंह' की वनवाई हुई और देवसूरिके शिष्य 'श्रीजयानन्द' की प्रतिष्ठा करवाई हुई है । प्रतिष्ठाका समय वैशाखसुदी ३ संवत् १३०५ है । इसके वाद संप्रति राजाकी टोंक है । इसमें एक प्रतिमा संवत् १५०९ की और एक १५२३ की है । इसके पहलेका कोई लेख इसमें नहीं मिलता । जेम्स वर्जिस साहवने जिस समय इस मंदिरका निरीक्षण किया था, उस समय उन्होंने इसमें नेमिनाथकी एक काले रंगकी प्रतिमा १२६१ संवतकी प्रतिष्ठा कराई हुई देखी थी और संवत् १२१५ का एक लेख भी पढ़ा था । श्रीहेमचन्द्रसूरिके परिशिष्टपर्वसे मालूम होता है कि 'संप्रति' राजा सुप्रसिद्ध चक्रवर्ती राजा अशोकका पुत्र था । श्रेणिक–कुणिक–उदयन–नवनन्द–मौर्यवंशी चन्द्रगुप्त–विन्दुसार–अशोक–संप्रति, इस तरह महावीर भगवानके पीछेका राजपरम्परा है । सम्प्रति

महावीर भगवान्के निर्वाणके ३०० वर्ष पीछे सिंहासनपर बैठा था। इसने 'आर्य सुह-स्तिगिरिके उपदेशसे जैनधर्म ग्रहण किया था। इसके द्वारा जैनधर्मकी बहुत उन्नति हुई थी। कहते हैं कि इसने सवा लाख जैनमन्दिर बनवाये थे। उक्त मन्दिर इसी सम्प्रति राजाका कहलाता है; परन्तु वर्तमानमें इस बातका कोई चिन्ह नहीं मिलता है। इन सब मंदिरोंके सिवा और भी कई साधारण मंदिर हैं।

एक जगह कुछ गहराईमें राजुलकी गुफा है। उसके भीतर राजीमतीकी एक खड़ी मूर्ति सफेद पत्थरकी है।

दिगम्बरी मन्दिरोंमेंसे एक तो प्रतापगढ़के बंडीजीका संवत् १९१९ का बनवाया हुआ है और दूसरा लगभग इसी समयका शोलापुरवालोंका बनवाया हुआ है। पहले मन्दिरमें शान्तिनाथकी एक मूर्ति संवत् १६६९ की प्रतिष्ठा की हुई है और एक सुप्र-सिद्ध बिम्बप्रतिष्ठापक जीवराज पापड़ीवालकी संवत् १४७९ की है। जीवराज पापडी-वालकी प्रतिमायें भारतवर्षके प्रायः सब ही भागोंके जैनमन्दिरोंमें देखी जाती हैं। दूसरे मन्दिरमें भी एक नेमिनाथकी प्रतिमा जीवराज पापड़ीवालकी है।

दिगम्बरी मंदिरोंको छोड़कर आगे चलनेसे दाहिनी ओर चौमुखी जैनमंदिर है। इसकी प्रतिष्ठा वि० सं० १५११ में जिनहर्षसूरिके द्वारा हुई है। बहुत करके ये वे ही जिनहर्षसूरि हैं जिनके बनाये हुए विचारामृतसंग्रह और रत्नशेखरनरपतिकथा नामके ग्रंथ हैं। आगे कुछ ऊपर चढ़कर दाहिनी ओर रथनेमिका मंदिर है। रथनेमि अरिष्टनेमिके चार भाइयोंमेंसे एक थे। श्वेताम्बरसम्प्रदायके ग्रंथोंमें लिखा है कि जिस समय राजमती संसारभोगोंसे विरक्त होकर दीक्षा लेनेके लिये गिरनार पर्वतपर चढ़ी उस समय मार्गमें अति वृष्टि होनेसे वह अपनी सखियों सहित एक गुफामें ठहर गई और अपने भीगे हुए वस्त्र सुखाने लगी। उसी गुफामें रथनेमि तपस्या कर रहे थे राजमतीका शरीरसौन्दर्य देखकर वे कामान्ध हो गये। यह देखकर दृढ़शीला राजीमतीने उनकी बहुत भर्त्सना की और उन्हें संसारकी निःसारता दिखलाई। रथनेमि बहुत लज्जित हुए, प्रायश्चित लेकर फिर तप करने लगे और अन्तमें कर्म काटकर मोक्ष सुन्दरीके स्वामी हुए।

रथनेमिके मन्दिरसे अंबाजीकी टोंक पर जानेका रास्ता है। थोड़ी दूर चलकर चढ़ाव कुछ कठिन है, परन्तु सीढ़ियोंके कारण विशेष कष्ट नहीं होता। अम्बादेवी या अम्बिकाका मन्दिर कहते हैं कि संप्रति राजाका बनवाया हुआ है। इसकी बनावट भी सम्प्रतिके मन्दिरके ढँगकी है। इस समय इसे जैन (श्वेताम्बर) और हिन्दू दोनों ही पूजते हैं। जैन इसे अपने शासनकी अधिष्ठात्री देवी मानते हैं और हिन्दू

शक्ति दुर्गा या गिरिजा समझते हैं। परन्तु ऐसा मालूम होता है कि इसपर हिन्दुओंका अधिकार पीछे हुआ है पहले यह मन्दिर या तो बौद्धोंका होगा या जैनियोंका, कुछ लोगोंका खयाल है कि यह नेमिनाथ स्वामीका मन्दिर था।

अंबाजीकी टोंकसे आगे चलनेपर तीसरी टोंक आती है। वहां पहले नेमिनाथभगवानके चरण आते हैं। बाबू धनपतिसिंह प्रतापसिंह मुर्शिदाबादवालोंने संवत् १९२७ में उन्हें स्थापित कराये थे। आगे ठीक टोंकके ऊपर मत्स्येंद्रनाथ (मछंदरनाथ) के शिष्य बाबा गोरखनाथके चरण हैं। ये गोपीचंद नामक राजाके समयमें होगये हैं और शायद बौद्ध धर्मानुयायी थे।

इस टोंकसे लगभग ४००० फुट नीचे उतरकर चौथी टोंकपर जाना पड़ता है। इस टोंकपर चढ़नेके लिये सीढ़ियां नहीं हैं। चढ़नेमें बड़ीही कठिनाई पड़ती है। जरा ही पैर चूका कि काम तमाम समझिये। टोंकके ऊपर एक काले पाषाणपर नेमिनाथकी प्रतिमा तथा दूसरी शिलापर चरण हैं। संवत् १२४४ का एक लेख है। कई लोगोंका ख्याल है कि नेमिनाथ स्वामीका मोक्ष इसी टोंकपर से हुआ था और कई पांचवीं टोंकपर से बतलाते हैं। इस टोंकसे नीचे उतर कर वापिस आना पडता है और फिर पांचवीं टोंकपर सीढ़ियोंके मार्गसे चढ़ना पड़ता है। इस टोंकका चढ़ाव बहुत बडा है। यह शिखर सबसे ऊँचा है। चारों ओरका दृश्य देखनेसे जितना कि आनंद आता है उतनाही नीचेकी ओर दृष्टि डालनेसे भय मालूम होता है। टोंकपर एक मढ़ियाके नीचे नेमिनाथभगवानके चरण स्थापित हैं और उसमें संवत् १९९९ का लेख है एक ओर एक बडा भारी घंटा बँधा हुआ है। नेमिनाथके चरणोंको वैष्णव लोग गुरुदत्तात्रयके चरण कहके पूजते हैं और मुसलमान मदारशा पीरकी तकिया कहते हैं इस स्थानसे नेमिनाथस्वामीके प्रथम गणधर वरदत्त मुनिका निर्वाण हुआ था। शायद इसी नामको वैष्णवोंने गुरुदत्त बना लिया है। इसी एक स्थानमें अनेक धर्मोंकी पूज्यता बड़ी ही कुतूहलजनक है।

पांचवीं टोंकसे पांच सात सीढ़ियाँ नीचे उतरनेपर संवत् ११०८ का एक लेख मिलता है। इस टोंकसे आगे रेणुका शिखर नामकी छट्टी टोंक और कालिका नामकी सातवीं टोंक है। इन टोंकोंपर कोई जैनी यात्री नहीं जाता–जाना भी बहुत ही भयंकर है। कालिका टोंकपर कालिकाकी मूर्ति और त्रिशूल हैं।

पाँचवीं टोंकसे उतरकर, आनेके रास्तेमें ही लौटना पड़ता है और दूसरी टोंकमें जो गोमुखी है वहां आना पड़ता है। यहांसे दाहिनी ओरको एक सपाट रास्ता गया है।

इस रास्तेसे सहसावन जाना पड़ता है। सहसावन या सेसावन सहस्राम्रवनका अपभ्रंश है। कहते हैं यहांपर नेमिनाथस्वामीने कुछ समयतक तपस्या की थी। बहुत लोग यहां नहीं आकर सीधे लौट जाते हैं। यहांपर कई गुफायें, और कई कुन्ड हैं। यहां भिक्षुक साधु बहुत रहते हैं। रास्तेमें भैरव-झंपा नामक एक स्थान है। पुराने जमानेमें इस स्थानपर चढ़कर लोग परभवमें सुख पानेकी अभिलाषासे झंपापात करके जीव दिया करते थे। यहां एक मढ़ियामें नेमिनाथस्वामीके चरण हैं और एक श्वेताम्बर धर्मशाला है। यहांसे नीचे तलहटी जानेका जुदा रास्ता है यह अभी सुधारा जा रहा है।

इस पर्वतके विषयमें एक बार दिगम्बरी और श्वेताम्बरी संप्रदायके आचार्योंमें वाद विवाद उपस्थित हुआ था, एक बार कुंदकुंद स्वामी गिरनारजीको अपने संघसहित गये थे। वहां श्वे० स० से विवाद होनेपर इन्होंने पत्थरकी मूर्तिसे कहलवा दिया कि सच्चा पंथ दिगम्बर है। पट्टावलीमें लिखा है-

पद्मनंदिगुरुर्जातो बलात्कारगणाग्रणी।
पाषाणघटिता येन वादिता श्रीसरस्वती॥
उर्ज्जयन्तिगिरौ तेन गच्छः सारस्वतो भवेत्।
अतस्तस्मै मुनीद्राय नमः श्रीपद्मनन्दिने॥

तलहटीसे जो सड़क जूनागढ़को गई है, उसपर तलहटीसे लगभग दो मील चलकर ठीक सड़कपर बाईं ओर एक विशाल अर्धवर्तुलाकार शिलापर ये लेख हैं। शिला कई स्थानोंसे तडक गई है और इससे लेखके कोई कोई अंश उड़ गये हैं। हजारों वर्ष मैदानमें पड़े रहनेके बाद अब इन लेखोंकी कदर हुई है और इन्हें प्राचीनकालके बहुमूल्य स्मारक समझकर जूनागढ़ सरकारने इनकी रक्षाके लिये एक पक्का मकान बनवा दिया है। सब मिलाकर १९ लेख हैं जिनमें १३ प्रसिद्ध बौद्ध सम्राट अशोकके हैं और दो समुद्रगुप्त तथा रुद्रदामा नामक राजाओंके। ये सब लेख पालीभाषा और पाली लिपिमें हैं। इन लेखोंके पढ़नेके लिये पश्चिमी विद्वानोंने बड़े बड़े परिश्रम किये हैं। जिस कठिनाई और अटूट प्रयत्नसे ये लेख पढ़े गये हैं उसका इतिहास बड़ा ही कुतूहलजनक है। यदि ये लेख न पढ़े जाते तो अशोक जैसे चक्रवर्ती राजाका नाम ही भारतके इतिहाससे उड़ जाता। कुछ समय पहले ये लेख गुप्त धन बतलानेके कोई गूढ चिह्न या विधाताके आज्ञापत्र समझे जाते थे। बहुत लोग तो अब भी ऐसा ही समझते हैं।

सोंडा।

यह नगर जिला कारवार ताछुक सिरसीसे उत्तर दिशामें १० मीलकी दूरीपर है। प्राचीनकालमें वह किसी एक राजाकी राजधानी थी। इस समय यहांकी मनुष्य संख्या करीव १००० है। यहांपर देखने योग्य स्थान पुराना किला, शैव वैष्णव और दि० जैनियोंके मठ और मन्दिर हैं। अलावा इनके यहांपर १ तोप भी देखने योग्य है, जोकि करीव १८ फीट लम्बी और ६॥ फीट चौड़ी है। इन तीन धार्मिक संस्थाओंमें से दि० जैनियोंका मठ छोटा है और ८ वीं सदीका वना हुआ है। सवसे प्राचीन जैनियोका १ घिरा हुआ आदिश्वरका मन्दिर है और वहां ही पर १ शिलालेख भी खुदा हुआ है, जोकि राजा रूमोडी सदाशिवरायसे शाके ७२२ में वनाया गया है। दूसरा शिलालेख शाके ७२७ का है, जिसमें जैन राजा चामुन्डराय जोकि उस समयका सार्व भौम राजा था, उन्होंने आपके पूर्वज सदाशिव और वल्लाके अनुसार इनाम दे दिया है।

भाटकला या मुसागड़ी

होनावरकी दक्षिन दिशामें यह ग्राम है। यहांकी मनुष्य संख्या करीव ६००० है यहांपर पोस्ट ऑफिस, पोलिश स्टेशन और कानड़ी–उर्दू स्कूल है, यहां पर १३ मन्दिर जैनियोंके तथा वैष्णवोके ई० सन् १९ या १६ वी सदीके वनाये हुए हैं, परन्तु इस समय वे सव जीर्ण होगये हैं, उनमे प्राचीन कारीगरीका काम- वहुतही खूवसूरत है। इन मन्दिरोंमें सवसे वडा और सुन्दर मन्दिर "जटाण्णा वाइफन चन्द्रनाथेश्वर" नामक दि० जैनियोका है। यह मन्दिर खुली जगहमें है। इस मान्दिरके तीन भाग हैं, यानी १ भोजन गृह १ सभामंडप और मुख्य मन्दिर। इसकी लम्वाई करीव ११२ फीट और चौड़ाई सभामंडप और भोग मंडपकी करीव ४० फीट और खास मन्दिरकी ५० फीट है। मुख्य मन्दिर २ मंजिला है जोकि तीन कमरोमें तकसीम किया गया है, जिनमें श्रीअरहंत मल्लीनाथ, मुनि सुव्रतनाथ, नमिनाथ, नेमनाथ और पार्श्वनाथकी मूर्तियां विराजमान हैं। परन्तु इस समय वे खिन्न २ स्थितिमें पाई जाती हैं। भोजनगृहकी भीतोंमे मनोहर खिड़कियां वनी हुई हैं। सभामंडप दो मंजिला है और उसके दो भाग हैं। उसमे श्रीऋषभनाथ, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनन्दननाथ और चन्द्रनाथस्वामीकी प्रतिमाएं विराजमान हैं और वाहर द्वारपर द्वारपालकी मूर्तियां हैं। सामने १ वड़ा ध्वजा स्तंभ है जोकि करीव १४ फीट सर्कलमें और २१ फीट ऊंचाईमें एक पटकोन पत्थरका वनाहुआ है। मन्दिरके पीछे चौदह फीट ऊंचा १ छोटासा और १ यक्ष व्रह्मानामक स्थंभ है

इस मन्दिरको भाटकलाके राजा जटाप्पा नाइकने बनाया था और उसकी पूजन प्रक्षाल आदि प्रबन्धके लिये कुछ जमीन भी इनाम दे दी थी। कहते हैं कि मैसूरके राजा टेपू सुलताननने यह इनाम खालसे करली उसी समयसे सरकारसे २) रुपया सालाना मिलता है। यहांपर चार शिलालेख हैं १ पूर्व दिशामें ७० लाइनका और उसके पास १७९ लाइनका शिलालेख है और उसकी पीठपर ७३ लाइनका शके १४७९ नल नाम संवतसरका शिलालेख और सभामंडपकी अग्निकोनमें तीसरा शिलालेख है। इन सब शिलालेखोंपर जैनियोंके चिह्न पाये जाते हैं। दूसरा श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मन्दिर है। जोकि १८ फीट ऊंचा और १। फीट चौड़ा है यह मन्दिरका द्वार मंडपके शिलालेख से संवत् १५४३ ई० में बनवाया हुआ मालूम होता है। इसके सामने ध्वजास्थंभपर की कोठीमें चतुरमुख प्रतिमा है, इसमें चार शिलालेख हैं परन्तु अक्षर मिट जानेके कारण उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

इलोराके गुफा मन्दिर (अतिशयक्षेत्र)।

चालीसगांवके स्टेशनसे २६ मील (भूसावलसे ९.८ मील) दक्षिण-पश्चिम और मनमार जंक्शनसे १६ मील पूर्व बम्बई हातेमें नांदगांवका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनपर तांगेकी सवारी मिलती है। नांदगांवसे इलोरा ४५ मील है परन्तु वहांसे गाड़ीकी सड़क नहीं है।

इलोरा ग्राम गुफामंदिरोंके लिये बहुत ही प्रसिद्ध है। ऐसा मनोहर और आश्चर्यजनक शिल्पविद्याका स्मारक चिह्न जो पहाड़से पत्थर काटकर बनाये गये हैं भारतवर्षमें सहसा दीख नहीं पड़ता। वहां सबसे प्रथम बौद्धोंने उनके पीछे हिन्दुओंने और हिन्दुओंके पश्चात् जैनियोंने गुफामंदिर बनवाये; जिनमें बौद्धोंके अधिक हैं। सम्पूर्ण गुफाओंमें प्रधान व सबसे अधिक उत्तम कैलास नामक गुफा मंदिर है।

कारवार।

मोरमूगांवके बन्दरगाहसे ४८ मील दक्षिण पूर्व कारवारका बन्दगराह है। बम्बई अहातेके पश्चिमी घाटपर उत्तरी किनारा नामक जिलेका सदर स्थान और उस जिलेमें प्रधान कसबा कारवार है। एक सप्ताह पर बंबईके आगबोट मोरमूगांव तथा कारवार होकर दक्षिण जाते हैं। कारवारके बन्दरगाहके किनारेसे ९०० गज दूर समुद्रमें लंगरकी जगह है।

सन् १९१३ की मनुष्य गणनाके समय कारवार कस्बेकी आबादी करीब १४५०० के थी, जिसमें दि० जैनियोंके घर ३ व मनुष्य संख्या १५ के लगभग आई थी। यहांके जैनी मामूली स्थितिमें हैं कोई प्रसिद्ध आदमी नहीं है।

इस जिलेमें ५ हजारसे अधिक और १० हजारसे कम आबादीवाले ६ छोटे कसबे और गोकर्ण प्रसिद्ध हिन्दुओंका प्रसिद्ध स्थान है।

जहांपर माघ शिवरात्रिपर बड़ा भारी मैला भी भरता है। गोकर्ण और बनवासीमें उत्तम पुराने मंदिर, गैरसप्पामें प्रसिद्ध प्राचीन दि० जैनमंदिर और मीरजान तथा सदाशिवगढ़में पुराने किले देखने योग्य हैं। गैरसप्पाके चारों ओर बहुतसे जीर्णावस्थामें दि० जैन मन्दिर खण्डित प्रतिमाओं सहित दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा मालूम होता है कि पहिले वीजानगरके जैन राजाओंके समयमें यह प्रदेश जैनियोंके ही आधीन था।

इतिहास—पुराना कारवार कसबा एक समय कारवार कसबेसे २ मील पूर्व काली नदीके किनारेपर बहुत प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। वहां सन् १६३८ में अंग्रेजोंने १ कोठी कायम की। सन् १६६० में कारवार कसबा बीजापुर राज्यके अधिकारमें था, उस समय वहां ५० हजार जुलाहे रहते थे। सन् १६६५ में शिवाजीने अंग्रेजोंसे ११२० रुपया खिराज लिया। सन् १६०४ में शिवाजीने कारवार कस्बेको लूटा और जलादिया, किन्तु अंग्रेजोंकी कुछ हानि नहीं की। सन् १६७६ में वहांके देशी प्रधानोंने अंग्रेजी कोठीपर जुलम किया। सन् १६७९ में अंग्रेजोंने कोठीका काम उठालिया; किन्तु सन् १६८२ में उन्होंने फिर काम आरंभ किया। सन् १६८४ में प्रायः सब अंग्रेज कारवार कसबेसे निकाल दियेगये। सन् १६९७ में महाराष्ट्रोंने कारवारको उजाड़ दिया। सन् १७१५ में वहांका पुराना किला तोड़ दिया गया। एक देशी प्रधान ने सदाशिवगढ़में किला बनवाया। सन् १७२० मे अंग्रेजोंको फिर वहांसे अपना कारवार उठालेना पडा। सन् १७५२ में फिर अंगरेजी कोठी कायम हुई। सन् १८०१ में पुराना कारवार कसबा हीन दशामें पड़चुका था। उत्तरी किनारा जिलेका इतिहास मदरास हातेके दक्षिणी किनारा जिलेके इतिहासमें शामिल है। पहिले उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेमें था; किन्तु १८६२ में बंबई हातेमें कर दिया गया। उसके पीछेका वर्तमान कारवार कसबा है, जो पहिले मछुहोका छोटा गांव था।

यहां देखने योग्य ९ बास्तियां हैं। कारवारमें जिलेकी प्रधान कचहरियां, अस्पताल, टेलिग्राफ ऑफिस (तारघर) स्कूल और सरकारी मकानात हैं। किनारेके आस पास कई टापू हैं, जिनमेंसे सबसे बड़े टापू पर एक लाईट हाउस (रोशनी घर) बना है, जो समुद्रके जलसे २१० फीट ऊंचा है और समुद्रमें २५ मील दूरसे दीख पड़ता है।

वाई।

सतारा रोडके रेलवे स्टेशनसे ९ मील उत्तर और पूनाके रेलवे स्टेशनसे ६९ मील दक्षिण वाथरका रेलवे स्टेशन है। वाथरसे पश्चिम ओर ४० मीलतक सड़क महाबलेश्वरको

गई है; उसी सड़कपर वाथरसे १८ मील पश्चिम और सतारा कस्बेसे २० मील उत्तर कुछ पश्चिम बंबई हातेके सतारा जिलेमें कृष्णा नदीके बांये किनारेपर सब डिविजनका सदर स्थान वाई एक कसबा है।

सन् १९१२ की मनुष्य गणनामें यहांकी आबादी लगभग ११०० के अनुमान हुई थी जिसमें जैनियोंकी संख्या १६ के करीब थी।

वाईके निकट एक पहाड़ीपर पांडुगढ़ नामक किला है। बस्तीसे थोड़ी ही दूरपर मुसलामानी ढांचको सुन्दर नमूना रास्तिया खानदानके राजाका मकान है; जिसको लोग मोतीबाग कहते हैं। वाईसे लग भग ५ मील पश्चिम और कृष्णा नदीके पास डोम-गांवमें एक बहुत सुन्दर मान्दिर है। उसके आंगनमें स्वेत संगममरका फर्श लगा है। वाईसे करीब १२ मीलकी दूरी पर एक महाबलेश्वर नामक पहाड़ी अतिमनोहर व रम-णीक स्थान है। महाबलेश्वरको पूनासे भी अच्छी सडक बनीहुई है। फासला ७४ मील हैं। गाड़ी घोड़ा आदि पसरनी घाटतक जासकते हैं; किन्तु घोडोंकी सहायता देनेके लिये दस बारह कुलियोंके साथ रहनेकी जरुरत रहती है।

महाबलेश्वर पहाडीके ऊपर लगभग ७ मील लम्बी और ३ मील चौड़ी प्राय: सम-तल जगह है। उस मैदानसे पश्चिम पहाडियां हैं, जो समुद्रसे २५ मील पूर्व चली आई हैं। महाबलेश्वरमें गाडी दौड़नेयोग्य अच्छी सडकें बनी हैं। मामूली सरकारी इमारतें तथा जगह जगह योरोपियन (European) लोगोंके लिये लगभग १०० बंगले बने हुए हैं। वहां एक अमीर आदमीके रहने योग्य कमरोंके मासिक भाडे ४० रुपये लगते हैं। स्टेशनके मध्यमें बाजार है, जिसमें विविध प्रकारकी वस्तु, जो वहां लाई जासकती हैं, मिलती हैं। महाबलेश्वर गांवसे ३ मील दक्षिण योरोपियन लोगोंकी बस्तीमें एक अच्छी लायब्रेरी, क्लब, गिरजा और कबरगाह है।

गर्मीके दिनोंमें महाबलेश्वरमें बम्बई गवर्नर, बम्बईकी फौजके कमान्डर इन चीफ (Commandar Inchif) और बम्बई आदि शहरोंके अनेक अन्य प्रधान अफसर तथा अमीर लोग आकर रहते हैं।

वहां सालाना वर्षाकी औसत करीब २६४ इंचके है। वर्षाकालमें महाबलेश्वरका दृश्य अतिमनोरम होजाता है; क्योंकि उस समय सम्पूर्ण नदियों और झरनोंकी धारा गिरतीहैं।

जूनागढ़।

बम्बई प्रान्तके काठियावाड़ जिलेमें देशीराज्यकी राजधानीका जूनागढ एक छोटा सुन्दर शहर है। शहरसे पश्चिमकी ओर रेल्वे स्टेशन है।

वहुत प्राचीन कालमें 'समुद्रविजय, आदि विख्यात यदुवंशी राजाओंकी राजधानी थी। तत्पश्चात् बौद्ध और राजपूतोंका राज्य हुआ उस समय 'अपरकोट' अर्थात् पुराना जूनागढ़ ही राजधानी था। सन् १४७२ ई० में अहमदाबाद के सुल्तान 'मुहम्मदवेगड़' ने अपरकोटके राजपूत राजाको जीता और (वर्तमान) जूनागढ़ शहरको वसाया।

यहांकी मनुष्य संख्या अनुमान ३२ हजार है इसमें जैन अनुमान एक हजार हैं।

जूनागढ़के वगलोंमें पक्की दीवार हैं। शहरसे पूर्व–उत्तर गिरनार आदि पर्वत हैं। रेल्वे के पास शहरके पश्चिमका फाटक है। शहरमें कई एक मकवरे, मसजिदें अनेक देवमन्दिर, कई एक धर्मशालाएँ, कई सदावर्त, एक उत्तम अस्पताल, जेलखाना; नवावकी कचहरियोंकी इमारतें, घुड़शाल और स्कूल देखने योग्य हैं।

शहरके उत्तरीय भागमें ३ मकवरें हैं, और उत्तरवाले फाटक से आधमील दूर वजीरसाहवका 'सांकरवाग' नामक एक सुन्दर वगीचा है इसमें दो मंजिल हैं। वंगलेंके वगलमें, एक नाला पानीसे भरा है, नालेसे थोडी दूर एक 'जुंतुशाला' में वाघ, हिरन आदि जन्तु हैं। शहरसे दक्षिणकी ओर सांकरवागसे भी एक अति उत्तम सुन्दर वगीचा है, जिसमें कि सुन्दर वंगले वने हुए हैं और गिरके जंगलोंसे लाकर अनेक सिंह सिहनी रक्खी गई हैं।

जूनागढ़के नव्वावके महल–यह महल शहरके वीचमें, दुमंजिले चौमंजिले अति सुन्दर वने हुए हैं। महलका एक मकान सर्व साधारण लोगोंके देखनेके लिये खुला रहता है।

महव्वतखांकामकवरा–जेलखानेसे दक्षिण–तरफ नव्वावके पिताका मकवरा है। मकवरेमें चांदी और सीसेका उत्तम काम है, फर्श कीमती पत्थरोंका वना हुआ है।

नव्वावसाहवकी मसजिद–महव्वतखांके मकवरे से दक्षिण नव्वाव साहवकी एक सुन्दर मसजिद है।

अपरकोट–शहरके पास अपरकोट नामका पुराना किला है, पूर्व समयमें यह राजाओंका गढ़ था। परन्तु अव वेकार पडा है। यहां सन् २७० ई० से पहिले राजा अशोक के सूवेदार और उनके समयके पीछे 'गुप्तवंश' राजाओंके सूवेदार रहते थे। अपरकोटमें तथा इसके आसपासमें अनेक वौद्ध गुफाएं हैं। फाटकके ऊपर पांचवें मंडलीकका सन् १४५० ई० का लेख है। किलेमें दो पुरानी तोपें पड़ी हैं। अपरकोटके पास खपड़ाखोड़िया नामक गुफाओंका झुंड है। देखने से मालूम होता है कि ये तीन मंजिली गुफाएँ थीं।

'कोढ़ीखाना'–इस इमारतमें लगभग १०० कोढ़ीके रह सकते हैं। इस स्थानसे ४ मील की दूरीपर एक पहाड़ीकी शिखरपर एक छोटा स्थान बनाहै लोग कहते हैं कि इसके पास रहनेसे कुष्टरोग छूटताहै, इसीलिये बहुतसे कोढ़ी इस पहाड़ीको सेवते हैं।

जूनागढ़में कपास अधिक पैदा होताहै, जो 'बिरावल' बन्दरसे जहाज द्वारा बम्बई भेजा जाता है। अधिकतर कपास का ही व्यापार है।

तडकल.

यह ग्राम हैद्राबाद रियासतमें गाणगापुर (जी० आई० पी रेल्वे) स्टेशनसे करीब १२ मील है । यहांपर दिगाम्बरियोंके केवल दो घर और एक मन्दिर है। इस मन्दिरमें श्रीशांतिनाथस्वामीकी प्राचीन प्रतिमा कृष्ण पाषाणमें खोदी हुई करीब ६ फीट ऊंची अति सुन्दर और शान्ति मुद्राधारक विराजमान है, और प्रतिमाके चरणोंके पास ही दो यक्ष उसही पाषाणमें खुद हुए हैं। इस प्रतिमाका प्रबन्ध ठीक न होनेसे 'आळंद' के पञ्चोंने इसको आलंद ले जानेका विचार किया था । परन्तु तडकलवालोंने मना किया तब आळंदके पंचोंकी तरफसे शेठ 'सूरचंद्र साकळचंदजी' ने यहां मन्दिर बनवाया और उसमें इस प्रतिमा की स्थापना की । यहांपर एक और छोटीसी प्रतिमा श्रीआदिनाथस्वामीकी दीवारमें संवत् १२७२ की विराजमान है । और मन्दिरके पास एक छोटीसी धर्मशाला भी है। इस मन्दिरका प्रबंध तथा भंडार खाता 'नानचंद सूरचंद' आलंदवालोंके हाथमें है। पूजन प्रक्षालयका प्रबन्ध अच्छा है।

तारङ्गा (तारवर)।

(सिद्धक्षेत्र)

वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्टयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

यह प्राचीन पवित्र क्षेत्र गुजरात प्रान्तार्गत जिला महीकांठा पोस्ट सतलासनामें तारंगाहिल नामके स्टेशनसे (B. B. & C. I. Ry.) करीब ३ मीलपर पहाड़के ऊपर विराजमान है। स्टेशनपर बैलगाड़ी मिलती है।

वरदत्तादि इन्द्र व सागरदत्त मुनि तथा अन्य साढ़ेतीन करोड़ मुनिराज इस पहाड़से मुक्ति पधारे हैं। तारंगाजीकी तलहटीमें कोई धर्मशालादि व अन्य कोई ठहरनेका

योग्य स्थान नहीं है। तलेटीसे एक मील पहाड़पर चढ़नेसे मन्दिर और धर्मशाला आता है. रास्ता साफ नहीं है। पहाडके ऊपर चारों ओर कोट बना है। कोटके भीतर थोडी दूर जाकर ठहरनेके स्थान आते हैं. यहांपर एक दि० जैनमंदिर बहुत प्राचीन है। इसमें संवत् रहित मूलनायक श्री सम्भवानाथस्वामीकी चतुर्थकालकी प्रतिमा अत्यन्त मनोज्ञ है। दूसरा मंदिर श्री आदिनाथस्वामीका संवत् १९२३ में शोलापुरके शेठ हरिचन्द प्रेमचंदजीने भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्तिजी द्वारा प्रतिष्ठा कराई थी इसके सिवाय ४ वेदियां हैं और पासही दो धर्मशालाएँ हैं, धर्मशालामें ५०० के अनुमान यात्री ठहर सकते हैं। श्वेताम्बरियोंका वड़ा मंदिर राजा कुमारपालका बनवायाहुआ करीब ३० लाख रुपयोंकी लागतके है। श्वेताम्बरी धर्मशाला अलग है। यहांपर एक कुण्ड है जिसमेंसे एक मोरी निकली है जिसका पानी श्वेताम्बरी और दिगम्बरी दोनों अपने २ काममें लाते हैं। यहांसे एक मीलकी उँचाईपर एक कोटि शिलापर दो देहरियोंमें दो दिगम्बर प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इसी मार्गमें एक देहरीमें श्वेताम्बरी यतिके चरण हैं। आगे चलकर चंद्रसूरजकी देहरी है जिसके भीतर शिलापर यह लेख खुदा हुआ है। "संवत् १६२९ वर्षे पौष वदी ९ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे आचार्य 'कुन्दकुन्दाचार्य' भट्टारक 'श्रीशुभचंद्र स्तत्पट्टे भट्टारक श्रीसुमतिकीर्ति' गुरुपदेशात्............ हूमड ज्ञातीय गांधी नरपति भार्या ...." इस देहरीके आगे एक सिद्ध यंत्र भी खुदा है जिसके अक्षर घिस गये हैं। इसके आगे बढ़नेसे दो देहरी हैं. जिनमें से एकमें श्वेताम्बरी प्रतिमा विराजमान है। दूसरी देहरीमें एक बहुत मनोहर दिगम्बर जैन प्रतिमा पद्मासन विराजमान है। तारंगाजीपर 'कोटिसिलाके' दूसरी ओर एक मील ऊंची 'सिद्ध-सिला' नामकी पहाडी है; इसके मार्गमें एक गुफाके पास दो स्थानोंपर दिगम्बरी मूर्तियां विराजमान हैं। उपर जाकर एक देहरी दिगम्बरी है जिसके चारों ओर चरण हैं। दोमें जीर्णोद्धार संवत् १६११ और दोमें १९२१ लिखा है यहांपर ३ देहरी श्वेताम्बर भाइयोंकी भी है।

आसपासके गांवोमें ३०० घर श्रावकोंके हैं। मेला चैत्र सुदी १५ व कार्तिक सुदि १५ को तीन दीन तक भरता है। अनुमान तीन हजार यात्री हरसाल एकत्र होते हैं। सरस्वती भंडारमें सिर्फ धर्मशास्त्र के १४ ग्रंथ हैं। इस क्षेत्रका प्रवन्ध तीर्थ क्षेत्र कमेटीके आधीनमें है। इसके मंत्री शेठ "वेनीचंद उगरचंदजी" ईडर निवासी हैं। प्रवन्ध अच्छा है।

तेर।

निजाम रियासतके उस्मनावाद जिलेमें (जी. आई. पी. रेलवे) वार्शी लाईट रेलवे लैनपर तडवल स्टेशनसे करीब ९ मीलके फासलेपर तेर नामक प्राचीन क्षेत्र है। कहते हैं कि यहांपर श्रीवीरभगवानका समोशरण विहार करते २ आया था। प्राचीनकालमें यहां दिगम्बर जैनियोंकी बड़ी भारी बस्ती थी, परन्तु कालकी कुटिलगतिसे इस समय केवल एक ही घर सैतवाल जातिका है। ग्रामके नैऋत्यकी ओर कोटसे घिरे हुए प्राचीन दि० जैन मंदिर जीर्णावस्थामें शिल्पकलासे सुशोभित हैं। पूर्वाभिमुख मंदिरमें श्रीवीर भगवान् कृष्ण पाषाणकी पद्मासन ३॥ हाथ ऊँची अति मनोग्य विराजमान है। इसके चारों ओर ९ प्रतिमाएँ पाषाणकी कायोत्सर्ग और विराजमान हैं जिनमेंसे एक खण्डित है। मन्दिरके ईशानकी ओर एक प्रतिमाके नीचे देवनागरी लिपिमें खुदा हुआ एक खण्डित व अस्पष्ट शिलालेख भी इस प्रकार है। "... नाथचैत्यालये.... श्रीमन्त पूज्यपाद.... स्वामी...." और एक शिलालेख अस्पष्ट हिंदी भाषामें लिखा हुआ चरणोंके पास भी है मंदिरकी ओर अंधेरा बहुत है। दूसरा उत्तराभिमुख मंदिर जिसमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा कायोत्सर्ग ३॥ हाथ ऊँची काले पाषाणकी, व आठ मूर्तियां कायोत्सर्ग करीब १॥ फुट ऊँची विराजमान हैं। इस मंदिरके पास एक और मन्दिरमें २ कायोत्सर्ग प्रतिमा बाहरकी तरफ विराजमान हैं। इस मंदिरमें नक्काशीका काम बहुत खूबसूरत देखने योग्य है।

इन मंदिरोंका प्रबंध शेठ नेमचंद बालचंद धाराशिववालोंके हाथमें है इनकी तरफसे एक पुजारी पूजन प्रक्षाल करता है। यहांपर माघ वदी ६ को हरसाल बड़ा भारी मेला होता है।

दहीगांव।

(अतिशयक्षेत्र)

दहीगांव जिला सोलापुरके तालुका माळशिरसोंमें आबाद है जो कि डिक्सल (G I P.) रेलवे स्टेशनसे २२ मील है। यहां लाखों रूपयोंकी लागतका एक बड़ा भारी दिगम्बर जैनमन्दिर और बहुत ऊंचा मानस्तम्भ है। जिसके कि शिखर कई मीलसे दिखलाई देते हैं। इस गांवकी मनुष्य संख्या १००० के लगभग है. जिसमें जैनियोंकी संख्या ६० तथा ११ घर हैं। इस मन्दिरके मूलनायक श्रीमहावीरस्वामीकी

प्रतिष्ठा सम्वत् १९१२ में हुई थी। मन्दिरके एक स्थानमें श्रीमहतिसागर बाल ब्रह्मचारीजीके चरण हैं। ये ब्रह्मचारी कारंजा (बरार प्रान्त) निवासी नामी विद्वान् और धर्मात्मा होगये हैं। इन्होंने दक्षिण प्रान्तमें वास करनेवाले जैनी भाइयोंमें अपने अन्तमावस्थाक बहुतसे वर्ष व्यतीत करके धर्मोपदेश दे जैनियोंका श्रद्धान और आचरण ठीक कराया। इनका देहान्त इसी गांवमें विक्रम सम्वत १८८९ में हुआ, इनके शिष्य बालब्रह्मचारी 'हीराचंद अमोलक' ने इनके स्मरणार्थ 'फलटन' आदि निकटवर्ती गांववालों द्वारा यह विशाल मन्दिर निर्मापण कराया। महतिसागरजीनें २४ तीर्थंकरोंके पंचकल्याणकके चरित्र मराठी काव्यमें तथा अनेक पद और अपना जीवनचरित्र भी लिखा है। दहीगांवके सरस्वती भंडारमें करीब १५० शास्त्र हैं। इस क्षेत्रमें मिती मंगसर वदी २ से ७ तक रथोत्सव प्रतिवर्ष होता है। जिसमें वदी पंचमी के दिनमें श्रीजीकी पालकी निकाल कर नदी किनारे पञ्चामृताभिषेक किया जाता है। और सप्तमीको एक बहुत मनोज्ञ और ऊंचे काष्ठके रथमे श्रीजितेन्द्रभगवानको विराजमान करके समस्त जैनीभाई अति उत्साहपूर्वक गांवके चारों ओर परिक्रमा देते हैं।

धारवाड़।

बम्बई हातेके दक्षिण महाराष्ट्र देशमें हुबली जंकशनसे १२ मील पश्चिमोत्तर धारवाड़का रेल्वे स्टेशन है, व धारवाड जिलेका सदरस्थान है।

धारवाडमें सन् १४०३ ई० में धाररावने किला बनवाया और शहर बसाया था। लुटेरोंके आक्रमणसे बचानेके लिये धारवाडके चारों ओर मिट्टी और ईंटोंकी दीवार बनी थी जो अबतक जीर्णावस्थामें मौजूद है।

देखने योग्य स्थानोंमे सबसे ऊंची भूमिपर कलेक्टरका आफिस, किला, और शहरसे लगभग डेढ़ मीलकी दूरीपर एक पहाडी है। इसके ऊपर पत्थरसे बना हुआ जैनियोंका एक चौकोना मन्दिर था। उसके खंभोंमें से एक खंभेपर फारसी लेख है, जिसमें लिखा है कि सन् १६६० ई० में बीजापुरके बादशाहके डिपुटीने इस मन्दिरको मस्जिद बना लिया।

धारवाडमें रुई चांवलका बडा व्यापार होता है, यहांके जेलखानेके कैदी कपड़े कालीन और बेतकी चीजें बहुत सुन्दर बनाते हैं।

मनुष्य संख्या अनुमान ३३ हजार है दि० जैनियोंके पंचम, सेतवाल, बोगार, चतुर्थोंके ३८ घरोंकी १७३ मनुष्य संख्या है, एक जैनमन्दिर और २० धर्मशास्त्र हैं।

धूलिया ।

यह ग्राम पूर्व खानदेशमें जिलेका सदर मुकाम (जी० आई० पी० रेलवे) व बड़े व्यापारकी बस्ती है । यहांपर दिगम्बरियोंके २० घर हैं जिनकी मनुष्यसंख्या ६० है। दि० जैन मन्दिर एक है । इसमें करीब ३० धर्मशास्त्र हैं। धूलियासे २४ मीलपर सुलतानपुरके और किलेके खण्डहर बहुत प्रसिद्ध हैं । दो मीलपर एक अनूठा कुआ है इसका गुम्बज और सीढ़ियां देखनेके योग्य हैं । धूलियासे ४० मीलके फासलेपर 'पिम्पलनीर नामका स्थान है । पिम्पलनीरमें बहुत पुरानी चीजें देखने योग्य हैं। उनमेंसे 'पालसेनका' पुराना मन्दिर और कई 'खोहें' बहुत अजीब हैं। इनमें पत्थरकी मूर्तियां निकली हैं।

धाराशीवकी खोहें ।

हैद्राबाद रि० के उस्मानाबाद जिलेमें (जी. आय. पी.) रेल्वेकी शाखा बार्शी लैट रेलवेमें येडशी स्टेशनके पास धाराशीवसे करीब २ मीलके फासलेपर मशहूर खोहें या पर्वतोंको काटकर बने हुए दिगम्बर जैनमन्दिर हैं। ये खोहें गिनतीमें ९ हैं। प्राचीन कालमें करकंडु नामक राजाने पहाड़ी चट्टानें कटवाकर मन्दिर बनवाये थे, ऐसी 'पुण्याश्रव' नामक जैनग्रंथमें लिखा है । ९ में से ३ मट्टी आदिसे भरे हुए हैं और ३ में हिंसक जानवरोंका निवास है । एक खोह ठंडे और स्वच्छ पानीसे भरी हुई है, इसके ऊपरकी ओर श्री नंदीश्वरकी बडी प्रतिमा तथा अन्य २-३ प्रतिमाएँ हैं । यह नंदीश्वरकी प्रतिमा ७ वर्ष पहले पानी कम होनेसे निकालकर मंदिरमें रक्खी है । दूसरे दक्षिणाभिमुख मंदिरमें श्री पार्श्वनाथस्वामीकी बालूकी प्रतिमा रोगन की हुई करीब ८ फीट ऊँची पद्मासन धरणीधर सहित सुन्दर कमरेमें विद्यमान है । इसकी बाजूमें दो इंद्रोंकी ६ फीट ऊँची प्रतिमा (मूर्ति) वस्त्रालंकारसे भूषित कायोत्सर्ग स्थित है और उनके पास दो सिंह मट्टीके बने हुए रंगीन रोगन किये हुए हैं। ये मूर्तियां और खोहें खूबसूरत देखने योग्य हैं। इसके नजदीकके गुफामंदिरमें एक प्रतिमा करीब ५ फीट ऊँची कमरेमें है, और उसके पास श्रीनारद मुनिकी मूर्ति है । इसमें एक ब्राह्मण द्वारा पूजन प्रक्षाल होती है । यह २१ कोठरीकी खोह या गुफामंदिर बड़े बड़े पील पायोंपर खड़ी हैं । तीसरी खोहमें लोगोंकी बस्ती है, उसके पीछे बड़े बड़े खंभोंका एक दाहलान है, जिसमें श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा पद्मासन विराजमान है । इस मंदिरमें प्रक्षाल प्रतिदिन होती है । श्रीपार्श्वनाथका गुफा मंदिर अकलंकदेव नामसे प्रसिद्ध है । इसमें श्री माणकबाई

वेणीचंदने १००) रुपया खर्च करके द्वार आदि वनवाये हैं। धाराशिवके दि० जैनियोंकी तरफसे पुजारी प्रतिदिन प्रक्षाल करता है। धाराशिवमें दिगम्बरी सैतवाल, दशाहूमड, कासार, खण्डेलवाल आदिके ७० घर व ३९६ मनुष्य हैं, और २ मंदिर हैं।

नासिक।

वम्बई अहातेके मध्य विभागमें नासिकरोडके रेल्वे स्टेशनसे ५ मील पश्चिमोत्तर 'गोदावरी' नदीके दोनों किनारोंपर जिलेका सदर स्थान हिन्दुओंका प्रसिद्ध तीर्थ नासिक है। रेल्वे स्टेशनसे शहर तक ट्रामगाडी चलती है, प्रति आदमीका महसूल एक आना लगता है। सवारीके लिये वैलगाडी तथा तांगे भी वहुत मिलते हैं स्टेशनके पास धर्मशाला है और शहरमें कई धर्मशालाएँ हैं।

कहते हैं कि रामचन्द्रजीने अपने वनवासका वहुतसा हिस्सा यहां व्यतीत किया था। इसी स्थानपर लंकाके राजा रावणकी बहिन सूर्पणखा की नासिका अर्थात् नाक काटी इसीसे इस स्थानका नाम नासिक होगया। ईस्वी सन्से लगभग २०० वर्ष पीछे तक अंधभृत्य वौद्ध राजाओंके अधिकारमें नासिक रहा, इसके वाद चालुक्य, राठौर, चण्डोर, यादव वंशके हिंदू राजाओंके आधीन रहा वादमें मुसलमानोंके अधिकारमें और सन् १७६०, १८१७ ई० तक महाराष्ट्रोंके आधीन रहा, और सन् १८१८ ई० में नासिक अंगरेज सरकारेके अधिकारमें आगया।

महाराष्ट्र देशके लोग नासिकको काशी सरीखा पवित्र मानते हैं। प्रतिवर्ष वहुत यात्री आते हैं।

१२ वर्षपर सिंहराशिके बृहस्पति होते हैं तव नासिकमें वहुत वड़ा मेला भरताहै।

नासिक कस्वेका वडा भाग गोदावरी नदीके दाहिने अर्थात् उसके दक्षिण पूर्वके किनारेपर ३ छोटे टीलोंपर फैलता हुआ लगभग एक मील चला गया है। देखने योग्य स्थान ये हैं:—

शहरके उत्तम नक्काशीदार मकान, पेशवाके महलोंमें कलक्टर की कचहरी, अस्पताल, हाईस्कूल, कपूरथलेके महाराजका समाधिमन्दिर, सुन्दर नारायणका मन्दिर, (इसमें कारीगरीका काम उत्तम है) वालाजीका मन्दिर, शिवका मन्दिर, गोदावरीसे पाव मील दूर रामचन्द्रजीका उत्तम मन्दिर और मन्दिरके पासका मंडप वहुत सुन्दर है। कहते हैं कि इस मन्दिरके वननेमें सात लाख रुपये लगे थे। गोदावरीके वायें किनारे आध मीलकी दूरीपर कई आंठियोंका वटवृक्ष है इसको लोग पंचवटी कहते हैं। पंचवटी

का मन्दिर सारे हिन्दुस्थानमें मशहूर है और पंचवटीके आसपासकी गुफाएँ, तपोवन, गोदावरीके कुंड, इनमें पंचवटीका कुंड, रामकुंड और सीताकुंड प्रसिद्ध है। और भी कई कुंड, गोदावरी के किनारेके घाट, मन्दिर, धर्मशालाएँ इनके सिवाय नासिकसे सवा चार मीलकी दूरीपर छोटी बड़ी २१ गुफाएँ हैं। इन गुफाओंको बौद्ध लोगोंने चौथी सदीमें बनवाया था, हिन्दुओंने इनका नाम पांडवगुफा प्रसिद्ध कर रक्खा है और बौद्धमूर्तियोंको हिन्दुमूर्तियां मानकर पूजते हैं। गुफाओंमें जोड़ किसी जगह नहीं हैं क्योंकि पहाड़ीके भीतरसे पत्थर निकालकर ये सम्पूर्ण गुफामन्दिर तैयार हुये हैं।

नासिक रोड स्टेशनसे ३ मील दक्षिण पश्चिम देवलालीका स्टेशन है। देवलाली स्वास्थ्यप्रद स्थान हैं, यहां बम्बई प्रान्तके आर्यसमाजियोंका गुरुकुल और सैनिकगृह बने हुये हैं।

पीतल और तांबेके वर्तनकी दस्तकारीके लिये नासिक प्रसिद्ध है, भारतवर्षके किसी शहरमें नासिकसे बढ़कर वर्तन नहीं बनते हैं, नासिकमें अंगूर, तरकारियां बड़ी अच्छी होती हैं और तांबे पीतलके वर्तनोंका बड़ा व्यापार होता है।

नासिककी मनुष्य संख्या अनुमान २५००० हजार है, ब्राह्मणोंकी संख्या सबसे अधिक है, दिगम्बर जैनियोंमें खंडेलवाल, परवारोंके ६ घरोंकी २२ मनुष्य संख्या है, एक जैनमन्दिर और दो जैनधर्मशालाएँ हैं।

पंढरपुर।

बम्बई हातेके दक्षिणी विभागके शोलापुर जिलेमें 'भीमानदी के दाहिने किनारेपर सबडिवीजनका प्रधान कस्वा और बम्बई हातेकी यात्राके मुख्य स्थानोंमेंसे एक पंढरपुर हिन्दुओंका तीर्थस्थान है। बार्सीरोडके स्टेशनसे पंढरपुर तक पक्की सड़क बनी है, इस सड़कसे घोड़ेकी डाकगाड़ी तांगे और बैलगाड़िया पंढरपुर तक जाती हैं। भीमानदी जिसको लोग भीमारथी भी कहते हैं इसके उत्तर किनारेसे पंढरपुर कस्वेका उत्तम दृश्य दीख पड़ता है।

पंढरपुर कस्वेका एक भाग जिसमें प्रसिद्ध विठ्ठलनाथका मन्दिर है, पांढरीकक्षेत्र करके प्रसिद्ध है, विठ्ठलनाथको लोग बिठोवाभी कहते हैं। बाईं ओर चांदीके पत्तरसे मढ़ा हुआ एक स्तम्भ है इसको यात्रीलोग अंकमाल कहते हैं। ९ फुट लम्बी इतनी ही चौड़ी एक कोठरी में पांडुवर्ण विठ्ठलनाथकी मूर्ति है। यहांपर चन्द्रभागा तीर्थ सोमतीर्थ

आदि हिन्दुओंके पवित्र स्थान हैं। कई देवमन्दिर और घाट और रामबागमें लक्ष्मी-नरायण और कोदंडस्वामी का मन्दिर देखने योग्य है।

पंढरपुरमें प्रतिवर्ष ३ मेले भरते हैं जिनमें अनुमान लाख सवालाख आदमी आते हैं। मेलेके समय प्रत्येक यात्रीसे चार आना (टिकट) लिया जाता है। तीनों मेलों से म्युनिसिपाल्टीको अनुमान ४०–५० हजारकी आम्दनी होती है।

पंढरपुरकी मनुष्य संख्या अनुमान २० हजार है। इनमें सैतवाल, दशाहूमड़, बीसा-हूमड़. कासार, पंचमके १५४ घरोंकी मनुष्य संख्या ७२६ है। एक शिखरबंद चैत्यालय है, अनुमान ३०० धर्मशास्त्र हैं एक धर्मशाला जैन पाठशाला तथा दूसरे धर्मादा खाते भी हैं।

यहांसे चांवल, मकई, सन, दाल इत्यादि चीजें बाहर भेजी जाती हैं।

पावागढ़।

(सिद्धक्षेत्र)

रामसुवा वेण्णि जणा लाडणरिंदाण पंच कोडीओ।
पावागिरिवरसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं॥

गुजरातके पंचमहाल जिलेमें (वी० वी० सी० आई० रेलवे) बडोदासे रतलाम जानेवाली लैनमें चांपानेर रोड स्टेशनसे १० मील तक छोटीसी रेलवे लैन पावागढ़ तक गई है। चांपानेर गांवमें एक जैन मन्दिर है जिसकी प्रतिष्ठा शोलापुरके शेठ 'गौतम नेमिचंदने' माघ सुदी ८ सं० १९४४ में कराई थी। इसमें १३ प्रतिमा और एक यंत्र है, धर्मशालाएँ २ हैं, जिनमें करीव १००० यात्री ठहर सकते हैं। धर्मशास्त्र ४ हैं। पूजनप्रक्षालका प्रवन्ध अच्छा है। यहांपर मेला माघ सुदी १३ से ३ दिनतक सं० १८३८ से भरता है. जिसमें ५०० के अनुमान यात्री आते हैं। पहाडकी तलैटी पावागढ़ स्टेशनसे करीव ३ मील के है। रास्ताभी सीधा है। कहीं २ पुरानी सीढ़िया वनी हुई हैं, कंकड़ पत्थर वहुत फैले हुए हैं। थोडी दूर ऊंचे जाकर एक मुसलमानोंकी कवर रास्तेकी वगलमें मिलती है–रास्तेमें वड़े उंचे २ कई फाटक हैं। ५ वें फाटकके वाद छठवेंके वाहिर भीतमें एक दिगम्बर जैनप्रतिमा पद्मासन १॥ फीट ऊंची उकेरी हुई है। जिसपर संवत् ११३४ लिखा है। आगे चलकर ऊपर चढ़नेके रास्तेमें थोडा हटके नीचेको उतरके दो गुप्त कमरे हैं। ८३ सीढ़ी नीचे जाकर आगे मांचीका दरवाजा है। यहां एक छोटासा मकान पहरेवालोंके रहनेका वना हुआ है, और

एक 'तेलिया' नामक तालाव है, यहां एक दरगा भी बनी हुई है। आगे एक 'नवलखॉ' नामका कोठार तीन गुम्बजदार वना हुआ है। फिर 'पाटिया' पोल नामका दरवाजा, व आगे एक लकड़ीका पुल आता है, जिससे कि आगे और पीछेका पहाड़ जुड़ा हुआ है। इसके रास्तेमें देखो तो दो वृक्षोंमें हजारों चिथडे लटके हुए हैं। अनजान मनुष्य इनको 'चिथडा देव' करके मानते हैं और एक चिथड़ा तो जरूर ही चढ़ाते हैं। आगे 'तारापोल' नामका दरवाजा पार करके नगारखानेका दरवाजा आता है, यहांसे "दिगम्बर जैनियोंके मन्दिर" शुरू होते हैं। लाखों रुपयोंकी लागतके पांच मन्दिर हैं जिनमें दिगम्बर जैन प्रतिमाएं व अनेक सुन्दर नक्काशीके काम दीवालोंमें उंकेरे हुए हैं। परन्तु जीर्णावस्थामें हैं। भीतर प्रतिमा नहीं है, फिर 'छासिया' तालाब है यहां भी तीन मन्दिर विना प्रतिबिम्बके जीर्ण पड़े हैं। इनमें एक मन्दिर शिखरबन्द बिलकुल तय्यार है, सिर्फ एक तरफकी थोड़ी दिवाल गिर पड़ी है। फिर दधिया नामका तालाब आता है, जो कि २० गज चौरस भूमिमें है। इसका जल दूधक समान स्वच्छ और मीठा है, किनारेपर घाट भी वना है यहां यात्री लोग हाथ पैर धोते हैं। इसीके ऊपर दो प्राचीन जीर्ण मन्दिर हैं, इनमेंसे एक मन्दिरका जीर्णोद्धार सं० १९३७ में परंडाके शेठ "गणेश गिरधरजीने कराया था। इस मन्दिरमें बहुत रमणीय १० प्रतिमाएं हैं। मूलनायक सुपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा सं० १९३७ व प्र० का० 'कनककीर्ति' जी लिखा है। और बाकी प्रतिमाओंपर भी नीचे भांति लिखा हुआहैः— यानी (२) चंद्रप्रभु सं० १९३७ प्र० का० कनक कीर्तिजी, (३) अजितनाथ सं० १९३७ प्र० का० रामकीर्ति, (४) सुपार्श्वनाथ सं० १९३७ प्र० का० कनककीर्ति, (५) पार्श्वनाथ सं० १५४८, (६) आदिनाथ सं० १९३७, (७) अनन्तनाथ सं० १६६९ प्र० का० वादिभूषण गुरु, (८) आदिनाथ सं० १६४६ प्र० का० वादिभूषणजी, (९) महावीर स्वामी सं० १६६९ प्र० का० सुमतिकीर्तिजी, (१०) पार्श्वनाध सं० १९३७, इस प्रकार १० दिगम्बर जैन प्रतिमाएँ हैं।

आगे फिर सीढ़ियां शुरू होती हैं इन सीढ़ियोंके दोनों तरफ ८ दि० जैन प्रतिमाएँ लगी हुई हैं, ऊपर चढ़के 'कालका देवी' का मन्दिर है इसको हिंदूलोग पूजने आते हैं। सीढ़ियोंमें प्रतिमाओंको देखकर अनुमान होता है कि जैनियोंकी बेखबरीसे अन्यमतिओंने हमारी पूज्य प्रतिमाओंका ऐसा निरादार किया है।

इन्हीं सीढ़ियोंसे एक तरफ थोड़ा चलके पहाड़की नोक आती है यहां पर 'श्रीरामचंद्र' जीके सुपुत्र 'लव और अंकुश' का निर्वाण स्थान है। यह स्थान साक्षात मोक्ष महल मालूम होता है। इस पहाड़पर से ५ कोटि मुनि मुक्ति पधारे हैं।

यहांपर माह सुदी १३ से १५ तक बडा मेला भरता है इस क्षेत्रके प्रबन्धकर्ता शेठ 'लालचंद कहनदास' बडोदा निवासी हैं प्रबन्ध अच्छा है।

पूना।

पूना महाराष्ट्रमें बडा शहर है और 'मूला मूठा' नदियोंके संगमपर बसा हुआ है। इसका प्राचीन नाम 'पुण्यपत्तन' है, पहले यह छोटासा ग्राम था परन्तु जब सतारके राजा 'शाहुमहाराज' गद्दीपर विराजमान हुये तब उनके प्रधान बाजीराव पेशवाने इसको मरहट्टोंकी राजधानी बनाई। तबसे यह बड़ा शहर हुआ।

वर्त्तमानमें भी यहा बम्बई के गवर्नर साहिब वर्सातके दिनोमें प्रायः पूना में ही रहते है। यह शहर बम्बई अहातेकी फौजका सदर मुकाम है।

पूनामें दिगम्बरियोंके घर ६७ हैं और मनुष्य संख्या २४० है। दिगम्बरियोंके ४ मन्दिर हैं। यहापर सैतवाल जातिके गुरु स्वर्गवासी 'विशालकीर्ति' महाराजका 'मठ' और मन्दिर लोणार गल्लीमें है। धर्मशास्त्र मन्दिरोमे २५ तथा डेक्कन कॉलेजके ग्रंथ संग्रहालयमें २५० ऐसे कुल २७५ हैं। 'पार्वती नामक मशहूर मन्दिर इसी नामकी पहाडीपर नगरके दक्षिण पश्चिमकी तरफ है। देखनेके योग्य पहाड़ीके नीचे पेशवाओंका हीराबाग है अब इसमें टौन हॉल है। शहरमें तुलसीबाग, बेलबाग, रे मार्केट, सुप्रसिद्ध डेक्कन लायब्रेरी और ईसाईयोंके कई गिर्जे और कौंसिल हॉल, डेक्कन कॉलेज, इंजीनियर कॉलेज, जेल, सॅशन अस्पताल, डांक खाना, गमर्नमेंट हौस, वनस्पति बाग, स्टेशनसे ४ मील गणेशखिंडमें सरकारी मकान आदि चीजें देखने योग्य हैं।

यहांपर सदर्नमरहठा रेलवेका तथा जी० आई० पी० रेलवेका बड़ा भारी स्टेशन है। गाडी घोडा आदि सवारी किरायेपर हर समय मिलती है।

'किरकी' छावनी जो बम्बई अहाते के तोपखानेका सदर मुकाम है, स्टेशनसे ४ मील है। बम्बई अहातेके गोला बारूदका कारखाना स्टेशनसे ४॥ मील है मूला और मूठा दर्याओंका बन्ध, पानीकी चादरका दृश्य, सुंदर पुल, चित्रशालाप्रेस और सुहावने बाग वगैरः भी देखनेके लायक हैं।

फलटण।

फलटण रियासतकी राजधानी सातारा जिलेमें लोनंद (M. S. M.) स्टेशनसे करीब २० मील पर है। प्राचीन कालमें महाराष्ट्रमें यह नगर व्यापारके लिये प्रसिद्ध

था, कहते हैं कि प्रथम दिगम्बर जैन गुर्जर यहां व्यापारके लिये आये और कुछ दिन पीछे यहांसे सारे महाराष्ट्रमें फैल गये। वर्त्तमानमें रेल्वे लैन न होनेके कारण यहांका व्यापार कुछ घटतीपर है तो भी गुर्जर जाति के गृह करीब ११० हैं और अन्य दिगम्बर जैन जातिके २० हैं और उनकी मनुष्य संख्या कुल ५१० है। यहांपर दिगम्बरियोंके मन्दिर कुल ६ हैं जिनमें पांच शिखरबन्द और एक चैत्यालय है। १०० वर्ष पहिलके प्राचीन शिखरबन्द मन्दिर ४ हैं। एक मन्दिरमें सहस्रकूट जिनबिंब और दूसरेमें सिद्ध क्षेत्र सूचक शिखरजी के आकारका मंदिर अति मनोज्ञ है। मन्दिरोंमें ५०० धर्मशास्त्र के करीब हैं। और पांचों मन्दिरोंके 'भंडार खाते' पृथक २ हैं। पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध सर्व मन्दिरोंमें अच्छा है।

करीब २० वर्ष पूर्वमें यहांपर प्रसिद्ध त्यागी महतिसागर महाराजके शिष्य बाल-ब्रह्मचारी 'हीराचन्द अमोलक' नामक धर्मनिष्ठ और संसार विरक्त कवि होगयें हैं। इन्होंने गुर्जर समाजमें से मिथ्यात्व अंधकार नष्ट करनेके लिये बहुत परिश्रम किया। और उनमें बड़ी भारी धर्म–सुधारणा की। हीराचन्दजीने काव्य युक्त धर्मग्रंथ हिंदी तथा मराठीमें बहुत लिखे हैं। इनकी काव्यवाणी अत्यंत मधुर और प्रासादिक है। आपकी मातृभाषा मराठी होनेपर भी हिन्दीमें अच्छी कविता करते थे।

यहांपर करीब दो हजार वर्ष पूर्वका एक जैनमन्दिर पत्थरका बना हुआ अति रमणीय है। इसके पत्थरमें खुदी हुई जिनबिंब अत्यन्त सुहावनी पाई जाती है। इससे मालूम होता है कि पूर्वमें यह जैनियोंका मन्दिर होगा। वर्त्तमानमें 'जब्रेधर महादेव' की मूर्ति इसमें विराजमान है। कहते हैं कि, इस मूर्तिके स्थानमें पहले दो दिगम्बर प्रतिमाएँ विराजमान थीं, इनको विधर्मियोंने उठाकर महादेवकी मूर्ति स्थापन की है। इस समय वे जैन प्रतिमाएँ श्रीआदिनाथस्वामीके मन्दिरके भौंहरमें रक्खी हुई हैं, जिनमें एक पाषाणकी मूर्ति करीब १ हाथ ऊंची कायोत्सर्ग श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी अति मनोज्ञ है, प्रतिमाके नीचे उसके मन्दिरका जीर्णोद्धार संवत १८९६ खुदा हुआ है।

आदिनाथ स्वामीके मन्दिरके पास पार्श्वनाथस्वामीके मन्दिरमें यह शिलालेख है। इसकी प्रतिष्ठा 'ईडरके' भट्टारक 'सुरेंद्र कीर्ति' जीके हाथसे हुई हैं।

शिलालेख।

सवत् १९१५ माघ शुद्ध ९ गुरुवासरे मूलसंघे–सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे–कुन्दकुन्दा-चार्यान्वये–भट्टारक श्री 'पद्मनंदी' देव तत्पट्टे श्री 'सकल' कीर्ति–तत्पट्टे 'भुवनकीर्ति–तत्पट्टे

'श्रीज्ञानभूषण' तत्पट्टे 'विजयकीर्ति'–तत्पट्टे 'शुभचन्द्र' तत्पट्टे 'सुमतिकीर्ति'–तत्पट्टे 'गुणकीर्ति'–तत्पट्टे 'वारीभूषण'–तत्पट्टे–'रामकीर्ति'–तत्पट्टे 'पद्मनंदी'—तत्पट्टे—'देवेन्द्रकीर्ति'–तत्पट्टे 'क्षेमकीर्ति'–तत्पट्टे 'नरेन्द्रकीर्ति'—तत्पट्टे 'विजयकीर्ति'–तत्पट्टे 'नेमिचन्द्र'–तत्पट्टे 'चन्द्रकीर्ति'–तत्पट्टे 'रामकीर्ति'–तत्पट्टे 'यशकीर्ति'–तत्पट्टे भट्टारक 'श्रीसुरेन्द्रकीर्ति' तरयोप देशात् ....प्रतिष्ठितम्।

यहांसे करीव एक १ मीलपर फलटन जावली रास्तामें एक और प्राचीन गिरा हुआ जैन मन्दिर है इसमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा खंडित है।

इन मन्दिरोंके सिवाय श्री निंवाळकर सरकारका 'राजवाडा, श्रीराममन्दिर' आदि स्थान देखने योग्य हैं।

बंकुर।

दक्षिण हैदरावाद रियासतके कलबुर्गा जिलेमें शहावाद रेलवे स्टेशनसे (G .I. P.) करीव २ मीलपर 'बंकुर' ग्राममें दक्षिणाभिमुख जिन चैत्यालय पत्थरका वना हुआ अति प्राचीन है। इस चैत्यालयमें चार 'गर्भालय' हैं। 'अन्तर्गर्भ' गृहके साम्हने वेदी है, और उसी तरफ एक जिनप्रतिमा करीव ६ फीट ऊंची कायोत्सर्ग विराजमान है। 'बहिर्गर्भ' गृहमें वाईं ओर श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा करीव २ हाथ ऊंची पद्मासनस्थ है, जिसके पास दो यक्ष खड़े हैं। और दूसरी वाजूमें श्रीआदिनाथस्वामीकी प्रतिमा करीव ४ फीट ऊंची कायोत्सर्ग पत्थरकी वनी हुई पद्मासन विराजमान है। इसके मध्यमें वेदिका है। और दो शासन देवियोंकी प्रतिमाएँ भी विराजमान हैं। वाहर एक दीवालमें पश्चिमाभिमुख श्रीमहावीरस्वामीकी प्रतिमा करीव ३ हाथ ऊंची पद्मासनस्थ सिंहासनपर विराजमान है जिसके दोनों ओर दो इन्द्र पत्थरके वने हुए खड़े हैं। इसके पास चोविसीकी प्रतिमा और उसके सामने रत्नत्रयकी प्रतिमा है।

इस मन्दिरके पूजन प्रक्षालके लिये एक जमीन करीव ८०) रुपया आमदनीकी इनाम है। तो भी उपाध्याय प्रक्षाल मात्र ही करता है।

बम्बई।

हिंदुस्थानमें सवसे वड़ा वंदर और बम्बई प्रान्तकी राजधानीका यही एक मुख्य शहर है। बम्बईकी पूर्वकी ओर जी० आय० पी० रेलवेका 'वोरीवंदर (विक्टोरिया टर्मिनस) नामक प्रसिद्ध स्टेशन है। यहांसे कल्याण होकर नाशिकसे दिल्ली या

पञ्जाब तरफ रेल जाती है। और दूसरी रेल्वे लैन कल्याण जङ्कशन होकर पूना, रायचूर गई है। पश्चिममें बी० बी० एन्ड सी० आई० रेलवेका मुख्य स्टेशन 'कोलावा' है वहांसे वड़ौदा अजमेर और दिल्लीतक रेल जाती है। जी० आई० पी० रेल्वेकी लोकल ट्रेन्स सवेरे ६ बजेसे रात्रिके १२ बजे तक कल्याणके वीच स्टेशनोंमें, तथा बी० बी० सी० आई० की लोकल ट्रेन्स बेसिन और बीचके स्टेशनोंमें आया जाया करती हैं। जिससे व्यापारी, नौकर, चाकर तथा प्रवासियोंको वड़ा सुभीता होता है। शहरमें चारों ओर बिजलीकी ट्रामगाड़ी या तथा घोड़ा गाड़ी आदि सुभीतेसे किरायेपर मिलती हैं।

प्राचीन कालमें वम्बई छोटासा द्वीप पोर्तुगाल देशके वादशाहके आधीन था, उस समय मल्लाहों (ढीमरों) की पांच छह हजारकी वस्तीसे ज्यादा नहीं थी। वादमें १६६१ ई० में पोर्त्तगालके बादशाहने इंग्लिस्तानके बादशाह द्वितीय 'चार्ल्स' को दहेजमें अपनी 'मलका कैदरीन' ऑफ वरी गंजाकी शादीमें दे दिया था। परन्तु बादशहा चार्ल्सको यह दूरकी जागीर फायदेमंद न मालूम हुई, और १५६८ ईसवीमें इसको १० पौंड सालाना पर 'ईस्टइंडिया कंपनी' को दे दी। १७१३ में वम्बई द्वीप 'गवर्नरजनरल' के मातहत (आधीन) हो गया और उसी समयसे यह अहाता बनगया, और वम्बई शहरका भाग्योदय आरंभ हुआ। वर्त्तमानमें पृथ्वीके बड़े बड़े शहरोंमें इसकी गणना (गिनती) की जाती है।

इस समय इसकी खूबसूरती और तिजारतके लिये अच्छे मौकेपर होनेके सबब एसियाके सब शहरोंमें बढ़कर है। बंदर शहरके पूर्वी किनारेपर फैला हुआ है। और उस पर बेशुमार देशी 'किशतियां' (नावें-नौकाएं) सुन्दर मालूम होती हैं। बंदर 'जहाजों' और अगनबोटोंके लिये बेजोखम (विनाधोखे) की जगह है। शहरके इधरके हिस्सेमें आबादी वड़ी घनी है।

यहांकी मनुष्य संख्या करीव दसलाख है जिसमें पृथ्वीपरके हर धर्म और हर जातिके मनुष्य दृष्टिगोचर होते हैं। दिगम्बर जैनियोंकी मनुष्य संख्या करीब २००० व गृहसंख्या करीब ३०० के है। यहांपर दिगम्बर जैनियोंका मन्दिर दूसरे भोईवाड़ेमें मारवाड़ियोंका तथा एक गुजरातियोंका गुलालवाड़ीमें है।

दानवीर जैनकुलभूषण शेठ 'माणिकचंद हीराचंदजी जवेरीने' अपने पूर्वजोंके स्मरणार्थ 'शेठ हीराचंद गुमानजी धर्मशाळा हीरावाग' और 'तारदेव' के रास्तेपर जैन 'बोर्डिंग स्कूल' स्थापित किया है। इस धर्मशालामें दिगम्बर श्वेताम्बर स्थानकवासी तथा उच्चवर्णोंके हिन्दु वड़े सुभीतेसे ८ दिनतक ठहर सकते हैं।

इस धर्मशालाका ऐसा अच्छा सुप्रबंध है कि शायद ही ऐसा अच्छा प्रबंध अन्यत्रकी धर्मशालाओंमें होवे, यात्रियोंको, बहुत आराम मिलता है। और इसी धर्मशालामें 'श्री ऐलक पन्नालालजी जैन औषधालय' नामक धर्मार्थ दवाखाना भी खोला है। हीराबागमें 'भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' का आफिस जिसके द्वारा प्रायः सब तीर्थक्षेत्रोंका सुप्रबंध होता है, दि० जैन 'प्रान्तिकसभा' (बम्बई) का आफिस, इस सभा द्वारा प्रसिद्ध 'जैनमित्र' नामक पाक्षिकपत्र भी प्रकाशित होता है।

'श्रीजैनग्रंथरत्नाकर' कार्यालय, जिसमें कि सर्व प्रकारके छपे हुए शुद्ध जैनग्रंथ मिलते हैं, आदि कई जैन संस्थाएँ हैं। सर्व साधारण के उपयोगार्थ 'वाचनालय' लेक्चरहाल (व्याख्यानभवन) भी है।

शेठ सा० का मकान चौपाटीपर रेल्वे फाटकके पास अच्छा बना हुवा है जो कि 'रत्नाकर पॅलेस नामसे प्रसिद्ध है। यहां एक अति सुन्दर चैत्यालय भी है। इस चैत्यालयमें हर भाद्रपदमें पर्यूषण (दशलाक्षणपर्व) के अंतमें बड़ा भारी उत्सव होता है। शेठजी सा० अत्यंत धर्मप्रेमी, सम्यक् दृष्टि व लोकप्रिय जैन जातिके अगुआ हैं। आपको गवर्मेंटने भी जे. पी. (जस्टीस ऑफ दी पीस) शान्ति स्थापक जज्ज (न्यायाधीश) की पदवी प्रदानकर विभूषित किया है। तारदेव पर जैनबोर्डिंग हौसहै, इस बोर्डिंगमें अंग्रेजीकी उच्चशिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी रहते हैं। इसके पासही उसी मकानके 'जुबिली' बाग नामक स्थानमें उपर्युत शेठजी साहेबकी पुत्री विदुषी मगनबहेनने अपने तन-मन-धनसे अपना अमूल्य समय खर्च करक 'श्राविकाश्रम' नामक संस्था स्थापित की है इसका सब प्रबन्ध आप स्वयं ही कररही हैं। इसमें जैन विधवा, सधवा तथा कुमारिकाओंकी उनके जीवन निर्वाह के योग्य मुफ्तमें धार्मिक तथा लौकिक शिक्षा दी जाती है। यहांपर भी संवत् १९६७ में 'चैत्यालय' बनवाकर बड़ी धूमधामसे बिम्ब स्थापना हुई है।

बम्बईके पास 'एलिफन्टा' खोहा देखने योग्य हैं जो 'टकसाल' के पास 'मजगांव' या 'अपॉलो बन्दर' से जहाजसे एक घंटेका रास्ता है। 'बर्सान' में पोर्तगालवालोंके पुराने किलेके खंडहर देखनेके योग्य हैं. समुद्रके रास्ते आनेसे बसीनका सफर (यात्रा) बड़ा भला माळूम होता है, और अगर आते हुए रस्ता बदलना मन्जूर हो तो बम्बई बड़ोदा सेन्ट्रल इंडिया रेलवेमें बसीन रोड स्टेशनसे सवार होकर बम्बई आ सकते है।

बम्बई बड़ोदा रेल्वे की 'अंधेरी' स्टेशनसे एक या डेड़मीलकी दूरीपर अंधेरीकी गुफा है, यह भारी गुफा जमीनके अन्दर है, गुफाके मध्यमें बुद्धदेवकी मूर्ति है। और

बम्बई बड़ोदा रेल्वेके ही 'बरौली' स्टेशनसे ६–७ मीलकी दूरीपर कनेरीकी प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएँ देखने योग्य हैं, सैकड़ों गुफाएँ पहाड़ को तोड़ कर बनाई गई हैं, कोई कोई गुफाएँ तो इतनी भारी हैं कि, उनमें दो तीन हजार आदमी बैठ सक्ते हैं। स्टेशनसे गुफाओं तकका रास्ता खराब है, सवारी किसी प्रकारकी जा नहीं सकती है। रास्तेमें सुहावना जंगल पड़ता है। गुफाओंसे दो मीलकी दूरीपर पहाड़के नीचे 'बिहार और तुलसी नामक झीलें, जिनसे नलों द्वारा बम्बई में पानी आताहै, देखनेके योग्य हैं।

बम्बईमें यों तो बहुत स्थान देखने योग्य हैं, परन्तु मुख्य ये हैं:—

(१) प्रोगका 'लाइटहाऊस' याने मुनारा जिसपर जहाजोंको रास्ता दिखानेके लिये रोशनी की जाती है, देखनेके लिये टिकट बन्दरगाहके अफसरसे मिलते हैं।

(२) कुलाबेका 'गिर्जा' जो उन लोगोंकी यादगारीमें बनाया गया था, जो अफगानिस्तानकी पहिली लड़ाईमें मारे गये थे, सवेरेसे शामतक खुला रहता है।

(३) एलफिन्स्टोन सर्कलमें रॉयल 'एशियाटिक सोसायटी' की बम्बई शाखाका कुतुबखाना और अजायबखाना, जो कि ९ बजे सवेरेसे साढ़े छह बजे शामतक खुला रहता है, किसी मेम्बर की सिफारससे देख सकते हैं।

(४) एलफिन्स्टोन सर्कलमें टाउन हॉलके पास शाही 'टकसाल' रोज खुलता है। टकसालके अफसरकी इजाजत से देख सकते हैं।

(५) एस्प्लेनेड रोडपर क्रॉफर्डमार्किट ।

(६) गवर्नमेंट डॉकायार्ड याने 'जहाज गोदाम' और कारखाने अपोलो स्ट्रीटमें सोमवार और गुरुवारको अफसरसे दरख्वास्त करनेपर देख सकते हैं।

(७) मेयो रोडपर सरकारी दफतर और हाईकोर्ट।

(८) एस्पलेनेड रोडपर 'राधाबाई टॉवर और सर कॉवसजीका यूनिवर्सिटी हॉल।

(९) भुलेश्वर रोडपर भुलेश्वरका मन्दिर।

(१०) शेकमेमन स्ट्रीटपर मुम्बादेवीका मन्दिर ।

(११) भिंडी बजारके कोनेमें जे. जे. हास्पिटल और ग्रॅान्ट 'मेडिकल कॉलेज'; ग्रॅांट मेडिकल अफसरकी इजाजतसे देख सकते है ।

(१२) वायकला स्टेशनके पास ट्रॉमडिपोके सामने 'व्हिक्टोरिया गार्डन' (रानीबाग)।

(१३) परेलमें रूई कातनेकी कलें तथा डेविड सासुन 'सिल्कमिल' (रेशमकी गिरनी)

(१४) चौपाटीमें रत्नाकरपॅलेस और दिगम्बर जैनियोंका चैत्यालय और बाबुल-नाथका मन्दिर बावनगंगा ।

(१५) मलाबार पहाड़ीका हौज और मलाबार की वस्ती ।

(१६) पायधूनीपर श्वेताम्बरियोंके मन्दिर ।

(१७) हार्नवाई रोडपर जी० आई० पी० रेल्वे का विक्टोरियाटर्मिनम (बोरीबंदर) स्टेशन म्यूनिसिपाल्टीका दफ्तर, टाईम्स ऑफ इंडिया का आफिस, और आर्टस्कूल ।

(१८) फोर्ट (किला) के रास्तेपर बोरीबंदरके पास जनरल 'पोष्ट आफिस और 'फोर्ट'; फोर्टमें महाराजा सप्तम एडवर्डकी 'अश्वारूढ़ मूर्ति' महाराणी 'विक्टोरिया' की संगमरमरकी मूर्ति, ।

(१९) चौपाटी में 'चुपकामुनारा' पारसी पंचायतके सेक्रेटरीसे देखने के लिये टिकट मिलते हैं ।

(२०) अपालो बन्दरमें 'ताजमहल होटल' और इसीके आस पासके कई होटल ।

वम्बई में रुईके बड़े बडे कारखाने हैं । यहांकी आवहवा अच्छी नही है । गर्मीके दिनोंमें यहां ज्यादा गर्मी नहीं होती, और न ठंडके दिनोंमे अधिक ठंड होती है । कारण वस्ती वहुत घनी वसी हुई है ।

बड़ौदा ।

गुजरात प्रान्तमें, विश्वामित्री नामक छोटी नदीके पूर्व बड़ौदा महाराजकी राजधानी और राज्यका प्रधान शहर बड़ौदा है ।

बड़ौदाके राजा लोग गायकवाड़ कहलाते हैं, इसका अर्थ गायका पालनेवाला है, जिस समय मरहठोंका राज्य उन्नतिपर था, इनमें का एक सर्दार जिसे गायकवाड़ कहते थे, बडोदाका अध्यक्ष वनाया गया. इसके वंशमें 'दामाजी' गायकवाड़ अधिक वीर हुये, और पेशवासे झगड़ा करके अंग्रेजोंकी सहायतासे अपने राज्यको आधीन करलिया, बड़ौदाके किसी राजाने अंग्रेजोंके विरुद्ध युद्ध नहीं किया, बड़ोदा राज्यकी आमदनी निजाम हैद्रावादको छोड़ करके हिन्दुस्थानके सम्पूर्ण देशी रजवाड़ोंसे अधिक है, बड़ोदा के महाराजको अंग्रेज गवर्नमेंटको 'कर' (महसूल) नहीं देना पड़ता है, वम्बई हातेके

दूसरे देशी राजाओंके समान बड़ौदानरेश बम्बईके गवर्नरके आधीन नहीं है, परन्तु भारतवर्षके 'गवर्नरजनरल के आधीन हैं।

वर्त्तमान बड़ौदा महाराज सर 'सयाजीराव' गायकवाड़ सेना खास खेल शमसेर बहादुर जी० सी० एस० आई०, गद्दीपर विराजमान हैं, आप अंग्रेजी आदि कई विद्याओंमें अति चतुर हैं, आपके समयमें बड़ौदा राज्यमें विद्याकी बड़ी उन्नति हुई है, गांव गांवमें स्कूल लायब्रेरी (पुस्तकालय) खोले हैं, आप जैनियोंसे भी सहानुभूति रखते हैं जिस समय बड़ौदामें 'जैनकान्फरेन्स' हुई थी उस समय आप स्वयं पधारे थे, आपने कई जैनग्रंथोंका गुजराती मराठी अनुवाद कराके प्रकाशित किये हैं। बड़ौदा नरेश आदर्श राजा हैं।

बड़ौदाकी मनुष्यसंख्या अनुमान् सवालाख है, मनुष्यगणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २५ वां, बम्बई हातेमें चौथा और गुजरातमें दूसरा शहर है।

बड़ौदामें दि० जैनियोंके मेवाड़ा जातिके २० घरोंकी मनुष्य संख्या ७५ है, २ मंदिर हैं। श्वेताम्बरियोंकी संख्या अधिक है।

रेल्वे स्टेशनके पास दो धर्मशालाएँ हैं, इनमें दीवान साहिबकी धर्मशाला बड़ी है। स्टेशनसे एक मील उत्तरकी ओर फौजी छावनी, रेजिडेंसी और छावनीसे एक मील दक्षिण-पूर्वकी ओर शहर है स्टेशनसे शहर तक सवारी हर तरहकी मिलती है, शहरमें कई धर्मशालाएँ हैं।

देखने योग्य स्थान ये हैं:—

'जलकल' ४५ लाख रुपयेके खर्चसे तैयार होकर सन् १८९२ मे खुली है। शहर से १८ मीलकी दूरीपर 'अजवाझील' जिसका कि क्षेत्रफल ४॥। वर्गमील है, इसी झीलसे शहरमें नल द्वारा पानी आता है।

'देवमन्दिर'—बड़ौदा शहरमें बिठ्ठलजीका मन्दिर (इसके खर्च को महाराज की ओरसे बहुतसी 'जागीर' लगी है), खंडोबा देवीका मन्दिर, स्वामी नरायणका मन्दिर, सिद्धनाथका मन्दिर, आदि कई मन्दिर देखने योग्य हैं।

'बड़ावाग'—छावनी और शहरके बीचमें एक उत्तम वाग है। वागमें भांति भांतिके वृक्ष पौधे फूल लगे हुए हैं, फूल पत्तियोंका एक बंगला भी है, इस वागमें 'चिड़ियाखाना' जिसमें बाघ इत्यादि बनैले जन्तु और अनेक भांतिके पक्षी हैं।

खास शहरके चारों ओर प्रत्येक बगलमें आध मील लम्बी पक्की दीवार है, पूर्व फाटकसे पश्चिम फाटक तक और उत्तरसे दक्षिण फाटक तक सड़के बनी हुई हैं। मध्यमें

चारों सड़कोंके मेलपर एक छोटा चौखूटा, बंगला है, उत्तरवाली सड़कके बगलोंमें, पहिले सयाजीरावका बनवाया हुआ पुराना 'राजमहल' लोगोंके भारी भारी मकान और दूकाने हैं।

राममहल—शहर पनाहके भीतर उत्तरवाली सड़कके दोनों बगलोंमें, पहिले सयाजीरावका बनवाया हुआ 'तीनमंजिला, बड़े विस्तार का राजमहल है।

'नजरबागका महल'—राजमहलमें 'नजरबाग' नामक बगीचा है, नजर बागमें मृत महाराज 'मल्हारराव' का बनवाया हुआ चौमंजिला महल है, इस महलमें महाराजके तीन करोड रुपयेकी लागतसे अधिक जवाहिरात और भूषण रक्खे हुये हैं। भूषणोंमें पांचसै बड़े बड़े हीरोंका 'कंठा' और ३० लाख रुपयोंकी लागतका मोतियोंका गलीचा प्रशंसनीय है। ऊपरका मंजिल राजशाही ठाटसे सजा हुआ है, महल अर्जी देनेपर देख सकते हैं।

'सोने और चांदीकी' तोपे—नजरबागसे दक्षिणकी ओर थोड़ी दूरपर एक अस्तवल के मकानमें दो सोनेकी दो चांदीकी तोपें गाड़ियोंपर रक्खी हैं।

'अखाडा'—नजरबागसे पीछे शहरके पूर्ववाले फाटकके पास अखाड़ा है, इसमें हाथी, गेंडे, भैंसे, भेंडं, और पहलवान लड़ाये जाते हैं।

'हाथीखाना'—चम्पानीर फाटकसे उत्तर, उत्तरकी शहर तलीमें हाथीखाना है, इसमें पहले सौ हाथी रहते थे, परन्तु अब थोडे हैं।

'तालाव'—चम्पानीर फाटकसे थोड़ी दूर शहरपनाहके वाहर 'शेरशाह' नामक तालाव लड़ीपुरा फाटकके पास 'सुरसागर' तालाव है।

'लक्ष्मीविलासमहल'—शहरसे पश्चिम एक बडे मैदानमे वर्तमान बडोदानरेशका लक्ष्मीविलास नामक राजमहल है। महाराजने २७ लाख रुपयेके खर्चसे इस महलको बनवाया है। महलके बीचका भाग ११ मंजिलका और चारों ओरके भाग तीन मंजिल के हैं। महलसे ९० गज उत्तर बावडीकी शकलका 'नवलखा' कुआ है, इसका पानी नल द्वारा मोतीबाग नजरबाग और दूसरे स्थानोंमें पहुंचाया जाता है। महलके मैदान के पूर्व बगलमें सडकके पासकी दुमंजिली तिमंजिली इमारतोंमें महाराजके न्यायविभागकी कचहरियां और दफ्तर हैं।

इसके सिवाय शहर तलीसे पश्चिम और दक्षिणकी तरफके बंगले महाराजके सुन्दर बाग. शहर तलियां में जेलखाना. सर्कारी आफिस, हाईस्कूल, यमुनाबाई अस्पताल

महाराजकी लायब्रेरी, सुन्दर मकान और रुई कातने की कलें, कपडा बुनने की :मिलें, देखने योग्य है।

बडौदामें कपास, और कपडे का व्यापार अधिक होता है।

बादामीके गुफामन्दिर।

बम्बई अहातेके बीजापुर जिलेमें तालुकाका सदर स्थान बादामी एक छोटासा कसबा और 'मद्रास–सदर्न मराठा रेल्वे' लैनकी गदग शाखापर स्टेशन है। स्टेशनसे बादामी गांव करीब १॥ मील रह जाता है।

बादामी गांवके पास करीब १॥ मील दक्षिणमें तथा पूर्वमें दो प्राचीन पहाड़ी किले हैं। दक्षिणवाली पहाड़ीके पश्चिमी बगलमें छठी सदीके बने हुए हिंदुओंके तीन गुफा-मन्दिर और जैनियोंका एक गुफामन्दिर है। जिनके कारण बादामी प्रसिद्ध है। बादामी गांवमें दिगम्बर जैनियोंकी वस्ती बिलकुल नहीं है। पहाड़पर चढ़नेसे प्रथम 'महादेवका गुफामन्दिर आता है। यह मामूली मन्दिर है।

पहिले गुफामन्दिरसे दूसरे गुफामन्दिरको सीढ़ियां गई हैं। अगवासमें उत्तर मुखकी ४ मेहराबें हैं। इस गुफामन्दिरमें मुख्य स्थानपर मूर्ति नहीं है, परन्तु इसके पश्चिम भागमें 'वामनजी' की बहुत बड़ी और पूर्वी बगलमें 'वराह' की साधारण पाषाणमें खुदी हुई मूर्ति है।

तीसरा गुफामन्दिर यहांकी सब गुफाओंसे उत्तम है। इस मंदिरमें कारीगरने अपनी शिल्पचातुर्यका अच्छा परिचय दिया है। इसमें मूर्ति नहीं है। मध्य भागमें छत्तपर नवग्रहोंकी मूर्तियाँ हैं। इसमें ८ स्तंभ हैं जिनमें खुदाईका काम बहुत अच्छा है। इस गुफामन्दिरके पूर्व बगलकी बाह्यांगपर पत्थर निकाल कर विष्णु, शेषशाई, वराह आदि देवताओंकी मूर्तियां तथा पश्चिम तथा दक्षिण बगलमें वामन, नरसिंह, परुषराम आदि-कोंकी मूर्तियां बनाई हुई दर्शनीय हैं।

तीसरी गुफाके पूर्व ७ फीट ऊंची दीवार है, जो चौथी गुफाको जुदा करती है यह चौथी गुफा खास जैनगुफामन्दिर है। ये गुफामन्दिर सबसे ऊंचा है, और मन्दिर छो-टासा है तो भी उसमें चार दहलान हैं। अन्दरके दहलानमें श्रीजिनेंद्र देवकी मूर्ति करीब ३ फीट ऊंची पद्मासन सिंहासनाधिष्ठित है जिसकी दोनों बगलोंमें इन्द्र चमर लेकर खड़े हैं।

दूसरा दहलान करीब ३० फीट लम्बा और ७ फीट चौडा है, इसके मुख्य द्वारके सीधी बगलम पत्थरमें खुदी हुई चौवीसीकी प्रतिमा, श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकरकी कायोत्सर्ग १॥ फीट ऊंची प्रतिमा और दो प्रतिमाएँ विराजमान हैं । चौबीसीके मध्यमें करीब ६ फीट ऊंची प्रतिमा हैं । और इसीकें माफ़क बांई बगलमें भी उकेरी हुई प्रतिमाएँ है ।

जैनगुफाकी अगवासमें मैहराबदार ६ स्तम्भ बने हैं जिनपर चारो ओर मूर्तियां बनी हैं।

तीसरे दहलानके सीधी बगलमें श्री 'बाहुवली स्वामी' की करीब ७ फीट ऊंची कायोत्सर्ग और वीतराग मुद्राधारी प्रतिमा है और उसकी सन्मुख श्रीपार्श्वनाथस्वामी की प्रतिमा ७ फीट ऊंची कायोत्सर्ग विराजमान है । इसके पास एक चौवीसीकी व और कई प्रतिमाएँ उकेरी हुई हैं । इस गुफाके प्रवेशद्वारके पास एक और पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। मलपर्वा नदीके किनारे कई जैन मन्दिर हैं ।

ताम्रपट और शिलालेख जो इस समय मिलते हैं उनसे सिद्ध होता है कि यह गुफामन्दिर वातापी (बादामी) के प्रसिद्ध चालुक्यवंशके राजा 'पुलकेशी' ने शके ५३३ में बनवाया था । प्रत्येक जैनीको अपना प्राचीन जैन वैभवसूचक स्थान देखना चाहिये ।

बाबानगर।

(अतिशयक्षेत्र)

उत्तर 'कनडा' प्रान्तांतर्गत जिला 'बीजापुर' में मद्रास ऍन्ड सदर्न मराठा रेलवे लाईनपर बीजापुर स्टेशनसे २० मील यह अतिशयक्षेत्र है। रास्ता अच्छा है तथा स्टेशनपर सवारी हरवक्त किरायेपर मिलती है ।

यहांपर दिगम्बर जैनियोंके घर १० और ३९ मनुष्य संख्या है ।

यहां के प्राचीन मन्दिरका जीर्णोद्धार इंडी निवासी शेठ 'बालचंद माणिकचंद' के पितामहने कराया था, और तबसे मन्दिरका प्रबंध उनके आधीन है । इस पूर्वाभिमुखी मन्दिरमें मूल नायक श्रीमत्पार्श्वनाथकी हरितवर्ण पाषाणकी अति सुन्दर और कलाकौशल्य युक्त कायोत्सर्ग करीब १। हाथ ऊंची प्रतिमा सिंहासनपर विराजमान है । इसके दोनों तरफ़ यक्ष यक्षिणीकी प्रतिमाएं हैं । पूजन प्रक्षालका प्रबन्ध अच्छा है ।

तीर्थक्षेत्र होनेसे यात्रियोंका आवागमन होता रहता है । विशेषकर फाल्गुन मासमें रथोत्सवके समयमें करीब एक हजार यात्री एकत्रित होते हैं ।

कहते हैं कि प्राचीन कालमें यह प्रान्त कल्याणके राजा 'बिजलंक' के अधिकारमें था, जो धर्मकार्यरत और जैनधर्मसे प्रीति रखनेवाला था। कुछ वर्षोंके बाद यहांपर मुसलमानोंने चढ़ाई की और उन्होंनें सब मूर्तियां बावड़ीमें फेंक दीं और राजा अपने रक्षाके लिये भाग गये, परन्तु यह प्रतिमा भूलसे बीजापुरके किलेके मन्दिरमें वैसी ही रह गई। बीजापुरके बादशाहके 'तासबीबी' नामक एक राजकन्या थी, वह इस मूर्तिको देखकर इसके साथ बहुत प्रसन्नता से खेलती थी। जब इस मूर्तिको बादशाहने देखा तब मूर्ति की शोभापर मुग्ध होकर अपने सिंहासनके पास स्थापना की।

उसी समय 'बाबानगर' के एक जैन पुरोहितको स्वप्न हुआ कि 'बादशाहकी औरतके पेटमें शूल उठा है और बादशाहने उसको मिटानेके लिये बहुत उपाय किये परन्तु सब निष्फल हुए। तो वहां चलकर मंत्रसे जल सिंचन कर शूलको मिटा दो और इस उपकारके बदलेमें राजा के पासकी मूर्तिको लाकर यहांके मन्दिरमें विराजमान करदो। स्वप्न होनेके बाद जागा और इधर उधर देखने लगा परन्तु वहां कुछ नहीं था। थोड़ी देरमें बीजापुरको चला गया और बादशाहको अपने आगमन की खबर दी।

बीजापुर।

मद्रास सदर्न मराठा रेल्वे लैनपर होटगी जंक्शनसे ५८ मील बीजापुरका रेल्वे स्टेशन है। रेल्वे स्टेशनसे पश्चिम प्रायः गोलाकार शकलमें बीजापुर शहर है। शहरमें जानेके लिये घोड़ा गाड़ी, बैलगाड़ी आदि सवारी किरायेपर हमेशा मिलती हैं। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमें जिलेका सदर मुकाम बीजापुर एक प्राचीन नगर है इसका नाम पहिले विजयपुर था।

प्राचीन कालमें करीब सन् ईसवीकी दूसरी सदीमें यह नगर वातापी (बादामी) नगर राष्ट्रकूट खानदानके जैन राजाओंके आधीन था पश्चात् यह जिला कलचूरी और होसला बल्लालके अधिकारमें गया। ये राजा परमजैनी ही थे और इसही कारणसे इस प्रान्तमें सैकड़ों जैनमन्दिर, मन्दिरोंके खंडहर तथा मूर्तियां शिलालेखों सहित वर्तमानमें पाये जाते हैं। करीब १३ वीं सदीमें यादववंशके राजाने इसपर अपना सदर स्थान देवगिरी को बनाया था, दिल्लीके बादशाह अल्लाउदीनने यादववंशके नवें राजा रामरावको परास्त करके अपना अधिकार जमाया था।

सन् १६८६ में मुगल बादशाह औरंगजेबने बीजापुरको लेलिया, पश्चात् मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय बीजापुर और उसके आस पासके प्रदेश महाराष्ट्रोंके आधीन

हुआ। सन् १८१८ में अंग्रेज सरकारने बीजापुरको पेशवासे लेकर सताराके राजाको दिया: किन्तु सन् १८४८ में सताराके राजाके निःसन्तान मरनेपर उसका राज्य बम्बई हातेके अंग्रेजी राज्यमें मिला लिया गया।

सन १९११ की मनुष्य गणनाके समय बीजापुर शहरमें दिगम्बर जैन दशाहूमड पंचम, कासार आदि जातियोंके २८ घर और १३० मनुष्य संख्या थी।

शहरमें दो अर्वाचीन दिगम्बर जैन मन्दिर हैं, और एक धर्मशाला है। दोनों मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षालका प्रवन्ध योग्य रीतिसे होता है। धर्मशास्त्र केवल दस हैं। शहरमें यात्री तथा प्रवासियोंको हरप्रकारका सुभीता है।

बीजापुरसे करीव दो मीलपर १५ वर्ष पूर्वमें जमीनमें गडा हुआ अति प्राचीन कलाकौशल्य युक्त श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मन्दिर मिला था, जिसमें श्रीपार्श्वनाथस्वामी की प्रतिमा करीव १ हाथ ऊंची १०८ सर्पफणा मंडित पद्मासन विराजमान हे। सिंहासनपर कनडा लिपीमें एक शिलालेख खुदा है, परन्तु घिसजानेके कारण पढ़ नही जाता हैं। इस मंदिरमें बीजापुरके जैन पंचोंकी तरफसे पूजन प्रक्षाल योग्य रीतिसे होती है। इस मंदिरकी कारीगरी देखने योग्य है।

प्रतिमाएँ दर्शन करने योग्य मुसलमानों के समयमें जैनमंदिरोंको तोडफोड़ कर चन्दा बावड़ीमें फेंक दी थी, और किलेमें मिली हुई प्रतिमाएँ इस समय अंग्रेज गवर्नमेंटने निकलवा कर 'वोली गुमज' नामक मस्जिदके साम्हने संग्रहालयमें रक्खी हैं, ये सव मिलकर ९ हैं। एक श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकरकी प्रतिमा सर्पफणाधिष्टित करीव तीन हाथ ऊँची पद्मासन कृष्णवर्ण पाषाणकी है। इसके सिंहासनपर शासन काल १२३२ लिखा है, प्रतिमाओंके शेष लेख अस्पष्ट है। दो प्रतिमाएँ क्रमसे २॥—३ फीट ऊँची हैं। तीसरी प्रतिमा श्रीशांतिनाथस्वामीकी है। चन्दावावडमिंसे निकली हुई तीन प्रतिमाएँ करीव १ फुट ऊँची स्फटिक पाषाणकी हैं जिनमे एक शीर्षसे खण्डित है और उसके सिंहासनपर कनडा भाषामें एक लेख है उसमें प्रतिष्ठाकाल १००१ है और "विजयसूरी" प्रतिष्ठाचार्यके नामका उल्लेख है। इंडीके छोटे मन्दिरमें एक अप्रतीम पाषाणका वना हुआ भामण्डल और बडे मंदिरमें चौवीसीकी प्रतिमा विराजमान है। कई लोग कहते है कि बीजापुरमें दर्गाकी वस्तीमें ये प्रतिमा मिली थी।

गोल गुम्वज—नगरकी पूर्वकी दीवारके भीतर रेलवे स्टेशनके पास बीजापुरके ७ वें वादशाह महम्मद आदिलशाहका उत्तम मकवरा है जो गोल गुंवज कहलाता है। इतना वड़ा गुंवज किसी देशमें नहीं है। इसको 'वोली गुंवज' (Dome of Speele) भी

कहते हैं और यह नाम इस गुंबजका सार्थक ही मालूम पडता हैं। यह इमारत करीब दो हजार फीट ऊँची वर्तुलाकार है। गोल गुंबजके मीनारोंके शिरोभागपर जानेके लिये मीनारोंके भीतर चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई हैं। ऊपर चढ़ जानेसे चारों ओर दूर २ की वस्तु देख पडती हैं और ऊपर बोलनेसे जो प्रतिध्वनी निकलती है वह बडी आश्चर्यकारक निकलती है।

यहां सिवाय देखने योग्य जुम्मामस्जिद, इब्राहिम–रोजा अशरोशरीफका महल, पुरानी मसजिद, दूसरी पुरानी मसजिद, आनन्द महल (जिसमें असिस्टेंट कलेक्टर रहते ह) सतखना महल, चीन महल, मक्का मसजिद, दूसरा अली आदिलशाहका मकबरा आदि हैं। इनमें दोनों पुरानी मसजिदें खास हिंदू या जैनमंदिरोंके पत्थर तथा स्तंभोंसे बनी हुई हैं। पहिलेकी मसजिदके मध्यकी लैनके उत्तर बगलके पास नकाशीदार एक काले स्तंभपर कनडा अक्षरोंमें एक शिलालेख है और अन्य कई चारों तरफके स्तंभोंपर संस्कृतमें और चन्द कनड़ा अक्षरोंमें शिलालेख हैं। एक लेख सन् १३२० ईसवीका मालूम होता है।

सिंह बुर्जपर मालक मैदान नामक एक बडी तोप है, जिसके मुखके दोनों तरफ हाथीको निगलता हुए भूत जैसा मुख बना हुआ है। कहते हैं कि इसकी आवाज १२ कोस तक सुननेमें आती थी और अलावा उसकी आवाजसे गर्भवती स्त्रियोंके गर्भपात भी हो जाते थे।

यहांसे करीब १७ मीलकी दूरीपर बाबानगर नामक दिगंबर जैनियोंका अतिशय क्षेत्र है।

बीजापुरमें व्यापार विशेषकर अनाज और कपासका ही अधिक होता है।

बार्सी।

शोलापुर जिलेमें जी. आई. पी, रेलवेकी मुंबई रायचूर शाखापर बार्सी रोड नामका स्टेशन है। स्टेशनसे बार्सी तक करीब २१ मीलके बार्सी लेट रेलवे लैन जाती है। स्टेशनपर सवारी किरायेसे हमेशा मिलती हैं।

बार्सी टौनमें दिगम्बर जैनियोंकी सैतवाल, दशाहूमड, लाड, काम्बोज, कासार आदि जातीके ७० घर हैं तथा मनुष्य संख्या २८१ है। शहरमें केवल एक शिखबन्द दि० जैनमंदिर है। पूजा प्रक्षाल प्रतिदिन होती है। परन्तु जैनियोंके इतने घर होनेपर भी पाठशाला आदि कुछ नहीं हैं। मन्दिरके पास एक छोटीसी धर्मशाला है।

यह हिन्दुओंका क्षेत्र है और उनके दो चार अच्छे २ मन्दिर भी हैं जिसमें भगवानका मंदिर देखने योग्य है। जुलाई और नवम्बरमें वडे वडे मेले भरते हैं।

व्यापार यहांपर कपडा गल्ला रुई आदिका अधिक होता है।

यहां सदरालाकी कचहरी, पुलिस (थाना), स्टेशन अस्पताल, पोष्टआफिस, और स्कूल भी हैं।

बेलगांव।

इस शहरका स्टेशन (Southern Marhatta Railway) अच्छा खूबसूरत बना हुआ है। जो कि वम्बई अहाते के जनूवी डिवीजनका जिला है। स्टेशनपर सवारी घोडा गाडी आदिकी हरवक्त किरायेपर मिलती हैं।

यहांपर बेलगांव जिलेके कलेक्टर, डाकखाने और तारके दफ्तरोंका सदर मुकाम है।

इस शहरमें दिगम्बर जैनियों के २३३ घर व ११४० मनुष्य संख्या है। दिगम्बरियों के ४ मन्दिर हैं।

इनमेंसे एक पञ्चायती मन्दिरमें मूलनायक प्रतिमा श्रीनेमिनाथस्वामीकी हरित मिश्रित वर्णकी अति मनोज्ञ विराजमान है। जोकि किलेके उत्तराभिमुख मन्दिरसे लाई गई है। इसकी सिंहपीठपर प्राचीन कनड़ा लिपी और भाषामें ७ पंक्तियां भी लिखी हैं जिनका अभिप्राय यह है कि "पट्टसहट्टणाधिपति मातुश्री जीवंमाने बाडवल हट्टी में (बेलगांवमें) यह श्रीनेमिनाथस्वामीकी प्रतिमा कराई। और उसके अष्टाविधार्चन और जीर्णोद्धारके लिये एक खेत दिया।" जिस मन्दिरमें यह प्रतिमा विराजमान है, उसीके आश्रय यह खेत अभीतक वरावर चला आता है, जिसकी वार्षिक आम्दनी अनुमान ३००) है। बेलगांवके शेष दो मन्दिरोंमें भी मूलनायक प्रतिमाएँ किलेकी ही हैं। यहांपर धर्मशास्त्र करीब १०० के हैं जोकि श्रीयुत अण्णापा फन्नाप्पा चौगुले बीए. एल. एल. बी. वकील के पास मौजूद हैं।

बेलगांवकी पूर्व दिशाकी ओर काले मजबूत पत्थरोंसे बना हुआ एक विशाल किला करीब ३५० वर्षका प्राचीन है। जिस जगहमें यह किला बना हुआ है, उस जगहमें पहले एक सौ आठ जैन मन्दिर थे, जिनको बीजापुरके बादशाहके सरदार 'आसिफखां' ने तुडवाकर उन्होंके पत्थरोंसे यह किला बनवाया था। किलेकी दिवालों के बीच २ में अनेक जगह नक्काशीदार पत्थर लगे हैं। कहीं चौखट, कहीं चरणपादुका और कहीं मूर्तियोंके पत्थर आदि इस बेतरतीबी व बेहूदीसे लगे हैं कि, जिनके देखनेसे साफ जाहिर

होरहा है, कि, यह किला जिनमंदिरोंके पत्थरोंसे ही बना है। अब इसमें केवल तीन मन्दिर शेष रहे हैं। जो कि अपनी लोकोत्तर कारीगरीसे घातक आसिफखांसे भी बचकर प्राचीन कारीगरी और जैनधर्मका गौरव बढ़ा रहे हैं। यद्यपि इनमें प्रतिमा विराजमान नहीं है, तब भी इनके दर्शन मात्रसे ही वंद्यभाव होते हैं। पहिला मन्दिर चतुर्मुख है। देखनेसे मालूम होता है, कि यह मन्दिरका मध्य कलशस्थान है। इसके तीन दरवाजोंकी बाहरी भीतरी कारीगरी और भीतरके वेदिकारूप आलोंकी बारीक कारीगरी अपूर्व है। दूसरे मंदिरमें ताला पड़ा हुआ रहता है। परन्तु बाहरकी कारीगरी देखनेसे अति आनन्द होता है। दरवाजेके ऊपर एक जिन प्रतिमा दोनों ओर यक्ष यक्षिणी सहित खुदी हुई हैं। कहते हैं कि इसके भीतरकी कारीगरी बहुत ही अच्छी है। इसका गर्भगृह भाग तोड़ दिया है।

सबसे बड़ा और उत्तम तीसरा मन्दिर, कमलवस्ती है। इसमें चार भाग हैं। पहिला भाग बड़ा और चौकोर है इसके बीचों बीच एक गोल बड़ा चकला रक्खा हुआ है। उसके ऊपर छतपरसे नीचेकी ओर लटकते हुए पांच छत्र हैं। इन छत्रोंकी पुरानी कारीगरी देखकर अत्यन्त आश्चर्य होता है। और दृष्टि वहीं अटकी रह जाती है। इन कमलोंके पत्ते बड़े बारीक हैं, जिनपर नक्काशीका अपूर्व काम हो रहा है। खुदाई और पत्थर दोनों इतने मजबूत हैं कि, इनको बने करीब ८०० वर्ष बीतनेपर भी ऐसा मालूम होता है मानो अभी खुदे हैं। इसी चौकके गोलाकार गुम्बजकी दीवालोंपर अनेक जिन मूर्तियां खुदी हुई हैं। जोंकि, बिलकुल अखण्डित हैं। स्तम्भोंके पत्थर और उनकी घुटाई ऐसी अपूर्व है कि जिनमें मुख अच्छी तरह कांचके समान दीखता है। इन्हीं कमलोंसे इस मंदिरका नाम कमलवस्ती पड़ा है। यह भी पूजन और धर्मध्यान करनेका स्थान एक अजीब प्रतीत होता है। इस चौकके बाद एक छोटा दीवानखाना है। उसके बाद एक दरी अनन्तर गर्भगृह है। जिसमें वेदी, सिंहासन आदि ज्योंके त्यों बने हुए हैं। इसलिये इस मन्दिरके प्रत्येक दरवाजे और चौखट आदि स्थानोंकी कारीगरी भारतवर्षमें देखने वालोंको जैनधर्मका गौरव बढ़ा रही है। यह मन्दिर किलेके गोदामघरके भीतर है भीतरसे साहिबकी आज्ञा लेनी पड़ती है। शहर देखने योग्य है। व्यापार यहां हर किस्मका होता है।

भड़ौंच।

बम्बई हातेके गुजरात देशमें 'नर्मदा' नदीके दाहिने किनारेपर मुहानेसे लगभग ३० मील पूर्व जिलेका सदरस्थान भड़ौंच है। बड़ौदा रेल्वे स्टेशनसे ४४ मील दक्षिणकी ओर भड़ौच का रेल्वे स्टेशन है। स्टेशन से शहर तक सवारी हरतरहकी मिलती है।

यह पूर्व कालमें 'भृगुपर' नामसे प्रसिद्ध था, सन् ६० से सन् २१० तक भड़ौंचका नाम 'वडगजा' था उस समय यहां 'जैनधर्मानुयायी' राजपूत नरेशका स्वाधीन राज्य था। चीनका 'हायनशांग' यात्री जो सन् ६२९ से ६४५ तक रहा था। उसने लिखा ह कि भड़ौंच कस्वेमें १० बौद्धमठ, ३०० बौद्ध फकीर और १० मन्दिर हैं, सन् ७४६ से सन् १२९७ तक भड़ौंच का वन्दरगाह अनहिलवाड़ाके राजपूत राजाओंके अधिकारमे रहा था। इसके वाद मुसलमान वादशाहो के अधिकारमें चला गया। फिर सन १६१६ ई० में अंग्रेजोंने अपनी कोठी भड़ौंचमें कायम की और सन् १८०३ ई० में भडोंच अंग्रेजोंके अधिकारमें आगया।

भडोंच पश्चिम भारतके पुराने वन्दरस्थानोंमें से एक है। यहां से रुई महुआ, गेहूं लकड़ी अन्यदेशोंको भेजी जाती हैं और इनही चीजोंका बहुतायतसे व्यापार होता है।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य गणनाके समय ४०१६८ मनुष्य थे इनमें ७३२ जैन थे। भड़ौंच वम्बई हातेके अंग्रेजी राज्यमें १३ वां शहर कहा गया है।

नर्मदाके किनारेकी एक मील लम्बी 'दीवार', नर्मदाके किनारे पहाड़ी पर पुराना 'किला'; इसमें जेलखाना, अस्पताल, गिरजाघर, स्कूल, म्यूनिसिपल आफिस, लायब्रेरी, हालेंडवालोंकी पुरानी कोठी और जिलेकी कचहरियां हैं, शहरसे दक्षिणकी ओर नर्मदा नदीपर रेल्वेका सुन्दर 'पुल' वना हुआ है ऐसा खूवसूरत व उम्दा पुल वम्वई वड़ौदा रेल्वे लाइनमें किसी जगह नहीं है। इनके सिवाय सुन्दर मसजजिद, रुई कातने और कपड़े बुनने की 'मिलें', नर्मदाके किनारेके 'मन्दिर, मकवरे' आदि कई स्थान देखने योग्य हैं।

भावनगर।

वम्बई हातेके काठियावाड देशमें काठियावाड़ प्राय द्वीपके पूर्वी किनारेके पास कांवेकी खाड़ीपर देशी राज्यकी राजधानी भावनगर है, इसको लोग भाऊनगर भी कहते हैं। भावनगरकी स्टेशन धोला जंक्शनसे ३२ मीलकी दूरीपर है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि लगभग सन् १२६० में गोहल राजपूत अपने प्रधान सेजाकके आधीन इस देशमें आ वसे, सेजाकके ३ पुत्र रानोजी, सारंगजी, और शाहजी थे; इनमेंसे रानोजीके वंशधर भावनगरके, सारंगजीके वंशधर लाठीके, और शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर साहव हैं। सन् १७२३ में भाऊसिंहने भाऊनगर (भावनगर) को वसाया था।

भावनगरके वर्त्तमान नरेश ठाकुर सा० सर तख्तसिंहजी यशवन्तसिंहजी जी० सी० एस० आई० हैं, आपने राजकोटके राजकुमार कालेजमें शिक्षा पाई है, आप बड़े दानी हैं।

सन् १८९१ की मनुष्यगणनाके समय भावनगर शहरमें ५७६५३ मनुष्य थे, इनमें ४७६१ जैनी थे। भावनगरमें १ दि० जैनमंदिर है, और वर्त्तमानमें दिगम्बरियोंके १३ घरोंकी मनुष्य संख्या लगभग ५० के हैं। मनुष्यगणनाके अनुसार भारतवर्षमें ६४ वां और बम्बईके गवर्नरके आधीन देशी राज्योंमें पहिला कस्बा है। यहांपर श्वेताम्बरियोंका अच्छा समुदाय होनेसे सभा-सोसाइटियां स्थापित हैं। इनमें जैनधर्म प्रसारक सभा प्रसिद्ध है। दो तीन मासिकपत्र भी प्रकाशित होते हैं। जैनियोंके ठहरनेके लिये एक दो धर्मशालाएँ भी हैं।

भावनगरमें देखने योग्य पुरानी चीज तो कोई नहीं है, परन्तु हालमें बनी हुई कई सुन्दर इमारतें, ठाकुर सा० का महल कई एक सुन्दर बाग, हौज, सूत कातने और बुननेकी कलें, एंजनके छापाखाने (Steam Press) बीमारखाना, पानीकी कल, अस्पताल और कई एक स्कूल देखने योग्य हैं।

भावनगरमें व्यापार अच्छा होता है, यहांके बन्दर स्थानसे बहुत रुईकी गांठें बँधकर काठियावाड़ तथा अन्य देशोंको भेजी जाती हैं। तेल, कपड़ा, तांबे, पीतलके वर्त्तनोंका भी व्यापार अच्छा होता है।

मलखेड।

निजाम हैद्राबाद रियासतमें 'वाडी' जंकशनके पास 'चितापुरसे' ४ मीलपर 'मलखेड गेट' (S. M. Ry) स्टेशनसे करीब ४ मीलपर यह दिगम्बर जैनियोंका गुरुपट्ट-स्थान है। इसका प्राचीन नाम 'मलियाद्री' था पूर्व समयमें यहांपर दि० जैनियोंके बहुतसे घर और १४ मन्दिर थे परन्तु कालकी कुटिलगतिसे वर्तमानमें यहां सिर्फ दो घर दिगम्बर जैनियोंके और एक चैत्यालय है। वर्तमानमें १३ मन्दिरोंमें भी हिन्दुओं के देवताएें हैं। मन्दिरकी मरम्मत बिलकुल नहीं होती है।

यहांका पट्ट प्राचीन हैं इस समय भी 'रत्नकीर्तिजी' महाराज विराजमान थे, परन्तु कई कारणों से, गद्दी से उतार दिया है।

महुवा (विघ्नहरपार्श्वनाथ)।

(अतिशयक्षेत्र)

यह सूरतनगरके निकट है। श्रीजैनमन्दिरजीके भोयरेमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी अत्यन्त प्राचीन मनोज्ञ बिम्ब विराजमान है, जिसको सब वर्णके लोग मानते पूजते हैं। इस स्थानके दिगम्बरी जैनी प्रमादवश दर्शन नियम पूर्वक नहीं करते। प्रबन्धकर्ता सेट प्रेमचन्द गुलाबचन्द हैं। जैनियोंके होतेहुए तथा गुणचन्द भट्टारके शिष्य पंडित मोहनलालके रहते हुए भी यहां मन्दिरजीमें अर्घ नहीं चढ़ता। एक ब्राह्मण पुजारी पूजा कर लेताहै। शास्त्र भण्डारमें अनुमान १०० के प्राचीन शास्त्र हैं, परन्तु सूची नहीं हैं।

मांगीतुंगी।

(सिद्धक्षेत्र)

रामहणू सुग्गीओ गवयगवाक्खोय णील महणीलो।
णवणवदीकोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे॥

नासिक जिलेमें 'मनमाड' (G. I. P.) स्टेशन तथा 'चिचपाड़' (B. B. & C. I. Ry) स्टेशनके पास 'भिलवाड़' ग्रामसे करीब एक मीलपर 'मांगी और तुंगी' नामके दो पहाड़ हैं। यहांसे श्री "रामचंद्रजी, हनुमान, सुग्रीव, गवय, गवाक्ष, नील, महानील आदि महात्मा और ९९ कोटि मुनिओंने जन्म-मृत्यु रहित होकर मोक्षपद प्राप्त किया है। और यह 'बलदेव' जीके भी तपका स्थान है।

यहां दो प्राचीन मन्दिर एक नवीन और ४४ प्रतिमाएँ हैं। मूलनायक श्रीमत्पार्श्वनाथस्वामीकी सं० १९१९ मे सेठ हरीभाई देवकरण शोलापुरवालोंने 'कारंजा' के भट्टारक 'सुरेन्द्रकीर्ति' द्वारा प्रतिष्ठा कराई थी। 'मांगी' पहाड़पर उकरे हुए दो गुफामन्दिर हैं, जिनमें बहुतसी प्रतिमाएँ हैं। मूलनायक भद्रबाहुस्वामीकी प्रतिमा विराजमान है। 'तुंगी' पहाड़में खुदी हुई दो-तीन गुफाएँ हैं। मूलनायक चंद्रप्रभुकी प्रतिमा करीब ४ फीट ऊंची पद्मासन तथा चारों ओर बहुतसी प्रतिमाएं दीवालमें उकीरी हुई हैं। सामने एक निर्मल जलका कुंड है, जिसमें यात्री लोग पूजनकी सामग्री धोते हैं।

इस स्थानपर ठहरनेके लिये ९ धर्मशालाएं हैं, जिनमें करीब एक हजार आदमी ठहर सकते हैं, यहां 'सरस्वती भंडार' में ९ धर्मशास्त्र हैं। कार्तिक शुक्ला १९ को बड़ा भारी मेला होता है।

इसक्षेत्रका प्रबन्ध "मांगी तुंगी तीर्थकी प्रबन्ध कारिणी सभा" की तरफसे 'जोगेश्वर नारायण' मुनीमके आधीन है। पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध अच्छा है।

अमीजरा पार्श्वनाथ-(श्रीअतिशयक्षेत्र)

वड़ाली।

यह अतिशयक्षेत्र गुजरात प्रान्तमें ईडर रोड़ स्टेशनसे करीब १० मील है । यहांपर एक दिगम्बरी विशाल प्राचीन मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी चतुर्थकालकी प्रतिमा अति मनोज्ञ पद्मासन विराजमान है । इसके दर्शनार्थ दूर २ से लोग आते हैं। वर्तमनामें यहां दिगम्बर जैनियोंके घर नहीं हैं। सिर्फ श्वेताम्बारियोंके करीब २०० घर है। मन्दिरके पास एक बड़ी धर्मशाला भी है। पूजन प्रक्षाल श्वेताम्वर भाइयों की तरफसे एक ब्राह्मण करता है। ईडर में दिगम्बर जैनियोंके घर १४० तथा मन्दिर ६ हैं, और मनुष्य संख्या ३०० के करीब हैं। यहांपर प्राचीन धर्मशात्रोंका बड़ा भारी भंडार है जो कई वर्षोंसे खुला नहीं है। ग्रंथोकी बड़ी दुर्दशा होरही है।

यहांसे वड़ालीको जानेके लिए स्टेशनपर सवारी बैलगाड़ीकी हमेशा किरायेपर मिलती है।

लातूर।

दक्षिण हैदराबादके निजाम साहबकी रियासतके जिला उस्मनाबादमें बार्सीसे करीब ३० मील, जी० आई० पी० की शाखाका बार्सी लाईट रेलवेपर लातूरसे खास स्टेशन है। स्टेशनपर सवारी हमेशा किरायेपर मिलती हैं।

प्राचीनकालमें यह बड़ा भारी शहर राजधानीका स्थान था, ऐसा अनुमान से.व कोट आदिके खण्डहरोंसे ज्ञात होता है। यहां दिगम्बर सैतवालोंके गुरुका पट्ट है, जिसका इन्तजाम मलखेड़के पट्टाधीशके आधीन है।

यहांपर जैनियोंके आवाद गृह २६ हैं, जिनमें ७११ मनुष्य रहते हैं। और एक दि० जैनमंदिर, विशालकीर्तिजी भट्टारकका मठ व प्राचीन जैन मंदिर हैं, जिसमें २ प्रतिमाएँ कायोत्सर्ग १॥ हाथ ऊँची अति मनोज्ञ विराजमान हैं। प्राचीन कालमें और भी कई प्रतिमाएँ इस मन्दिरमें विराजमान थीं जो मुसलमानों द्वारा खण्डित की हुई इस समय मन्दिरके नीचे भोंहरेमें रक्खी हैं। इसी मंदिरके पास एक धर्मशाला भी है। और एक प्रतिमा कायोत्सर्ग श्रीशान्तिनाथस्वामीकी एक छोटेसे मन्दिरमें विराजमान है। लातूरके जैनी भाई अशिक्षित हैं, इसी कारण मन्दिरोंका प्रबन्ध बिलकुल अच्छा नहीं है। व्यापार यहां अनाज और कपासका अधिक होता है।

श्रीशत्रुंजय (पालीताना)।

सिद्धक्षेत्र ।



गाथा ।

णेमिसामि पज्जण्णो, संबुकुमारो तहेव अणुरुद्धो ।
वाहत्तर कोड़ीओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥

चौपाई ।

पांडव तीन द्रविड़ राजान । आठकोड़ि मुनि मुक्तिपयान ॥
श्रीशत्रुंजय गिरिके शीस । भाव सहित वन्दो निशि दीस ॥

गुजरात प्रान्तर्गत काठियावाड़ जिलेमें पालीताना ग्रामसे डेढ़ मीलकी दूरीपर श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र है । पहिले सोनगढ़ स्टेशन था. परन्तु अब पालीताना रेल्वे स्टेशन हो गया है पालीताना बी० वी० एन्ड० सी० आई० और भावनगर, गोडाले, जूनागढ़ पोरवंदर रेल्वेमें अहमहावाद, वीरमगांव, वधवान जंशनोंके रस्ते वम्बईसे ४८८ मील है। वम्बईसे पालीताना तकका तीसरेदर्जेका किराया अनुमान ९॥) है ।

पालीताना एक छोटे रजवाड़ेकी राजधानी है । सन् १८९१ ई० में १०४४२ पालीतानाकी मनुष्य संख्या थी इन में १९९७ जैनी थे । पालीतानामें ठाकुर सा० का महल, स्कूल, अस्पताल और डाकखाना है ।

दि० जैन यात्रियोंके ठहरनेके लिए दो धर्मशालाएं हैं । एक छोटी मन्दिरके पास है दूसरी शहरके किनारे हवादार जगहमें वड़ी धर्मशाला है ।

पर्वतपर दि० जैनमन्दिर दो हैं एक में मूलनायक श्रीशान्तिनाथस्वामीकी प्रतिमा है । इसपर सम्वत् १६८६ है । दूसरा मन्दिर छोटाहै इसको श्वेताम्बरियोंने बहुत समयमें अपना बना लिया है; इसमें मूलनायक प्रतिमाके आजू वाजू धातुकी दो प्रतिमाएँ हैं । प्रतिमाजीका लेख इस प्रकार है:—"सम्वत् १७३४ वर्षे माघ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छ वलात्कारगणे श्रीकुन्द कुन्दाचार्य तथे भट्टारक सकलकीर्ति तटपटे श्री पद्मनंदी तटपटे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तटपटे भट्टारक श्रीपद्मनंदी तटपटे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तटपटे भट्टारक श्रीक्षेमकीर्ति सुदाम्नाये वागडदेश शीतलवाडा नगरे हुमड ज्ञातीय लघुसारवाया कमलेश्वर गोत्रे दोसी श्रीसरदार तथा सुरमदतयो पुत्र दोसी सांगोता सरताणदेतयो पुत्री........."आगेके अक्षर समझमें नहीं आते ।

इससे स्पष्ट मालूम होता है कि ये दिगम्बरी प्रतिमा है । शहर (पालिताना) में एक मनोज्ञ मन्दिर है, इसमें कुल प्रतिमाएं ३४ हैं । मूलनायक श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा है,

इसकी प्रतिष्ठा सं० १९५१ में माह सुदी ५ को कनककीर्ति भट्टारक द्वारा संघपति शेठ हरीभाई देवकरण और शेठ मोतीचन्द पदमचन्द शोलापुरवालोंने कराई थी। प्रतिवर्ष मेला माघ सुदी ५ को भरता है। १६ दूकानोंका भाड़ा अनुमान ३००) रुपया सालाना आता है। प्रबन्धकर्ता दानवीर्य्य जैनकुल भूषण श्रीमान् शेठ माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी. महामन्त्री भा० दि० जे० ती० क्षे० क०, बम्बई, व त्रिभुवनदास दयालजी भावनगर निवासी हैं। मुनीम शा. धर्मचन्द हरजीवनदास बहुत योग्य और धर्मात्मा हैं। प्रतिवर्ष अनुमान पांच छह हजार यात्री आते हैं। इस तीर्थका प्रबन्ध बहुत अच्छा है।

पर्वत और मन्दिरोंका वर्णन।

श्वेताम्बरियोंकी "शत्रुंजयमाहात्म्य" नामक १४ सर्ग (अध्याय–परिच्छेत) की एक पुस्तक है, इसमें शत्रुंजयके महात्म्यका वर्णन है। श्वेताम्बर भाई सब तीर्थोंसे शत्रुंजयको बड़ा मानते हैं।

पर्वतपर हजारों मन्दिर करोड़ों रुपयोंकी लागतके हैं। इनमें श्रीआदिनाथ, कुमारपाल, विमलाशाह सम्पति राजा और चतुर्मुख सबसे नामी हैं, चतुर्मुखका मन्दिर २५ मीलसे साफ दिखता है। भारतवर्षके प्रायः सब शहरोंके जैनी मांदिरोंकी सहायता करते आते हैं और पर्वतपर मन्दिरोंको बनवाते हैं। प्रतिवर्ष हजारों यात्री तथा अन्य धर्मीलोग भी मन्दिरोंके दर्शन पूजनके लिये आते हैं। पर्वतपर चढ़नेके लिये 'झम्पान' जिसमें ४ कुली लगते हैं बहुत मिलते हैं।

पर्वतकी चढ़ाईके मार्गमें और खास करके श्रीआदिनाथके मन्दिरके पीछे बहुतसी छोटी कोठरियों तथा ताकोंमें मार्बलके तख्तेपर चरण चिन्ह हैं। कहते हैं कि इनको निर्धन जैनियोंने बनवाये थे। रास्तेमें बेडौल पत्थरकी सीढ़ियां हैं, किसी किसी जगह दुरुस्त सीढ़ियां भी हैं, जगह जगह विश्रामगृह हैं। बहुतसी जगह पर्वतकी बगलें खड़ी हुई हैं, जमीनसे कुछ ऊपर हनुमानका एक छोटा मन्दिर है, इस मान्दिरके पाससे उपरको रास्ते गये हैं:–पहिली दाहिनी ओर पर्वतकी उत्तर चोटीको, दूसरी बाईं ओर बीचवाली घाटीसे होकर दक्षिणी चोटीको। दाहिने रास्तेसे कुछ ऊपर जानेपर एक मुसलमानी पीरकी 'दरगाह' मिलती है। हनुमानका मन्दिर होनेसे हिन्दू लोग, दरगाहके होनेसे मुसलमान लोग भी पर्वतको अपना कहते हैं।

पर्वतके ऊपर दो चपटे शिखर हैं, दोनों शिखरोंके बीचमें एक घाटी है, प्रत्येक शिखर लगभग ३५० गज लम्बा है, घाटी और दोनों शिखर दृढ़ दीवारसे घिरे हुए हैं। दीवारोंमें छोटी छोटी भवांरियॉ बनी हुई हैं, बगलमें फाटक है, घेरेके भीतर अलग अलग प्रधान मन्दिरोंके घेरेके १९ फाटक हैं। इनमें एक प्रधान मन्दिरके साथ अनेक छोटे

मन्दिर हैं। सब फाटक रातको बंद कर दिये जाते हैं। शिखरकी दीवारपर चढ़नेसे 'शत्रुंजय नदी' दीख पड़ती है।

एक घेरेके मध्यमें चौमुख अर्थात् चार मुखवाला मन्दिर है। सिंहासनके कोनोंके पास चार विचित्र खम्भे लगे हैं। श्वेत मार्बलके सिंहासनपर १० फुट ऊंची 'श्री आदिनाथस्वामी' की ४ प्रतिमायें पद्मासनस्थ हैं। कुल प्रतिमाएँ अनुमान १२५ के हैं, कई प्रतिमाओंमें बहुमूल्य रत्न और सोनेके पत्तर जड़े हुये हैं। कहते हैं कि मारवाड़से लाकर मार्बल इस मन्दिरमें लगाया गया था।

ऐसा प्रसिद्ध है कि इस घेरेके भीतरके कई मन्दिर राजा विक्रमके समयमें बने थे, किन्तु यह निश्चय नहीं हुआ कि कौनसे विक्रमके समयके बनेहैं; उज्जैन विक्रमके, अथवा लगभग सन् ५०० ई० के हर्षविक्रमके, या कोई अन्यविक्रम था।

लेखोंसे विदित होता है कि संवत् १६७५ में सुलतान नूरुद्दीन जहांगीर, प्रिन्स सुलतान खुशरू और प्रिन्स खुर्रमके समयमें शनिवार वैशाख सुदी १३ को 'सोमजी' और उसकी स्त्री 'रजालदेवी' ने श्रीआदिनाथके चारमुखवाले मन्दिरको बनवाया, अर्थात् अहमदाबादके सेवा सोमजी ने मन्दिरको वर्तमान सकलमें फिर बनवा दिया।

वैज्ञानिक लोग अनुमान करते हैं कि शत्रुंजयके मन्दिरोंमें कई मन्दिर ११ वीं सदी के हैं। बाकी सब पीछेसे अब तकके बने हुये हैं। कई प्रसिद्ध मन्दिर सौ वर्षके बीच में बने हुये हैं।

एक स्थान (तीर्थ) में इतने जैनमन्दिरोंका जमाव हिन्दू अथवा बौद्ध लोगोंके किसी तीर्थमें नहीं है, यद्यपि काशी भुवनेश्वरमें हिन्दुओंके बहुतसे मन्दिर, सांची, पेशावर इत्यादिमें बौद्धोंके स्तूप और विहार हैं किन्तु वे छितराये हुये हैं।

शत्रुंजयपर सन्नाटा रहता है. कभी कभी प्रातःकालमें बहुत थोडे समय तक घंटा और नगाडेका शब्द सुन पडता है। और कई पर्वोंके दिनोंमें बडे मन्दिरमें गीतका शब्द सुनाई पड़ताहै यह क्या है? देवोंकृत अतिशय है। पर्वतपर कबूतर मयूर इत्यादि जीव जंतु निर्भय होकर विचरते हैं।

शोलापुर।

शोलापुर जिलेका सदर मुकाम जी० आई०पी० रेलवेपर स्टेशन है। यहांपर जैन दिगम्बर दशाहूमड़ सेतवाल, कासार, बीसा हूमड, पंचम, खंडेलवाल जातिके गृह ३३९ हैं तथा मनुष्य संख्या १०३० है। दिगम्बर जैनमन्दिर ९ व धर्मशास्त्र करीब ९२९ हैं। यहांपर शेठ नाथारंगजी जैन बोर्डिङ्ग हौस। जैनपाठशाला जैनबुकडिपो आदि कई जैन संस्था हैं। पाठशाला और बोर्डिंगका प्रबन्ध अति उत्तम है इनमें विद्यार्थियोंको उच्च-शिक्षा दी जाती है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये एक धर्मशाला भी है।

सुप्रसिद्ध शेठ हीराचन्द नेमचन्द ऑनरेरी मजिस्टेट, जैनधर्मके अच्छे मर्मज्ञ हैं। आप दक्षिण प्रान्तके जैनियों में अगुआ हैं ।

यहां व्यापारकी मंडी होनेसे प्रायः अधिक लोग व्यापार ही करते हैं और लक्ष्मीपात्र हैं ।

यहांपर देखने योग्य स्थान ये हैं:—सिद्धेश्वर ताल (यहां हरसाल जनवरीके महीनेमें मकर संक्रातिका मेला भरता है), किला,-जिसको बीजापुरके राजाओंने करीब ४००० साल के पूर्वमें बनवाया था । यह स्टेशनके पास है, कमेटीके बाग भी उसीके पास हैं। यहां कातनेकी और बुननेकी भी कई कलें हैं । 'एकरक ताल' स्टेशनसे ३ मीलके करीब है इसका घेरा ७ मीलके करीब है और पानी घहरा भराहुआ है । शहरसे इस झीलको पक्की सड़क जाती है । यह ताल आबपासीके लिये बनवाया गया था ।

सजोद ।

गुजरात प्रान्तर्गत भड़ोच जिलेमें बम्बई वड़ौदा रेल्वेके 'अंकलेश्वर' स्टेशनसे ६ मील की दूरीपर सजोद अतिशयक्षेत्र है । यहांपर एक प्राचीन जैनमन्दिर है, मन्दिरमें श्री शीतलनाथस्वामीकी दिव्य प्राचीन मूर्ति है । एक धर्मशाला है । (गुजराती) माघ वदी १४ को मेला भरता है। प्रबंधकर्ता अंकलेश्वर के पंच हैं ।

सतारा ।

वम्बई हातेके दक्षिण विभागमें कृष्णा और येना नदीके संगमके निकट जिलेका सदर स्थान सतारा शहर है सतारारोड़के रेलवे स्टेशनसे पश्चिम १० मील तक पक्की सड़क शहरको गई है ।

एक समय सताराके किलेमें दीवार बुर्ज तथा फाटक सब मिलाकर गिनतीमें १७ थे, शायद इसी कारणसे इसका नाम सतारा पड़ गया हो । सन् ईस्वीसे ९० वर्ष पहले सन् ३०० ई० तक सतारा अन्धभृत्य या शातकर्णीवंशके राजाओंके अधिकारमें था, इसके बाद चालुक्य राष्ट्रकूट यादववंशके राजाओंके अधिकारमें रहा । सन् १३२५ ई० में बहमनी खानदानके मुसलमान बादशाहने यादववंशके नाश होनेसे ले लिया । इसके पश्चात् छत्रपति शिवाजीने १६७३ ई० में साताराका किला ले लिया, और महाराष्ट्रोंके राज्यका केन्द्र बना लिया । सतारा पेशवाओंकी राजधानी नामसे प्रसिद्ध हुआ था सन् ९८४८ ई० में सताराके राजा आपा साहब निष्पुत्र मर गये तब अंग्रेज महाराजने उनका राज्य अपने राज्यमें मिला लिया ।

यहां देखने योग्य स्थान किला, पेशवाओंके महल, जेलखाना, जिलेकी कचहरियां फौजी छावनी, सताराकी मृतरानीके दत्तकपुत्र राजारामके पास सताराके राजाओंके

भूषण, छत्रपति शिवाजीकी जयभवानी नामक प्रसिद्ध तलवार, एक बघनखा नामक हथियार, एक गेंडेका ढ़ाल, जिसपर हीरेके फूल जड़े हुए हैं। एक डब्बा जिसपर हीरा, लाल, आदि रत्न जडे हैं। रत्न जड़े हुये कमल दावात, लड़ाईका बखतर और डेढ फुट लम्बा मूठमें हीरेका जडा हुआ खंजर वगैरः हैं।

सताराकी मनुष्य संख्या अनुमान ३० हजार है। दि० जैनियोंके कासार सैतवाल, और चतुर्थ जातिके ६५ घरोंकी मनुष्य संख्या २१७ है। खेद है कि इतनी जैनियोंकी संख्या होनेपर भी एक चैत्यालय तक नहीं है। इससे मालूम होताहैं कि धर्मप्रेम लोगोंमें बिलकुल भी नहीं है। कासार सभा, एक जैन धर्मशाला और महाकाली देवीफुंड नामक धर्मादा खाते हैं।

सांवरगांव ।

मोगलाई (निजाम) प्रान्तान्तर्गत जिला उस्मानाबादमें रेलवे स्टेशन बार्शी (G. I. P) से करीब २४ मील और शोलापुरसे १४ मील सांवरगांव क्षेत्र है। यहां पर दिगम्बरियों के गृह ५ हैं जिनकी मनुष्य संख्या १४ है। यहांपर परकोटासे घिरा हुआ पत्थरका हेमाडवंती नामका अति प्राचीन मन्दिर है। जिसमें चतुर्थकालकी मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा करीब ३॥ हाथ ऊंची कृष्ण पाषाणकी अत्यन्त मनोज्ञ वीतरागता प्रदर्शित करनेवाली विराजमान है। इसकी प्रदक्षिणाके रास्तेमें बाईं ओर दो प्रतिमाएँ नूतन प्रतिष्ठित हैं। और इनके पास 'नंदीश्वर' प्रतिमा विराजमान है। मन्दिरके गर्भगृहके साम्हने नक्काशी किये हुए ८ खम्भोंके मण्डपमें वेदी है। इस वेदीके बाईं तरफ संवत १९२९ में शेठ 'हीराचन्द नेमिचन्द' के पिता द्वारा प्रतिष्ठित की हुई दो प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मन्दिरके पीछे दो कमरोंमें नीचे लिखे हुये शिलालेख अस्पष्ट पाये जाते हैं।

(१) शके १८८७ क्रोधाक्ष नाम संवत्सरे मिती भाद्रपद शुद्ध ७......गादी 'मलखेड़'........मूलसंघे भारती गच्छे कुन्दकुन्द ....

(२) श्रीक्षेत्र' सांवरगांव मध्यें वरसे २३००........मूलसंघे......भारती गच्छे कुन्दकुन्दाम्नाये.......

इसी मन्दिरका जीर्णोद्धार ब्रह्मचारी पंडित 'बापूदासजी' ने संवत् १९२१ में कराया था। इस समय यह मन्दिर गिरने लगा है, और इसका जीर्णोद्धार फिरसे होना अवश्यक है। इसका प्रबन्ध शेठ 'गौतमचंद नाथूरामजी' के हाथमें है। और भण्डार खाता भी आपके ही पास है।

प्राचीन कालमें यहां बडी भारी यात्रा होती थी, परन्तु वर्तमानमें बहुत कम यात्री आते हैं।

सूरत।

बम्बई हातेके गुजरात प्रान्तमें तापती नदीके बायें अर्थात् दक्षिण किनारेपर समुद्र से १० मील पूर्व शहर सूरत जिलेका सदर मुकाम और बी० बी० सी० आय० रेल्वेपर प्रमुख स्टेशन है। स्टेशनपर घोड़ा गाड़ी आदि सवारी हरवक्त किरायेपर मिलती हैं।

प्राचीन कालमें सूरत शहर मुसलमानोंने अनहिवाड़ाके राजा भीमदेवको परास्त करनेके पश्चात् आपके आधीन करलिया तबसे सन् १७६९ तक उनके ही आधीन था। सूरतके नव्वाबने २ लाख रुपये वार्षिक पेन्शन कबूल करके अंग्रेजोंको शहर और किला दे दिया। सन् १६१६ में यहांपर अंग्रेजोंकी कोठी सूरतमें कायम हुई पश्चात् सूरतको बहुत शत्रुओंने लूटा और सन्१६६४में शिवाजीने भी ६ दिनतक शहरको खूबही लूटा, परन्तु अंग्रेजोंने आपके पराक्रमसे आपका और कैई व्यापारियोका रक्षण किया, तब औरंगजेबने प्रसन्न होकर अंग्रेजोंको उनका महसूल माफ कर दिया तबसे सूरतकी और उन्नति होनेलगी।

इस समय सूरतमें कुल मुनुष्य संख्या लगभग १२५००० है। और यह भारतवर्ष में २६ वां तथा बम्बई हातेके अंग्रेजी राज्यमें चौथा शहर है।

दिगम्बर जैन वीसा हुमड, दशा हुमड, वगैरः जातिके १३४ गृह और मनुष्य संख्या करीब ४०० के है। कुल दिगम्बर जैन मंदिर ७ हैं। नवापुरा और गोलपुरा में तीन २ मन्दिर हैं। पूजन प्रक्षाल यथोचित पञ्चोंकी तरफसे होती है। हरएक मन्दिरमें रोज शास्त्रसभा होती है। नवापुरा में मन्दिरके पास स्त्रीशिक्षा प्रसारके हेतुसे शेठ हीराचन्द गुमानजीके कुटुंबियोंने श्रीफूलकंवरबाई कन्याशाला स्थापन की है जिसमें दिगम्बर जैन कन्यायें धार्मिक तथा लौकिक शिक्षा पाती हैं। जैन यात्रियोंको ठहरनेके लिए बड़े मन्दिरके पास नवापुरामें एक धर्मशाला भी बनी है। शा. मूलचन्द कसनदास कापड़िया उत्साही नवयुवक हैं। आप दिगम्बर जैन नामक मासिक पत्रका सम्पादन करते हैं जिससे गुजरातके दिगम्बर जैनजातिपर बड़ा उपकार हुआ है।

सूरतके पास कटार ग्राममें जहां दिगम्बर जैनियोंका प्रसिद्ध क्षेत्र श्रीमद्भट्टारक विद्यानंदस्वामीको निर्वाण प्राप्त हुआ था, उनकी चरण पादुकाएं बड़े शिखरवन्द मन्दिरमें विराजमान हैं।

सूरतमें हिन्दुओंके मन्दिर और मुसलमानोंकी मस्जिदें; किला और दिल्ली आने वाली सड़कक निकट सन १८७१ का बना हुआ ८० फीट ऊंचा घड़ीका बुर्ज है जिसपर चढ़नेसे सूरतशहरकी सुन्दर शोभा देखने में आती है। सूरत वाकईमें देखने योग्य है।

सूरतका सामुद्रिक व्यापार पेहिलेसे अब बहुत घट गया है, तो भी रुई व अनाजका व्यापार बहुत होता है। विशेषकर जरीका काम और मिठाई यहांकी बहुत प्रसिद्ध है।

हैद्राबाद: दक्षिण।

दक्षिणप्रान्तके मध्यमें नव्वाव निजाम साहवकी रियासतकी राजधानीका प्रसिद्ध शहर हैद्रावाद मूसानदीके किनारेपर वसा है । निजाम स्टेट रेलवेका यह बड़ा स्टेशन है। स्टेशनसे एक छोटीसी लैन शहरमें से जाती है। इसका प्राचीन नाम भागानगर था। इसको कुतुवशाही खानदानका वादशाह महम्मद कुलीने सन १५८९ इसवी में वसाया था। ईसवी सन १९०८ में मूसानदीके तूफ़ानसे शहरका वड़ा भारी भाग ऊजड़ हो गया था। शहर के मध्यमें चार मीनार नामक स्थान देखने योग्य है। कहते हैं कि एक मीनारमें श्रीलक्ष्मीदेवीका वास है। इसके चारों ओर वडा वाजार और वड़ी २ इमारतें पाई जाती हैं। इन मीनारोंके पासही दिगम्वर जैन मन्दिर और धर्मशाला है। दि० जैन आम्नायके अग्रवाल, खंडेलवाल, आदि जातियोंके गृह ८३ हैं जिनकी ३०५ मनुष्य संख्या है। शहरसे करीव १॥ मीलकी दूरीपर 'हुस्सेनसागर' नामक वड़ा तालाव है इसका ही जल नलोंके द्वारा शहरमें जाता है । मक्का मस्जिद, मीर आलमका तालाव, किला, गोलकुंडा और राजमहल रजिडेन्सी आदि स्थान देखने योग्य हैं।

श्रीक्षेत्र होनसलगी।

निजाम रियासतके कलवुर्गा जिलामें श्रीक्षेत्र 'होनसलगी' स्टेशन (G. I. P. Ry.) 'सावळजी' से करीव २ मीलके फासलेपर है, स्टेशनपर वैलगाड़ीकी सवारी हरसमय मिलती है। यहांपर दिगम्वरियोंके गृह ७ हैं, जिनकी मनुष्य संख्या २७ है। ग्राममें एक प्राचीन 'श्रीपार्श्वनाथ-पद्मावती' नामक 'जिनमन्दिर' है । इसकी यात्राके लिये बोली (वरदान) कबूल करनेवाले यात्री हमेशा आते हैं। मन्दिरमें एक धर्मशाला भी है, जिसमे ५०-६० यात्री ठहर सकते हैं। श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा काले पाषाणकी करीव ४ फीट ऊंची कायोत्सर्ग धरणीधर सहित वेदीपर विराजमान है। वाहरकी तरफ दाहिने हाथमें श्रीशान्तिनाथस्वामीकी प्रतिमा ४ फुट ऊंची कायोत्सर्ग विराजमान है। और उसकी बाई ओर दो शासन देवियोंकी प्रतिमाएं कायोत्सर्ग पाषाणकी विनीत (नम्र) मुद्रा धारण किये हुए विराजमान है। और इनके पास ही 'क्षेत्रपाल' की मूर्ति है । और मुख्य मन्दिरकी वाई ओर श्रीजिनशासन देवी, पद्मावतीकी प्रतिमा पाषाणकी विराजमान है । इस मूर्तिसे ही यह क्षेत्र प्रसिद्ध हुआ है मन्दिरके वाहिरी भागमें शिलालेख कनड़ी मिश्रित पाली लिपीमें पाया जाता है। इस क्षेत्रके प्रबन्ध के लिये निजाम सरकारकी तरफसे ६।७ एकड़ जमीन इनाममें है। इस क्षेत्रका पूजन-प्रक्षाल का प्रवन्ध क्षेत्रकी आमदनी से अच्छा हुआ करता है, परन्तु भंडार खाता नहीं है।

श्रीपरमात्मनेन नमः।

मद्रास प्रांत

के

तीर्थक्षेत्र और प्रसिद्ध प्रसिद्ध शहरोंका वर्णन।

अर्काट।

कटपड़ी जंक्शनसे १९ मील पूर्वोत्तर और आरकोनम जंक्शनसे २३ मील पश्चिम दक्षिणकी तरफ मदरास रेल्वेपर अर्काटका रेल्वे स्टेशन है। स्टेशनसे ५ मील दक्षिणकी तरफ पलार नदीके दाहिने किनारेपर उत्तरी अर्काट व जिलेका सदर स्थान नामक यह कस्बा है। यह कस्बा एक समय कर्नाटकके नव्वाबकी राजधानी थी। रानीपेंट सिविल स्टेशन और यूरोपियनोंके रहनेकी जगह रेल्वे स्टेशनसे ३ मील दूर है।

सबसे पहिले यह पल्लववंशके राजाओंके आधीन था। फिर पल्लववंशके कमजोर होनेपर चोलवंशके राजाओंके आधीनमें रहा, बादमें क्रमशः विजयनगरके राजा, महाराष्ट्रों और मुसलमानोंके अधिकारमें चला गया। यहांपर मुसलमान, अंग्रेज और फरासीसियोंमें कई भारी २ लडाइयां हुई हैं।

थोडे समय पहिले यहांपर नव्वाबका महल देखने योग्य था, लेकिन अब बिलकुल उजड़ गया है, सिर्फ किलेके निशान मात्र ही शेष रह गये हैं। नदीके किनारेपर दिल्ली फाटक है। यही सिर्फ एक ज्योंका त्यों अभीतक बना हुआ नजर आता है, इसके देखनेसे पुरानी किलेबन्दीका अनुमान अच्छी तरह किया जा सकताहै। कई छोटे २ हौज हैं, जिनके पास एक ही घेरेमें मकबरा और जुम्मामसजिद है। मस्जिदसे पश्चिम की तरफ एक टीलेपर कर्नाटकके नव्वावोंका उजड़ा हुआ महल व इसीके पास एक झील है। इनके अलावा कचहरी, गवर्नमेंटस्कूल, दरगाह और चोलराजाओंके बनवायेहुये कई प्राचीन मन्दिर भी देखने योग्य हैं। अर्काटकी मनुष्य संख्या अनुमान ११ हजार के है। इसमें सिर्फ २ जैनियोंकी संख्या है।

श्रीक्षेत्र अर्प्पाकम।

यह ग्राम कांजीवरम् रेलवे स्टशनसे 'तिरुपारिथी कुनरम्' होते हुए करीब ९ मील दक्षिणकी तरफ आवाद है। दिगम्बर जैनियोंका यह प्राचीनक्षेत्र बहुत समयसे प्रसिद्ध

है । स्टेशनसे करीव ३ मील तक रास्ता अच्छा वनाहुआ है इसके वाद रास्ता पहाड़ी चट्टानोंका है ।

यहां जैन, हिंदू और वोद्धोंके मन्दिरोंका समूह अत्यन्त सुन्दर व देखने योग्य है ।

यहां ६ घर दिगम्वरियोंके और ७० घर 'निरपुसी' जैनियोंके हैं । मनुष्य संख्या अनुक्रमसे ३७ और २५० है ।

मन्दिरोंके समुहोंमसे हिन्दुओंके मन्दिर अच्छे हैं, और वौद्धोंका मन्दिर जीर्णावस्थामें है । दि० जैनमन्दिर वहुत छोटा है, परन्तु उसकी कारीगरीका काम अवर्णनीय है । पूजन प्रक्षाल योग्य समयपर होता है । मन्दिर अनुमान दो हजार वर्षका प्राचीन मालूम होताहै । यह पवित्र भूमि होनेके कारण यात्री लोग दर्शन पूजनार्थ हमेशा आया जाया करते हैं और दिन प्रतिदिन यात्रियोंकी आवागमनकी संख्या वढ़ती रहती है । अन्यमतावलम्वी भी दत्तचित्त होकर भगवान श्रीआदिनाथ महाराजके दर्शन पूजन करते हैं । किसी एक धर्मज्ञ निरपुसी जैनीकी यात्रियोंको ठहरनेके लिये एक 'धर्मशाला' वनी हुई है । परन्तु इस समय वह कैई जगहसे गिरने लगी है । उसकी मरम्मत होजाना अत्यंत आवश्यक है । इस क्षेत्रका प्रवन्ध 'नरयामपुथुर वालोंके' हाथमें है । नरयामपुथुरमें दिगम्वर जैनियोंके छै घर हैं परन्तु मन्दिर एक भी न होनेके कारण वे 'अर्प्पाकम' में दर्शनपूजनके लिये आते हैं ।

एडैयालम् ।

यह ग्राम दक्षिण 'अर्काट' जिलेमें साऊथ इन्डियन रेलवे लैनमें 'मेलम' स्टेशनसे करीव ३ मीलकी दूरीपर है । रास्ता पहाड़ी है और चारों ओर चक्कर देकर जाना पडता है । यहांपर श्रावकोंके आवाद घर करीव १५ व मनुष्य संख्या ७० हैं । यहांपर एक छोटासा शिखरवंद मन्दिर करीव तीन हजार वर्षका प्राचीन ज्ञात होता है। मन्दिरमें श्री "ऋषभदेवजी" की प्रतिमा खड्गासन विराजमान है । इसमें कुछ अच्छे २ कमरे भी हैं । कहते हैं कि यहां "श्रीमल्लिसेनाचार्य" मुनि इन कोठरियोंमें तपस्या करते थे, और इसको श्रीसिद्धान्त मुनिका जन्मस्थान भी वतलाते हैं । ग्रामसे कुछ दूरीपर श्री 'विमलनाथ' स्वामीकी पादुका है, इस लिये सर्व जैनीभाई पूजन प्रक्षालके लिये वहां अकसर कभी २ जाया करते हैं ।

कलीकोट ।

मद्रास हातेमें मलावार के किनारेपर मालावार (केरल चेरा देश) जिलेका सदर स्थान

कलीकोट नामक एक बड़ा कस्वा है। मद्रास रेल्वेकी दक्षिण पश्चिमकी शाखा कलीकोट तक गई है। कलीकोटका वर्त्तमान कस्वा १३ वीं सदीका है।

ऐसी कहावत है कि मालावारके मालिक 'चेरुमान पेरुमालने कलीकोट (जैमोरिन) को दे दिया। इसी हिन्द-राजाके समयमें सबसे पहिले यूरोपखंडके पोर्तगालदेशकी राजधानी लिस्बन शहरसे सन् १४९८ ई० की ११ मईको 'वास्कोडीगामा, कलीकोट' में आई थी। राजाने वास्कोडीगामाका स्वागत किया था। सन् १५१३ ई० में पोर्तगालवालोंने एक किला बनाया और सन् १६१६ ई० में अंग्रेजोंने अपनी कोठी कायमकी वादमें 'फरासीसी' और 'डचोंकी' कोठिया बनीं। इन लोगोंमें आपसमें कई लड़ाइयां हुई जिनमें अंग्रेज विजयी हुये और सन् १७९२ ई० में कलिकोटका सम्पूर्ण देश अंग्रेजोंके अधिकारमें हो गया।

यहां देखने योग्य स्थान पोर्तगीजोंकी वस्ती, कलेक्टरकी कचहरी, कष्टम हौस, समुद्र के किनारे यूरोपियन सराफोंकी कोठियां, लाइटहौस (रोशनी घर) सर्कारी आफिस, बहुतसी प्रसिद्ध इमारतें, पागलखाना, बैंक, गिर्जाघर, फरासीसियोंका मकान, स्कूल, कलीकोटके राजाका महल (जिसमें वास्कोडी गामाका स्वागत हुआ था। इसमें २ स्तम्भ अवतक विद्यमान हैं) इत्यादि कई स्थान हैं।

मलेवारके जंगलोंमें सुशोभित वृक्षोंके जंगल सघन घट डटे हुये हैं, मलावारका फैला हुआ सुन्दर जंगल अत्यंत बेशकीमती है। इसमें चन्दनकी उत्तम लकड़ी, बड़ी इलायची और काफी उपजती है, इनही चीजोंका बड़ा भारी व्यापार कलीकोटमें होता है।

कलीकोटकी मनुष्य संख्या अनुमान ६६ हजार है। जिसमें जैनियोंकी संख्या २७ है।

कांजीवरम (कांची)

मद्रास हातेके "चंगलपट्ट" जिलेमें तहसीलका सदर स्थान कांजीवरम कस्वा है। यह मद्रास हातेमें प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थस्थान और सप्त पुरियोंमेंसे एक पुरी है, "आरकोनम" जंक्शनसे १८ मील दक्षिण-पूर्व (South Indian Railway) कांचीका स्टेशन है। शहर स्टेशनसे करीब डेढ़ मील है। स्टेशनपर सवारी हरतरहकी मिलती है। कांचीमें कई धर्मशालाएँ हैं।

चीनके रहनेवाला "हायनसंग" सन् ६२९ से ६४५ ई० तक हिन्दुस्थानमें रहा था, उसने लिखा है कि 'कांची बौद्धोंके आधीन द्राविड़की राजधानी एक प्रसिद्ध नगर है।'

परन्तु बौद्धोंके पहिले कांची देशमें जैनधर्मका बहुत ही अच्छा प्रचार था, यहां तक कि जैन वंशगने इस जिलेमें अब तक मौजूद हैं। कांचीमें बड़े बड़े विद्वान् और तपस्वी, ऋषि, मुनि विहार किया करते थे, उस समय तक यहां बौद्धधर्मका प्रवेश नहीं था, परन्तु अन्य प्रान्तोंमें बौद्धधर्मका खासा प्रचार हो रहा था। जब तक भगवान् 'अकलंकदेवने' अवतार लेकर जैनधर्मकी फिरसे विजय दुन्दुभी नहीं बजाई तबतक बौद्धधर्म बराबर रहा है। 'स्वामी समन्तभद्राचार्य कांचीनगरीकेही रहनेवाले थे। स्वामीजीने कांचीदेशमें विहार करके जैनधर्मका बड़ा भारी उद्योत किया था और वादकी भेरी बजाकर विजय प्राप्त की थी। कांची ७ वीं, ८ वीं, और ९ वीं सदीमें 'पल्लववंश' और 'चोलवंश' के राजाओंकी राजधानी थी। १४ वीं सदीमें यह विजयनगरके हिन्दू राजाके अधिकारमें आ गई। और सोलहवीं सदीके आरम्भमें विजयानगरके 'राजा कृष्णराय' ने कांजिवरमके दो बड़े मन्दिरोंको बनवाया जो कि द्राविड़देशके सबसे बड़े मन्दिरोंमें से हैं। दक्षिणी भारतके कई बड़े मन्दिरोंको उन्होंने सुधरवाये। जब कि सन् १६४४ ई० में विजयनगरके राज्यकी घटती होने लगी तब गोलकुण्डाके मुसलमान बादशाहके हाथमें आगया। पीछे अर्काट राज्य एक हिस्सा बनगया और सन् १७५१ ई० में गवर्नर जनरल 'लार्ड क्लाइव' ने अर्काटसे लौटते समय फरासीसियोंसे कांजीवरमको छीन लिया। कांचीके रेल्वे स्टेशनसे डेड़ मील दूर शिवकांची है, और शिवकांचीसे २ मील दक्षिण पूर्व विष्णुकांची है। शिवकांचीमें शैवलोग और विष्णुकांचीमे रामानुज सम्प्रदायके वैष्णव रहते हैं।

शिवकांचीमें शिवका बड़ा मन्दिर है, इस मन्दिरमें सुन्दर गोपुर बड़े बड़े मण्डप और कइ शिवलिंग हैं।

विष्णुकांचीमें वरदराजविष्णुका विशाल मन्दिर पत्थरका बनाहुआ है, मन्दिरमें वरदराजविष्णुकी श्याम चतुर्भुज खडी मूर्त्ति बहुमूल्य भूषणोंकर सुशोभित है। और भी कई मूर्त्तियां है। इन मंदिरोंमे मूर्त्तियोंके आभूषण रत्नजडित लाखों रुपयोंके हैं। मंदिरके तालाब और घाट देखने योग्य हैं। मई महीनेमें यहां बड़ा भारी मेला भरता है। कांजीवरमकी मनुष्यसंख्या ४३ हजार हैं इनमें दिगम्बर जैनियोंके आबादी २५ गृह व मनुष्यसंख्या ८० के करीब हैं। वर्त्तमानमें यहां जैनियोंका एक भी मंदिर नहीं है, लेकिन यहांके भाई दर्शनपूजनार्थ दो मीलपर 'तिरुपरियीकुनरम' को जाते हैं।

तिरुपयीकुनरुमूमें 'वेयावती' नदीके किनारे दो दिगम्बर जैनमन्दिर करीब दो हजार वर्षके प्राचीन हैं। इसमें बडा मन्दिर तो बहुत ही सुन्दर रमणीय और देखने योग्य है। इसमें कई प्राचीन शिलालेख खुदे हुए हैं। मंदिरके दोनों बाजुओंपर पांच गोपुर

दहलान और दीपस्तम्भ हैं। शिलालेखोंसे मालूम होता है कि, इसके पूजनप्रक्षाल आदि प्रबन्धके लिये कई राजाओंने पांच-सात ग्रामकी जमीन मुफत दी थी, परन्तु अब जमीन वगैरः कुछ नहीं है। करीब १२ वर्ष पूर्वमें यहां 'अप्पास्वामी नैनार' बेल्लारीसे आकर रहने लगे थे और उन्होंने इस मंदिरका प्रबन्ध अपने हाथमें लिया था तबसे मन्दिरके पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध योग्य रीतिसे अच्छा होने लगा है।

कारकल।

(अतिशय क्षेत्र)

कारकल दिगम्बर जैनियोंका अत्यंत प्राचीन तीर्थस्थान जिला दक्षिण कनैड़ामें सीमोगा (M. S. M. Ry.) स्टेशनके पास 'मूडवद्री' से दस मील है। यहां दिगम्बर जैनियोंके घर १० तथा मन्दिर १८ बहुत प्राचीन और मनोज्ञ बने हुए हैं। यहां पर्वतपर श्रीबाहुबलीस्वामीकी कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा करीब ३२ फीट ऊंची अति मनोज्ञ विराजमान है। इस पर्वतके सामने दूसरे पर्वतपरके मन्दिरमें चारों ओर तीन तीन प्रतिमाएँ खड्गासन बहुत भारी २ स्थित हैं। एक मन्दिरके आगे ३० गज ऊंचा एक बहुतही मनोज्ञ मानस्तम्भ सुंदर कारीगरी युक्त विद्यमान है। इनके सिवाय यहां 'रानी-केरे' वा 'एलिफैन्ट' नामक तालाबके मध्यमें एक प्राचीन मन्दिर था जो कि 'चतुर्मुख-बस्तीके' नामसे प्रसिद्ध था। जैनियोंकी शिथिलता करके व अब नहोने सम्भाल भली-प्रकारसे यह मन्दिर अत्यंत जीर्णावस्थामें हो गया है। अगर यही हाल रहा तो चंद रोजमें नाम मात्र भी नहीं रहेगा। तालाबके पासके एक प्राचीन 'शिलालेख' से विदित होता है कि, इस मन्दिरको 'भैरव वोडिअर' नामक जैन राजाने बनवाया था। पर्वतपर और भी बहुत सी प्रतिमाएँ अत्यंत प्राचीन कारीगरीका स्मरण कराने वाली विराजमान हैं।

यहांपर भी एक पट्ट बहुत कालसे स्थापित है। वर्तमानमें उसके अधिकारी भट्टारक 'ललितकीर्तिजी' पट्टाचार्य हैं। उनके पास करीब ५० धर्मशास्त्र हैं। यात्रियोंको 'ठहरनेके लिये ग्राममें एक धर्मशाला बनीहुई है। यहां मेला माघ और फागुन शुक्ला १५ से ७ दिन तक भरता है। मेलेका और क्षेत्रका प्रबन्ध 'शंकर' पड़ियाल कारकल निवासीके अधीन है।

कुम्भकोनम्।

मद्रास अहातेके 'तंजोर' जिलेमें यह शहर 'कावेरी और अरासलर' नदीके संगम: (दो नदियोंके मिलनेके स्थानको संगम कहते हैं) पर हिंदुओंका पवित्र क्षेत्र है पूर्वकाल मे यहां 'चोल' राज्यकी राजधानी थी और विद्याके लिये प्रसिद्ध था. अब भी प्रसिद्ध है। यहां हिन्दुओंके मन्दिर बड़े बड़, सुन्दर देखने योग्य हैं। कहते हैं कि यहां बारहवें साल गंगाजीका पानी तालमें आजाता है, और उस मौकेपर अगणित नरनारी इसमें स्नान करते हैं।

यहां दिगम्बर जैनियोंके १२ गृह व मनुष्य संख्या ७९ है, परन्तु पाठशाला, मन्दिर धर्मशाला आदि कुछ नहीं हैं। कहते हैं यहांपर जो जैनी रहते हैं वे करीब दोसौ वर्ष पहिले व्यापारके लिये कर्नाटकसे आये थे। यहां दो स्वेताम्बरियोंके भी घर हैं जो बंगरी और ताम्बे पीतलके बर्तनोंका व्यापार करते हैं।

कुम्भकोनम् जंकशनपर सवारी किरायेपर हमेशा मिलती है। कुम्भकोनम्मे अन्य-मतियोंकी कई धर्मशालायें हैं जिनमें दो या तीन दिन लोग विना किराये ठहर सकते हैं।

यहां देखने योग्य चीज टौन हॉल, सर्कारी कॉलेज और हाई स्कूल है।

कोचीन।

मद्रास हातेके कोचीन राज्यके सब डिवीजनमें कोचीन एक कस्बा है, इसमें ८ गांव शामिल हैं। कोचीनसे २ मीलपूर्व 'एरना कोलम' कस्बेमें कोचीन नरेश रहते हैं। वर्त्त-मान कोचीन नरेश राजा 'सर वीरकेरल के० सी० आई० ई०' गद्दीपर विराजमान हैं। आप जातिके क्षत्रिय हैं। महाराज न्याय शास्त्रके अच्छे पण्डित हैं व शास्त्रार्थका बड़ा शौकहै। महाराजकी ओरसे संस्कृत ग्रन्थमाला निकलती है, इसके द्वारा कई प्राचीन अलभ्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। स्वयं महाराजने भी दो तीन ग्रंथोंकी रचनाकी है।

कोचीन राज्यके जङ्गलोंमें वेशकीमती लकड़ी, दवा रंग. गोंद. इलायची बहुत पैदा होती है और इनही चीजोंका व्यापार प्रायः अधिक होता है।

कोचीनके राज्यमें प्रधान महाराजका महल, आफिस व हाईस्कूल. कचहरियां, २ गिर्जे, सुन्दर इमारतें. और बाजार देखने योग्य हैं।

टुमकूर।

बंगलोर शहरके रेल्वे स्टेशनसे ४० मील पश्चिमोत्तर टुमकूरका रेल्वे स्टेशन है। देवराय नामक पहाड़ीके पास मैसूर राज्यमें टुमकूर जिलेका सदरस्थान है।

टुमकूर कसबा केले, कसइली, नारियल इत्यादि वृक्षोंके कुंजोंसे सघन घट घिरा हुआ है। यहां डिप्टी कमिश्नरकी कचहरीका विशालभवन, इंजीनियर और अमलदारके आफिस, मिशन स्कूल, जेलखाना, अस्पताल देखने योग्य हैं। यहां १२० लुहारके घर हैं जिनके यहां लड़ाईके हाथियार और छुरियां बनती हैं। अलावा इसके भांतिकी २ पत्थरकी मूर्त्तियां कपड़े और कई तरहके बाजे तैयार होते हैं। प्रति बृहस्तिवारको मेला होताहै। ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर राजावंशके एक राजाने इस टुमकूरको बसाया था।

टुमकूरकी मनुष्यसंख्या अनुमान ११ हजार है, जिसमें दि० जैनियोंके पंचम जातिके ११ घरोंकी ९६ मनुष्य संख्या है। जैनमन्दिर नहीं है।

तिंडिवनम्।

यह कमिश्नरीका सदर मुकाम व साऊथइण्डियन रेलवेका खास स्टेशन है। तिन्त्रिनीवनम्का तिण्डिवनम् अपभ्रंश है। जिसका कि अर्थ "इमलीका जंगल" होताहै।

इस ग्रामकी तहसील भरमें दि० जैनियोंकी मनुष्यसंख्या करीब चार हजार है, परन्तु तिण्डिवनम्में केवल ५ गृह व २५ मनुष्यसंख्या है। दि० जैनियोंका मन्दिर एक भी नहीं है, हालांकि 'जिंजी' से लाई हुई एक जैनप्रतिमा पद्मासनस्थ नगरके उत्तरकी ओर एक बगीचेमें विराजमान है। इस प्रतिमाके मस्तकपर तिगुना मुकुट है, और दो मूर्तियां उसपर चमर ढार रही हैं। वृत या कोई पर्वोंके दिनोंमें यहांके जैनीभाई कभी दर्शनपूजनके लिये जाया करते हैं।

स्टेशनपर यात्रियोंको ठहरनेके लियें सराएं और धर्मशालाएं हैं।

पहले यहांपर चमड़ेका तथा कपड़ा बुननेका काम अच्छा होता था, परन्तु इस समय कुछ नहीं होता है। केवल 'जाफिग पटाई' में कुछ बुननेका काम होता है।

श्रीक्षेत्र तिरुमलै।

उत्तर अर्काट जिलेमें 'साऊथ इंडियन' रेल्वे लैनपर पोलूर स्टेशनसे करीब ६ मील वायव्य कोनमें यह प्राचीन क्षेत्र पंच * क्षेत्रोंमें से प्रसिद्ध है। स्टेशनसे मढिमंगलम्

* पंचतीर्थोंके नाम—दीपनगुड़ी, तिरुनरुनकुतिरुकालम् वागम् नामक तानरम्, तिरुमलै, तिरुपारुथी कुनरूम्, तिरुमलै। इनमेंसे तिरुमलै जो मदरासके पास था कहते है, कि समुद्रमें डूब गया है। इन तीर्थोंका वर्णन तामिल ग्रन्थमें है जिसको इस समय मदुरा तामिल 'संगम' ने प्रसिद्ध किया है।

तक रास्ता अच्छा है और शेष रास्ता चट्टानोंका है। स्टेशनसे पहाड़की तलेटीतक सवारी हर समय किरायेपर मिलती है। पहाड़की तलेटीके आसपास बहुतसे छोटे बड़े ग्राम हैं, जिनमेंसे तिरुमलै प्राचीन कालसे क्षेत्र होनेका कारण प्रसिद्ध है। वर्त्तमानमें वहांपर दिगम्बर श्रावकका घर एक भी नहीं है केवल जैन वढियारोंके (पूजारी) १० गृह तथा ४० मनुष्य संख्या है।

तिमलै पहाड़ करीव १००० फीट ऊंचा है। करीव ३०० फीटकी ऊंचाई पर ४ दिगम्बर जैनियोंके मंदिर बड़े उत्तम बने हुये हैं। तलेटीसे इन मंदिरोंतक सीढ़िया बनी हैं। पूजनप्रक्षाल आदि दूसरे मन्दिरमें होता है। शेष दो मन्दिर एक गूफामें हैं। इस गूफाकी पिछली बाजूमें बहुत बड़ी चट्टानपर चार जैनमूर्तियां खुदी हैं। इस गुफाको रंगीन खोई कहते हैं, कारण इसमें सुनहरी और रंगीन कारीगरीका काम बहुत मनोज्ञ पाया जाता है। यहांपरके शिलालेखोंसे मालूम होता है कि करीव एक हजार वर्ष पूर्वमें इस क्षेत्रका नाम 'वैगाई' था पहाडकी चोटीमें और गुफाके आसपास चट्टानोंपर तीन चार शिलालेख हैं जिनका वर्णन या सारांश आगे दिया है।

पहाड़की चोटीपर ३ मन्दिर अति उत्तंग हैं, जिनमें एक नैऋत्य दिशाकी तरफक गिरा हुआ है इसके सामनेकी चोटीपर एक एक चैत्यालयमें २० वीस फीट ऊंची काले पत्थरकी प्रतिमाएं कायोत्सर्ग विराजमान हैं। पूर्व-बाजूमें श्रीपार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर हैं, इसका जीर्णोद्धार सरकारकी तरफसे हुआ है। कहते हैं कि यह पादुका श्रीमत् 'ऋषभसेन्' गणधरकी है।

तलेटीमें गोपुरके सामने गडे हुए चट्टानपरके शिलालेख का सारांश-

तिरुमले पहाडका शिलालेख तामिल भाषामें है जिसका भावार्थ यह हैः-यहांपर किसी एक मुनि और 'गुणवर्मा' नामक जैन अध्यापकने तपस्याके लिये यह खोह बनवाई और उसका नाम 'गणिशेखर[1] मरुपोर[2] चुरियन[3]' रक्खा।

तिरुमलै पहाड़की चोटीमें चट्टानपर का शिलालेख तामिल भाषामें लिखा हुआ उदे-यार 'राजेंद्र चोडदेवके' समयका (शके १०००) है उसका सारांशः-उदेयार 'राजेंद्र चोडने' अपने अतुल पराक्रमसे राजा 'इरामका' मुकूट हराया और 'सीलोन' के राजाको परास्त किया 'चामुण्डाप्पै नानाप्पायन' व्यापारीकी औरतने पेरुम्बाणप्पाडीवा कराई वरी मलीनूर वैगावूर पहाडपुरके श्रीकुन्दवई जिनालयका पल्लिचण्डम् तिरु नन्दादीप दिया है।

शिलालेख नं० ३.

यह शिलालेख रंगीन गुफा और गोपुरकी सीढ़ियांके बीच गड़ी हुआ चट्टानपर तामिली भाषामें खुदा है।

---

१ मुख्य गुरु २ मरुदेव और मरुदेवी (श्रीऋषभदेव प्रथम तीर्थंकरकी माता) ३ सूर्यकेसमान।

भावार्थः-प्रान्त 'जयकोंडा रोन्डा मण्डल' में पांगल-नाड्ड भागका मुगाईनड्ड वैगावूरका पल्लीचण्डममें पवित्र पहाड़के मन्दिरके लिये तिरु नंदा दीप दिया है इस नंदा दीपके प्रबंधके लिए कुछ जमीन दी है और उसकी मरम्मतके लिये २० कसु ईनाम दिये थे। मन्दिरका नाम श्री 'आरम्भनंदिनमहाराज' है । और एक पल्लव खानदानकी राणी सिण्णवाईजे अखंड नंदा दीप जलानेके लिये ६० कुसु इनाम दिये हैं।

शिलालेख नं ४

तिरुमलै पहाड़पर की रंगीन खोहपर के किवाड़की भींतपर है।

भावार्थः-चेर खानदानका आदिगैमानींने वा व्यामुक्तश्रवणो जिवल पहाड़पर यक्ष और यक्षीकी मूर्तियां स्थापितकी और अरहसुगिरी श्रीअर्हत पहाड़पर घंटा और ढोल अर्हतके लिये अर्पण किये हैं। महाराजके नामसे पुकारते हैं । कहते हैं कि इस मूर्तिको एक पठाण इस ग्रामकी ओर लाया था । जिस बैलकी गाडीमें यह मूर्ति थी वह इसी ग्राममें अटक गई, आगे न चली । उसी रात्रिको उस ग्रामके पाटील (मालगुजार) सैतवाल जैनको स्वप्न आया कि तू अपनी स्त्रीके अंगके आभूषण देकर इस मूर्तिको ले। उस पाटीलने प्रातःकाल होतेही वह प्रतिमा पठानसे लेकर एक जिन मन्दिर बनवाया और उसमें मूर्तिकी प्रतिष्ठा कराई।

इस मंदिरका भंडारखाता और प्रबन्ध हिरोंली निवासी शेठ 'लीलाचंद' 'हेमचंदजीके' आधीन है।

तिरुवन्नमलईकी पण्डनी पहाड़ीपर सुब्रह्मण्य अर्थात् महादेवके पुत्र स्कन्दका सुंदर मन्दिर है।

तिरुवाडी।

जिला 'तंजौर' में 'कडलोरसे' यह ग्राम १४ मील पश्चिममें है, जो रास्ता पार्वतीपुरमको जाता है उसके किनारेपर बसा है। ग्रामकी मनुष्य संख्या करीब ५००० हैं, परन्तु जैनीका केवल एकही गृह है। कुछ दिनों यह ग्राम तहसीलका सदर मुकाम रहा था। इतिहाससे मालूम होता है कि यह कसबा 'आदिगैमन' राजाकी राजधानी थी । यह राजा परम जैन था और इसके राज्यका विस्तार 'सालेम' जिलेमें 'धर्मपुरीसे' 'कमवयनलूरतक था। यह कथा शैवोंका देवारम नामके कवित्त बद्ध ग्रंथमें भी लिखी है।

ऐसा मालूम होता है। कि यह नगर प्राचीन कालमें जैनियोंका था। शैवोंका ग्रंथ ईसाकी १८ वीं सदीमें लिखा मालूम पड़ता है 'तिरुवाडी विजयानगर' के राजाओंका १८ वीं सदीमें प्रान्तका सदर मुकाम था।

यहांके खेतोंमें दो दिगम्बर जैन मूर्तियां खोदनेसे मिली हैं । इनमें से प्रतिमा की अवगाहना पद्मासन ४॥ फीट ऊंची यज्ञोपवित धारणकी हुई है । वहांके शिवमन्दिर एक दिवालमें विराजमान हैं । दूसरी प्रतिमा यहांसे उठाकर 'कोभारपनयाक्कान' पेटेमें एक धर्मशालाके आंगनमें स्थापना की है । यह ग्राम 'तिरुवंडिपुरम्' के निकट है यह प्रतिमा भी ४॥ फीट ऊंची पद्मासनस्थ विना यज्ञोपवीतके है ।

तिरुवाढीके शिवके मन्दिरमें प्राचीन कालके 'गंगापल्लव, पाण्ड' और 'चोल' आदि कई राजाओंके शिलालेख पाये जाते हैं ।

तंजोर ।

यह नगर कावेरी के डेल्टा (शाखा) के निकट इंडियन रेलवेपर वड़ा स्टेशन है । इसके आस पास खेतोंको पानी देनेके वास्ते बहुतसी नहरें बनी हुई हैं । तंजोर 'चोल-वंश' के राजाओंकी सबसे आखिरी राजधानी थी, उसके बाद 'विजयानगरकी' तरफसे नायक इसका हाकिम हुआ । १६५६ और १६७५ के बीचमें मरहठोंके हाथमें रहा । १७७८ में तंजोरकी रियासत अंग्रेजोंके हाथ आगई और शिवाजीके मरनेके बाद राजधानी भी १८८५ में अंग्रेजोंके हाथमें आगई ।

तंजोरमें दिगम्बरियोंके १४ घर हैं जिनकी जनसंख्या ७६ है । एक प्राचीन दिगम्बर जैनमंदिर भी है ।

यह शहर मन्दिरों के कारण बहुत प्रसिद्ध है, सबसे बड़े मंदिरके दो आंगन हैं, एक तो बाहर जो २५० फीट चौकोर और दूसरा अंदर जो ५०० फुट चौडा है इसीके बीचमें मन्दिर है जिसके बीचका बुर्ज हिन्दुस्थानमें सब बुर्जोंसे सुन्दर है इस बुर्ज का घेरा नीचे ९६ फुट तथा ऊंचाई २० फुट है, चोटी पर पत्थरका बडा गोल गुम्बज रक्खा है, कहते हैं कि इस गुम्बजके पत्थरके चढ़ानेके लिये ५ मील जमीन ढालू की गई थी ।

दरवाजेकी बुज मन्दिरके सब हिस्सोंसे प्राचीन है और शिवजीके नामपर हैं इसको कांजीवर्मके एक राजाने १३३० ई० में बनवाया था । बड़े दरवाजे और मन्दिरके बीच में शिवजीका बैल नन्दीका मंदिर है । बैलकी मूर्ति पक्के पत्थरको काटकर बनाई है, यह मूर्ति १६ फुट लम्बी १२ फुट ऊंची है इस मूर्तिको प्रतिदिन तेल मले जानेके कारण पीतल सरीखी चमकती है मंदिरमें विचित्र बात यह है कि कंगूरोंपर तो विष्णुकी मूर्तियां बनीहैं पर आंगनमें शिवजीकी मूर्तियां बनी हैं ।

बडी बुर्जके उत्तरकी ओर शिवजीके पुत्रका मन्दिर है, इसपर बेलबूटेका बड़ा सुन्दर काम किया हुआ है, इसकी बाहिरी दीवालमें पानीका एक नलहै. जिसका पानी

मूर्तियोंपर डाला जाताहै और पीछे पवित्र समझकर लोग पीते हैं और तंजोर पूर्व समयमें विद्याका घर रहा है। यहांपर रेशमीगलीचे, मलमल, सूतीकपड़े, जेवर, तांबे पीतलकी चीजें वहुत अच्छी वनती हैं।

पुण्डी।

जिला उत्तर अर्काटमें 'अर्नी' स्टेशनसे (S. J. R.) करीव ३ मील है। रास्ता खराव है। ग्राममें नाममात्र ३ घर हैं। जिनमें एक वढियार पुजारीका घर है। शिखरवन्द मन्दिर प्राचीन बहुत विशाल, पत्थरका बना हुआ है। सबसे वाहरी मन्दिरके चारों ओर एक वडा पत्थरका आकार है। इस बृहत् मन्दिरके भीतर जानेसे १६ खम्भोंका एक दहलान मनोज्ञ शिल्पकला संयुक्त है, इसके सामने दो और दहलान हैं, जिसके मध्यमें वेदीपर श्रीपार्श्वनाथस्वामी २३ वें तीर्थंकरकी प्रतिमा करीव ५ फुट ऊंची कायोत्सर्ग अतिमनोग्य विराजमान है। सोलह खम्भोंके दहलानके सामने आकारके मध्यमें शिखरबंद मन्दिर ३ हैं जिनकी वाहरी वाजू चित्रकलासे सुशोभित है। एक मन्दिरमें ब्रह्मा और यक्षकी मूर्ति, दूसरेमें श्रीकुष्माण्ड देवी (यक्षी) की मूर्ति विराजमान है। इस मन्दिरके वीचोंवीच पश्चिमी दीवारपर ७-८ लकीरका और दक्षिण दीवारपर २-३ डोरीका शिलालेख पाया जाता है। अस्पष्ट होनेके कारण पढ़ा नहीं जाता है। और इसके वगलमें तीसरे मन्दिरमें अतिमनोग्य परम दिगम्बर श्रीऋषभदेवकी मूर्ति वेदीपर विराजमान है। इन मन्दिरोंकी एक कथा ताड़पत्रपर तामील लिपीमें लिखी हुई पुजारीके पास है। उस कथाका सारांश यह है:-

प्राचीन कालमें 'पण्डाईवेडू' नगरके राजाके राज्य-प्रवन्धमें यहांपर बड़ा जंगल था उसमें दो शिकारियोंको जमीनके अन्दर कुछ कंदमूलके लिये खोदे हुये खड्डेमें यह श्रीऋषभदेवकी प्रतिमा प्राप्त हुई। और वे शिकारी अपना भाग्योदय जानकर उसका पूजन करने लगे। तत्पश्चात् वहां जंगलमें घूमते घूमते एक दिगम्बर जैन मुनि आये। शिकारियोंने उनका आदरसत्कार करके मुनिमहाराजकी यथाविधि पूजन की, और प्राप्त हुई प्रतिमा वताई, प्रतिमाको देखकर मुनिजी अति आनंदित हुए, और मन्दिर और प्रतिष्ठा होनेके वाद भोजन करनेकी प्रतिज्ञा की, पर त्यागी होनेके कारण उनके पास धन नहीं था तव मुनिमहाराज चिंतामें पड़े। कुछ दिन वीतनेके वाद मुनिमहाराजको स्वप्न हुआ कि यहांके प्रवन्धकर्ता पण्डाईवेडू' नगरके राजाकी कन्याको किसी एक वदमाश भूतकी वाधा हुई है और वह हमेशा नंगी रहती है, और जव नौकर चाकर उसको कपड़े पहिनाते हैं तव ये उनको मारने लगती है। राजानें भूतको भगानेके लिये वहुत प्रयत्न किए, परन्तु सव निष्फल हुए. इस लिये आप भूतको भगा दीजिये इसीसे कार्यसिद्धि होजा-

यगी । स्वप्नके होने बाद जागकर मुनिमहाराजनें दोनों शिकारियोंको कुछ मिट्टी देकर राजाके पास भेज दिया और राजाको सन्देशा भेजा कि यह मिट्टी लड़कीके शरीरमें लगानेसे सब पिशाच बाधा (भूतलीला) दूर हो जायगी । यह बात सुनकर राजानें मिट्टीको सादर लेकर उस लड़कीके शरीरमें लगा दी तब वह बदमाश भूत वहांसे निकलकर मुनि जीकी शरणमें आया । मुनिने उसको द्वारपालका काम दिया और उसको ठहरनेके लिये एक झाड़के नीचे जगह दी ।

पंडाई नगरका राजा पोशाक पहिन कई आदमियोंको साथ लेकर मुनिजीके पास इस जंगलमें नम्रभावसे शरणमें आया । तब मुनिमहाराजने राजाको प्रसन्न आते देखकर मन्दिर बनानेके लिये कहा राजाने उसी समय यहां पत्थर, चूना आदि सामग्री भेजकर ८ दिनके अन्दर मन्दिर बनवाया, और मुनिजीसे प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई तत्पश्चात मुनिमहाराजने प्रायश्चित्त लेकर आहार गृहण किया। इसके कारण यह अतिशयक्षेत्र हुआ परन्तु अप्रसिद्ध होनेसे और मन्दिरोंकी मरम्मत न होनेसे मन्दिरजी गिरने लगे हैं ।

पेरावूर ।

पेरावूर सबसे बडा जैनियोंका ग्राम (S. I. R.) लैनमें, तिण्डिवनमसे करीब १५ मीलकी दूरीपर है । स्टेशनसे सवारी हरवक्त मिलती है । १० मीलके करीब रास्ता अच्छा बना है इसके बाद ५ मील जङ्गलमेसे जाना पड़ता है । अनुमानसे मालूम होता है कि प्राचीन कालमें इसके चारों ओर जैनियोंकी ही वस्ती थी, कारण इस प्रान्तके चारों तरफ निरपुसी अवतक पाये जाते हैं, सब पहिले प्रायः जैनी ही थे इन्हें यहांके राजाके अन्यायसे शैव होनापड़ा परन्तु वे इस समय भी जैनधर्ममें विशेष प्रीति रखते हैं ।

इस समय यहांपर ४७ गृह दिगम्बर जैनियोंके हैं, जिनकी मनुष्य संख्या १६५ है। एक मन्दिर शिखरबन्द है जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी श्यामवर्ण पाषाणकी कायोत्सर्ग प्रतिमा करीब ६ फीट ऊंची विराजमान है और ५-६ प्रतिमायें और भी धातुकी छोटी २ हैं । पूजन प्रक्षाल एक वढ़िआर (जैन ब्राह्मण) करता है ।

यहांसे करीब १० मील पूर्वमें एक और बड़ा जैनियोंका 'वेल्लूर' नामका ग्राम हैं। वहां दिगम्बर जैनियोंके गृह ५५ और मनुष्य संख्या १८८ है । यहांपर श्रीवीरसेनाचार्यजी मोक्ष पधारे हैं । कहते हैं कि उन्होंनें यहांके मन्दिरमें जो श्रीपार्श्वनाथस्वामी २३ वें तीर्थंकरकी प्रतिमा विराजमान है श्रवणबेलगोला क्षेत्रसे लाकर प्रतिष्ठा कराई और जैनधर्मकी रक्षा की थी मन्दिरमें धर्मशास्त्र करीब ४० हैं । पूजन प्रक्षाल का प्रबन्ध एक वढ़ियार (जैन उपाध्या) के हाथमें है ।

यहांकी और पेरावूरकी आब हवा कुछ गरम है । व्यापार नारियल सुपारी आदिका अधिक होता है ।

पेरुमण्डूर।

अर्काट कमिश्नरीमें 'तिण्डिवनमसे' ४ मीलके करीब 'पेरुमण्डूर' सबसे बड़ा प्राचीन जैनियोंका ग्राम है। दिगम्बरियोंके यहां ९० घर हैं जिनमें ३०० के करीब जैनी रहते हैं। ग्रामके दोनों मन्दिर बहुत अच्छे हैं, जिनमें एक प्राचीन, और दूसरा अर्वाचीन करीब २०० वर्षका है। अर्वाचीन मन्दिरमें डेड़सौ मूर्तियां पीतल और अन्य धातुओंकी अति शोभायमान हैं। मन्दिरकी दीवालपर एक लेख पाया जाता है उससे यह प्राचीन कथन प्रकट होता है:–

ग्रामकी शासन देवी श्री 'धर्मादेवीकी' प्रतिमा अति मनोज्ञ व बड़ी है, वह मद्रासके निकट प्राचीन ग्राम मैलापुरमें थी। एक समय किसी आदमीको स्वप्न हुआ कि "मैलापुर समुद्रमें डूब जावेगा इस लिये मूर्तिको यहांसे उठाकर दूसरे ग्राममें ले जाओ" तब वह आदमी नींदसे उठा और दूसरे दिन मूर्तिको गाडीमें रखकर दक्षिणकी ओर ले गया। जब गाड़ी इस ग्राममें आगई तब यहांसे बहुत प्रयत्न करनेपर भी आगे न चल-सकी तब यहां मन्दिर बनवाया और मूर्तिकी प्रतिष्ठा बड़ी समारोहसे कराई गई तबसें यह स्थान प्रसिद्ध हो गया है।

दोनों मन्दिरोंमें पूजन प्रक्षाल प्रतिदिन ठीक समयपर होता है। २०० वर्ष पूर्वमें 'संधि महामुनि' और 'पण्डित महामुनिने चित्तम्बूर ग्राममें वहांके ब्राह्मणोंके साथ वाद विवाद कर कर जैनधर्मका डंका बजाते रहे थे तबसे यह दिगम्बर जैनियोंका विद्यापीठ हो रहा है। इस समयमें भी कई जैनीभाई धर्मशास्त्रोंके जानकार पाये जाते हैं। वर्त्त-मानमें जो 'दि० जैन पाठशाला' यहांपर बहुत कालसे स्थापित है, उसमें पं० 'चंद्रनाथ नैनार मेल–'मल्यानूर' वाले और पण्डित 'दोरासामी मुदलियार 'तिरुवालूर' (S. I. R.) वाले छात्रोंको धर्मशास्त्रोंकी शिक्षा देते हैं। ये शास्त्रीजी जैनधर्मके अच्छे जानकार हैं और संस्कृत, व्याकरणको भी अच्छी जानते हैं। पाठशालामें ३० विद्यार्थी मय लड़कियोंके काव्य, तत्वार्थ सूत्र, पंचस्तोत्र, व्याकरण आदिमें शिक्षा पाती हैं। काव्यों-मेंसे नागकुमार काव्य' और 'क्षत्र चूडामणी' पढ़ाया जाता है। धर्मशास्त्र मन्दिरोंमें करीब १५० ताड़पत्र पर लिखे हुए अच्छी तरहसे रक्खे हैं।

श्रीक्षेत्र पोन्नुर।

यह प्राचीन क्षेत्र जिला 'चित्तोरमें' रेलवे स्टेशन 'तिण्डिवनम्' (S. I. Ry) से करीब २५ मीलपर एक बड़े पहाड़की तलेटीमें है। रास्ता स्टेशनसे ग्राम तक अच्छा है। यह ग्राम प्राचीन कालमें जैनियोंका ही था और इसका प्रबन्ध प्रसिद्ध जैन राजा 'सकल लोकाचार्यवर्तिन राजनारायण शम्भूवरायर' के हाथ में था। श्री तिरुमलाई पहाड़पर जो

बड़ा मन्दिर प्रसिद्ध है उसमें एक मण्डपकी भींतपर शिलालेख पायाजाता है उससे मालूम होता है कि 'मन्नाई पोन्नडाई' की लड़की श्री 'नल्लाटालने' उस पहाडपर शक सं० १२६८ में जब उपर्युक्त राजाके हाथमें राज्य-प्रबन्ध था। तब एक 'विहार-नैनार' नामक मंदिर बनवाया और उसमें श्रीपार्श्वनाथ महाराजकी स्थापना की थी।

पर्वतपर प्रसिद्ध जैन कवि श्री 'एलाचार्य' महाराजकी चरणपादुकाएं हैं। इनके ग्रंथोंमें से एक 'तिरुक्कुरुक नामक' (तामील भाषामें लिखा हुआ) ग्रंथ है, 'जिसपर सकल धर्मीय लोग इसपर अपना हक साबित करते हैं' कविताका अच्छा नमूना है। हर रविवारको पहाड़पर उनके स्मणार्थ यात्रा होती हैं, जिसमें करीब ५०० आदमी एकत्रित होते हैं। पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबंध 'पोन्नुर' ग्राम के पञ्चोंके हाथमें है।

ग्राममें दिगम्बर जैनियोंके गृह ७१ हैं और मनुष्य संख्या करीब २७५ है। एक मन्दिर शिखरबन्द है तथा जैन यात्रियोंको ठहरनेके लियें एक क्षेत्र (धर्मशाला) है जिसमें अन्नदान दिया जाता हैं उस क्षेत्रकी इमारतमें एक जैन पाठशाला है जिसमें करीब ३० विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते हैं। पं० 'सोमप्रभ नेनार' बड़े विद्वान हैं, आप विद्यार्थियोंको विद्यादान मुफ्त देते हैं। ग्राम पहाडकी तलेटीमें होनेसे आब हवा अच्छी है।

बेंगलोर।

मैसूर राज्यमें जिलेका सदर स्थान और मैसूर राज्यका सदर स्थान सदर्न मरहटा रेल्वेका जंकशन बंगलोर शहर है। शहरके स्टेशनसे ३ मील पूर्व फौजी छावनीका रेल्वे स्टेशन है। स्टेशनसे शहर तक सवारी हर तरहकी मिलती है, शहरमें कई धर्मशालाएँ हैं, इनमेंसे एक धर्मशाला जिसको थोप्पाहचट्टीकी चोलतर कहते हैं शहरके स्टेशनसे २०० गजके फासलेपर ही है और एक छावनीके स्टेशसनसे आध फर्लांगके फासलेपर है।

बंगलोर शहर दो हिस्सोंमें बटा हुआ है एक भाग पेटा (अर्थात् किलेके सहित पुरानी वस्ती) दूसरा भाग छावनी।

बंगलोरकी मनुष्यसंख्या एक लाख अस्सी हजारके लगभग है मनुष्यगणनाके अनुसार मैसूर राज्यमें पहला शहर है, जैनी अनुमान ४०० हैं। इन दि० जैनियोंके पंचम सैतवालोंके २७ घरोंकी मनुष्यसंख्या १६८ है, प्रायः सबही आढ़त साहुकारी आदि धंदा करते हैं, शहरमे एक दि० जैनमंदिर और जैनधर्मशाला भी है। पं० धरणेंद्रके पास प्राचीन जैनग्रंथोंका भण्डार है।

देखने योग्य स्थान ये हैं:-मैसूर नरेशका सुन्दर महल इसको खास आज्ञा मिलनेपर ही देख सकते हैं। बंगलोरकी छावनी यह दक्षिणभारतमें वडी छावनी है। सर्कारी आफिस, बाजार, कई सुंदर मंदिर, और मस्जिदें, मकान, गिर्जा, कालेज, गवर्नमेंट हौस, रेल्वेस्टेशनसे

३०० गज दक्षिण मिलरका तालाव और इस तालावसे १ मील पूर्व हलसुर तालाब है। किला पेठासे दक्षिण अण्डाकार शकलमें बंगलोरका किला है, किलेमें तोपखाना है और टीपू सुल्तान के महलके निशानात कुछ २ देखनेमें आते हैं।

लालवाग–किलेसे लगभग एक मील पूर्व मैसूरके हैदरअलीके समयका लालवाग नामक मनोरम उद्यान हैं, वागमें देश देशके वृक्ष लगे हुये हैं, और कई वनेले जानवर भी हैं। यहां समय समयपर फूलोंकी नुमायश होती है।

अजायवघर–पेठसे एक मीलकी अधिक दूरीपर बंगलोरका अजायव घर है इसकी देवढ़ीमें सुन्दर 'जैनप्रतिमा' है। नीचेके वड़े कमरेमें खास खास चीजोंके नमूने और ऊपरके मंजिलमें भांति भांतिक मृतक जानवर और अनेक प्रकारके देशी भूषण पोशाक इत्यादि वस्तुएँ रक्खी हैं।

बंगलोर स्वास्थ्यप्रद स्थान और मैसूर राज्यका प्रधान व्यापारी शहर है, यहांका रेशम बहुत मजबूत और सुन्दर होता है। यहां रेशमी किनारोंके साथ सूतके सुन्दर कपड़े बहुत वनते हैं। गलीचेके दस्तकारी के लिये बंगलोर शहर प्रसिद्ध है, यहांके जेलखानेमें पर्सियन और तुर्की चालके गलीचे बहुत वनते हैं, सोने चांदीके लैस गहनें वगैरः भी अच्छे वनते हैं, पेठ अर्थात् पुरानी वस्तीमें गल्ला और रुईकी सौदागिरी अधिक होती है।

मङ्गलूर।

मद्रास हातेके दक्षिण कनैड़ा जिलेमें जिलेका सदर स्थान व जिलेमें प्रधान कस्वा मङ्गलूर है। कन्नूरसे मङ्गलूर होकर आगवोट जाती है।

मंगलूर कसवेके दक्षिण पूर्व मंगलादेवीका मन्दिर है, शायद इसी देवीके नामसे, मंगलूर नाम पड़ा हो। कस्वा उन्नतिपर है, नारियल तथा ताड़के कुंजोंमें कसवा वसा है, कसवेके पास नेत्रवती और गुरुपुर नदीके मुहानेसे वनी एक झील है।

मंगलूरमें समुद्र द्वारा वड़ा व्यापार होताहै, मिर्च, अदरक, दालचीनी, नारियल, सुपारी वहुत पैदा होती है, यहांसे कुर्ग और मैसूरकी काफी दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती है, लौंग मसाला रेशम, कपड़ा सोना चांदी इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंसे आती हैं। और प्रायः इनही चीजोंका अधिक व्यापार होता है।

जर्मनमिशन–जिसमें छापने, जिल्द वांधने, कपड़ा वनाने, आदि लकड़ीकी चीजें वनानेका काम सिखाया जाता है, मद्रास यूनीवर्सिटीके २ कालेज, कचहरियां, कष्टमहौस गिरजा देखने योग्य है।

मंगलूरकी मनुष्यसंख्या अनुमान ४१ हजार है, दि० जैनियोंके २ घरोंकी मनुष्य संख्या ४ है। और मंगलूरके पास कादिरी पहाड़पर एक प्राचीन जैनमन्दिर है।

मछलीपट्टम ।

समुद्रके किनारेपर मद्रास हातेके तैलङ्ग देशके कृष्णा जिलेमें प्रधान कस्वा प्रधान वन्दरस्थान जिलेका सदरस्थान, मछलीपट्टम है ।

सन् ई० से पहले कृष्णा नदीके किनारोंपर बौद्ध लोग वसते थे। तीसरी सदीमें ब्राह्मणमतके लोग आये । सातवीं सदीमें कल्यानपुरके चालुक्यवंशके राजाने वेंजीके राजाको जीता। चालुक्य राजाओंके वाद दक्षिणसे चोलवंशके राजा आये इसके वाद धरनी कोड़ाके जैन राजाने कृष्णा जिलेका राज्य किया, इसके वाद रेड्डीवंशके राजाओंने राज्य किया, उड़ीसाके गजपति राजा और वादमें विजयनगरके राजाने राज्य किया, सन् १५८० ई० में यह राज्य मुसलमानोंके हाथमें चला गया, सन् १८२३ ई० में कृष्णाका सम्पूर्ण राज्य, अंगरेजोंके अधिकारमें हो गया ।

मछलीपट्टममें छींट, नास, और हुलासका वड़ा व्यापार होता है, कपड़े वुननेवाले और छापने वाले वहुत लोग हैं, किन्तु कलकारखानेसे उनका काम घटता जाता है, अव तक यहांकी छींट दूसरे देशोंको भेजी जाती हैं ।

जज और कलेक्टरका आफिस, सरकारी कचहरियां, अस्पताल, स्कूल, और वन्दर आदि स्थान देखने योग्य हैं ।

यहांकी मनुष्यसंख्या अनुमान ३९ हजार है जैनी सिर्फ २ हैं क्रिश्चियन (पादड़ी) वहुत लोग होते जाते हैं। सन् १८६४ ई० में समुद्रकी तूफानकी लहरसे ३० हजार प्राणी मर गये थे ।

मद्रास ।

मद्रास अहातेभरमें सदर मुकाम और हिन्दुस्थानमें तीसरे नम्बरका शहर है । इस जगह हाईकोर्ट और वहुतसे सिविल और फौजी महकमे है । आवहवा भी अच्छी है ।

मद्रास वाणिज्य व्यापारके लिये उपयुक्त स्थानमें नहीं वसा है, क्योंकि प्रथम तो जहाज समुद्रके किनारे तक नहीं पहुंच सकते, और दूसरे लहरोंके कारण किनारे पर मालका उतरना वहुत कठिन पड़ता है ।

पहिले ही पहिल अंग्रेजलोग 'आर्मेगन' में ठहरे थे, परन्तु सन् १६३९ ई० में थोड़ीसी धरती मिलने पर इन्होंने सेन्टजार्ज किला वनाया और वहीं जा वसे । मद्रासी लोग इसे 'चेन्नापटनम' कहते हैं। 'आर्मेगन' अथवा 'दूर्गारजपतनम' मद्राससे ३६ मील उत्तरमें 'पल्लीकाट' झीलपर वसा है। और इस किनारेपर यही प्रथम स्थान है, जहां अंग्रेज लोग सन् १६२५ ई० में आ वसे थे।

मद्रासमें दस्तकारीका स्कूल, तोपोंका कारखाना, पीपल्स पार्क, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, हाईकोर्ट और आकाश लोचन, कई गिर्जाघर, टकसाल, दीपकगृह, और कालेज देखनेके लायक हैं।

यहांपर जैनियोंके ११७ घर हैं जिनमें ११ घर दिगम्बर आम्नायके और शेष श्वेताम्बरियोंके हैं।

दिगम्बरियोंका एक मन्दिर है। श्वेताम्बरियोंका एक सुन्दर मंदिर अतिउत्तंग देखनेके योग्य है।

कहते हैं कि पूर्वकालमें मद्रासके चारों ओर जैनियोंकी वस्ती थी और 'मैलापुर'. 'पुझहल' 'मायावरम्' 'पोन्नेरी' 'सेम्बाकम्' 'अरुनगुरम्' आदि ग्रामोंके शिलालेखोंसे भी यह बात सिद्ध होती है।

प्राचीन कालमें मैलापुर जैनियोंका ही ग्राम था और वहां उनके एक बड़े मंदिरमें श्रीनेमिनाथस्वामीकी प्रतिमा विराजमान थी। एक बार एक जैनीको स्वप्न हुआ कि मैलापुर ग्राम समुद्रमें डूबनेको है; इसलिये मूर्तिको मंदिरसे उठाकर लेजाओ, तब वह आश्चर्यान्वित होगया और प्रातःकाल ही मूर्तिको 'चित्ताम्बुर' को लेगया। चित्ताम्बुरसे प्रतिमा हिल न सकी इसलिये वहीं मन्दिर बनवाया और प्रतिमाकी बड़े समारोहसे स्थापना की। इनमेंसे मैलापूर समुद्रमें डूब जानेके कुछ दिन पीछे प्राचीन मैलापुरके पास नया और नगर बसाया। यहां मन्दिरमें नेमिनाथस्वामीकी प्रतिमा अति उत्तंग कायोत्सर्ग विराजमान है।

'पोन्नेरी' ग्राममें सिर्फ पुजारीका एक घर है। एक पर्णकुटिकामें श्रीवर्धमानस्वामीकी प्रतिमा काले पत्थरकी कायोत्सर्ग जमीनके नीचे मिली हुई विराजमान है।

मद्राससे १० मीलकी दूरीपर श्रीक्षेत्र 'पुझुल मायावरम्' है, यहांके मन्दिर अति उत्तंग देखने योग्य हैं।

मद्रासके अजायबघरमें बहुत छोटी बड़ी धातुकी और पत्थरकी मूर्तियां पाई जाती हैं। जिनमें १९ मूर्तियां करीब ५ फीट ऊंची पद्मासनस्थ है। और विक्टोरिया पब्लिक हॉलमें काले पाषाणकी श्री 'गोमटस्वामीकी' प्रतिमा कायोत्सर्ग अत्युत्तम देखने योग्य है।

यहां मद्रास रेलवे और साऊथ इंडियन रेलवेके छै छै स्टेशन हैं। मद्रासके सब स्टेशनोंपर घोड़ागाड़ी किरायेपर हमेशा मिलती है।

मदुरा।

मद्रास हातेमें पांड्य मण्डलके अन्तर्गत वैगानदीके दक्षिण किनारेपर साऊथ इंडियन रेल्वेका स्टेशन व जिलेका सदरस्थान मदुरा है। वैगानदीके पास लालक्षत्रम नामक धर्मशाला है। इसका नाम संस्कृत पुस्तकमें मधुरा लिखा हुआ है।

मदुरा हिंदुस्थानके बहुत पुराने शहरोंमेंसे है । अंध्रदेशके जैनराजाने पांड्यराजाको निकालकर मदुराका राज्य बना लिया था। वैदिकमतावलम्बी और जैनियोंमें कई झगड़े हुये थे। इस राजाके समयमें प्रायः सब लोग जैनमतावलम्बी होगये थे। प्राचीन कालमें हिन्दुस्थानके दक्षिणीय भागकी राजधानी और विद्याभ्यासका मुख्य स्थान था, यहांके पंडित प्रसिद्ध होते थे। भारतवर्षके राज्योंमें कोई राज्य ऐसा नहीं है जिसका राजवंश इतनी वड़ी मुद्दत तक बराबर कायम रहा हो। कई एक शिलालेखो और तांबेके दानपत्रोंपर पांड्यवंशके राजाओंके नाम दीख पड़ते हैं, इस वंशके अन्तिम राजा 'सुन्दर' पांड्यने ही वंश–वैरके कारण जैनियोंका नाश किया और अपने पड़ोसके चोल राज्यको जीता। ११ वीं सदीमें उत्तरसे आक्रमण करनेवाले मुसलमानने सुन्दरपांड्यको परास्त किया था।

मदुरामें देखने योग्य स्थान–रेल्वेस्टेशनसे करीब एक मील पश्चिम मीनाक्षी, सुन्दरेश्वरशिवका मन्दिर ८४९ फीट लम्बा ७२९ फीट चौड़ा, अर्थात् २२ बीघेमें यह मन्दिर बना हुआ है। बाहिरकी दीवार करीब २१ फुट ऊंची है, इसके चारों बंगलोंपर प्रतिमाओंसे पूर्ण रंगोंसे चित्रित ग्यारह एक ही समान एक एक गोपुर हैं। इनमेंसे एक गोपुर १९२ फीट ऊंचा है। इस मन्दिरमें संगतराशीका उत्तम काम बना हुआ है। तिरुमलईनायकका महल रेल्वे स्टेशनसे १॥ मील पश्चिमकी तरफ है, अब यह सरकारी आफिसोंके काममें आता है। तेप्पुकुलम् (बडा तालाब) नामके तालाबमें उत्सवके समयमें मन्दिरकी मूर्तियां नावमें बैठाकर फिराई जाती हैं। मदुराके रेल्वे स्टेशनसे ३ मील पूर्व रामेश्वरके मार्गमें वैगानदीके उत्तर १२०० गज लम्बा और इतना ही चौड़ा एक तालाब आर है। इसके चारों तरफ पत्थरके घाट, मध्यमें मोरव्वा, टापूपर एक शिखरदार बड़ा मन्दिर है, टापूपर सुन्दर वाटिका भी लगी है। इनके सिवाय कलेक्टरका मकान, वटका बड़ा वृक्ष, बाजार, सरकारी कचहरियां और स्कूल इत्यादि देखने योग्य स्थान हैं।

मदुराकी मनुष्यसंख्या अनुमान ८८ हजार है, इनमें सिर्फ ८–१० जैनी हैं।

मदुरामें पगडियोंके किनारोंपर सुन्दर सुनहरी काम अच्छा बनता है, और एक प्रकारके अजीव लाल कपडे तैयार होते हैं। कपड़े और पीतलके वर्त्तनोंके लिये मदुरा प्रसिद्ध ह।

श्रीक्षेत्र मनारगुडी।

यह कसवा जिला तंजोरमें 'निडमंगलम् (S. I. R.) स्टेशनसे करीब ९ मीलकी दूरी पर है। यह स्थान श्री 'जीवेन्द्र स्वामी' का जन्मस्थान है। कहते हैं कि यहां २०० वर्ष पूर्वमें एक ऋषि पर्णकुटिकामें तपस्या करते थे और उसमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिष्ठा हुई थी। जब यह बात 'कुम्भकोणम्' में जाहिर हुई तब वहांके जैनियोंने 'मनारगुडी' में आकर एक बड़ा भारी मन्दिर बनवाया। और बडे समारोहसे रथोत्सव कराया। यह क्षेत्र इसीसे प्रसिद्ध

होगया और हर साल वैशाख मासकी शुक्लपक्षमें यात्रा होने लगी। ध्वजारोहण तथा महाभिषेक दश दिन तक होता है और १० वें दिन रथयात्रा बड़े समारोहसे होती है।

नगरमें दिगम्बर आम्नायके ३३ घर हैं, जिनमें ३ घर वोडिआर (जैन ब्राह्मणों) के हैं और उनकी मनुष्यसंख्या १४० है। धर्मशास्त्र करीब १५० हैं। पूजन प्रक्षाल आदिका प्रबन्ध जैन ब्राह्मणोंके हाथमें है। मन्दिरमें कायोत्सर्ग श्रीमल्लिनाथस्वामीकी प्रतिमा और ज्वालिनी देवी (यक्षिणी) की प्रतिमा विराजमान है।

मूडबद्री (जैनकाशी)।

(अतिशय क्षेत्र)

यह क्षेत्र दक्षिण कनैड़ा जिलेमें 'बेंगलोर' स्टेशनसे करीब २२ मीलके अन्तरपर है। यहांपर एक 'पुलिसथाना, अस्पताल, रजिस्ट्रारका आफिस' और एक 'मुसाफिरखाना' है। दिगम्बर जैनियोंके आबाद घर ५२ हैं। जिनकी मनुष्य संख्या करीब २८३ है।

इस नगरमें जो दिगम्बर जैनियोंके मन्दिर हैं वे 'श्रीचन्द्रप्रभु' तीर्थंकरके अर्पण किये हुए हैं। शिलालेखोंके आधारसे इसका 'बिद्री' 'वेणूपुर' या 'वंसपुर' नाम जाना जाता है। बिदारू और वेणू इन दोनों शब्दोंका अर्थ बास और बाबू होता है और तुलू देशके राज्यसे लगता है। यह प्राचीन जैन ब्राह्मणोंका निवास स्थान है, जिसका मुखिया अभीतक जीवित है, और इनको सर्कारसे ८००) रुपया सालाना पेन्शन भी मिलती है। यहांपर जैनियोंके मुख्य गुरु महाराज चारुकीर्ति 'पंडिताचार्य' स्वामी गद्दीपर हैं। आप एक मठमें रहते हैं। यहांपर जैनधर्मके २००० के करीब प्राचीन ग्रंथोंका संग्रह है।

यहां १८ मन्दिर हैं; इनमेंसे कोई तो बड़े ही सुंदर पत्थरोंके बने हुए हैं। इनकी छत्तें भी बड़े २ पत्थरोंकी बनी हैं। सात मन्दिरोंके साम्हनेके भागमें एक ही पत्थरका बड़ा ऊंचा स्तम्भ है, जिसे 'मानस्तम्भ' कहते हैं और ताम्बेके पत्रोंसे जड़े हुए लकड़ीके दो 'ध्वजास्तम्भ और मानस्तम्भ' मन्दिरोंके बीचमें लगे हैं। इस बस्तीके मन्दिरोंके स्तम्भ वगैरः छह 'सतार' नामसे प्रसिद्ध हैं और यह जैनी व्यापारियोंके तरफसे बनाये गये हैं ऐसा जान पड़ता है।

बस्तीके मन्दिर सर्व तीर्थंकरोंको अर्पण किये हैं। और दूसरी बस्तीमें पद्मावती देवीका मन्दिर है। सबसे बड़ा और सुन्दर हौसबस्ती वा 'तिरुपूरन' बस्ती नामक एक नवीन मन्दिर 'चन्द्रनाथका' प्राचीन कालमें जंगलसे घिरा हुआ था, परन्तु इस समय परकोटासे घिरा हुआ है। और इसको जैनीभाई त्रिभुवन तिलक चूड़ामणी कहकर पूजनप्रक्षाल आदि करते हैं। यह मन्दिर ई० सन् १४२९–३० में बनाया गया

---

१ बस्ती शब्दका अर्थ मन्दिरोंका समूह है।

था। इस मन्दिरमें दोहरी भीतें और एक बहुत ऊंचा 'मानस्तम्भ' और प्राचीन कारीगरीका नमूनारूप नक्काशीका काम किया हुआ एक दरवाजा है। सबसे ऊपरी भाग लकड़ीका बना हुआ है। इस मन्दिरमें एक 'गरभगरूड़' का मन्दिर है जिसके आगे 'तीर्थंकरमंडप, चित्रमण्डप, गद्दीगेमण्डप' ये तीन मण्डप हैं। चित्रमण्डपके आगे भैरादेवीमण्डप है, जो ई० सन् १४९१-९२ में बना है। इसके पायेके चौतरफ नक्काशीका काम किया गया है। मन्दिरके अन्दर अंधेरे भागमें प्रतिमाएँ हैं, जो यात्रियों को दूर ही से मालूम होती हैं। ये प्रतिमाएँ पंचधातुओंकी बनी हुई हैं, परन्तु चांदी सोने का भाग ज्यादा है। इसके पीछे गुरुवस्ती है। यह मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा किसी जैन गुरुको मिली थी इसलिये इसको गुरुवस्ती कहते हैं। इसमें कई मूर्तियां हीरा, पन्ना आदिक नवरत्नोंकी विराजमान हैं। और यहांपर जैन सिद्धान्तके दो प्राचीन ग्रंथ[1] एक पेटीमें तीन तालोंके अन्दर बड़ी सावधानी से रक्खे हैं; इसकी चावी तीन जुदे २ अधिकारियोंके हाथमें है। यात्रियोंसे पैसा लेकर इन सिद्धान्त ग्रंथोंके दर्शन कराते हैं। इनकी नकल वारह वर्षसे जैनियोंकी तरफसे कानड़ी अक्षरोंसे देवनागरीमें हो रही थी; परंतु अब लिखाई पूरी होचुकी है। इस छोटी वस्तीमें भी 'गर्भगरुड़, तीर्थंकरमंडप और नमस्कारमंडप' हैं। इस नगरमें जैनियोंके गुरु और श्रावक नामके दो भेद हैं। गुरु (इन्द्र) लोग अपनेको ब्राह्मण मानते हैं व सर्व ही जैनी यज्ञोपवीत पहिनते हैं। गुरु वा इन्द्र लोग श्रावकोंके साथ भोजन व्यवहार तो करते हैं परन्तु बेटी व्यवहार नहीं करते।

मैसूर।

मद्रास अहातेमें बंगलोर शहरसे ८६ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूर राज्यकी राजधानी मैसूर शहर है, स्टेशनपर सवारी हर तरह की मिलती है। मैसूरमे कनैड़ा भाषा बोली जाती है। शहरमें एक जैनधर्मशाला है।

मैसूर राज्यमें कई प्राचीन शिलालेख तथा तांबेके पत्तरोंके लेख मिले हैं, जिनसे कई ऐतिहासिक वातोंका पता लगा है। ईसासे लगभग ३०० वर्ष पहिले बौद्धोंके गुप्त दूतने इस देशको देखा था। जैन राजाओंके अधिकारमें मैसूरका राज्य बहुत दिनोंतक रहा था। जिनके बनवाये हुये बहुतसे सुन्दर मन्दिर और अन्य स्मरण चिह्न अबतक विद्यमान हैं। "स्वामी समन्तभद्र अकलंक पूज्यपाद, प्रभाचंद, पात्रकेसरी, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र और वादीभसिंह" आदि कई जैनाचार्य प्रायः मैसूर (कर्नाटक) प्रान्तमें ही हुये हैं। मैसूर प्रान्त पहिले बड़े २ भारी मान्य विद्वानोंका निवास स्थल रह चुका है। कहते हैं कि गुजरातके महाराजा 'कुमारपाल' के समयमें श्वेताम्बरियोंका जैसा अभ्युदय श्री 'हेमचन्द्राचार्य'

---

(१) धवल और जयधवल।

के कारण हुआ था, महाराज 'अमोघवर्ष' के समयमें उससे भी कहीं बढ़कर अभ्युदय 'भगवज्जिनसेनाचार्य' के प्रभावसे हुआ था। महाराज अमोघवर्ष राष्ट्रकूटवंशी अपने समयके महान सम्राट थे; इनका राज्य सारे कर्नाटक और महाराष्ट्र प्रान्तमें फैला हुआ था।

ऐतिहासिक समयमें प्रथम मैसूरका उत्तरी भाग कदम्बवंशके राजाओंके आधीन था उन्होंने १४ वीं सदीमें राज्य किया; पीछे वे लोग 'चालुक्यवंश के' राजाओंको कर-देते थे। उस समय 'गंगवंश' के राजा मैसूरके दक्षिणी भाग और 'कोयम्बतूर' में राज्य करते थे। उनकी राजधानी पहिले कोयम्बतूर जिलेके 'करूरमें' और पीछे कावेरीनदीके पास 'हालकद' में थी। ९ वीं सदीमें चौलवंशके राजाने तालकदके गंगवंशके राजाका विनाश किया।

गंगवंशमे 'राचमल्ल' सुप्रसिद्ध जैन राजा हुये हैं इनके प्रधानमंत्री 'चामुंडराय' थे। और इन ही के समयमें सिद्धान्त चक्रवर्ती 'नेमिचन्द्र' स्वामीने गोम्मट्टसार, त्रिलोक्यसार, लब्धिसार आदि कई ग्रंथोंकी रचना की है।

मैसूर राज्यके पूर्वी बगलका एक भाग पहिले पल्लववंशके राजाओंके अधिकारमें था। ७ वीं सदीमें चालुक्यवंशके राजाने पल्लववंशके राजाको परास्त किया, और पल्लववंशवाले १० वीं सदीतक उनके बड़े दुशमन बने रहे। चालुक्यवंश वालोंने चौथी सदीमें हिन्दुस्थानके उत्तरसे आकर एक फैले हुए देशको जीता, जिसका एक भाग १२ वीं सदीके अन्ततक उनके अधिकारमें था।

चालुक्य या सोलंकी राजवंशमें कीर्तिवर्मा नामका एक कानड़ी कवि हो गया है। उसने 'गोवैद्य' नामका एक 'पशुचिकित्सा विषयका' ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थके एक पद्यसे मालूम होता हैं कि 'त्रैलोक्यमल्लाधिप' उसका पिता, 'विक्रमांकनरेंद्र' उसका बडा भाई, 'देवचन्द्रमुनि' उसके गुरु और जिनेन्द्रदेव उसके इष्ट देव थे। इस कविके समयमें 'ब्रह्मशिव' नामका एक और जैन कवि था। वह ब्राह्मण था। उसने 'समयपरीक्षा' नामक ग्रन्थ रचकर जैनधर्मका श्रेष्ठत्व प्रतिपादन किया है। इस ग्रन्थमें उसने किर्तिवर्माका उल्लेख खूब स्पष्ट शब्दोंमें किया है। और उसे चालुक्याभरण सार्वभौम राजा तथा श्रेष्ठकवि बतलाया है। कीर्तिवर्माके पिता त्रैलोक्यमल्लने सन् १०४४ ई० से १०६८ तक राज्य किया है।

चालुक्य वंशमें दूसरा जैन राजा 'भुवनेकमल्ल' हो गया है उसने ई० स० १०६९ से १०७६ तक राज्य किया है, और इसी वंशके पेर्म 'जगदेकमल्ल' नामक जैन राजाने सन् ११३९ से ११४९ ई० तक राज्य किया है।

चालुक्यवंशके कमजोर होनेपर बल्लालवंशके राजाने उनको परास्त किया और राज्य अपने राज्यमें मिला लिया; जान पड़ता है कि चोलवंशके राजाओंने मैसूरमें १९०

वर्षसे अधिक राज्य नहीं किया। कलचूरि वंशवालोंका राज्य भी ऐसे ही बहुत समय तक नहीं रहा। कलचूरिवंशका सुप्रसिद्ध राजा 'बिज्जल' जैनधर्मका उपासक था।

होसला वल्लालवंशके राजा 'जैनधर्मी' बड़े लड़ाकू वीर थे। इस वंशको चामुंडरायने स्थापित किया था। इन्होंने मैसूरके वर्तमान राज्यके सम्पूर्ण पश्चिमी, दक्षिणी तथा मध्य भाग और कोयम्बतूर, सेलम और धारवाड़के हिस्सेको जीता, इनकी राजधानी द्वारसमुद्र (द्वारकावती) थी। सन १३१० ई० में दिल्लीके अलाउद्दीनके जनरल कापूरने वल्लालवंशके राजाको कैद किया और शहरको लूटा। सन् १३२६ में महम्मद तुगलककी भेजी हुई सेनाने द्वारसमुद्रको अच्छीतरहसे बरबाद किया। जैनराजाओं और उनके पीछेके राजाओंके समयके बहुत मन्दिर अब तक विद्यमान हैं।

वल्लालवंशके बाद मुसलमानोंका राज्य, मुसलमानोंके बाद हिन्दूराजाओंने राज्य किया। हिन्दू राजा 'चिकाकृष्णराज' से हैदरअली नामक एक मामूली सिपाहीने राज्य छीन लिया। बाद हैदरअलीका लड़का टीपूसुलतान और अंग्रेज सर्कारसे कई भारी २ लडाइयोंके बाद अंग्रेज सर्कारने मैसूरका राज्य जिसको हैदरअलीने छीन लिया था कृष्णराजाको दे दिया।

वर्तमान मैसूर नरेशका नाम 'सर चमाराजेन्द्र वोडियर जी० सी० एस० आई०', है। आप बड़े विद्याप्रेमी और प्रजाप्रिय नरेश हैं, मैसूर राज्यमें मुफ्त शिक्षा दी जाती है। महाराजकी ओरसे एक ग्रंथमाला निकलती है जिसमे कई जैनग्रंथ भी प्रकाशित हुये हैं।

मैसूरमें देखने योग्य स्थान—शहरसे दक्षिणकी ओर किला, किलेके भीतर मैसूर महाराजका सुन्दर महल, किलेके बाहर उसके पश्चिमवाले फाटकके साम्ह जगमोहनमहल. शहरमें पूर्व यूरोपियन लोगोंकी कोठियां, किलेसे लगभग ६०० गज पूर्व महाराजका ग्रीष्ममहल, शहरके पूर्वी भागमें ऊँची भूमिपर रेजीडेंसी, महाराजका कालेज, वेस्लियन मिशन (क्रिश्चियन—पादरी) कालेज, श्वेतवाराह लक्ष्मीनारायण, अष्टभुजी पर्वतपर चामुंडा देवी (महिष मर्दिनी) और हिन्दू देवताओंके मन्दिर इत्यादि कई स्थान देखने योग्य हैं।

मैसूरके जंगलोंमें चन्दनके वृक्ष बहुत उपजे हैं, और मैसूरकी कोलारकी कई खानोंसे सोना निकलता है; चन्दन. गल्ला एरकाका फल, काफी, शक्कर. कम्बल. भूषण. पानका व्यापार प्रायः अधिक होता है।

शहरकी मनुष्यसंख्या अनुमान ७५ हजार है। दि०जैनियोंके पंचम जातिके ३८ घरोंकी २३० मनुष्य संख्या है। इनमें अनन्तराजैय्या टीमानैया मोतीखानी और वर्धमानय्या लखमापाटी मोतीखानी जमीदार राजमान्य प्रसिद्ध पुरुष हैं। २ दिगम्बर जैनमन्दिर, एक जैनबोर्डिङ्ग होम, ओरियंटल लायब्रेरी और कर्नाटक जैनसभा आदि जैन संस्थायें हैं। मन्दिरोंमें १०० धर्मशास्त्र हैं, इनमें कई प्राचीन ग्रंथ भी पाये जाते हैं

विजयानगरम् ।

मदरास हातेके विजगापट्टम् जिलेमें, प्रधानकस्वा विजयानगरम्का रेल्वे स्टेशन है, विजयानगरम् महाराजकी राजधानी होनेसे अधिक प्रसिद्ध है ।

यह प्राचीन जैनियोंकी राजधानी थी। शके १२७६ या संवत् ११४२ से यादववंशी दि० जैन राजाओंका राज्य था । इस वंशका प्रथम राजा 'बुक्का' नामका था । इनके पश्चात् इनका पुत्र महाराजा 'हरिहर' गद्दीपर विराजमान हुये; पश्चात् इनके सुपुत्र महाराज 'अभिनवदेवराज' गद्दीपर बैठे; पश्चात् महाराज 'वीरविजयजी' गद्दीपर बैठे; और वीर विजयके वाद इनके सुपुत्र राजाधिराज राजपरमेश्वर 'देवराज' महाराज गद्दीपर संवत् १४८० में विराजमान हुए । ये सव राजा परम जैना ही थे; अन्तिम महाराजा देवराजने अपने पराक्रमके कृत्य और अपना नाम अजरामर करनेके लिए 'राजगृहके' पास पान-सुपारी वाजार नामक वगीचेमें एक चैत्यालय (चैत्यागार) वनवाया और मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करके विराजमानकी । और मन्दिरके महाद्वारके समीप वाईं ओर सीधी भीतोंपर एक शिलालेख पत्थरपर खुदवाया जो अवभी स्पष्ट पढ़ा जाता है,

दूसरा शिलालेख एक प्राचीन मन्दिरके साम्हने दीपस्तंभ पर पाया जाता है, जिसमें आध्यात्मिकवंश और जैनपाठशालाके विद्यार्थियों और मुख्याध्यापक 'सिंहनंदीका' वर्णन दिया है, उसमें आचार्यकी पदवियां यें लिखी हैं:—गुरु देशिक, मुनि, और योगीन्द्र, और दूसरे स्याद्वाद अनेकान्तमत.......

तीसरा शिलालेख गणिगिट्टी या तेलीके मन्दिरके साम्हने दीपस्तंभपर खुदवाया है, उसका भावार्थः—

इसमें जैन विद्यालयके शिक्षकोंके नाम दिए हैं । राजा 'हरिहर' दूसराका प्रधान (मंत्री) इरुगप्पानामक जैनी था । इन्होंने शाके १३०७ क्रोधननाम संवत्सरेमें एक मन्दिर विजयानगरमें वनवाया और उसमें श्रीकुन्थु—जिननाथकी स्थापना की । यह नगर कर्नाटकके जिला कन्तलमें है । इस मंत्रीने 'नानार्थ रत्नमाला' नामक ग्रन्थ वनवाया जिसमें अपनेको इरुगप्पा दंडाधिनाथ लिखवाया है । इनके मुख्याध्यापकने सिंहनंदिके शिष्य 'अमरकीर्ति भट्टारककी स्तुतिकी है ।

सिंहनन्दिन—धर्मभूपण—भट्टारक मुनि—वर्धमान—प्रधान चेचाप्पा—इरुगप्पा ।

विजयानगरकी मनुष्यसख्या अनुमान ३१ हजार है ।

वेकुनम् वा धवलगिरी ।

वांदिवाससे करीव १॥ मील एक पहाड़की तलेटीमें सरोवरके किनारे यह ग्राम वसा

है । नजदीक ही स्टेशन–तिण्डिवनम् (साऊथ इंडियन रेल्वेकी चंगलपेटसे मायावरम्को जानेवाली लैन) है ।

दिगम्बर जैनियोंकी गृहसंख्या ३१ है जिसमें १४१ आदमी रहते हैं । यहां एक छोटासा शिखरवंद मन्दिर है । और मन्दिरके पास धर्मशाला भी है । मन्दिरमें पूजन प्रक्षाल योग्य रीतिसे होती है, प्रवंधके लिये करीब ८ एकड़ जमीन इनामकी दी हुई है । पण्डित 'सेल्वरसु नैनार' ने बालकोंको पढ़ानेके लिये एक पाठशाला अपने मकानमें खोली है, और इसका प्रवन्ध स्वयं करते हैं और विद्यार्थियोंको संस्कृत तथा प्राकृतभापाकी शिक्षा देते हैं । कई विद्यार्थी दूसरे ग्रामोंके भी हैं । पण्डितजीके पास ग्रंथोंका समूह करीब ९३ के है । निरपुसी (वहिष्कृत जैनियों) लोगोंकी संख्या भी यहां जैनियोंके समान ही है । उनके दो शिवमंदिर यहांपर अच्छे बने हुये हैं, जिनमें पहला पहाड़पर और दूसरा ग्राममें है ।

यह ग्राम पहाड़की तलेटीमें होनेके कारण यहांकी आव हवा अच्छी है ।

श्रीरंगम ।

मद्रास हातेके तिरुचनपल्ली जिलेमें कावेरीनदीके श्रीरंगम द्वीपके भीतर कस्वा और श्रीरंगका सुप्रसिद्ध सुंदर मन्दिर है । कावेरीनदीपर ३२ मेहरावीका पुल वना है । तिरुचनपल्लीके स्टेशनसे कावेरीनदीकी कोलरुन नामक धारासे जाना चाहिये । श्रीरंगममें कई धर्मशालाएँ हैं ।

श्रीरंगका मन्दिर इसके घेरेके भीतर प्रायः सम्पूर्ण कस्वा है । उत्तरसे दक्षिण तक लगभग २९०० फीट लम्वा और पूर्वसे पश्चिमको २५०० फीट चौड़ा है; अर्थात् यह २६६ वीघे भूमिपर फैला हुआ है, इसका विस्तार दिल्लीके किलेसे डचोढ़ा है । इतना वड़ा देवमन्दिर शायद किसी स्थानमें नहीं है । सात दीवारोंके भीतर श्रीरंगका मन्दिर है, और भी कई मंदिर हैं; एक सुन्दर तालाव और वगीचा भी है । श्रीरंगकी मूर्ति तथा और अन्य मूर्तियां पन्ना हीरा, लाल इत्यादि लाखों रुपयोंके देवभूपण पहने हुये हैं । श्रीरंगका वर्त्तमान मंदिर १७ वीं और १८ वीं सदीका वना हुआ है । पोप सुदी १ से ११ तक वैकुंठ एकादशी नामका वड़ा भारी मेला भरता है, और मेलेके समय एक पंडालमें कागजकी बिचित्र मूर्त्तियां वनाकर रक्खी जाती हैं ।

श्रीरंगमकी मनुष्यसंख्या अनुमान २२ हजार है । रामानुज सम्प्रदायके लोग अधिक हैं । पंचम जातिके एक घरमें ३ आदमी हैं और एक जैनमंदिर भी है ।

श्रवणबेलगुल (अतिशयक्षेत्र)
श्रीजैनबद्री अर्थात् श्रीगोमटस्वामी
(बाहुबली)

यह एक परम रमणीय और ध्यानदेने योग्य दिगम्बर जैनियोंका अतिशयक्षेत्र रियासत 'मैसूरके हासन जिलेमें चन्द्रायापट्टन गांवसे ६ मीलकी दूरीपर श्रवणबेलगुल नामका छोटासा ग्राम है। 'आरसीकेरी तथा हिरडका' ये दो निकटवर्ती स्टेशन 'सदर्न मराठा रेलवे' लैनमें हैं।

इस नगरका नाम श्रवणबेलगुल क्यों पड़ा ? इस विषयमें तत्रस्थ (वहांके) लोगोंका ऐसा मत है कि पूर्वकालमें कल्की संवत् ६०० में 'श्रीनेमचन्द' सिद्धान्त चक्रवर्तिके समयमें श्रीरामचंद्रजीने श्रीगोमटेश्वरदेवकी प्रतिमाको निर्मापित कराया था; तथा जिस मन्दिरमें यह विराजित हैं उसकी प्रतिष्ठा 'चामुण्डराय' नामक राजाने कराई थी। उसने एक वार उक्त दीर्घकार और भव्यमूर्तिका पंचामृतस्नान पूर्वक षोड़शोपचारसे सर्वांग पूजन किया था, इस कारण उसके हृदयमें कुछ अभिमानका अंकुर उत्पन्न हुआ कि, मैं पराक्रमी हूं। गोमटेश्वरकी मेरे अतिरिक्त अन्य कोई संपूर्ण अर्चा नहीं कर सक्ता। अस्तु, इसके कुछ दिन पीछे चामुण्डरायने गोमटेश्वरकी पूजाका उत्सव फिरसे प्रारम्भ कराया। परन्तु अबकी वार एक ऐसा चमत्कार हुआ कि मूर्तिके शिरोभागपरसे पंचामृत प्रपूरित सैकड़ों कलश खाली कर दिये, तो भी वह सर्वांग स्नान नहीं हुई; इतना ही नहीं किन्तु उस परमपूज्य मूर्तिके नाभि भागसे नीचे एक विन्दु भी आकर नहीं पड़ा; नहीं कहा जा सकता कि, इसका क्या कारण था। क्या गोमटेश्वरदेवके अन्तःकरणमें राजाका अभिमान नष्ट करनेकी इच्छा उत्पन्न हुई थी ? अस्तु, यह अद्भुत चमत्कार देखकर वह नरपति खेद और आश्चर्ययुक्त, उत्साहहीन अपने अपमान जन्यदुःख स अधोवदन करक वड़े गहन विचारोंमें वैठा था कि, इतनेमें एक गरीव बुढ़िया (वृद्धा स्त्री) पंचामृत द्रव्योंसे भरे हुए 'वेल्लीया गोल, नामक लोटेमें लिये हुए राजाके पास आई, और उसने गोमटेश्वरकी सर्वांग पञ्चामृत स्नान करानेकी इच्छा राजाके सन्मुख प्रगट करके आज्ञा मिलनेकी प्रार्थना की। यह बुढ़िया और कोई नहीं, कोई स्वर्गस्थ देवता था; जो राजगवका परिहार करनेके लिये वृद्धा स्त्रीका रूप धारण करके आई थी। इस वृद्धा स्त्राका मनोकामनाको सुनकर महाराज हँसने लगे। क्योंकि, उन्होंने सोचा कि जिस देवमूर्तिका सर्वांग पञ्चामृत स्नान करनेको मुझ सरीखा ऐश्वर्यशाली राजा भी समर्थ नहीं हुआ है, यह बुढ़िया इस छोटेसे रौप्यपात्रस्थ पंचामृतसे इस मूर्तिका सर्वांग स्नान क्या करैगी ? अन्तमें "देखें क्या होताहै ऐसा विचार करके महाराजने उसे अभिषेक कर-

नेकी आज्ञा दे दी। राजाकी आज्ञा होतेही उस बुढ़ियाने अपने पात्रस्थ पञ्चामृतसे देवाधिदेवका मस्तक पांवतक सदावार स्नान करा दिया । यह देखकर राजाको अपने अभिमानका अतिशय पश्चात्ताप हुआ। इस लिये उसने गोमटेश्वरके सम्मुख शुद्ध अन्तःकरणसे प्रार्थना करके क्षमा मांगी और पुनः पूजनका कार्य आरम्भ किया। देवने भी राजाको गर्वगलित तथा शरणागत जानके उसकी इच्छा भली भाँति पूर्ण की।

उसी दिनसे उस देवस्थानको 'वेल्लीगोल' कहने लगे, और वहां जैन मुनियोंकी वस्ती प्रायः अधिक होनेसे तथा जैन-गुरुओंकी स्रामन (श्रमण) संज्ञा होनेसे अपभ्रंश रूपमें 'श्रवणवेल्लीगोल' ऐसा उस देवस्थानका नाम पड़ गया।

नगरके दोनों तरफ दो ऊंची पहाड़ियां हैं । इस लिये वहांके मकानात वे सिलसिले ऊंचे और नीचे हैं। वहांके रहनेवाले मनुष्योंका साधारण व्यापार प्रायः पीतल तांवेके वर्तन वगैरह वनानेका है। वहांपर एक वड़ा अच्छा तालाव है, जिसका जल अत्यन्त स्वच्छ रहता है। इस सरोवरका घाट और चारों तरफकी सीढ़िया वहुत सुंदर वनी हुई हैं। इस सरोवरको मैसूरके किसी जैनी राजाने वनवाया था। इस नगरीको 'जैनवद्री' कहते हैं। कारण कि पहले यहां जैनियोंकी वहुत वस्ती थी; तथा जैनमुनि पर्वतोंपर ध्यान करते और वसतीमें आहार लेने उतरते थे।

नगरमें इस समय अनुमान १०२ घर दिगम्बर जैनियोके हैं, जिनमें करीव ४० उपाध्याय (जैनब्राह्मणों) के हैं। इन उपाध्यायोंको मैसूर सरकारसे थोड़ा २ महिना मिलता है। जिस उपाध्यायके आधीन सर्व मन्दिरोंकी पूजा पाठका प्रवन्ध है उसका नाम आदि चंद्रैय्या है। इसको ॥-)४ मासिक मैसूर सर्कारसे मिलता है। यही कारण है कि ये लोग ठीक २ पूजन प्रक्षाल नहीं करते हैं। वेलगोला गांवमें 'भंडार वस्ती नामका लाखोंरुपयोंकी लागतका वहुत वड़ा मंदिर है। दूसरा मन्दिर 'भट्टारक चारुकीर्तिजी, के मठमें है व दो मन्दिर और हैं। 'चन्द्रगिरीके उस तरफ 'जिनदत्तपुर है। वहांभी दो मन्दिर वहुत अच्छे हैं। भट्टारकजीके आधीन वहुतसा शास्त्र भंडार है जिसकी सूची वाबू किरोड़ीचंदजी आरा निवासीके प्रवन्ध में तैयार हो गई है. और 'जैनसिद्धान्तभवन' ने प्रकाशित कराई है। यहां एक दिगम्बर जैनपाठशाला वहुत कालसे स्थापित है, जिसमें मैसूर गवर्मेन्ट ३०) मासिककी सहायता करती है। तथा ३०) मासिककी मदद सेठ' वर्धमानैय्या' मैसूरसे भेजते हैं। पढ़ाई मैसूर गवर्नमेंटके कोर्सके अनुसार है। पंडित 'दोर्वले जिनदास शास्त्री' जी प्रधान अध्यापक हैं। शास्त्रीजी जैन धर्मके अच्छे ज्ञाता तथा प्राकृत व्याकरणको भी अच्छी जानते हैं। इनके पास भी शास्त्रोंका अपूर्व भंडार है। जिनकी सूची, 'जैनमित्र' में प्रकाशित हो चुकी है.

इस अतिशय क्षेत्रके आधीन ४ गांव हैं। यह सब श्रीगोमट्टस्वामीकी संस्थान श्रवणबल्गुलके भट्टारकजीके आधीन थीं, खेद ! है कि भट्टारकने इनका प्रबन्ध मैसूर सरकारक सुपुर्द कर दिया है। गांवोंकी ४०००) वार्षिक आमदनी सर्कारमें जमा होती है और वही प्रबन्धकर्ता है।

पर्वत वंदना—

श्रवणबेलगुला दो पहाडियोंके मध्यमें है। बड़ी पहाड़ीका नाम 'विन्ध्यागिरी' ह और छोटीका नाम 'चन्द्रगिरी' है। बड़ी पहाड़ी करीब ९३०० फीट ऊंची है। ऊपर जानेके लिये बेलगोला गांवके मध्यम फाटक बना है और वहींसे ऊपरतक बहुत ही सुगम सीढ़ियां बनी हुई हैं कि जिनपर एक बच्चा भी खेलता कूदता चढ़ सक्ता है। ये सीढ़ियां दानवीर सेठ 'माणिकचंद पानाचंदजीने' सम्वत १९४० में बनवाई थीं। सीढ़िया अनुमान ३०० के होंगीं। थोड़ी दूर चढ़नेसे एक जनमन्दिर मिलता है जिसको हालहीमें सेठ 'पद्मराजैय्या'। बेलगोला निवासीने निर्मापित कराया है। ऊपर जाते हुए बीच बीच में तीनचार स्थानोंपर छोटे फाटक मिलते हैं। आगे चलकरके एक जैन मन्दिर है. जिसमें श्री 'पार्श्वनाथस्वामी' की कृष्णवर्ण अर्ध पद्मासन आकार प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन १॥ गज ऊंची है। इस मन्दिरके दर्शन करके फिर थोड़ा और ऊपर जाकर 'श्रीबाहुबलीजीके बड़े मन्दिरजीकी पहली डचोढी आती है। डचोढ़ीके फाटकपर दोनों तरफ दो खड्गासन प्रतिमाएं दर्शनीय हैं। भीतर जाकर सीढ़ी चढ़नेसे बाहुबलीजिके मन्दिरक कोटकी भींत मिलती है। यह भींत और इसके आश्रयकी कई कोठरियां जीर्ण और मरम्मतके योग्य हैं। इस स्थानपर मैदान है, जिसमें एक वेदीमें श्रीजीकी अर्ध पद्मासन मूर्ति १॥ गज ऊंची कृष्णवर्ण विराजित है। जिसके बाहर दरवाजेपर कनड़ीमें लेख है।

श्रीगोमटेश्वरस्वामीके मन्दिर, तथा शरीरवर्णके खास सामने एक यक्षिणीकी मूर्ति है। श्रीमन्दिरजीके बाहर फाटकपर दो शिलालेख कनड़ी भाषाके स्पष्टाक्षरों-सहित पाये जाते हैं। इस मन्दिरके भीतर प्रवेश करते ही वह श्रीजीकी बृहदाकार विशाल मूर्ति सर्वांगपूर्ण समचतुरसंस्थान धारी अपनी दृष्टिके सम्मुख आजाती है; कि जिस अनुपम मूर्तिके मुखारविन्द तथा स्कन्दोंका दर्शन कोसोंके दूरसे होता है; तथा अत्यन्त स्पष्टतया श्रीविंध्यागिरिके सन्मुख विराजित श्रीचंद्रगिरि और बेलगोलके मैदानोंसे होता है। दर्शककी दृष्टि प्रथम ही चरणकमलोंपर पड़ती है और पड़नेके साथ ही नजर रूपी भौंरा यकायक उन कमलोंकी सुगन्धिमें मुग्ध होकर उन कमलोंको त्यागनेमें असमर्थ होजाता है। परन्तु सर्वोत्तम श्रीबाहुबलिस्वामीके' मुखकमलकी अपूर्व

शोभा और सुवास उस भ्रमरको लुभाती है; और वह भौंरा धीरे २ चरणोंसे जांघोंके ऊपर आता हुआ पैरोंमें वेलके पत्तोंकी अद्भुत लपेट देखता हुआ कमरतक आता है, और शनैः २ सर्व शरीरकी सुगन्धिसे महकता हुआ अत्यन्त सौम्य वीतरागताको प्रदर्शित करनेवाले मुखारविन्दपर आकर जो विश्राम लेता है तो फिर किसी तरह हटता नहीं। यह इस लोकमें अपनी सदृशताको न रखनेवाली तथा भारतके प्राचीन अद्भुत शिल्प कलाको प्रदर्शित करनेवाली 'श्रीगोमटस्वामीजी' की मूर्ति करीव ६३ फीट ऊंची है। जैसे एक ही विशाल कृष्णपाषाणका एक यह विन्ध्यागिरि पर्वत है, वैसे एकही पाषाणसे यह संपूर्ण मूर्ति निर्मापित है। श्रीवाहुवलीस्वामीकी यह स्थापना रूप मूर्ति नहीं है, किन्तु साक्षात् यह 'श्रीवाहुवली' स्वामी ही हैं। और यह कायोत्सर्ग आसनसे अपने शुद्धात्म स्वरूपका रसानुभव कर रहे हैं ऐसाही चित्तको भान होता है। दर्शक पुरुष इस अनुप मुद्राको देख स्वयं भी स्तम्भवत् स्थिर, शान्त और छद्मस्थावत चकित हो जाता है। दर्शन करते २ किसी तरह तृप्त नहीं होता।

इस मूर्तिके स्कंधोंतक, पीछे पत्थर का दुमॅजला मकान वना हुआ है। ऊपरके खनमें जो जगह है वह अभिषेककी सामग्री रखनेके लिये है। नीचे अर्थात् श्रीविशाल-मूर्तिके पगोके पीछे और दक्षिण तथा उत्तरकी तरफ श्रीमूर्तिकी प्रदक्षिणामें दक्षिण की ओर एक वेदीमें दो मूर्ति पद्मासन स्वेतवर्ण हैं; तथा उसीके साह्मने उत्तरमें वेदी है, जिसमें दो खड्गासन श्वेत मूर्तियां हैं; शेष इनके मध्य प्रदक्षिणामें सर्व पाषाण मूर्तियां नग ३६ कृष्णवर्ण खड्गासन हैं; तथा दो मूर्तियां पद्मासन चरणपादुकाके लेखसहित; तथा एक भिन्न शिलालेख है। इस प्रदक्षिणामें इतना अंधेरा है कि विना दीपक लिये दर्शन नहीं होते, तथा वर्तमानमें इनके पूजन प्रक्ष्यालका विलकुल अप्रवन्ध विदित होता है। ऊपर छत है। मन्दिरके फाटकके ऊपर छतपर खड़े होकर जैसा रमणीक दर्शन इस मनोज्ञ प्रतिविम्वका होता है वैसा दूसरे स्थानसे नहीं होता। इस पहाडपर ७ मंदिर हैं।

चंद्रगिरि।

(श्रीभद्रवाहु स्वामी श्रुतकेवली)

श्री विन्ध्यागिरिके सन्मुख श्रीचन्द्रगिरि है। इसपर भी चढ़नेके लिये सीढ़ियां वनी हैं। इस पर्वतपर हर स्थानमें ध्यान करने योग्य वड़ी २ शिलाएं और ऐसी २ गुफा हैं, कि जिनमें शीत, उष्ण, वर्षा तथा डांसमच्छरकी जरा भी वाधा न होती और चित्त धर्म ध्यानमें स्थिर हो जाता है। चढ़नेवालोंके दाहनी तरफ जानेसे 'श्रीभद्रवाहुस्वामी श्रुतकेवली' की गुफा आती है, उसके भीतर श्रीपरमाचार्य के चरणारविन्द करीव दो वालिस्त लम्बे पाषाणमें अंकित हैं। इन चरणोंपर छत्ररूप एक वड़ाभारी पर्वत है। इससे अपूर्व अनुभवका लाभ प्राप्त होता है।

चढ़ने वाले की बाईं ओर एक बड़ाभारी कोट है, जिनके भीतर बहुतसे मन्दिर और शिलालेख हैं।

कोटके भीतर घुसते ही एक लम्बा खंभा है, जिसपर एक यक्षकी मूर्ति बनी हुई है। जानेवाला यदि बाईं ओरसे मन्दिरोंका दर्शन करता हुआ जावे तो नीचे लिखे सिलसिलेसे मन्दिर व सिलालेख दृष्टिगत पड़ेंगे।

१-एक वेदीमें श्रीशान्तिनाथ स्वामीकी खड्गासन मूर्ति कृष्ण पाषाण की १४ फीट ऊंची।

२-एक मन्दिर जिसमें श्रीसुपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा कृष्ण पाषाणकी अर्द्ध-पद्मासन १॥ गज ऊंची विराजमान है।

३-एक मन्दिर जिसमें श्रीचन्द्रप्रभुस्वामीकी कृष्ण पाषाणकी अर्ध पद्मासन १॥ गज ऊंची प्रतिमा स्थित है।

४-दो खम्भे कनड़ी लेख सहित मिलते हैं।

५-एक मन्दिर जिसमें एक प्रतिमा कृष्ण पाषाणकी अर्द्ध पद्मासन १॥। गज ऊंची; तथा इसके ऊपर वेदीमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी खड्गासन प्रतिमा विराजमान है।

६-एक मन्दिर जिसमें एक मूर्ति अर्द्ध पद्मासन कृष्ण पाषाणकी १॥ गज ऊंची विराजमान है।

७-चार खम्भे कनड़ी लेख सहित आते हैं।

८-एक मन्दिर जिसमें एक मूर्ति अर्द्ध पद्मासन कृष्ण पाषाणकी १॥ गज ऊंची विराजमान है।

९-एक मन्दिरमें एक मूर्ति खड्गासन कृष्ण पाषाणकी १। गज ऊंची विराजमान है।

१०-एक खम्भा जिसपर कनड़ी लिपीमें खुदाहुआ लेख पाया जाता है।

११-एक मन्दिरमें एक मूर्ति खड्गासन कृष्ण पाषाणकी १॥ गज ऊंची है।

१२-छह खम्भें कनड़ी लेख सहित पाये जाते हैं।

१३-एक मन्दिर जिसमें एक मूर्ति अर्द्ध पद्मासन कृष्ण पाषाणकी १॥ गज ऊंची विराजमान है, और उसके पास एक शिलालेख कनड़ी लेख सहित पाया जाता है।

१४-एक वड़े मन्दिरमें एक प्रतिमा अर्द्ध पद्मासन कृष्ण पाषाणकी १॥। गज ऊंची विराजमान है।

१५-एक मन्दिरमें एक मूर्ति कृष्ण पाषाणकी अर्द्ध पद्मासन एक गज ऊंची है, और इसके पास एक मानस्तम्भ है।

१६-एक मन्दिर जिसमें एक प्रतिमा खड्गासन कृष्ण पाषाणकी करीब ४ गज ऊंची विराजमान है, और खम्भोंके पास मध्यमें एक शिलालेख पाया जाता है।

ये सर्व मन्दिर पाषाणके हैं; इनमें कई शिल्पको प्रदर्शित करनेवाले हैं। श्री प्रतिबिम्बोंके विराजनेके स्थान प्रायः अंधकारमें हैं। विना अच्छे प्रकाशके दर्शन कठिनतासे होते हैं। यह सर्व प्रतिमायें दिगम्बरजैन आम्नायके अनुसार अत्यन्त प्राचीन हैं। कारण यहांपर जो शिलालेख आदि मिलते हैं [1] उनसे इनकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

विन्ध्यगिरी और चन्द्रगिरी ये दोनों स्थान अपूर्व ऋषियोंका परमधाम है और यहांपर श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवलीने अध्यात्म विचारमें मग्न होकर मोक्ष प्राप्ति किया है। इस लिये जैनीभाईयोंसे प्रार्थना है कि एक दफे क्या कई २ दफे श्री बाहुबलीसे स्वामीकी ध्यानमय मुद्रा और चंद्रगिरीपरकी श्रीभद्रबाहुस्वामी श्रुतकेवलीको पद्मुद्राके दर्शनकर अपना जन्म सफल करें। इस पहाड़पर १४ मंदिर हैं।

श्रीक्षेत्र सितामूर (चित्तम्बूर)।

यह प्राचीन क्षेत्र तिण्डिवनम (S. I. R.) स्टेशनसे करीब दस मील वायव्य कोनमें है। यहांकी लोग संख्या अनुमान १३५० है। दि० जैनियोंके आवाद गृह यहां ५८ हैं; जिनमें ५३ श्रावकोंके, और ५ वढ़ियारों (पूजारी) के हैं, इनकी मनुष्य संख्या २५१ है। यहां दो प्राचीन जैनमन्दिर अति मनोग्य शोभनीक हैं; जिनमसे एक करीब १५०० वर्षका प्राचीन मालूम होता है। कहते हैं कि यहां ब्राह्मणोंकी वड़ी जमानत थी, परन्तु किसी एक समय 'संधि महामुनि' और 'पण्डित महामुनि' इस प्रान्तमें दौरा करते थे, जब इस ग्रामके ब्राह्मणोंने उनको हटाया और धर्मशास्त्रोंमें वाद तलब किया; तब मुनि महाराजने उन ब्राह्मणोंको वादमें जीता और मठ स्थापन करके मन्दिर बनवाया। इस समय यहां मठाधिपति स्वतिश्री 'लक्ष्मीसेन बहालक सामियार' हैं। इन्हींके प्रबन्धमें यहांके मन्दिरजी हैं। पूजन प्रक्षाल यथाविधि सुसमयपर होता है और इस ग्रामके चारों ओर मठाधिपतिका अधिकार है। चैत्र मासमें रथोत्सवके समय बड़ी भारी यात्रा होती है; जिसमें करीब १००० जैनीभाई इकट्ठे होते हैं। ७ मी के दिन रथयात्रा बडी समारोहसे होती है। मठाधिपति महाराजके पास २०० धर्मशास्त्र हैं। तीन अन्नछेत्र और सरायें हैं जिनमें गरीब यात्रियोंको अन्नदान दिया जाता है और ठहरनेके लिये प्रबंध किया जाता है। एक 'अन्नछेत्र' विजयपाल नैनार कडलोरवालोंका है। उसकी देखभाल उनके सुपुत्र 'ऋखभदेव नैनार' करते हैं। दूसरा छेत्र 'मरुदेवी अम्मा' कुंभकोणमवालोंका है

---

१ स्थलभाव होनेको कारण शिला लेख यहा नहीं दे सक्ते तथापि वाचकोंका चित्त Inscriptions at Sravanbelgola नामकी पुस्तक बांचनेके लिये आकर्षित करता है। जिसमें श्रवण वेलगोल, विंध्यागिरी और चद्रगिरीके शिलालेखोंकी नकल और उनका इंग्रेजी उल्था दिया है। यह पुस्तक बंगलोर गवर्मेंट बुक डिपोसे मिलती है।